कटरा बी आर्ज़ू

राही मासूम रज़ा

राजकमल प्रकाशन
नयी दिल्ली पटना

मूल्य रु० २०.००

नय्यर रज़ा

प्रथम संस्करण १९७८

प्रकाशक राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड
८ नेताजी सुभाष मार्ग, नयी दिल्ली ११०००२

मुद्रक त्रिलोक प्रिंटर्स, १५६० गली हीरासिंह
पटेल नगर, दिल्ली ११००१२

आवरण चांद चौधरी

बयान

मन कि राही मासूम रज़ा पुत्र स्वर्गीय हाजी सैयद बशीर हसन आब्दी, एकरार करता हूँ कि यह एक झूठी कहानी है। इसके पात्र झूठे हैं, जगहो के नाम गलत हैं। घटनाएँ गढी हुई हैं।—परंतु यह झूठ बोलने पर मैं शर्मिन्दा नही हूँ।

राही मासूम रज़ा

१०-देवदूत,
बण्डस्टैण्ड, बान्द्रा,
बम्बई-४०००५०

अपने दो दोस्तो, विमल दत्त और अजीज कैसी, के नाम कि लगभग दो बरस पहले उन्होंने फिल्म राइटज एसोसियेशन की भरी सभा मे उस प्रस्ताव का विरोध करने में मेरा साथ दिया था जो श्रीमती गाँधी की खुशामद मे फिल्म राइटर्ज पर थोपने की कोशिश की जा रही थी। इन दोनो यारो ने इस शाम उसी प्रस्ताव के विरोध मे मेरे साथ सभा से वाक-आउट करने की हिम्मत भी की थी।

और उस रात के नाम जो उस शाम के बाद आयी थी और जेल के डर मे गुजरी थी।

राही मासूम रजा

भूमिका

रोशनाई के लिए अपने को बेचा किये हम
ताकि सिर्फ इसलिए कुछ लिखने से बाकी न रहे
कि क़लम खुश्क थे और लिखने से मजबूर थे हम

राही मासूम रज़ा

के० बी० ए० फाइल

वास्तव मे उस कटरे का नाम 'कटरा बी आर्जू' नही था। उसका असली नाम 'कटरा मीर बुलाकी' था। कारपोरेशन के कागजो मे भी उसका यही नाम लिखा हुआ था। वह तो हुआ यू कि जिस दिन शहनाज और मास्टर बदुल हसन 'नायाब' मछली शहरी की शादी तै हुई उसी रात उन्होने इस कटरे का नाम बदलकर 'कटरा बी आर्जू' रख दिया। यू भी वह बहुत दिनो से देखते चले आ रहे थे कि उनके कटरेवालो के पास और तो कुछ नही पर आर्जूएँ बहुत हैं।

गली के नुक्कड पर जहाँ 'गली द्वारिकाप्रसाद' का बोड लगा हुआ था वही, बल्कि उसी बोड पर, कटरेवालो मे से किसी ने पहले ही से 'कटरा मीर बुलाकी' लिख छोडा था। नायाब मछली शहरी ने उसी के नीचे, जेब मे पडी हुई चाकू के टुकडे से, 'कटरा बी आर्जू' लिख दिया।

उधर से हर रोज गुजरनेवाले एक पत्रकार ने यह नया नाम पढा और पसन्द किया। उसने इस नये नाम पर एक लेख लिख डाला जो सम्पादक को पसन्द आया और उसने एक सीरियल लिखने की फरमाइश जड दी। उस पत्रकार के पास उन दिनो कोई खास काम नही था इसलिए वह उस 'सीरियल' मे जुट गया।

परन्तु सरकारी तौर पर चूकि कोई 'कटरा बी आर्जू' था ही नही, इसलिए शहर की सरकार को परेशानी हुई कि कही यह सरकार का तख्ता उलटने की किसी साजिश का 'कोड नाम' न हो। तो, खुफिया पुलिस के कार्यालय मे एक 'के० बी० ए०' फाइल खुल गयी।

उस पत्रकार बिचारे को इस साजिश की खबर नही थी। वह तो गरीब

लोगो के एक महल्ले के बारे म एक सीरियल लिखने के लिए उन लोगो मे हमशा से ज्यादा उठने बठने लगा था। वह दिन-भर और कभी कभी गयी रात तक कटरे के लोगो का पीछा किया करता और अपने हिसाब से उनकी आर्जूएँ जमा करता रहता था। उनकी जिन्दगी के एक एक क्षण को कलम की नाक पर रख-कर अपनी चेतना की तेज रोशनी म घुमा फिराकर हर तरफ से देखने की कोशिश किया करता था। और उसे इस काम मे इतना मजा आ रहा था कि इस तरफ उसका ध्यान ही नही गया कि सी० आई० डी० के लोग उसका पीछा कर रहे हैं

थोडे दिना बाद शहर की सरकार को यकीन हो गया कि 'कटरा मीर बुलाकी' मे यकीनन सरकार का तख्ता उलटने की कोई गहरी साजिश हो रही है। उसके खयाल म वह पत्रकार उस साजिश का सरगना था। जो एसा न होता तो उस पत्रकार का सारा समय उसी कटरे के आसपास और उसी कटर के लागा के बीच न गुजरता। तो धीर धीरे 'के० बी० ए०' फाइल म शाखें फूटने लगी और चूकि रिपोर्टों म 'कटरा मीर बुलाकी' के लोगो के नाम बार बार आ रह थे इसलिए शाखें उन्ही के नामो की फूटी।

एक दिन डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट ने सोचा कि यह बला वह अपन सर पर क्यो मोल ले। तो उसने लखनऊ सरकार को लिख दिया कि उसका खयाल है कि 'कटरा मीर बुलाकी' मे सरकार का तख्ता उलटने की कोई साजिश हो रही है जिसका कोड नाम कटरा बी आर्जू' है। लखनऊ सरकार ने उस रिपोट को ध्यान से पढा और यह फसला किया कि के० बी० ए० फाइल दिल्ली की तरफ बढा देने की फाइल है, चुनाँचे उसने उसे दिल्ली की तरफ सरका दिया और नम्बर एक सफदरजग ने वह फाइल खुर्शीद आलम खा को दी जो उसी दिन दिल्ली से इलाहाबाद के लिए रवाना हो गये और दिल्ली साँस रोके उनकी रिपोट की राह देखने लगी।

उन दिनों चूकि यही सरकारी तरीका हो गया था कि यदि किसी के बारे म कुछ पता न चले तो उसे सरकार का दुश्मन मान लिया जाये। और उस पत्रकार का नाम तो यू भी सरकार के दुश्मना मे लिखा हुआ था। इसलिए उसे 'मीसा' मे धर दबोचने के लिए पूछताछ शुरू की गयी।

उस पत्रकार का नाम आशाराम था।

आशाराम 'कटरा मीर बुलाकी' का रहनेवाला नही था। लेकिन यह कटरा उसके बचपन से लेकर उसकी जवानी तक, हर रास्ते मे आया। इसी रास्ते पर चलकर उसने अपनी पढाई खत्म की थी। इसी रास्ते पर चलती हुइ राजनीतिक

चेतना उसके पास आयी थी । इसी रास्ते पर चलकर वह साप्ताहिक 'नेशन' के कार्यालय जाया करता था जिसके सम्पादक उसके दादा श्री बाबूराम 'आज़ाद' के दोस्त थे और इसी दोस्ती के कारण वह 'नेशन' मे काम सीखने के लिए लगा दिया गया था ।

'कटरा मीर बुलाकी' के नुक्कड पर दाहिनी तरफ पहलवान भोलेनाथ उफ भोल पहलवान का जो चायखाना था उसमे आशाराम ने खरीदकर चाय की पहली प्याली पी थी । उस चाय का मजा वह कभी न भूल सका । चूंकि पहलवान भी बाबूराम के यार थे, इसलिए उन्होन उसकी प्याली मे अपने हाथ से बालायी की एक मोटी तह ऊपर से डाल दी थी जो उसके मुह मे जाकर पिघल गयी थी और उसका सारा मुह एक मीठी नर्मी से लबालब भर गया था । तब वह फिफ्थ क्लास मे पढा करता था । पहलवान ने चाय का दाम लेने के बाद उसे लौटा दिया था । और उस दिन के बाद से उसकी दो प्याली चाय बँध-सी गयी थी । एक प्याली जाते समय और दूसरी आते समय । और इस चाय मे चीनी की तरह घुलकर उसन यह फैसला किया था कि पढने के बाद वह कुश्ती लडेगा और चाय की एक दूकान रखेगा और मुफ्त मे बालायीवाली चाय पिया करेगा । परन्तु श्री बाबूराम 'आजाद' आज़ादी मे पहले के काग्रेसी थे । अपने इकलौते पोते के बारे मे उन्होने बिल्कुल ही दूसरी तरह के सपने देख रखे थे । वह चाहते थे कि आशाराम साहित्यकार न बन सके तो पत्रकार बने क्योकि साहित्यकार के बाद पत्रकार ही देश की आत्मा और उसकी सच्चाई का रखवाला होता है । तो उन्होंने पहलवान को मना कर दिया कि वह आशाराम को चाय न पिलायें । उन्होंने आशाराम को भी समझाया कि चाय पीने के लिए जिन्दगी पडी है । अभी तो उसे साहित्यकार या पत्रकार बनने के लिए अपनी शिक्षा की तरफ ध्यान देना चाहिए । उनकी बात सुनकर उसका दिल कुढा तो बहुत, पर वह कर ही क्या सकता था ! परन्तु चूकि वह अपने दादा को अपने से ज्यादा समझदार मानता चला आ रहा था, इसलिए उसने यह भी मान लिया कि पत्रकारी पहलवानी से ज्यादा अच्छा काम है । लेकिन पहलवान की चाय मे उसकी दिलचस्पी कम न हुई । कभी कोई यार दोस्त होता तो उसके 'कहने' से वह चाय पीने के लिए रुक ही जाता । सडक पर बिछी हुई मोढियो पर बैठकर लोगो की बातें सुनने मे उसे बडा मजा आता । दूकान मे तरह-तरह की बातें हुआ करती थी । सडक मे बहुरूपी जिन्दगी गुजरती ही रहती थी और यू पहलवान की दूकान पर जिन्दगी से उसका परिचय हुआ ।

ऐसे ही एक दिन अपने से दो-तीन साल बडी बिल्ली और पाँच-सात साल

बड़े देश से उसकी पहली मुलाकात भी पहलवान के चायखाने ही पर हुई। देश कोई बारह चौदह बरस का रहा होगा और बिल्लो नौ दस बरस की। बिल्लो तब भी नाक पर मक्खी नहीं बैठने दिया करती थी। और देश को तब भी बड़े-बड़े सपने देखने का शौक था।

देश ने 'नेशनल गैरेज' में शम्सू मियाँ के नीचे काम सीखना शुरू कर दिया था और बिल्लो भी यह तै कर चुकी थी कि बड़ी होते ही फज्जू धोबी से उसकी लाण्डरी खरीद लेगी। उसे यह काम पसन्द था। फज्जू की लाण्डरी का नाम 'जनता लाण्डरी' नहीं था, 'द मून लाइट लाण्डरी' था। और हालांकि 'कटरा मीर बुलाकी' में अंग्रेजी जाननेवाले मुश्किल से एक ही आध थे, पर फज्जू लाण्डरी का नाम रोमन अक्षरों में लिखा हुआ था। उस लाण्डरी के छज्जे तले इतवारी बाबा रात को अपना बिस्तर डालके सोया करते थे।

इतवारी बाबा तब इतने बूढ़े नहीं थे। चालीस पतालीस के फेंटे में रह होंगे। पर वह उन दिनों भी भीख ही माँगा करते थे। हफ्ते में छ दिन भीख माँगने के बाद सातवें दिन आराम किया करते थे और शायद यही कारण है कि लोग उन्हें इतवारी बाबा कहने लगे।

'कटरा मीर बुलाकी' में इतवारी बाबा का असली नाम किसी को याद नहीं था। शायद खुद इतवारी बाबा भी अपना नाम भूल चुके थे। सन सतालीस के बाद से वह बाकायदा इनकम टक्स भी भरते थे

इतवारी बाबा के ठाठ देखकर कई बार आशाराम का दिल जुगजुगाया कि उनका काम भी बुरा नहीं। पर अपने दादा को यह बात बताने की उसकी हिम्मत न हुई और धीरे धीरे यह खयाल उसके दिल से निकल गया।

और अपने बारे में यह बात उसे काफी दिनों के बाद मालूम हुई कि वह मार्क्सवादी हो गया है। यह उन दिनों की बात है जब वह एफ० ए० का इम्तिहान देकर अपने मामा के घर गर्मी की छुट्टियाँ मनाने गया हुआ था। वहाँ वह कामरेड माबूद से मिला और उन्होंने उसकी काया ही पलट दी। पर उसने इस परिवर्तन की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया। मजे में छुट्टियाँ काटके जब वापस आया तो बाबूराम जी ने यह महसूस किया कि उसकी भाषा बदल गयी है। वह बात-बात में चीन और रूस और रुमानिया और फ्रांस की क्रान्ति और अमरीका की सिविल वार का तजकिरा करने लगा है। उसकी बुक शेल्फ में कम्युनिस्ट मेनिफ़ेस्टो और गोर्की का उपन्यास 'माँ' आ गया है। बाबूराम विचारों को या विचारधारा को बुरा नहीं समझते थे, परन्तु मार्क्सवाद तो उनकी पिछली पूरी जिन्दगी को अर्थहीन बनानेवाला विचार था।

मतलब उन्होंने कुछ किया ही नही। उनके सपनो के पाव के नीचे जैसे कभी कोई जमीन ही नही रही हो यहाँ से दादा और पोते के बीच की दूरी बढने लगी।

यह दूरी आशाराम की माँ रामदयी ने महसूस की। पर वह एक नासमझ औरत थी। राजनीति का मतलब केवल यह समझती थी कि उसमे जेल जाना पडता है। उसकी समझ मे आजादी और क्रान्ति जसे शब्द आते ही नही थे। वह कीमतो की भाषा समझती थी। अरवी कल इस भाव बिक रही थी, आज इस भाव बिक रही है। भिण्डी का दाम कल यह था और आज यह हो गया है। गेहूँ कल रुपये का इतने सेर था और आज इतने सेर है खादी कल इस हिसाब मिलती थी और आज इस हिसाब से मिल रही है। और बहुत-सी चीजें तो मिल ही नही रही हैं। अमरीका—रूस—चीन—क्यूबा—वाशिंगटन—देहली —रामदयी के लिए यह केवल नाम थे जिनका उसकी जिन्दगी से कोई तअल्लुक नही था। पर जब इन्ही नामो के लेते हुए उसके ससुर और उसके बेटे की आवाजें ऊँची होने लगी तो उसे सोचना पडा कि शायद इन नामो का कोई मतलब है—कुछ नाम जैसे दोस्त हैं। और कुछ नाम जैसे दोस्त नही हैं। कुछ नामो को आशाराम प्यार से लेता है और कुछ नामो को बाबूराम। रामदयी बिना कुछ समझे हुए बेटे के साथ हो गयी। और बाबूराम चुप हो गये।

आशाराम के घर तरह-तरह के लडके आने लगे। कोई आसिफ असारी है। कोई बशीर है। कोई तेग इलाहाबादी है—इन लडको की आवाज़ मे एक अजीब झल्लाहट और आखो मे एक अजीब चमक थी। रामदयी को आवाजो की यह खनक और आखो की यह चमक अच्छी लगने लगी और यू राजनीति के एक दोराहे पर आशाराम अपने दादा बाबूराम से बिछुड गया।

आशाराम को काग्रेस सरकार पर बिल्कुल भरोसा नही था। सरकार चाहे नेहरू की हो, चाह लालबहादुर की, चाहे मिसेज़ गाधी की—काग्रेस सरकार पूजीवाद की दलाल और जनता की दुश्मन है। बजट चाहे मुरारजी बनायें चाहे सुब्रामनियम—काग्रेस सरकार का हर बजट जनता को लूटनेवाला और पूजी के बड घरानो का मददगार है और फिर एक दिन आशाराम ने अपने कमरे से गाधीजी की तस्वीर हटा दी। उसकी जगह कास्ट्रो की तस्वीर ने ले ली।

दादा और पोते के बीच का तनाव यहा तक बढा कि सन बासठवाले चुनाव मे जब बाबूराम को काग्रेस का टिकट मिला तो आशाराम ने उनके खिलाफ काम किया और उसी साल उसने पहली बार मोटर मिकैनिक्स की यूनियन बनायी और यू वह 'नेशनल गैरेज' के मालिक बाबू गौरीशकर लाल पाण्डेय से

सीधे टकराव मे आ गया।

यह बाबू गौरीशकर लाल काग्रेसी एम० पी० थे और बाबू कमलापति त्रिपाठी के खास आदमी थे। मन्त्री होते होते रह गये थे। समाजवाद पर प्रान्तीय काग्रेस म उनसे अच्छी तकरीर करनेवाला कोई नही था, इसीलिए जहाँ जहाँ सोशलिस्टो और कम्युनिस्टो का ज़ोर था वहाँ-वहा बाबू गौरीशकर की बडी माँग थी। इलाहाबाद से पूरब का सारा उत्तर प्रदेश उनके काग्रेसी चाज मे था और कल का लौण्डा आशा राम उन्ही के वक्तो को समाजवाद सिखाने की बेवकूफी कर रहा था। उन्होने बाबूराम से शिकायत भी की, पर बाबूराम ने साफ कह दिया कि वह अपने पोते की विचारधारा के लिए जिम्मेदार नही हैं।

बाबूराम दिल-ही दिल मे और काग्रेस के भीतर-भीतर बाबू गौरीशकर पाण्डेय और उन जसे पेशावर नेताओ के विरोधी थे और इसीलिए वह काग्रेस मे अपना कोई दल न बना सके और किसी दल न भी उन्ह स्वीकार नही किया। आजादी के बाद से काग्रेस मे ईमानदार लोगो की खपत यू भी कम हो गयी थी। बाबू गौरीशकर-जैस लोग तो टिकटो की औलादें हैं। जहाँ टिकट बँटता है, वहाँ यह लोग पैदा हो जाते हैं। बाबू गौरीशकर पहला और दूसरा चुनाव काग्रेस के टिकट पर जीते। फिर जब चरणसिंह काग्रेस से अलग हुए तो वह भी अलग हो गय। और जब चरणसिंह की सरकार टूटी तो वह फिर काग्रेस मे लौट आये। बाबूराम यह राजनीतिक कबड्डी नही खेल सकते थे। उन्हें यह अच्छा भी नही लगता था। काग्रेस मे यह उनकी तीसरी पीढी थी। आशाराम भी काग्रेसी होता तो चौथी पीढी हो जाती। उनकी वफादारियाँ काग्रेस से जकडी हुई थी। काग्रेस से अलग हटकर वह न कुछ सोच सकते थे, न समझ सकते थे। काग्रेस उनके विचारो और उनकी आत्मा और उनकी जिन्दगी का ओढना-बिछौना थी। फिर भी जब बाबू गौरीशकर लाल पाण्डेय ने उनसे आशाराम की बात की तो वह डर गये।

बाबूराम ने आशाराम से तो कुछ नही कहा, पर अपनी बहू रामदयी को समझाया कि वास्तव मे खराबी सरकार मे नही, सरकारी नौकरो मे है। यदि आशाराम-जसे ईमानदार लड़के सरकारी नौकरियो मे जाने लगें तो सब ठीक हो जायेगा।

रामदयी ने यह बात आशाराम से कही।

आशाराम ने कहा कि वह किसी जनता-दुश्मन सरकार की मशीन का पुरजा नहीं बनना चाहता।

रामदयी ने यह बात बाबूराम को बता दी।

बाबूराम चुप हो गये। पर उनके दिल मे डर का अँधेरा कुछ घना हो गया।

आशाराम अपने रास्त पर चलता रहा। मोटर मिकेनिक्स यूनियन ने पहली हडताल बाबू गौरीशकरलाल पाण्डेय एम० पी० के नेशनल गैरेज म की। महँगाई भत्ता, मजदूरियो म बढती और बोनस के सवाल पर यह हडताल शुरू हुई।

'नेशनल गैरेज' की दीवारो पर लाल झण्डे लहराने लगे और आशाराम ने गैरज के कम्पाउण्ड म पहली पब्लिक तकरीर की। उसके सामन तीस पतीस आदमी थे। शम्सू मिया अध्यक्षता के फराएज अजाम दे रहे थे और आशाराम को मालूम था कि शम्सू मियाँ अदर से कितने सहमे हुए है। उसके सामन भी जो लोग थे उनमे कई आखो म डर था। कई निडर भी थी। निडर आखो मे एक जोडी देशराज की आखो की भी थी।

आशाराम जानता था कि सामने बैठे हुए लोग यह सोच रहे है कि वह उनके दुखो, उनकी भूख, उनकी जरूरतो को खत्म करन का कोई टोटका बतायेगा और आग भपकते दुनिया बदल जायेगी और बाबू साहब मुस्कुराते हुए आयेंगे और मजदूरिया बढ जायेंगी, महँगाई भत्ता बढ जायेगा और बोनस मिल जायेगा।

शम्सू मिया तो अपने डर के बावजूद बोनस का बजट भी बना चुके थे। उनके चश्मे का नम्बर बदल गया है। वह सोच रहे थे कि अभी बोनस मिल जाये तो घर जाते-जाते किसी चश्मवाले की दूकान पर पल भर रुककर वह एक नया चश्मा खरीद लेंगे। देशराज सोच रहा था कि हाउस-फण्ड मे चार सौ अस्सी की कमी रह गयी है। तड से जमीन लेकर घर का काम शुरू कर दूगा। और फिर तो बिल्लो से शादी करने के लिए तैयार होना ही पडेगा मुरली अपने लिए ट्राजिस्टर खरीदने का प्रोग्राम बना रहा था गरज कि जितन आदमी थे उतनी आर्जुएँ थी और आशाराम अकेला था। यह उसकी पहली राजनीतिक तकरीर थी और जो लोग हडताल करनेवाले थे उनकी पहली राजनीतिक लडाई थी। किसी को ठीक से इस लडाई के कायदे-कानून मालूम नही थे।

आशाराम घबरा गया। घबराया तो उसकी तकरीर सरल से मुश्किल हो गयी। फिर इतनी मुश्किल हो गयी कि खुद उसके लिए अपनी तकरीर समझना दुश्वार हो गया। और तब देशराज उठा और उसने कहा

"भाइयो और बहनो—हत तेरे की। बहनो हैं कहाँ " लोग हँस दिये और उस हँसी के साथ ही जैसे वह अनजाना डर भी खत्म हो गया। 'कामरेड की बात कामरेडे की समझ मे ना आ रही तो हम लोग का समझेंगे ? भाइयो, बात ई है कि कामरेड तो कभी फाका किहिन ना हैं। तो ऊ समझेयें कैसे कि फाका होता का है ! और हम लोग को फाका समझाये की जरूरत का है ? हम लोग को तो बाप दादा के जमाने से परटिटस है फाका करे की। बाकी हम लोग आज ई ते कर रहे हैं कि आज से फाका नही करेंगे। फाका करने म कोई मजा नही है। पेट भरकर खाना खाना फाका करे से कहीं जियादा मजेदार काम है। और जो फाका करना ही है तो बाबू गौरीशकरलाल पाण्डेय भी करेंग। ई ता कोई बात ना भई साब, कि हम तो भुक्खे मरें और बाबू साहब हमरे पसीने मा बोर-बोरके पूरी खाये। "

यह भाषा सबकी समझ म आयी। आशाराम ने भी समझी और उस दिन उसे यह मालूम हुआ कि फाके की एक अपनी भाषा होती है जो पेट भरो के लिए जरा मुश्किल पडती है। और उसी दिन वह देशराज से छोटा हो गया।

हडताल तो टूट गयी। यूनियन भी टूट गयी। आशाराम जेल भी हो आया और वही जेल मे देशराज से उसकी गहरी दोस्ती हो गयी और वह यह समझ पाया कि मध्य वग के नेतत्व मे आयी हुई क्रान्ति अपना रास्ता बार-बार भूलती हुई सी क्यो लगती है। बात यह है कि तमाम बातें किताबा म लिखी हुई नही होती। असली बातें तो देशराजो और शम्सू मियाओ और मुरलिया को मालूम होती है।

जेल से वह तप के निकला।

"आ गये ?" बाबूराम ने पूछा।

"जी हाँ।" उसने कहा, "जो आपके गाधीजी आज जिन्दा रहे होत तो हो सकता है कि जेल मे मेरा उनका साथ भी हो गया होता।"

जाहिर है कि यह सुनकर बाबूराम चुप हो गये। इधर कुछ दिना से यू भी उन्हें अपने आप पर थोडा-थोडा शक हो चला था कि जैसे वह जो कुछ सोच रहे हैं उसमे कही-न कही कुछ गडबडी है। कही-न-कही कोई गलती हो रही है। कही-न-कही से सपन टूट रह हैं। आदश चिटक रहा है। विचार से रुके हुए बन्द पानी की तरह विसाँध आने लगी है वह यह सोचते तो काँप जाते और दीवार पर टँगी हुई गाधीजी की तस्वीर की तरफ देखते जिसम उन्होने बाबू-राम के गले म बाँह डाल रखी थी और मुस्कुरा रहे थे। वही मशहूर पोपली मुस्कुराहट। गाधीजी की बगल म जवाहरलाल नेहरू थे, मौलाना आजाद थे,

रफी अहमद किदवई थे, सरदार पटेल थे, राजगोपालाचार्य थे, नरेन्द्र देव थे—यह तमाम तस्वीरें आटोग्राफ की हुई थी। बाबूराम इन तस्वीरो की तरफ देखते तो उन्हे लगता जैसे यह तमाम लोग साथ हैं और वह अकेले नहीं है।

उनके कमरे मे बस एक तस्वीर आटोग्राफ की हुई नही थी। और वह तस्वीर थी श्रीमती गाधी की। नेहरू की बेटी से उन्हे बडा प्यार था। उन्हे लगता जैसे वह उनकी अपनी बेटी हो। और जब मिसेज़ गाधी ने मुरारजी-ऐंड-कम्पनी को धता बता दिया तो बाबूराम बहुत खुश हुए कि अब बेरोकटोक गाधीजी और नेहरू के सपनो के फलने फूलने का युग आरम्भ होता है

यही वे दिन हैं जब आशाराम ने 'नगन' म काम शुरू किया।

आशाराम को अपने बाप के सपना से कोई मतलब नही था, क्योकि उसकी निगाह म मुरारजी और श्रीमती गाधी म कोई खास फक नही था। चोरो म लडाई होने का मतलब यह है कि पहले एक चोरी हुआ करती थी अब दो चोरिया होगी। और इस बात पर तो उसे पक्का यकीन था कि मुरारजी भाई और उस थैली के तमाम चट्टे-बट्टे जनसघ से गठजोड करके प्रगतिशील ताकतो के खिलाफ मोर्चा बनायेंगे। और एक मजिल पर जमाअत इसलामी और इस तरह की दूसरी तमाम मुस्लिम साम्प्रदायिक पार्टिया भी उसी बडे गठजोड का हिस्सा बन जायेंगी अपनी ये परेशानियाँ वह किससे कहता क्योकि खुद उसकी पार्टी दो हिस्सो म बँट चुकी थी। एक तो मिसेज़ गाधी का दुमछल्ला बन गयी थी और दूसरी मार्क्सवाद लेन के लिए जनसघ और बी-के-डी और अकाली और जमाअत जैसी जन-दुश्मन पार्टियो से गठजोड करने पर तैयार थी। आसिफ अलसारी वकालत मे लग गये थे। गग दिल्ली चले गये थे और सुप्रीम कोर्ट मे प्रैक्टिस करने लगे थे। बशीर पार्टी से निकाल दिये गये थे। प्रकाशचन्द्र गुप्त मर चुके थे।

आशाराम था। अकेला रह गया था।

मोटर मिकेनिक्स यूनियन टूट चुकी थी। और आशाराम सवालिया निशानो के एक घने जगल मे अपनी परछाइयो के साथ अकेला था। अकेला रह गया था। और इस अकेलेपन ने उसकी आखो की चमक और बढा दी थी और उसकी आवाज की कडवाहट तेज़ कर दी थी ।

वह आते-जाते अब भी गुरु भोलू पहलवान के चायखाने पर रुकता। चाय पीता। वहा की बातें सुनता और देखता कि बको के नशनलाइज़ होने से कटरा मीर बुलाकी के लोगो की जिन्दगी मे तो कोई खास परिवतन नही हुआ। पर अपनी यह मालूमात वह अपने ही पास रखता। क्योकि बात करने के लिए कोई

था ही नही।

अपनी इन उलझनो म वह यह भी भूल गया कि देशराज और बिल्लो की शादी एक घर की वजह से रकी हुई है, कि दोना अपनी सारी बचत पोस्ट-आफिस म जमा कर रहे हैं, कि छोटी सी वह जमीन खरीदी जा सके जिस पर बिल्ली अपना घर बनाना चाहती है। बिल्लो और देशराज दोनो ही बे-पढे लिखे थे। इसलिए हाउस फण्ड का सारा हिसाब किताब आशाराम किया करता था। शाम को वह बिल्लो की जनता लाण्डरी म जाता और बिल्ला अपनी पासबुक यू उठाती जैसे वह पासबुक न हो, गीता हो, जिसम खास उसके लिए कृष्ण ने अपना पयाम लिख भेजा हो। देश भी आ जाता और घण्टे दो घण्टे उस घर के सपनो म बीत जात। देश एक लम्बे चौडे घर के सपन दखा करता था। सँगे-मरमर के खम्बा और मेहराबावाले घर के सपने। घर, जिसके सामने का बाग खुसरबाग से बडा होगा। पर बिल्लो हमेशा एक छोटे-से घर का सपना देखा करती थी। छोटा-सा आगन जिसम तीन चार पलग आ जायें। दो कमरे। एक दालान दोना मे सपना के इसी टकराव मे झगडा हो जाता और आशाराम का बीच बचाव करवाना पडता। और बीच मे इतवारी बाबा आ जाते और वह सिरे से घर के सपने ही का विरोध करते, कहत "अरे घर का चक्कर छोडो तू लाग। जब साहजहा ताजमहल बनवाइन रहा तब ससती का जमाना रहा। अब तो क्रिया-कम म पहले के सादी बिआह से दूना तिनगुना खरच हो जाता है। चले है घर बनाय।" इतवारी बाबा की बात सुनकर मोर्चा बदल जाता। बिल्ला और देश दोना इतवारी बाबा से भिड जाते कि घर तो वह जरूर बनवायेंगे ।

देशराज और बिल्ला दोनो ही आशाराम स बडे थे, पर इन दोना से उसकी दात काटी दोस्ती हो गयी थी। और यह दोस्ती इतनी आगे बढ गयी थी कि बाबू गौरीशकरलाल पाण्डेय ने चुपके चुपके यह तक उडवाना शुरू कर दिया कि बिल्ला आशाराम स फँस गयी ह।

पर कटरा मीर बुलाकी' म यह बात किसी ने न मानी क्याकि वहा के लोग बिल्लो और देश के प्रेम को जस हमेशा हमेशा से जानते चले आ रहे थे। और जो एसा होता तो आशाराम की बतीसी गुरु ने बुढौती म भी उसके पेट म उतार दी होती। पहलवान के डर से तो आस-पास के नौजवान बिल्लो से कोई ऐसा-वैसा मजाक करते भी डरते थे कि कही पहलवान कोई उल्टा-सीधा मतलब न निकाल लें। जगदम्बाप्रसाद हुडका सटेबिल तक का एक दिन उन्होंने जान स मारते मारत छोडा। उसका कुसूर सिफ इतना था कि तमाम पुलिसवालो की तरह उसे भी यह नही मालूम था कि बजान चीजा के मा बाप नही हुआ करत।

एक दिन अपनी वर्दी की शर्ट पर इस्त्री देखकर वह बिल्लो से पूछ बैठा, "यह बहनचोद कमीज इस्त्री की हुई है ?"

यह बात भोलेनाथ पहलवान ने सुन ली। वह जनता लाण्डरी में घुस आये और जगदम्बाप्रसाद से बोले 'बहनचोद कमीज तेरी तुम हो ! बिल्लो, मनव लड़की जात, के सामने गाली बकते सरम नहीं आती ? हेड कानिसटिबली गाँड में घुसेड देंगे !"

वह तो खैरियत यह हुई कि ठीक उसी समय शम्सू मिया आ गये और वह गुरु भोलेनाथ के गुरु उस्ताद करीमुद्दीन खाँ के बेटे और खुद गुरु भोलेनाथ पहलवान के दोस्त थे। शम्सू मिया ने गुरु को डाट पिलायी कि जगदम्बाप्रसाद को गाली बकने पर डाटने में खुद गुरु बड़े फर्राटे से गालियां बक रहे हैं। और यहां गुरु भी कायल हो गये और बात खत्म हो गयी। वह दिन इमरजेंसी के भी नहीं थे कि जगदम्बाप्रसाद गुरु को मीसा में अन्दर करवा देते, इसलिए वह भी इस बात को पी गये और 'कटरा मीर बुलाकी' में सबने एक मत होकर यह बात मानी कि जो ठीक वक्त पर शम्सू मिया न आ गये होते तो बात बहुत बढ़ गयी होती क्योंकि जगदम्बाप्रसाद उस्ताद करीमुद्दीन के मुखालिफ अखाड़े के थे।

शम्सू मिया की बात कटरा मीर बुलाकी में यूं भी कोई नहीं टालता था, क्योंकि उनकी गिनती कटरे के बड़े-बूढ़ों में होती थी। वह यूं भी बड़े नेक आदमी थे और कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है कि वह अपने नेक बन्दों का इम्तिहान लेता है और उसके इम्तिहान में न घूस खिलाकर पचा आउट होता है और न घूस खिलाकर पासिंग मार्क्स लिये जाते हैं। पचा तो उसने खुद ही आउट कर दिया है। फरमाता है कि हम तुम्हारा इम्तिहान लेंगे—जान, माल, बाग-बगीचे और आल औलाद से। शम्सू मियाँ के पास न जान थी न माल था। मतलब यह कि जो जान थी उसकी गिनती जब वह खुद ही जान में नहीं किया करते थे तो अल्लाह मिया उसे जान में क्या गिनते ! रहा माल, तो वह उनके बाप-दादा तक ने नहीं देखा था। बाग-बगीचा था नहीं। तो अब बची औलाद। एक बेटा था। अब्दुल हक। वह अपनी बीवी के बहकावे में आकर पाकिस्तान चला गया था। शम्सू मिया ने अब्दुल और देश दोनों को साथ-साथ मोटर मिकेनिकी का काम सिखाना शुरू किया था। जो आज वह हिन्दुस्तान में होता तो देश और अब्दुल दोनों की ही मिकेनिकी को कोई हाथ नहीं लगा सकता था। पर उसकी जवानी पाकिस्तान चली गयी और शम्सू मिया की बुढ़ानी ने वहां जाने से इनकार कर दिया और अब्दुल के हिस्से का जो प्यार बचा था वह भी देश ही को देकर छुट्टी की। अब बची महनाज और शहनाज। महनाज की शादी ए०-जी०

आफ़िस के एक क्लर्क से हो गयी। तनख्वाह तो ज्यादा नहीं थी, पर अल्ला के फज्ल से ऊपर की आमदनी अच्छी थी। बड़े-बड़े ठेकेदार किस्म के लोग उसके घर ईद और दीवाली पर फल फलहरी लाया करते थे। महनाज बहुत खुश थी। फिर एक दिन, कि अल्लाह मियां ने वह दिन शम्सू मियां के इम्तिहान के लिए तै कर रखा था, महनाज बेवा हो गयी। यमराज कालरे के रूप में आये और उसके मियां को ले गये। उसका बेवा हो जाना खुद अपनी जगह शम्सू मियां के लिए अफसोस की बात थी पर सेर पर सवा सेर यह हो गया कि महनाज अपनी दो बच्चियों के साथ मायके आ गयी क्योंकि उसकी सुसरालवालों ने उसे रखने से इनकार कर दिया था। आमदनी वही। महँगाई बढ़ी हुई और ऊपर से तीन पेट और बढ़ गये।

अल्लाह मियां यहां तक इम्तिहान लेकर बस करते तब भी गनीमत होता। पर वह कहां रुकनेवाले हैं पूरा इम्तिहान लिये बिना! उन्होंने शहनाज को कालरे या टायफॉएड या टी०बी० या कैंसर में मार डालने की जगह उसे जवान कर दिया।

जवान होना या जवान न होना शहनाज के बस में तो था नहीं। अगर कोई जात का लड़का नहीं मिल रहा है तो इसमें भी उसका कोई कुसूर नहीं था। फिर भी सकीना बी उफ सुबहन उठते-बैठते अल्लाह मियां को अपनी तरफ से समझाती रहती थी कि शहनाज मर गयी होती तो अच्छा होता। अब भी मर जाये तो बुरा नहीं। पर अल्लाह मियां ने तो जैसे अपने कान में तेल डाल रखा था। सुबहन का यही खयाल था और इसीलिए न सिर्फ यह कि शहनाज मरी नहीं बल्कि बीमार पड़-पड़के इलाज में पैसे ऊपर से खर्च करवाने लगी।

शहनाज में जो डबल खराबी थी वह यह थी कि उसे पढ़ने का शौक था। और कुछ न मिलता तो जाहन के यहां से आनेवाली पुड़िया के कागज सँभालती फिरती जो आम तौर से पुराने अखबार के टुकड़े होते। कभी-कभार स्कूल की कापियों का कागज निकलता। रूलदार कागज पर लिखे हुए खत भी निकल आते कभी कभार वह उन्हीं को पढ़ती रहती और सुबहन के कोसने की तरफ से उन क्षणों में उसके कान बंद हो जाते।

एक दिन वह इसी तरह का कोई खत पढ़ रही थी। किसी लड़के ने मीना कुमारी को लिखा था कि वह उस पर एक जान छोड़ हजार जान से आशिक है। सातवें दर्जे में पढ़ता है और बम्बई आना चाहता है कि अपने मन मंदिर की देवी मीना कुमारी के दर्शन कर सके सुबहन ने वह खत छीन लिया और माँ-बेटी में पहली लड़ाई हुई। शहनाज ने पहली बार माँ को तुर्की-ब-तुर्की

जवाब दिया और उस दिन कटरा भर में यह बात फैल गयी कि शहनाज़ जवान हो गयी है।

उसी समय देश आ गया। सकीना बी से बोला, "यह आप अम्मां को डाँट क्यो रही हैं चाची ?'

शहनाज़ तो उसे घूरकर रह गयी पर सुक्कन चमक के बोली "खुद पूछ ल्यो ई हेड मास्टर होयेवाली हैं।' फिर वह शहनाज़ की तरफ मुडी और बोली, "ए धिया, उतना गुमान करो जो सपड जाये। दू वखत की रोटी तो जुडती नही। सिलाई-कढाई का शौक न भया कि घर मे दू पैसा आये। रोग लगाइन हैं पढे का "

सुक्कन बेतकान बोलती चली गयी और उसकी आवाज की आग मे शहनाज़ मोम की गुडिया की तरह पिघल गयी। वह रोने लगी। देश शहनाज़ को रोता नही देख सकता था। बोला, "देखिए चाची ! अम्मा को आप रुला नही सकती हैं ए तरह। साफ बात है। हम मास्टर बदर का ट्युशन लगवाये देते हैं। रोज आके पढा जाया करिह। मुदा बिल्लो को पता न चले।' फिर वह शहनाज़ के पास गया, "ए अम्मा, चलो, अब हँस दो "

शहनाज वाकई हँस दी और खुशी मे यह भी भूल गयी कि 'अम्मा' पुकारने पर वह देश को बचपन से कोसती चली आ रही है। वह हुआ यू था कि देश एक दिन चिलचिलाती दोपहर मे आया। तब देश भी इतना बडा नही था। और शहनाज़ तो बहुत ही छोटी थी। शम्सू मिया इतने बूढे नही थे। वह एक खूरें पलग पर लेटे खर्राटे ले रहे थे और शहनाज अकेली बैठी अपनी गुडिया से खेल रही थी। दिल ही-दिल मे वह गुडिया की मा बनी हुई थी और आज ही उसने एक अहीरिन को देखा था कि वह अपने बच्चे को दूध पिला रही थी। इसलिए वह भी अपनी गुडिया को दूध पिलाना चाहती थी। शम्सू मिया की तरफ पीठ करके उसने अपना कुरता उठाया और गुडिया का मुह अपने सीने से लगा दिया। और ठीक उसी वक्त आवाज आयी, "अम्मां" और उसने जो पलट के देखा तो यह देखा कि आगन मे देश खडा है। वह देश से झेंप गयी और झेंप मिटाने के लिए लगी उसे कोसने। शम्सू मिया की आख खुल गयी। उन्होंने बीच बचाव करवाना चाहा, पर वह इस डर से नही रुकी कि कही देश अब्बा को यह बता न दे कि वह कर क्या रही थी

उसी दिन से देश उसे अम्मां पुकारने लगा और उसकी देखा देखी अब्दुल हक भी उसे अम्मा पुकारने लगा। फिर वह सारे मुहल्ले मे अम्मा कही जाने लगी और उसका लगभग सारा समय लोगो को कोसने मे गुजरने लगा

वह साल में बस एक दिन, और वह भी एक पल के लिए, बहन बनती। राखी के दिन राखी बाधते समय। पर उस दिन भी देश आता तो अम्मां ही कहकर उसे आवाज देता। परतु उस दिन वह कोमने सुनाती नहीं आती। वह कलाई बढाता। वह राखी बाध देती। फिर उसके मुह म मिठाई का एक टुकडा रखती और दिल-ही दिल मे अल्लाह मियां से कहती "अल्ला मियां! चाहे अम्मा पुकारे चाहे कुछ, पर मेरे भैया को सलामत रखना।"

और सच्ची बात यह है कि खुद देश को पूरा पूरा पता नहीं था कि उसकी जिंदगी म इस बीमार बीमार सी शहनाज की असली जगह क्या है? वह कितना प्यार करता है? उसके बिना जिंदगी कुछ कम-कम सी लगती। जैस कुछ छिपाके बैठ गयी हो। ऐसा लगते ही वह सीधा शम्मू मियां के घर जाता और हाँक लगाता, "अम्मां।" और घर के किसी-न किसी कोने से शहनाज के कोसनों की आवाज आने लगती और देश को इत्मीनान हो जाता कि जिंदगी मे कोइ गडबड नहीं है। सब ठीक ठाक है।

देश को यह भी नहीं मालूम था कि शहनाज रोती हुई कैसी लगती है। उसने उसे रोते हुए देखा ही नहीं था। उसने तो उसे जब देखा कोसत हुए देखा, इसीलिए जब पढाई की बात पर उस दिन सुक्कन की डाँट पर शहनाज रोयी तो देश घबरा गया और उसे पता चला कि वह सबकुछ देख सकता है पर शहनाज को रोता हुआ नहीं देख सकता और इसीलिए उसने त किया कि शहनाज पढना चाहती है तो वह उठायेगा उसकी पढाई का खच। पर बिल्लो से डरता भी था। मास्टर बदर की तनख्वाह जाहिर है कि हाउस फण्ड ही से निकलेगी और उसे हजार झूठ बोलने पडेंगे

और यू देश की वजह से मास्टर बदर और शहनाज की पहली मुलाकात हुई। मास्टर बदर पर्दे के बाहर। शहनाज पर्दे के अदर। इश्क तो लोहे की दीवार न माने, टाट के एक पर्दे म क्या रखा है! शहनाज ने पुडिया को पढना छोड दिया। 'माटसाब उसे लिखन का काम बहुत देन लगे। वह दिन-भर माटसाब के लिए लिखने का काम करती रहती। और चूकि सुक्कन और महनाज दोना ही लिखना-पढना नहीं जानती थी, इसलिए खतो के जरिय इश्क चलता रहा, यहाँ तक कि एक दिन बद्रुनहसन यानी माटसाब ने पिक्चर देखने का प्रोग्राम बना डाला। मटनी शो ही देखा जा सकता था। दोनो अलग-अलग निकले। अलग अलग रिक्शे पर बैठे। अलग अलग रवाना हुए और सिनमा हाउस मे मिल गय। पहुचने मे जरा देर हो गयी। फिल्म शुरू हो चुकी थी। पर फिल्म देखना किसे था! वह दानो तो साथ रहन के लिए आये

थे। यह बात उन्हें इण्टरवल में मालूम हुई कि उनके पासवाली कुर्सियों पर बिल्लो और देश हैं।

देश या बिल्लो ने कुछ नहीं कहा। बिल्लो ने उन दोनों को आइसक्रीम खिलायी। देश मजे में खूब भुनी हुई मूंगफलियाँ खाता रहा और पुड़िये में मिला हुआ नमक चाटता रहा फिल्म के बाद शहनाज को बिल्लो ने अपने रिक्शे पर बिठा लिया। मास्टर बदर को देश ने अपने रिक्शे पर लिया।

"देखो भैया माटसाब, सौ की सीधी एक। शहनाज हमरे दोस्त की बहिन और हमर उस्ताद की बटी है। बिआह हो सकता है। चक्कर नहीं चल सकना। का इरादा है ?"

तीसरे दिन शहनाज और मास्टर बद्रुलहसन की शादी तै हो गयी। यही वह मास्टर बद्रुलहसन हैं जिन्होंने एक रात 'कटरा मीर बुलाकी' के नीचे चाक से 'कटरा बी आजू' लिख दिया और यह सारा चक्कर चल पड़ा।

सबसे पहले यह बात हेडकांसटेबिल जगदम्बाप्रसाद ने थाना कोतवाली के इनचाज अश्फाकुल्लाह खाँ एस० आई० को बतायी कि आशाराम आजकल कटरा मीर बुलाकी के चक्कर बहुत लगा रहा है। खाँ साहब ने यह बात डी०एस०पी० सूरजनाथ सिंह को बतायी। सूरजनाथ सिंह ने डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट से कहा। डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट ने डी०आई०एस० को चौकन्ना कर दिया और सरकारी पहिया चल पड़ा और 'के-बी ए' फाइल खुल गया।

आशाराम अपना सीरियल न लिख सका।

वह काम मैं कर देना चाहता हूँ ताकि सनद रहे और वक्त पर काम आये।

कटरा मीर बुलाकी

कारपोरेशन के कागजा मे यह बात जरूर लिखी होगी कि यह कटरा मीर बुलाकी किसने बनवाया था। पर कारपोरेशन कौन जाये और सच पूछिए तो बनवानेवाले से हमे लेना देना क्या ! किसी न किसी ने बनवाया ही होगा।

कारपोरेशन मे इसका नक्शा भी होगा। मैंने उसे देखने का चक्कर भी नही चलाया, क्योंकि उस नक्शे से भी हमे क्या लेना-देना ! लेकिन एक बात बिलकुल साफ है कि अपने असली नक्शे स अब कटरा मीर बुलाकी का कोई खास तअल्लुक नही रह गया है, क्याकि लगता है कि असली कटरे के चारा तरफ यह कटरा उगता चला गया। लेकिन यह फैली हुई चीज भी कटरा मीर बुलाकी ही कही जाती रही। असली कटरे की चौहद्दी की दीवारो का गायब हुए भी एक जमाना हो गया। और अब तो यह तै करना भी सम्भव नही कि असली कटरा कहा खत्म होता है और 'टालडा कटरा कहाँ से शुरू होता है। समय इन चाहदिदया का नही मानता। कारपारेशन मानती हो तो माना करे। सरकारी तार पर इसीलिए गली के साथ सडक तक आ जानेवाला कटरा 'गली द्वारिकाप्रसाद के नाम से जाना जाता था, पर आम लोग उसे कटरा मीर बुलाकी ही कहा करते थे और डाकखानेवालो का भी यही नाम याद था, चुनाचे कोई ट्रेनी पास्टमैन होता तो गुरु उस पते की यह बात बताना न भूलता कि वह 'गली द्वारिकाप्रसाद के चक्कर मे न पडे क्याकि कोई खत लिखनवाला पत मे 'गली द्वारिकाप्रसाद नही लिखता।

यह बात अपनी जगह दुरस्त है कि स्वर्गीय द्वारिकाप्रसाद सन '४२ के एक

शहीद के और मौर बुनाती, कहा है कि, ताजा में मरे थे इसलिए कटरवासी को द्वारिकाप्रसादजी ही का साथ देना चाहिए था। कुछ जनसभा ने यह खबर भी फैलायी कि यह मौर बुनाती क्या लिखे रहा है हर गली और हर सरकारी कागज पर और साल तौर से अब मौर बुनाती के परखचे पार्लियामेंट भी जा चुके हैं। पर कटरेवालों ने कहा कि यह राजनीति के खातिर में नहीं पड़ता। किसी के पार्लियामेंट चले जाने से कहीं का नाम क्या बदल दिया जाय! नाम ही बदलना है तो गुरु भालचन्द्र पहलवान, दाम्भू मिर्धा, मानी खेराड़ी, जग दम्बा प्रसाद त्रिपाठी, पंडित हरबाई, पन्नालाल मिस्त्री, सभी का नाम चल्ला जाय। जनसभा के पास इसका जवाब नहीं था। पर अब पार्टी के दरजन भेंग गयी थी तो मैं क्या कि उस सड़क का नाम द्वारिकाप्रसाद मार्ग रख दिया जाय जो कटरवालों की बनायी हुई आग बनी जाती है और जिस पर आग खड़कर बाबू गौरीशंकरलाल पाण्डेय की थाती थी।

बाबूजी को जब यह पता चला कि जनसभा यह खबर चला रही है तो उन्होंने कांग्रेस रंग पकड़ी और उन्होंने एक प्रेस कान्फरेंस बुलाकर बयान दिया कि इस बयालीस के शहीदों में जनसंघ का क्या मतलब, उनकी पार्टी कांग्रेस और बचन कांग्रेस है। और यदि सड़क का नाम बदलना ही है तो महात्मा गांधी मार्ग, या नेहरू रोड क्यों न रखा जाय। मैंने उनसे दिन की बात कही कि यह सड़क स्वर्गीय पिता के नाम पर इस सड़क का नाम पण्डित शिवशंकर पाण्डेय मार्ग रखवाना चाहते थे। यह बात दूसरे कांग्रेसियों ने उठायी और जिला कमेटी ने प्रस्ताव पास कर दिया कि इस सड़क का नाम पण्डित शिवशंकर पाण्डेय मार्ग' रखा जाना चाहिए। यह पण्डित शिवशंकर पाण्डेय नामक तहसीलदार थे और सन बयालीस के आन्दोलन से उनका कोई सम्बन्ध नहीं था, सिवा इसके कि मौका गनीमत जानकर उन्होंने अपने आदमियों से सरकारी गवाही दिलवा दिया और बाद में उसी पैसा से उन्होंने दूसरा कारोबार शुरू किया जिसमें भगवान की दया से दूनी रात चौगुनी तरक्की हुई और जहां बच्चा पर था वहां तीन मंजिले की पक्की कोठी खड़ी हो गयी। यह बात कोई छिपी-ढंकी नहीं थी इसीलिए मुहल्ला कांग्रेस कमेटी से लेकर अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी तक, किसी कमेटी ने उन्हें कोई सम्मान देने की कोई बात नहीं चलायी। पर अब सन बयालीस की बात पुरानी हो चुकी है इसलिए बाबू गौरीशंकरलाल पाण्डेय अपने पिता को देशभक्त साबित करने पर तुले हुए थे क्योंकि यही एक बात उन्हें विधायकी की कुर्सी से दूर किये हुए थी।

तो, पहले एक मौलवी शमीमुल हसन अहरारी का शीशे में उतारा गया।

यह मोल्वी शमीमुल हसन अहरारी स्वर्गीय पण्डितजी (पण्डित नेहरू नहीं, पण्डित शिवशकर पाण्डेय) के दोस्त थे और आज सरकार स जेल-यात्रा की पेंशन पा रहे थे। शमीम साहब ने 'सन बयालीस—एक आपबीती' लिखी। इस आपबीती म उन्होने यू ही एक जगह पण्डित शिवशकर पाण्डेय का जिक्र निकाल दिया और लिखा यह बात वह अपने जाती तजरुबे की बुनियाद पर कह सकते हैं कि उनके बार म यह बात बिल्कुल गलत उडायी गयी है कि सरकारी खजाने का पैसा उन्होंने खुद-बुद किया। वह दो लाख अस्सी हजार रुपय उन्होने खुद मोल्वी साहब के सामने मरहूम डाक्टर लोहिया और आचाय नरेन्द्रदेव को दिये थे

यह किताब छपी तो हगामा खडा हो गया। सोशलिस्टो ने आसमान सर पर उठा लिया। पर मौलाना अपनी बात पर डटे रहे और उन्ह झुठलाने के लिए न लोहियाजी का बुलाया जा सकता था न आचायजी को।

इस बहस मे बाबू गौरीशकरलाल पाण्डेय नही पडे। किताब लिखवाने और छपवाने मे कुल दस हजार खच हुए थे। दस हजार उनके लिए कोई चीज नही। पर वह बैठ नही गये। उन्होंने दिल्ली के एक पजाबी पत्रकार को अपन पिता की जीवनी लिखने का काम सुपुद कर दिया। उसने दस हजार लिये। हफ्ते भर मे किताब लिख दी। उस जीवनी ने साबित कर दिया कि स्वर्गीय पण्डितजी कैसे जबरदस्त देशभक्त थे!

इन दोना किताबो से लस होकर जिला काग्रेस कमेटी ने प्रस्ताव पास किया कि स्वर्गीय पण्डितजी की गिनती देशभक्तो मे होनी चाहिए और उनके नाम का डाकटिकट निकलना चाहिए। टिकट निकल गया। और जब नाम का टिकट निकल गया तो एक सुसरी सडक की क्या हैसियत! सडक का नाम 'पण्डित शिव शकर पाण्डेय माग रख दिया गया और जनसघी कुछ न कर सके। यू भारतीय सेकुलरइज्म ने भारतीय साम्प्रदायिकता को सरे मैदान हरा दिया। (एक चुनाव की तकरीर म बाबूजी ने यही कहा था।)

पर बिचारे सन बयालीस के असली शहीद द्वारिकाप्रसाद जहाँ-के-तहाँ रह गय और इसलिए कारपारशन न फैसला किया कि कटरा मीर बुलाकी स जो गली शिवशकर पाण्डेय माग तक जाती है उसका नाम तो गली 'द्वारिकाप्रसाद रख ही दिया जाय, चाह लाग यह नाम याद करें या न करें।

गली के नुक्कड पर टीन का बोड लग गया जिस पर देवनागरी मे लिखा हुआ था गली द्वारिकाप्रसाद। उसी के नीचे कटरेवाला ने फारसी और देवनागरी मे लाल रग से कटरा मीर बुलाकी भी लिख दिया ताकि कुछ अर्से के बाद आने-

वाला यह गया नाम देशराज सिंह का है।

इस गली के चौराहे पर अगर कटरे की तरफ मुंह करके खड़ा हुआ जाय तो दाहिनी तरफ और जो कटरे की तरफ पीठ की जाय तो बायीं तरफ भालू पहलवान का घर-अखाड़ा था।

पहलवान का पूरा नाम भोलेनाथ सिंह था। पर कहे जाते थे भोला या भोलू पहलवान। अपने उस्ताद पहलवान अब्दुल करीम के देहान्त के बाद अखाड़े की पगड़ी भोलू पहलवान को मिली। नागपंचमी के दिन गुरु को पगड़ी बाँधी जाती। यह पगड़ी उस्ताद अब्दुल करीम खाँ के बेटे नन्हू मियाँ बाँधा करते थे। फिर बड़ी धूमधाम से पहलवान का जुलूस निकलता और उस्ताद बाजे गाजे के साथ अखाड़े में ले जाया जाता और वहाँ वह हर पट्ठे के बदन पर अखाड़े की मिट्टी लगाते और फिर सारा अखाड़ा 'या अली' के नारों से गूंज जाता।

पहलवान ने शादी नहीं की।

आशाराम ने अपनी डायरी में पहलवान के कुँवारे रह जाने के बारे में जो लिखा है मैं नीचे उसका हिन्दी अनुवाद पेश करता हूँ

"कटरा भीर बुजुर्गों में कोई खुल के तो यह नहीं कहता, पर कई लोगों ने इशारे में यह अवश्य कहा कि पहलवान अपने गुरु उस्ताद अब्दुल करीम खाँ की बड़ी इसमत बीवी पर आशिक हो गये थे। जाहिर है कि इसमत बीबी से उनकी शादी नहीं हो सकती थी, इसलिए इसमत बीवी तो कुछ साल बाद मर गयीं और पहलवान ने कसम खा ली कि वह जिन्दगी भर ब्याह ही नहीं करेंगे।

मैं आशाराम की इस राय से सहमत नहीं हूँ और उसका कारण यह है कि भालू पहलवान-जैसे लोग अगर अपने उस्ताद की बेटी पर आशिक होंगे तो उन्हें ऐसा लगेगा जैसे वह अपनी बहन पर आशिक हो गये हैं और नतीजे में कुँवारे नहीं रह जायेंगे, आत्महत्या करके मर जायेंगे।

इसलिए मैंने अपनी तरफ से छानबीन शुरू की तो पता चला कि देशराज सिंह के पिता रतनकुमार पहलवान के दोस्तों में थे। दाँत काटी दोस्ती थी। यह खायें तो उनका पेट भर जाता था और वह पियें तो प्यास इनकी बुझती थी। देश की माँ मुनिया पहलवान को राखी भी बाँधती थी। फिर ऐसा हुआ कि एक साल मुहर्रम होली के साथ आ गया। इन दोनों के साथ आने में भरत को कोई कुसूर नहीं था। मुनिया ने बूढ़े ताजिये पर मन्नत मान रखी थी कि जो बेटा होगा तो वह फूल की चादर चढ़ायेगी। तो भरत मुनिया को लेकर चादर चढ़ाने गया। दंगा शुरू हो गया और यह दोनों मियाँ-बीबी मारे गये।

जाते समय वह बच्चा पहलवान के हवाले कर गये थे कि घर मे कोई था नही तो पहलवान ने उस बच्चे को फिर अपने आपसे जुदा नही किया। उन दिना एक बडे अच्छे और खाते पीते घराने म उनकी शादी की बात भी चल रही थी। पर पहलवान न सोचा कि जो उन्हान शादी की तो बच्चा हागा और शायद अपना बच्चा हो जाय तो देश की तरफ से उनका ध्यान हट जाये। इस लिए उन्हाने शादी न करने का फैसला कर लिया। फिर थोडे दिन बाद जब उनकी बहन रुक्मनी बेवा होकर घर मे आ गयी तो शादी का सवाल बिलकुल ही खत्म हो गया क्योकि रुक्मनी, उसकी बेटी बिल्लो और देश ही को पालना मुश्किल था तो घर मे एक पट और क्या बढाते! रुक्मनी ने बहुत जोर डाला पर वह न माने और थक हारकर रुक्मनी भी चुप हो गयी। फिर वह हैजे मे मर गयी तो घर मे पहलवान की शादी की बात करनेवाला ही कोई न रह गया और पहलवान के दिमाग मे फिर शादी की बात ही नही आयी। हाँ, देश और बिल्लो की शादी वह अलबत्ता बडे धूमधाम से करना चाहते थे और उसी के लिए एक एक पैसा जोड रहे थे।

चाहते तो वह यह भी थे कि उनके बाद अखाडे की पगडी देश के सर बँधे, पर कुश्ती मे देश का जी ही नही था। उसे तो मोटरें फैसिनेट करती थी। इसलिए उसे शम्सू मिया उडा ले गये। शम्सू मिया की जगह अगर किसी और ने यह हरकत की होती तो शायद पहलवान बवाल खडा कर देते, पर शम्सू मिया उनके उस्ताद के बटे थे। बस, यही सोचकर वह दिल और ज़बान मार गये।

चूकि बचपन ही से बिल्लो और देश की शादी की बात चल रही थी इसलिए उन दोनो ने भी इस बात को मान लिया था।

बिल्लो बडे दिल की लडकी थी पर ज़रा कजूस थी। एक एक पैसे को दाँत से पकडती थी और हमेशा इसी बात पर देश से उसका झगडा होता था कि देश की हथेली मे तो जसे छेद था, पैसा टिकता ही नही था।

देश और बिल्लो ने बचपन ही से अपना एक घर बनवाने का फैसला कर रखा था और बचपन ही से डाकखाने मे हाउस फण्ड का सेविंग बक अकाउण्ट खुल गया था। उन्होंने एक ज़मीन भी पसन्द कर रखी थी। यह ज़मीन पहलवान के चायखाने के दूसरे हाथ पर न जाने कब से खाली पडी थी। छोटी सी जमीन थी। बिल्लो के सपने के लिए काफी और देश के सपन के लिए नाकाफी। और चूकि बिल्लो की जबान के आगे कटरा मीर बुलाकी मे किसी की नही चलती थी तो भला देश की क्या चलती! इसलिए वह भी इस बात पर राजी हो गया था कि उनका घर उसी जमीन पर बनेगा। उनके घर मे एक कमरा पहल-

खान के लिए भी बननेवाला था और तै यह हुआ था कि पुराना घर, जो साढे तीन रुपये माहवार किराये पर था, शम्सू मियाँ को दे दिया जायेगा क्योंकि धीरे-धीरे उनका घर न रहने लायक होता जा रहा था और उसकी मरम्मत करवाना उनके बस मे नही था।

फज्जू की बेनाम लाण्डरी शम्सू मिया की बाहरी बैठक मे थी जिसका साढे सात रुपया किराया आता था। जब से यह लाण्डरी बिल्लो ने ले ली थी, किराया दस रुपये कर दिया गया था। बिल्लो ने अपनी लाण्डरी का नाम 'जनता लाण्डरी' रखा था।

पहलवान को बिल्लो का यह काम बिल्कुल पसन्द नही था, पर दो दिन जो खाना पानी छोडा तो पहलवान झट से समझ गये कि काम मे क्या बुराई है।

पर बिल्लो पहलवान या देश के कपडे भी मुफ्त नही धोती। उनके लिए रेट भी कम नही करती थी और उधार काम तो वह करती ही नही थी।

इसी जनता लाण्डरी के छज्जे तले रात को इतवारी बाबा सो लिया करते थे।

दिसम्बर की एक ठण्डी सुबह को सूरज के दात बज रहे थे और वह कुहर का कम्बल ओढे अपनी यात्रा शुरू करने के बारे मे सोच रहा था। कटरा मीर बुलाकी मे सन्नाटा था। कुहरे के टपकने की आवाज के सिवा कोइ आवाज नही थी। पहलवान का चायखाना अभी नही खुला था। जोखन की दुकान अभी बन्द थी। जगदम्बाप्रसाद ने अभी सुबह की पूजा शुरू नही की थी। बस, जनता लाण्डरी का एक दरवाजा जरा-सा खुला हुआ था और एक अँगीठी पर अलमूनियम की पुरानी केतली रखी हुई थी और अन्दर बिल्लो ने कपडा पर इस्त्री करने का काम शुरू कर दिया था। वह धीरे धीरे गुनगुना रही थी

मोको खरच दयि जाना पिया जब जाना बिदेसवा रे
ननद मोरी री बडी री लडाका
वे को खमम कर जाना पिया जब जाना बिदेसवा रे
मोको खरच दयि जाना पिया

वह उठी। केतली मे पानी खौलने लगा था। उसने कप्पर के एक प्याले मे केतली से चाय उँडेली और उसे फूक-फूककर पीने लगी। अभी उसका प्याला खत्म नही हुआ था कि इतवारी बाबा आ गये। उनके दात बज रहे थे। और अपने आपको गम रखने के लिए वह अपने दोनो हाथो को तेजी से मल रहे थे।

बोले, "बाप रे बाप! का सर्दी है आज! कुलफी जम गयी।"

बिल्लो ने कहा, "केतली मे चाय है। पी लीजिए एक पियाला।"

यह कहकर बिल्लो ने इस्त्री सँभाल ली और इतवारी बाबा ने अपने लिए चाय उँडेलकर चुसकियाँ लेना शुरू किया। जब गम गम चाय हलक से नीचे उतरी तब वह बोले, 'चाय भी क्या चीज बनायी है भगवान ने!"

बिल्लो बोली, "अरे भगवान का जानें चाय बनाना! हम बनाया है।"

लाण्डरी में सन्नाटा हो गया। बिल्ला इस्त्री करती रही और इतवारी बाबा चाय की चुसकियाँ लेते रहे। थोड़ी देर के बाद इस्त्री करते करते बिल्लो ने कहा, 'जब हम लोग का घर बन जायेगा तो लाण्डरी भी वहीं चली जायेगी। चाय पीय के वास्ते आपको चल के आये को पड़ेगा।"

"अरे ई घर वर का चक्कर छोड़ बेटा! उ जमाना सस्ती का रहा जब साहजहा बादसाह ने आगरे में ताजमहल खड़ा कर दिया रहा। ई जमाना और है। पहले जेतना खरच शादी बियाह में होता रहा आज ओसे दुना तिनगुना खरच क्रिया-कर्म में हो जा है।'

"जब बोलोगे जहरे बोलोगे।"

'एमे जहर वाले की ता कोई बात ना है बेटा! जिंदगी के तजरबे की बात बोल रहे। जमाना कुरग है।"

बिल्लो जल के कोई सख्त बात कहने ही वाली थी कि बच्चो के शोर की आवाज आने लगी और उसका ध्यान उस शोर की तरफ चला गया।

"लाट साहेब निकल आये घर से!" बिल्लो ने कहा, "इ लौण्डन के पेटमे भगवान घड़ी बाध दिहिन हैं जयसे। ऊ घर से निकला नहीं कि इन्ह पता चला नहीं। कम स कम चार आने रोज का लेमचूस बँटा जाता है। साढे सात रुपया महीना बचा लें तो साल भर म '

इतवारी बाबा हँस पड़ा।

बिल्लो बिगड़ गयी, "एमे हँस्से की का बात है?"

"अरे बटा, साढ़े सात रुपये की आज हैसियत का! हमरे लड़कपन में पाच रुपय म चार परानी का पूरा घर चल जाता रहा इज्जत से और मजे में। आज साढे सात रुपये में एक दिन ना चल सकता। रुपया तो बस अब नाम का रह गया है। जेव जितनी जियादा होती जा रही पयसा कम होता जा रहा। पहिले लाग हमरी तरफ आवे भीक देते रहे। अब हम्में देखके सड़क की पटरी बदल लेहैं। बहुत स लोगन स ता भीक माँगना छोड़ दिया है, केह मारे कि हम्में उनके घर का हाल मालूम है '

बच्चा का शोर पास आता जा रहा था। बिल्लो ने झल्ला के इस्त्री पत्थर पर टिका दी और बाहर की तरफ देखने लगी। जाखन की दुकान नजर आ

रही थी। देश के साथ बच्चे जोखन की दुकान तक आ गये थे।

देश ने बच्चा को डाटा, "बस, हुरलड बंद। कुडी हो जाव लोग!"

बच्चे लेमनड्राप्स चुभलाते 'कुडी हो गये। और अब उसने जोखन दुकानदार की तरफ देखा जो जगदम्बाप्रसाद हेड क्लासटेबिल से कह रहे थे, "एक दिन ता हम बाबू गौरीशकरलाल पाण्डेय से साफ साफ कह दिया "

देश ने पूछा, "का कह दिया जोखन चा?"

'एही' जोखन ने कहा, 'कि सासलइज्म के आये मे बहुत देरी हो रही है। बिटिया रानी म बोलिए कि तनी जल्दी करे। देस मे नही बन सकती ता दसा वर से मँगाये। फारेन मे आडर दें। तिस पर वह बहुत जोर से हँस।"

"हम्म एक बण्डल लाल मुहम्मद देकर बाकी कहानी सुनाइए।" देश ने कहा।

"अल्ला कसम, हम मजाक ना कर रह देशराज!" जोखन ने कहा।

"सोसलइज्म म यही तो डबल खराबी है कि फारेन मे नही बन सकती। कपडे की तरह बदन के नाप की काटे को पडती है।" देश ने कहा।

"एही तो बाबू साहब भी बोले! फिर कहे लगे, जोखन मिया। तुमको तो सेण्टर मे मिनिस्टर होना चाहिए। यग टरक लोग सिरीमती गाँधी को बहुत परीशान कर दिय हैं। तिस पर हम कहा, बाबू साहेब। ई ससुर लोग यग टरक कहा से हो गय। एक्का जन पचास मे कम ना है। और भई, टरक हैं तो टरकी जायें।"

शम्सू मिया आ गये।

"सलाम उस्ताद।" देश ने कहा।

"जीते रहो बटा।"

"एतना सवेरे-सवेरे कहा चल दिये साहब?"

"का बतायें बेटा!" शम्सू मिया ने कहा, "कल तारे चले आये के बाद अशफकुल्लाह सों कोतवाल की फटफटिया आ गयी रही सरविस के वास्ते। नौ बजे माँगिन हैं।"

उन्हे आगे बढता देखकर जोखन ने कहा, 'बीडी ना लीहो का शम्सू भाई?"

"ना। हम दस दिन के वास्त बीडी छोड दिया है। खाँसी बहुत आ रही।" शम्सू मिया चले गये।

"ए देसराज।" जगदम्बाप्रसाद बोले, "हम सुन रह कि शम्सू मिया महनाज का रिश्ता तोडे की सोच रह।"

"सुना ता हम भी है।" देश ने कहा। फिर वह जोखन की तरफ मुडा। "आपसे तो दूर-पास की रिस्तेदारी है। कहिए ना कि "

"ना साहब।" जोखन ने बात काटी, 'अव्वलन तो हम कोई के मामले मे

बोलते ही नही। काई बात पर दिल ढेर दुढता है तो हम खडे हो जा हैं निमाज पर। माना कि महनाज बेवा हो गयी। पर उमिर का है बिचारी की! और अल्ला मियाँ रजिस्टर पोस्ट से तो रिस्ता भेजेवाले नही हैं। जरा-सी तल-बिचल हो गयी तो महल्ले-भर की नाक कट जायगी।"

"गरीब महल्ले के मुह पर नाक अच्छी भी ना लगती जोखन चा! हम तो एक दिन आसाराम से साफ साफ पूछ लिया कि भाई मिनिस्टर लोग तो घूस खाके जी लीह, पर जनता बेचारी का खाये! ऊ लगे लेक्चर झाडे कि माक्स-वाद ई और माक्सवाद ऊ। तो हम कहा, बस रह दिजिए। लेक्चर से पेट भर सकता तो हम लेक्चर देसावर भेजते। लेक्चरे की ता पैदावार इफरात है अपने मुलुक म। बीडी दिजिए।"

जोखन ने उसे चुपचाप लाल मुहम्मद बीडी का एक बण्डल दे दिया और वह साइकिल लिय आगे बढ गया। तब जगदम्बाप्रसाद न कहा, "इ दूनो की शादी कब होगी आखिर?"

'मैदाने हसर म।" जोखन ने कहा, "न घर बनिहे न शादी होइह। न नौ मन तेल होइहे न राधा नचिह—ओही किस्सा है।"

किस्सा सचमुच यही हो गया होता, पर कहावत बनानवाला का बिल्लो की जिद से परिचय नही था। वह इसीलिए बडे-बडे सपने देखती नही थी कि जिन्हें पूरा करना ही सम्भव न हो। वह अपनी आँख के नाप के सपने दखती थी और इसीलिए अब कोई उससे शादी की बात नही करता था। सब जानत थे कि घर बनवाये बिना वह शादी नही करेगी। और इस घर के सपने ने उसे ऐसा जकड रखा था कि वह किसी और बात के बारे मे सोचती भी नही थी। और इसीलिए देश का खिलण्डपन कभी-कभी उसे खल जाया करता था। वह जानती थी कि साढे सात रुपये की रकम कोई ऐसी रकम नही होती कि उसके लिए जमीन आसमान एक किया जाये। पर जो यह साढे सात रुपय महीने-के-महीने पोस्ट आफिस म जमा होते रहते तो घर कुछ पास ही आ जाता। पर वह भी जानती थी कि देश फिर देश है। वह बदल नही सकता। और उसे यह पता नही था कि यदि देश बदल जाये और पैसे को दाता से पकडने लगे तो उसे अच्छा लगेगा या नही। और वह देश के बारे मे कोई रिस्क लेना नही चाहती थी। इसीलिए दिल ही दिल म ता उसने कटरे के बच्चा की मिठाई का बजट पास कर रखा था, पर इस खर्चे पर देश को डाटन स बाज नही आया करती थी। वह जानती थी कि अगर डाट डपट बन्द हो गयी तो देश इसी तरह के और खर्चे भी निकाल लेगा।

इसीलिए देश ने जैसे ही दुकान मे कदम रखा, वह साँस लेकर अपनी महाभारत के लिए तैयार हो गयी। पर इसके पहिले कि वह बोले, देश इतवारी बाबा से लग गया।

"इ का भाई! इतवारी बाबा आज पीर को कैसे देखाई दे रह?"

"हम आज से, का कहते हैं चौदह दिन की ऊ वाली छुट्टी को जो सरकारी लोग ले हैं, ओही छुट्टी पर है।" इतवारी बाबा ने कहा।

"कैजुवल लीव।" देश ने कहा।

'हाँ।" बाबा ने कहा, "अपनी जगह को चार रुपये रोज पर उठा दिया है।"

"चार रुपये रोज पर!" बिल्लो ने कहा, "तो ऊ बेचारे को का मिलेगा?"

"इलाहाबाद जैसे शहर मे भी, कोई अच्छा फकीर होय, तो तीस-चालिस रुपया रोज कमा सकता है।"

"तीस-चालिस रुपया रोज कि तीस चालिस रुपया महीना?" देश ने पूछा।

"महीना ना, रोज।" इतवारी बाबा ने कहा, "परसाल हम खुद आठ हजार पर इनकमटैक्स दिया रहा।"

बिल्लो इस बीच मे पोस्ट आफिस की पासबुक और रूमाल मे लिपटे हुए कुछ रुपये लायी और देश की तरफ बढाकर बोली, "बाबा को इनकमटकस भरे दयो। अरे जो सरकार हमसे रोज एक हजार बेयमानी करती है ओसे हम साल-भर मे एक्को बेयमानी ना करें! हम त ना देंगे इनकमटक्स। एक सौ बारह रुपया है। जमा कर देना।"

"अच्छा।" देश ने रूमाल ले लिया।

"अपने हिस्से का निकालो।" बिल्लो ने हुक्म दिया।

देश सर खुजलाने लगा।

"सिर मे जूयी पड गयी है का?" बिल्लो चमकी।

"ऊ बात ना है।"

"फिर का बात है?"

"रात हम ऐसे ही चले गये उस्ताद के घर। मोली खैराती आज जायेवाले हैं उनके घर। उस्ताद को पता नही है। पर खैराती मियाँ यह पूछने जा रह कि यह कैसे उड रही है कि महनाज की सादी टूट गयी। उस्ताद के घर मे एक पैयसा न रहा तो "

"और तुम तो हो राजा हरिसचन्दर और वाडिया मोवीटोन के सखी हातिम के जुडवाँ औतार।" बिल्लो ने बात काटकर कहा।

"दस रुपया पचास पैयसा बचाया है।" देश ने जल्दी से कहा।

"दस रुपया पचास पैसा ! बाप-रे-बाप ! एतन म तो घर के दूना कमरन की छत पड जैयहे।" फिर बिल्लो ने माथा ठोक लिया, "कैयसे पागल आदमी से पाला पडा है। मामा ठीके कहते हैं। जाते-जात मिलत जाना उनम। कहते रहे कि कोई जरूरी काम है।"

देश जनता लाण्डरी स निकल आया।

बाहर जाडे की धूप थी। बच्चे खेल रह थे। देश के अदर बिल्लो के प्यार की धूप थी। सपने खेल रह थ। वह यह सोचकर मुस्कुरा दिया कि लड झगड कर आखिर बिल्लो न इतना पैसा जमा ही कर लिया कि घरवाली जमीन खरीदी जा सक। मामा ने यही बात करने को बुलाया होगा कि जमीन खरीदने के बाद शादी हो जानी चाहिए। अरे, देश का बस चलता तो कल की जगह आज शादी कर लेता। पर होगा तो वही ना जो बिल्ला चाहगी और बिल्लो घर बनाये बिना शादी करना नही चाहती !

घर।

यह सपना बिल्लो बचपन से देखती चली आ रही थी। देश को तो ऐसा लगता था कभी-कभी जैस बिल्लो आँखा म यह सपना लिये हुए पैदा ही हुई थी। शायद उसे वह चार साढेचार साल की बिल्लो अब भी जैसे जबानी याद थी जिस उसकी मा अपनी बेवगी, टीन के एक ट्रक, बाँस की ढक्कनदार एक झापी और गठरिया के साथ लेकर भाई के घर आयी थी और भाई से लिपटकर रोन लगी थी। पहलवान भी रोन लगे। पहलवान को रोता देखकर वह हँस पडा। पर उसने हँसी रोककर बिल्लो से पूछा, 'इ लोग रो काह को रहे हैं ?'

बिल्ला ने कहा, "हमरे अब्बा मर गये हैं ना।"

"हमरहू अब्बा मर गये हैं।" देश न कहा, "हमरी तो अम्माँ भी मर गयी है।' उसने बिल्लो पर रोब डाल दिया, 'मामा कहते हैं कि इह हमरे अब्बा भी है और हमरी अम्मा भी है। अम्माँ तो जनाना होती है। जैसे तोरी अम्माँ हैं। तो फिर मामा कैयसे हो सकत है हमरी अम्मा ?'

यह सवाल देश को बहुत दिनो से परेशान कर रहा था और बिल्लो को अपन राज और अपनी परेशानी म शरीक करने के बाद जैसे उसका जी हल्का हा गया। और जब तक पहलवान भाई-बहन का रोना धोना खत्म हो बिल्ला और देश मे दोस्ती हो गयी। मामा आसू पाछकर पलटे तो वह देश को समझा रही थी कि बढकर सबसे पहले वह घर बनायेगी, क्योकि जो उसका अपना घर होता तो उसकी दादी उस यू घर स निकाल तो नही सकती थी ना और यह सुनकर देश कह रहा था कि वह दोना मिलकर घर बनायेंग। इस पर बिल्लो

ने कहा कि उसके पास दू रुपया पन्दरह पैयसा जमा है घर बनाये के वास्ते, देश ने कितना जमा किया है। देश के पास केवल चालीस पसे थे। तो बिल्लो ने कहा कि चलो यही सही। और यू पहली ही मुलाकात मे वह बिल्लो के सपने मे साझेदार हो गया था और उसी दिन से बिल्लो उससे एक-एक पैसे का हिसाब ले रही थी और वह उसे एक-एक पैसे का हिसाब देकर खुश हो रहा था और उससे दो चार पैसो की चोरी करने मे सफल होने पर भी खुश होता चला आ रहा था। वैसे उसे यह खुशी मुश्किल ही से नसीब होती थी। और जिस दिन मामा न बिल्लो और देश की शादी का सपना देखा और बिल्लो की मा उस सपने मे शरीक हो गयी और बिल्लो को यह पता चल गया तो देश पर उसका हक जैसे मुसल्लम हो गया

दोनो जब अकेले होत तो शादी शादी खेलते। 'अम्मा' यानी शहनाज 'पण्डित' बनती। शहनाज बराती भी बनती और घराती भी और शादी होती। मिट्टी की मिठाई बाटी जाती। डालडा के डिब्बे का ढोल बजता—धीरे-धीरे कटरे के तमाम बच्चो को पता चल गया और वह देशरानी कही जाने लगी।

पर बिल्लो मे एक बात जरूर थी। वह लडाका थी। झल्ली थी। पर बडी चाहनेवाली भी थी। इसीलिए जब दोनो बडे हुए तो सारा कटरा उन दोना पर आशिक था और उन दोनो की शादी की राह देख रहा था। पर उनकी शादी के रास्ते मे घर का सपना दीवार बन गया था और बिल्लो की इस जिद का इलाज तो हकीम लुकमान के पास भी शायद ही रहा हो।

पहलवान ने भी उसे उसके हाल पर छोड दिया था, एक दिन यह कह के कि जब घर का रुपया जमा हो जाये तो तार से खबर कर देना

वह दुकान आते। पहलवानो की तस्वीरो को साफ करते, उन्हे अगर की धूनी देते। हनुमानजी की तस्वीर से माथा लगाते और फिर उस लौण्डे को माँ-बहन की गाली देना शुरू करते जो अँगीठी जलाने, गाहको को चाय देने और चाय की प्यालियाँ धोने पर नौकर था। और इतने मे कोई गाहक आ जाता और उन्हे छेडने को कह देना, "इ सब तो ठीक गुरु, पर आप अपनी दुकान पर इस मियाँ पहलवान की फोटो काहे को लगाय हैं ?" पहलवान को मालूम था कि गाहक उन्हे छेड रहा है। वह अपने हर गाहक को बचपन से जानते थे। कुछ को अपने बचपन से। कुछ का उनके बचपन से।

उस दिन भी वह अपनी तकरीर के बीच मे थे कि आगागम आ गये।

"क्या बात है मामा ?" आशाराम ने साइकिल से उतरते हुए कहा।

आशाराम ने पूछा लेकिन उसे पूछते समय भी मालूम था कि बात क्या है।

मामा ने जवाब देना शुरू किया, हालांकि उन्हें पता था कि आशाराम को बात मालूम है। बोले "अरे, बात वही पुरानी है भैया, कि हम्मे आधा पजाब, आधा बगाल, सिंध बिलोचिस्तान जाये का गम नही है। गम इस बात का है कि सिंध बिलोचिस्तान के साथ गामा पहलवान भी चले गये पाकिस्तान मे।"

"और सुना है कि बिचारे वहा बडी तकलीफ से मरे।" आशाराम ने कहा।

"आप तो नेता हो भैया,' पहलवान ने कहा,"बाकी ई बात हमसे सुन लिजिए कि परदस मे कोई आरामो से मरे तब्बो तकलीफे की बात है। हमसे अभइ ई बल के लौण्डे पूछते रहे कि हम अपनी दुकान मे गामा पहलवान की तस्वीर काहे को टागे है। हम कहा, बेटा ! हम साइदन छ नही ता सात बरस के रहे होंगे तब जब गामा पहलवान हिया एलाहाबाद मे दगल लडे आये। उस्ताद हम्म ले जाके उनके पैरन मे डाल दिया और कहा, इ बच्चे को दुआ दो पहलवान ! गामा अखाडे की एक मुटठी मटटी लेके हमर बदन मे मल दिहिन और बोले, बेटा ऐ मटटी दी लाज रखना। जब ऊ ना कहिन कि हम हिन्दू लौण्डे को अखाडे की मटटी ना लगायेंगे तो हम कैसे कह कि ऊ मुसलमान रह, एह मारे हम अपनी दुकान मे उनकी तस्वीर ना टागेंगे ? हिन्दू मुसलमान होना और चीज है। पहलवान होना और चीज है।"

आशाराम हँस पडा। बोला, "हिन्दुस्तान म हिन्दू मुसलमान कम हा जाय और पहलवान ज्यादा हो जायें तो कैसा मजा आय ! आपकी बाता का जवाब नही है मामा !'

मामा ने कहा, "अरे, हम का बात करेंगे भैया ? बात तो किया करते रहे स्वर्गीय पिताजी। ऊ जो बाबू गौरीशकरलाल हैं ना, नैसनल गैरजवाले ? जहाँ आपका दोस्त देश काम करता है ? "

"क्या हाल है देश का ?" आशाराम ने बात बदल दी।

"ओही रफ्तार बेढगी जो पहिले थी सो अब भी है।" मामा ने कहा, 'हम ता ओको कुस्ती सिखा के पछता रहे। अरे हम कहत हैं भैया, माटर मिकानिक बने म का बडाई है। ओही टके के तीन। आज तक कोई माटर मिकानिक का फोटा छपा है कोई पत्र-पत्रिका मे ?"

' अरे शादी कर दीजिए, खुद ही ठीक हा जायगा।"

"भैया की बात। जब तक ताजमहल नही बन जायगा तब तक कटरा मीर बुलाकी की मुम्ताजमहल भला बिआह कैसे कर सके हैं।"

"अरे कामरेड !' देश की आवाज आयी। फिर वह भी आ गया, "कब आय ?"

"बस, चला ही आ रहा हूँ।"

"जीनत अमान या रेखा से चक्कर चलाया कि नहीं ?"

आशाराम हँस दिया।

"का हाल है बम्बई का ?"

"बम्बई में हर चीज मिलती है, पर मामा की चाय नहीं मिलती। मैं तो हुड़क गया इस चाय के वास्ते।"

मामा ने मूछों पर ताव दिया।

"तुम्हारे क्या हाल हैं ?" आशाराम ने देश से पूछा।

"अरे, हमरा का कर सकती है सिरीमती गाँधी ! बाकी बदुल का हाल पतला है। पिछले महीने तनखाह नहीं मिली बिचारे का। आपके सिवा कोई और लीडर से तो हमरी दुआ सलाम है नहीं। तनी पूछिए न एक दिन बिटियारानी से की इ का आफ्त जात हुए हैं।'

"ए नरेना, चाय बना आशाराम बाबू के वास्ते। ऊपर से मलाई डाल देवे।" पहलवान ने हाक लगायी। फिर वह देश की तरफ मुड़े और बोले, "मास्टर बदुल को छोड़ो जरा। हम आशारामजी के सामने कह रहे कि हमरी जिंदगी का का भरोसा ! आज मरे कल दुसरा दिन "

देश ने बात काटी "अरे नहीं मामा। का बात करते हैं आप ! बुढौती में भी यमराज से तगड़े पड़ियेगा।

"सुन रहें अपने दोस की बात !" पहलवान ने आशाराम से कहा, "अब यह तरीका निकला है गुरु से बात करने का। हम सोचते रहे भैया, कि इ दुकान इनके सपुर्द करके हम जिंदगी से पिनसिन ले लेंगे। पर शम्भू भाई को का कहें हम, जैसा तबाह किया है उन्होंने हमरे पटठे को !"

आशाराम जवाब देने से बच गया क्योंकि ठीक उसी वक्त नारायण ने उसके हाथ में गरम गुलाबी चाय की एक प्याली रख दी, जिसकी खुशबू आशाराम के बदन में समा गयी।

"अब तो कहीं बाहर जाये का प्रोगिराम ना है ना ?" देश ने पूछा।

"नहीं भई," आशाराम ने कहा, "हम कहाँ जायेंगे ! और राजनरायन के एलेक्शन पेटिशन का फैसला सुने बिना तो कहीं जाने का सवाले नहीं है।"

देश ने कहा, "फसला हम सुना देते हैं। अरे मुरारजी जैसे तिसमार खाँ को दूध की मक्खी की तरह सरकार से निकाल के यूँ फेंक दिया जिस औरत ने, उसके खिलाफ फसला देवे की हिम्मत है कोई जज में !'

पहलवान ने इस बातचीत में शामिल होने का फैसला किया, क्योंकि राजनीति

का उन्हे बडा शौक था। बोले, "अरे, जज समुर का करेंगे हिम्मत ! हिम्मत तो किया करते थे स्वर्गीय पिताजी। एक दफे का जिकिर है "

"हम्मे देर हो जायेगी मामा।" देश ने कहा।

"अभी बैठो। साढे आठ ही बजे देर होने लगी ?" आशाराम ने कहा।

"जो बात मामा सुनायेवाले हैं ओम पक्का तीन घण्टा लगता है। हम कै मरतबा सुन चुके हैं।"

मामा ने उसे घूरना शुरू किया।

"दरोगा असफाकुल्ला खा की फटफटिया ठीक करे को है। उस्ताद को अब कुछ दिखायी तो देता नही। जो कुछ तल विचल हो गयी तो दरोगाजी उन्हे पकड के बन्द कर दिह मीसा मे।"

देश साइकिल पर सवार होकर चल पडा।

देश इस सडक को 'पण्डित शिवशकर पाण्डेय माग' होने के बहुत पहले से जानता था। तब तो इस पर ठीक से रोशनी नही होती थी। पर नाम पड जाने के बाद से रात को जगर जगर करने लगी थी। और देश ने साचा था कि पाण्डेयजी ने खजाना लुटवा के लोहियाजी को पैसा दिया रहा हो या न दिया रहा हो पर सडक पर रोशनी तो जम के करवा दी उन्होने। पर आज उसके पास पाण्डेयजी के बारे म सोचने का समय नही था। वह सोच रहा था कि बिल्लो को चकमा देके उस्ताद के नये चश्मे-भर पैसे का बन्दोबस्त तो करना ही पडेगा किसी दिन, नही तो बाबू गौरीशकर को कोइ अनाडी मिकेनिक समझ के उस्ताद किसी दिन मा-बहन की शुरू हो जायेंगे और उसी दिन छुट्टी हो जायगी उनकी। पाण्डेयजी वह हडताल भूले थोडी होंगे ! वह तो जो मामा ने उनके पास जाकर साफ साफ न कह दिया होता कि शम्भू मिया एक आदमी नही एक महल्ला हैं उन्हे अलग किया तो कटरा मीर बुलाकी मे एक वोट नही मिलेगा, तो शम्भू मिया कबके निकाले जा चुके होते।

कटरा मीर बुलाकी म दो हजार वोटर थे और बाबूराम आजाद के असर मे थे, और हर चुनाव मे आखें बन्द करके काग्रेस का वाट दे आया करत थे। जब गौरीशकर का टिकट मिला तो बाबूराम खुश नही हुए क्योकि वह जानते थे कि गौरीशकर भी अपने बाप ही की तरह बेईमान आदमी हैं। पर पार्टी ने उन्हे टिकट दिया था इसलिए बाबूराम ने उन्ही का साथ दिया, हालाकि उनके खिलाफ सोशलिस्टो ने जो आदमी खडा किया था वह बडा इमानदार और जनता की सेवा करनेवाला आदमी था। उसका बाप बाबूरामजी के साथ कई बार जेल म रह चुका था। पर राजनीति दोस्ती और रिश्तेदारी नही मानती। जिसकी

राजनीति ग़लत हो वह न दोस्त न रिश्तेदार। बाबूराम तो वह कट्टर आदमी थे कि नेशनल गैरेज की स्ट्राइकवाले मुक़दमे में आशाराम के खिलाफ गवाही दे आये थे कि उन्होंने खुद अपने कान से सुना था कि आशाराम अपने कुछ साथियों से कह रहा था कि आग लगा देनी चाहिए उस गैरेज में और उन्हीं की इस गवाही की बुनियाद पर आशाराम की सज़ा हो गयी थी।

मतलब यह कि बाबूरामजी की उस इलाके में बड़ी इज्ज़त थी। लगभग पूजे जाते थे। और शम्सू मियाँ से बचपन की दोस्ती थी। दाँत-काटी दोस्ती। ज़बरदस्त प्यार। पर जब पहलवान ने उनसे कहा कि वह गौरीशंकरलाल से शम्सू मियाँ की सिफारिश कर दें तो उन्होंने साफ इनकार कर दिया था कि वह सिफारिश नहीं करेंगे। और तब पहलवान ने कहा था कि वह अपनी सिफारिश तह करके कांग्रेस की गांड में रख दें। वह खुद जा सकते हैं बाबू गौरीशंकर के पास

उस दबाव में आकर शम्सू मियाँ की नौकरी बची थी। और यह अशफाकुल्लाह खाँ तो 'लम्बर एक का हरामी' है। हो सकता है कि गौरीशंकर के इशारे पर उसने अपनी फटफटिया भेजी हो और इस बहाने से उस्ताद को निकालना चाहता हो

यह खयाल आते ही वह जल्दी-जल्दी पैडिल मारने लगा।

नेशनल गैरेज नख्वासकुहना में था। और पुराने शहर में इतना बड़ा कोई दूसरा गैरेज नहीं था। और चूंकि इस गैरेज के मालिक एक कांग्रेसी एम० पी० थे, इसलिए दूर-दूर की कारें मरम्मत के लिए यहां आती थीं। बाबू साहब ने धीरे-धीरे यू० पी० के लगभग हर शहर में गैरेज की एक शाख खोल दी थी। हर शाख में पेटरोल पम्प भी था। इन गैरेजों में पुरानी कारों को खरीदने और बेचने का काम भी होता था। पाँच बरस तक बाबू साहब पुरानी कारें खरीदते रहते थे औने पौने। चुनाव के दिनों में वही गाड़ियां ठीक ठाक करके कांग्रेसी कण्डिडेटों और कभी कभार अपोजीशनवालों के हाथ भी बेच दी जाया करती थीं। और इसीलिए बाबू साहब आनेवाले चुनाव का बड़ी बेचैनी से इन्तज़ार कर रहे थे। उनके पास लगभग सौ पुरानी कारें जमा हो गयी थीं जिनमें उनका लगभग सवा लाख रुपया फँसा हुआ था। तो एक फिक्र उन्हें आनेवाले चुनाव की थी और दूसरी फिक्र उन्हें इसकी थी कि 'पण्डित शिवशंकर पाण्डेय मार्ग' बहुत पतला है और उसके दोनों तरफ बहुत फटीचर लोग रहते हैं और उनकी वजह से उन्हें बड़े आदमियों को अपने घर बुलाते शर्म आती है। वह यह चाहते थे कि सड़क के दोनों तरफ की बस्ती पचास-पचास फीट पीछे सरका

दी जाये और सडक पर दाना तरफ अच्छा सा बाजार बन जाये या छोटे छोटे बँगले बन जायें जिनके सामने छोटे छोटे बागीचे हो कि कोई वी० आई० पी० गुजरे तो खुशबू से उसका दिमाग बस जाये। कारपोरेशन के चीफ ऐडमिनिस्ट्रेटर को एक रात खाने पर बुलाकर वह अपना प्लान समझा भी चुके थे और उसने कहा था कि यह करने की हिम्मत उसमे नही है, ऊपर से आडर मँगवा दीजिए तो बुलडोजर चलवा दूगा। पर वह यह बात अपने मुह से निकालना नही चाहते थे क्योकि उन्हें उसी क्षेत्र से चुनाव लडना था। चुनाव ही के डर से तो उन्होने शम्सू मियाँ को भी अलग नही किया था, हालाँकि उन्होने शम्सू मियाँ को यह नही बताया था। उनसे तो उन्होने यह कहा था कि अगर वह उनके पिता पण्डित शिवशकर के जमाने के आदमी न होते तो आगा-राम के चक्कर मे पडकर अपनी नौकरी से कबका हाथ धो चुके होते। शम्सू मिया खुद भी यह बात जानते थे और इसीलिए वह बाबू साहब के एहसानमन्द थे कि यह उनकी मेहरबानी थी कि शम्सू मिया आधा पेट खा रहे थे और जी रहे थे। आगाराम ने तो कोई कसर छोडी नही थी।

"अरे बेटा सियासत पेट भरा का काम है।" शम्सू मियाँ ने अशफाकुल्लाह खा दरोगा कोतवाली की फटफटिया को स्टार्ट करते हुए कहा।

"दिल दुखाये की बात मत किया किजिए उस्ताद।" देश ने ग्रीस भरे सूत के लच्छे से हाथ साफ करते हुए कहा, "राजनीति पेट भरो का काम जरूर होगी मुदा भुक्खडा की तो जिन्दगी है। अरे लडेंगे नही तो आधा पेट खाना भी नही मिलेगा।'

शम्सू मियाँ उदास हो गये। नौजवानो म यही तो खराबी है कि बात समझने की कोशिश नही करते। उन्होने देश की तरफ देखा—पौने पाँच हाथ से कम तो लम्बा नही होगा। हाथ-पाव भी ओही हिसाब से है। इहाँ से निकाल भी दिया गया तो मेहनत मजूरी कर लेगा। और कुछ दिन कुछ न भी किया तो क्या होगा। विल्ला की लाण्डरी चल रही है। पहलवान की दुकान चल रही है। सिर पर कोई जिम्मेवारी नही। और इहा महनाज, सहनाज, बीबी, महनाज की दूनो बेटिया और खुद अपनी बुढौती। का करेंगे जो निकाल दिय गये !

'जेहल बहुत बुरी चीज है बटा !" शम्सू मियाँ ने कहा।

का बुरी चीज है ?' एक मिकनिक ने कहा, 'इहा दिन भर काम करो और पेट न भर। उहाँ दिन भर काम करो तो पेट-भर खाना तो जरूरे मिलता है। हम तो सोच रहे कि कउनो तरकीब करके जेले चले जायें।

उस लडके का नाम रामअवतार था। बदन रहा होगा चौबीस पच्चीस का। आत्मा थी सौ दो सौ बरस की। बूढी। लपूस। न सोचने का हौसला न लडने की सकत। न आंखों मे कोई सपना। बस, एक मुसतकिल भूख भभोडती हुई। जरूरतें टेंटवे से पकडे हुए बाप दमे का मरीज और बेकार। मां की आंखा म ममता की जगह मोतिया। बीवी का बच्चे पैदा करने की लत। बडा भाई कलकत्ते से लौटा हुआ। चटकल मे कटे हुए हाथ लेकर। बेकार। उसके तीन बच्चे। बदजबान बीवी।—और एक अकेला रामअवतार कमानेवाला। बोला, "हम तो कल के जाते आज लाल झण्डा फहराते जेल चले जायें उस्ताद! पर फिर घरवालन का का होगा? सिरीमती गांधी गरीबी हटाव का नारा दिया था। गरीबी तो ना हट रही। गरीब हटे जा रह। थाडे दिन मे गरीब लोग मर-बिला जैयह तो गरीबी खुद-ब-खुद खतम हो जैयहे।"

वहां सन्नाटा हो गया। उसकी बात का किसी के पास जवाब नही था।

"असफाकुल्ला खां की गाडी मे का निकला उस्ताद?" देश ने बात बदलने को कहा।

"ठेंगा निकला।" शम्सू मियां ने कहा, "अरे बेटा, बाप का गैरिज है। भेज दिया सफाई के वास्ते। अब लोग शान के मारे मोटर रखते हैं। सौक ना है काई को। पहिले के लोग औलाद की तरह रखते रहे गाडी। ऊ जो जीरो रोड वाले बेनी बाबू बारिस्टर है, का मजाल कि आज भी उनकी गाडी को हमरे सेवाय कोई और हाथ लगा दे! उनका बेटा खासुलखास फोड कम्पनी से मोटर मिकानिकी की डिग्री लेके आया। पर बाबू साहेब साफ बोल दिये कि बेटा, मेरी गाडी को तो शम्सूये मियां हाथ लगायेंगे।"

वातावरण का तनाव खतम हो गया।

मनोहर, एक और जूनियर मिकैनिक बोला, "और वो जो चीफ जस्टिस गिरेस साब की बेटी आसिक हो गयी रही आप पर?"

शम्सू मिया झेंपकर हँस दिये। बोले, "अरे ना बेटा। पैदाइसी हँसमुख रही। बस, लोग बात का बतगड बना दिया। तारी चच्ची आज तक ताना दे हैं।"

"कोई-न-कोई बात ता जरूर रही होगी केह मारे कि लाग राई का परबत बनाये हैं। राई न हा ता परबत कैसा?" देश ने कहा।

"अच्छा ढेर बत्तमीजी जिन करो देश, नही तो देंगे तोउन लप्पड कि मुह फिर जयहे।" शम्सू मियां ने कहा।

सारे मिकैनिक, जो उनकी औलाद की तरह थे, जोर-जोर से हँसन लगे

और लंच की घण्टी बज गयी और कारों, ट्रकों और बसों के नीचे से मिकैनिक निकलने लगे जैसे पहिले पानी के बाद जमीन से कीड़े मकोड़े निकलने लगते हैं। ग्रीस भरे सूत के लच्छा से हाथ मुंह पोंछते सब अपने अपने डिब्बों की तरफ गये। हर डिब्बे में उस परिवार की भूख आयी थी। देश ने अपना डिब्बा निकाला।

"आपका खाना कहाँ है ?" देश ने पूछा।

'हमरा रोजा है।" शम्सू मियाँ ने कहा।

"रोजा ?"

"अब हम हर महीन की पच्चीस से तीस तक रोजा रखे लगे हैं।'

"यह लीजिए।' देश ने कहा, "आजे रोजा रखना था। हम तो आपके वास्ते आलू का भरता, बसन की रोटी और मिरचे का अचार "

शम्सू मियाँ के मुंह में पानी आ गया। बोले, "अरे तो कोई वाजिब रोजा थोड़े है।"

दोनों ने खाना शुरू कर दिया।

देश को इन रोजों का हाल मालूम था, इसलिए वह दो आदमियों का खाना लाया था। पर वह अपने उस्ताद से यह कह तो सकता नहीं था कि उसे मालूम था कि आज उनके घर फाका है, इसलिए वह अपने साथ उनके लिए भी खाना लाया है।

"तुमसे का पर्दा बेटा !" खाते-खाते शम्सू मियाँ ने कहा, "आमदनी ओही दू सौ अट्ठाइस और बजार का हाल ई कि हरा धनिया जाफरान के भाव। पहिले के जमाने में महीने की तीस और पहली में फरक होता रहा। अब जैसी तीस, वैसिय पहली। कलण्डर तो खाली दीवार सजाये के काम आता है।"

देश ने कुछ नहीं कहा। वह कहता भी क्या। बस, चुपचाप खाता रहा। शम्सू मियाँ ही फिर बोले, "पहले आदमी पेट भर खाये और इज्जत से जीये के वास्ते मेहनत मजूरी करता रहा। अब काहे को करता है ! पेट भरता ना और भुक्खे पेट इज्जतो कड़ुई लगती है।"

"महनाज के रिश्ते का का भया ?" देश ने बात बदलने की कोशिश की।

"वही जो हमेशा होता है। शम्सू मियाँ ने कहा, 'लड़की पसन्द आयी। लड़की का बाप पसन्द ना आया। उन सभन का कहना भी ठीक है। कुआरी लड़कियाँ रद्दी के भाव मिल रही तो बेवा लड़की और ऊ भी दू बच्चे की माँ से काई काहे को मुफ्त में बिआह करे ? और भैया, हम हाथघड़ी रेडियो कहाँ से दें जहेज में ?"

फिर सन्नाटा हो गया।

"लडका करता क्या है ?" देश न पूछा।

"नौकरी साजे का काम कर रहा है आजकल। हड कानिसटिबली से रिटायर भया है दू बरस पहले।'

"आप ता सम्धी की बात करे लगे। हम लडके को पूछते रह।"

"हम लडकव की बात कर रहें बेटा।

सन्नाटा हो गया। देश किसी और तरफ देखन लगा कि वह अपने उस्ताद का शर्मिन्दा नही दखना चाहता था।

"पर वह जो एक ऊ साहब से बात चलती रही जो दुआह तो जरूर हैं पर उमिर का एतना फरक नही है ?'

"ऊ हाथघडी और रेडियो के साथ एक ठो साइकिला मागते है।'

"ऐयसा करते हैं।' देश न वहा, "घडी हम दे देंगे अपनी बहिन को। साइकिल और रेडियो का बन्दोबस्त जरूर करना पडेगा।"

उस्ताद शम्सू रो पडे। बोले, 'एक तो ऐनक का नम्बर गलत। फिर आख म आसू होयें ता कुछ देखाइए ना देता।'

"पर बिल्लो को खबर न हो। एक एक पैसे को दात से पकडती है।"

शम्सू आसू पाछकर चश्मा साफ करन लगे। और अब्दुल हक को याद करन लगे जो पाकिस्तान मे ऐश कर रहा है।

पाकिस्तान मे यही तो एक खास बात है। जिसकी खबर आती है, यही आती है कि वह वहा ऐश कर रहा है, कि दो हजार स कम किसी की तनख्वाह नही, कि वहाँ की नदियो मे पानी की जगह पैसा बहता है—अब्दुल हक के बारे म भी उन्होंने यही सुना था। जबकि हकीकत यह थी कि अब्दुल उस ममलिकते इसलामिया यानि पाकिस्तान मे उसी तरह भूखा था जिस तरह शम्सू मिया भूखे थे। पाकिस्तान अब भी उसका वतन नही हुआ था। वह आज भी वहा शरणार्थी था। लालूखेत की एक झुग्गी मे रह रहा था और उर्दू बोल रहा था और आम की फस्ल मे आम के लिए तरस रहा था। और सावन की झडी के लिए उसकी आत्मा प्यासी थी। और वह मगम पर डुबकी लगाने के लिए हुडुक रहा था। और अपनी रामलीला और हिन्दू मुस्लिम दगो को याद करके रो रहा था और उसके बच्चे उसका दद नही समझ पा रहे थे, क्योकि वह पाकिस्तान म पैदा हुए थे और वही पले-बढे थे। उन्ह पता ही नही था कि सावन के बादल कसे होत हैं, और कोयल कैसे बोलती है, और आमो पर किस रग का मौर आता है, और रामलीला क्या होती है और हिन्दू मुसलमान दग कैसे होते है क्योकि

पाकिस्तान मे तो केवल शीया सुन्नी दगे होते हैं।—यह एक तरह से अच्छा ही था कि शम्सू मिया को यह बात नही मालूम थी और वह यह साच-सोच कर खुश थे कि अब्दुल हक वहाँ खुश है।—पर जो वह आज यहाँ होता तो क्या वह महनाज के दहेज की घडी देश से खरीदवाते ?—इस सवाल पर वह रुक गये। उन्होने देश की तरफ देखा जो चुपचाप खाने मे लगा हुआ था—शम्सू मिया ने अपने आपमे कहा, 'काहे न खरिदवाते भाई ! सागिद भी बेटे से कम नही होता।' और यह जवाब देकर उन्हे लगा कि वह बूढे तो जरूर हो गये है पर अकेले नही हैं।

उस दिन वह घर पहुचे तो उसी नशे म थे।

"का बात है मामू ?' बिल्लो ने पूछा। वह शम्सू मियाँ को कटरे के रिश्ते से मामू ही कहा करती थी।

"आज हम महनाज की सादी तै कर दिया है। लडके की उमिर सत्ताइस अट्ठाइस से जियादा नही है। एक स्कूल म पढाता है अल्ला के फजल से।"

सकीना ने चौककर देखा।

"साइकिल, घडी और रेडियो कहा से दीहो ?" सकीना ने पूछा, "तोर मे एही खराबी है। बेला सोचे-समझे जबान दे आये होगे। अब का हम्मे बेच के जहेज बनाओगे ? केह मारे कि घर मे बेचे लाएक कोई और चीज तो दखाई ना दे रही।"

"आप परेसान काहे को होती हैं ममानी ? भगवान साइकिल और घडी सबका वन्दोवस्त कर देंगे, कही-न-कही से।" बिल्लो ने कहा।

महनाज रोन लगी। पर किसी ने उसकी तरफ न देखा। सकीना बोली, "भगवान की साइकिल की फक्टरी होती तब थाडे परेसानी होती धीया ! पर भगवान बिचारू का करें ? अब बचे अल्ला मिया। ऊ न घडी बाधें, न रेडियो सुनें, न साइकिल पर चढें। त उन्ह भला काहे को याद आय कि महनाज माटीमिली का बिआह एही तीन चीजन के मारे टलता जा रहा।"

बिल्लो ने कहा, "आप तो बेला वजहे कोसे लगती हैं। अैयसा करत हैं, पर मिकैनिक साहब को पता न चले, नही तो चिल-पो मचाये लगेंगे कि हाउसफण्ड म काहे को हाथ डाला। साइकिल का बन्दावस्त हम कर देंगे जोड-बटोरके।' यह कहते-कहते वह खडी हो गयी, 'अच्छा, हम चल रहें। मास्टर बद्रुल आते हागे लाण्डरी का हिसाब लिक्खे।'

बद्रुलहसन का नाम सुनकर बावरचीखाने मे चुपचाप बैठी हुई महनाज मुस्कुरा दी। और बिल्लो चल पडी।

लाण्डरी मे आते ही उसने देखा कि जगदम्बाप्रसाद एक दीवार की तरफ मुह किये बैठे पेशाब कर रहे हैं।

"हम देख रह कि आप इ महल्ले की दु-चार दिवार गिराये बिना ना मानियेगा।" बिल्लो ने कहा।

जगदम्बाप्रसाद घबराकर खडे हो गये। झेंपी हुई हँसी के साथ बोले, "का बतायें बिल्लो। इधिर कुछ जियास्ती हो गयी है पिसाब मे। डाक्टर साहेब बोले ह कि नमक और चीनी कम कर दो।"

"चीनी-नमक जरूर कम करिए पर घूस खाना एकदम्मे छोड दिजिए। ठीक हो जाइएगा।" बिल्लो ने कहा।

"हम्मे घूस खाये का सौक ना है। पर करें का! साढे सत्तानव रुपये तनख्वाह मे का खायें, का पीयें, का ले परदेस जायें। हमारी तनख्वाह ले लिया कर पहली की पहली और चला दिया कर हमरा घर। भगवान का पाकेट एडीसन मत बन। समझी! वरदी पर इसतिरी किया कि नही?'

"कर दिया।" बिल्लो ने कहा।

जगदम्बाप्रसाद भी दुकान मे आ गये। बिल्लो ने इस्त्री की हुई वर्दी उनकी तरफ बढाते हुए कहा, "एक रुपया।"

"का?' जगदम्बाप्रसाद हैरान रह गये, "अभइ पिछले हफ्ते तो आठ आने रेट रहा।"

"और पिछले हफ्ते दाल-चावल का का रेट रहा?' बिल्लो ने पूछा।

"हम तो ना देंगे एक रुपया।'

"आपकी मरजी।"

यह कहकर बिल्लो ने वर्दी को गुजुल मुजुल दिया।

"अरे-अरे अरे। इ का कर रही है?"

"अपनी इसतिरी वापिस लिया है।" बिल्लो ने कहा, "कही और जाके इसतिरी करवा लिजिए। जनता लाण्डरी मे आज सवेरे से आठ आना फी कपडा रेट लग गया है इसतिरी का। वनयाइन का चार आना।"

"तो तुम बताया क्यो नही था?'

"हम रेडियो सिलान ना हैं कि चिल्लाते रह दिन भर," बिल्लो चमकी। "हिन्दी-उर्दू मे लिखवाके टाग दिया है रेट।"

"ठीक है देख लेंगे।"

"अरे, जाव-जाव। बहुत देखा है देखेवाले। आँखिया फोड ना देंगे दखेवालन की।"

आशाराम आ गया।

"यह क्या भई ! हवलदार साहेब को भी डाट पिला दी।"

"हवलदारी दिखायें जाके अपनी हवलदारिन को। बिल्लो नही आनवाली रोज म। हम का डरते हैं कि फोकट मे इसतिरी कर दें।" फिर उसे यकायक पुराना हिसाब याद आ गया और वह लपकी जगदम्बाप्रसाद पर, "निकालिए पाच रुपया चालिस पैसा जो बाकी है।'

"देख बिल्लो, यह जबानदराजी बहुत महँगी पडेगी।"

सस्ती कौन चीज रह गयी है कि जबानदराजी की फिकिर करें ! निकालिए पाच रुपया चालिस पैसा।"

आप देख रह आशा बाबू, एकी जियादती। अरे, हम का घर से रोकडा लेके निकल है कि निकाल दें।" यह कहते हुए वह दुकान से निकल जाना चाहते थे। पर बिल्लो रास्ता रोककर खडी हो गयी।

"हम कह रह, हट जा रस्ते स।"

'हटाके देखो हवलदार साहब !" देश की आवाज आयी।

जगदम्बाप्रसाद सन्नाटे मे आ गये। देश की आखो म खून उतरा हुआ था। आशाराम बीच मे आ गया।

जाने दो यार।'

"जाने कयसे दें भाई ?"

"हा, तो क्या कर लोगे ?" जगदम्बाप्रसाद ने कहा।

"का कर लेंगे ?" दश बोला, "यह जो तोरी सात हाथ की जवान है न हवलदार, ओही को खीचके, फाँसी लटका देग तुमको उसी मे।'

वह हवलदार पर लपका। आशाराम ने उस पकड लिया।

'पागल हो गये हो !"

बिल्लो उसी तरह रास्ता रोके खडी थी। बोली, "हम जाये न देंग आज अपना पाच रुपया चालिस पैसा लिये बिना।

दुकान के बाहर भीड लग गयी।

"अच्छा, आज मेरे कहन से इन्ह एक दिन की मुहलत दे दो बिल्लो !'

बिल्लो जमीन पर थूककर दरवाजे स हट गयी और जगदम्बाप्रसाद दिलही दिन मे बिल्ला और देश की माँ-बहन एक करत हुए चले गय और बिल्लो एकदम से खिलखिलाकर हँस पडी। और दुकान के अदर का तनाव खतम हो गया और दुकान के बाहर की भीड छँट गयी।

यह क्या हरकत थी ? आशाराम ने कहा।

'बात का रही ! हमरा पयसा बाकी हा तो न मागें ?" बिल्लो ने कहा।

"न," इतवारी बाबा आ गया, "उधार पैंयसा न मागो।"

"काहे ना मागें ?" यह सवाल देश न किया।

"मागने से फायदा का ! भीक मागे मे सबसे बडा फायदा एही है कि कोई न दे तो बुरा नही लगता। अपना पैंयसा मागे मे ई खराबी है कि कोई न दे तो खून खौलन लगता है।'

'यार बाबा," देश झल्ला गया, 'तुम अपना फलसफा साला अपने पास रखा करो। जब बालोगे जहर बोलोगे। अरे मिटठा बोले म का पैंयसा खरच होता है ?"

इतवारी बाबा हँस पडा।

"बात ई है आसा बाबू, कि नौजवान लोग गुस्स म रह तो हम्मे अच्छे लगे हैं। हम तो एयसे धन्धे म है कि गुस्सा करे नही सकते। ई दूना को परटिटस कराते रहत है।' इतवारी बाबा ने आखें भरके आशाराम की तरफ देखा, "देस तो एतना गरम हो रह कि केतली धर दो तो चाय का पानी तैंयार हो जाय मिलट-भर मे "

अब आशाराम हँस पडा और देश को भी अपनी भन्लाहट पर हँसी आ गयी।

'मैं इस वक्त यह कहन आया था कि लाण्ड्री वकज की एक यूनियन बनने जा रही है। सोचता हू कि बिल्लो को अध्यक्ष बना दिया जाय।'

"हम बरकर नही हैं।" बिल्लो ने कहा, हम जनता लाण्डरी की मालिक हैं।"

"फिर भी जो तुम लोगा की यूनियन होती तो हवलदार इस वक्त इतनी अकड नही दिखात।"

"अरे जाये दिजिए।' बिल्लो न कहा, 'आप न पड गये रहे होते बीच मे तो हवलदार का सारा कलफ निकाल देत हम।"

"तुम आसा बाबू के साथ यूनियन बनाव अराम से। हम इ कह आ गये रहे कि दीवार का टिकट ना मिला। और एक ठो गाडी भी आ गयी है सरबिस के वास्ते। फिर कोई दिन चलेंगे।" देश यह कहता हुआ चला गया। वह इस वक्त बिल्लो से वहम करना नही चाहता था क्योकि पूरा झूठ अभी तैंयार नही हुआ था। उससे तो वह एक पक्की रिहरसल करने के बाद ही झूठ बोला करता था क्योकि वह थी बडी काइयाँ। झट से ताड लेती थी और इस बार देश अपने झूठ को पकडवाना नही चाहता था। वह महनाज के होनेवाले मियाँ के लिए घडी देखने जा रहा था ताकि यह अन्दाजा लगा सके कि कितना बडा और किस तरह

का झूठ बोलना पड़ेगा।

वह जसे ही घड़िया की दुकान म घुसा, अल्लावाले[1] घड़ीसाज़ ने उसकी तरफ मुस्कराकर दखा।

'फरमाइए।' अल्लावाले ने कहा।

फरमाना का है साहब। जरा एक ठो घड़ी दखाइए।" दश न कहा।

'जरा क्यो साहब! पूरी घड़ी दखिए। सुइटज़रलण्ड स कल ही पारसल आया है। वह मुस्कुराय, "कैसी दिखाऊँ।'

"एक सादी मे दूरहा को देना है।"

अल्लावाले न अलमारी स घड़िया निकाल निकालकर उसके सामन सजाना शुरू किया। फिर एक घड़ी देश के सामन नचाकर बोला, 'यह देखिए। आटोमेटिक ह। दिन-तारीख भी बताती है। ओमगा कम्पनी की है। बाप ले तो वसीयत करनी पटे कि उसके मरन के बाद यह घड़ी किस बेटे की औलाद को मिले। दाम भी कुछ ज्यादा नही। पन्दरह सौ चौरानव रुपये पछत्तर पैस।"

'बहुत महँगी है।'

"देखन का किराया थोड़ी माग रहा हू जनाब। अल्लावाले न कहा, 'यह देखिए। यह भी आटोमेटिक है। रामर कम्पनी की। दाम साढे सात सौ।"

कोई और दखलाइए।

'यह लीजिए।" अल्लाबाल न तीसरी घड़ी उठायी, 'आटोमटिक यह भी है। दाम सिफ साढ तीन सौ। सौ सवा सौ की घड़िया भी है मगर शादी-ब्याह का म्आमला है'

नहीं नही।' देश न बात काटी, 'चीज अच्छी हा। इ साढे तीन सौ वाली का ठीक ठीक दाम बताइए।"

'दाम तो ठीक ही बताया था।' अल्लावाल घड़ीसाज़ ने कहा, अच्छा चलिए आपको पसन्द है ता दस रुपया कम कर दीजिए। समझूगा, एक घड़ी बे मुनाफा बेच दी। स्टील का पटटा भी लगा दू? चमड़े के पटट का तो अब फशन नहा रह गया है। मत्तीस रुपय का हागा।'

"कुल कितना हुआ?'

तीन सौ सतहत्तर। चलिए सात और कम कर दीजिए। तीन सौ सत्तर। उन्होने कशमिमा अपनी तरफ सरकाया पेंसिल सभाली, फिर केशमिमो

---

1 उनके घर पर सिमण्ट स एक बहुत बड़ा अल्लाह लिखा था इसीलि' वह अल्लावाले कह जाने लगे थ।

को दूर सरका दिया, "नहीं, कशमिमा नहीं बनाती। बिला वजह सेल्स टैक्स लग जायेगा आप पर।"

"परसों ले जाऊंगा।' देश ने कहा।

'अरे, तो परसों ही देख भी लेता।" अल्लावाले ने जलकर कहा और उसके जाने का इन्तजार किये बिना वह घड़ियों को शो-केस में रखने लगे।

तीन सौ सत्तर रुपये। यह समस्या थी देश की।

दो सौ चालीस रुपये। यह समस्या थी बिल्लो की।

बिल्लो लाण्ड्री में अकेली बैठी यही सोच रही थी कि देश से क्या झूठ बोले कि देश मुंह लटकाये आ गया।

'दुकान बन्द नहीं किया अब तक ?" देश ने पूछा।

"क्यों, बन्द काहे नहीं किया। हम तो घर जाके सो भी गये।" वह देश को घूरने लगी 'सुझाई ना दे रहा कि दुकान खुल्ली है ?"

"आज हम्म कुछ सुझाई ना दे रहा।" देश ने कहा, "जे गाडी की सरविसिंग करते रहे ओका एक ठो पुरजा टूट गया। तीन सौ सत्तर की चोट पडी।"

बिल्लो हत्थे से उखड गयी, 'तीन सौ सत्तर से कम का पुरजा नहीं तोड सकत रहे तुम ! लाट साहेबी में फरक न आये। पुरजा भी तोडोगे तो तीन सौ सत्तर का।"

"हम कोई जान के तोडा है।'

"आज का दिने बुरा है। बिल्लो ने कहा, "इसतिरी करे में दू सौ चालिस की साडी जल गयी। दू सौ चालिस और तीन सौ सत्तर केतना भया ?"

छ सौ दस।" देश ने कहा "घबराती काहे का है। छ सौ दस तो हम कमावे यू जमा कर देंगे, यू।'

"चल जमिनिया देख आयें।" बिल्लो ने कहा।

'जमीन कहां भागी जा रही है ? जमीन वहीं है और खैरियत में है। देखना का है।' देश ने हँसकर कहा 'जमीन को का कोई चुरा ले जायेगा ?"

"हमरी जरा-सी बात नहीं मान सकता।"

अच्छा बाबा चल।" देश मान गया।

बिल्लो जल्दी-जल्दी दुकान बन्द करने लगी और देश ने बीडी सुलगा ली।

वह जमीन।

वह जमीन बहुत छोटी सी थी। उस पर कोई ताजमहल नहीं बन सकता था। उस पर कोई आगा खां पलेस या बिरला भवन भी नहीं बन सकता था। उस पर कोई सुपर मार्केट या शॉपिंग सेंटर भी नहीं बन सकता था। उस पर

तो बस एक छोटा सा घर बन सकता था। दो कोठरियां और एक छोटे से आंगनवाला घर।

वह जमीन पण्डित शिवशंकर पाण्डेय मार्ग पर थी। उस पर सामने की तरफ से सड़क का उजाला था और कटरे की तरफ से कटरे का अंधेरा। वहां कभी कोई घर जरूर रहा होगा, क्योंकि लहोरी ईंटों का एक टूटा हुआ चबूतरा अब भी मौजूद था, जिस पर नागफनी उग आयी थी और बरसात में जिस पर कुकुर-मुत्ते भी उग आया करते थे। एक कोने में दो कदमच भी थे। एक बड़ा और एक बच्चाने साइज़ का। इसका मतलब यह हुआ कि कभी जो लोग उस घर में रहा करते थे वह बाल बच्चेवाले थे। बाकी जमीन पर मलबा बिखरा हुआ था जिसे न जाने कितनी बरसातों की उगायी हुई घास पात ने बिल्कुल ढक रखा था। एक कोने में जंगली आम का एक बड़ा पेड़ भी था, जिसकी कैरियां कटरेवालों के खाने को मज़ेदार बनाती थीं।

देश ने कहा, जैसा फिलिम में होता है। बीच कमरे से ऊपर लकड़ी की सीढ़ी जाये। वैसिय सीढ़ी लगवायेंगे। हम जब काम पर से लौटें तो देखें कि तू सीढ़ी पर खड़ी हमरा इन्तिजार कर रही हो।'

'हम्मे कोई काम ना है का कि इंतिजार करेंगे!" बिल्लो ने कहा।

'तुम तो साला सपना भी नहीं देखने नहीं देती "

"अरे तो कोई कायदे का सपना देखो न। ऐसा सपना देखे से का फायदा कि जो पूरा ही न हो। बिल्ला ने कहा।

"ठीक है। तो चल ऐसा सपना देखें जो हमरे-तोरे बस में है। मुन्नी के बिआह का सपना देखा जाय।'

"हम हजार बेर कह चुके हैं कि मुन्नी टुन्नी ना होगी। मुन्ना होगा।"

"तो हमसे एक हजार एक मरतबा सुन ल्यो कि मुन्ना टुन्ना न होगा। मुन्नी होगी।"

"मुन्ना होगा।"

"हमर बगैर ही हो जायगा।'

वह शर्मा गयी।

"उतनी दूर खड़ी होके सर्माय में का मजा! इहाँ हमरे पास बैयठ के सर्माव अराम से।' देश ने हाथ पकड़के उसे अपनी तरफ खींचना चाहा।

'ई खींचा-तानी हम्मे अच्छी ना लगती। अच्छी भली इसतिरी की हुई सारी खराब हो गयी।"

'फिकर नाट डारलिंग।" देश ने बड़ी शान से कहा, 'जनता लाण्डरी की

मालिकन से हमरा अफेयर चल रहा। हाफ रेट पर धुलवा देंगे।"

'का चल रहा तोरा?'

"अफेयर। अंग्रेजी मे प्रेम करने को अफेयर कहते है।"

"ई माटी मिली अंग्रेजी कहा से आ गयी हमरे-तोरे बीच मे।" उसन घूर के सवाल किया और फिर कहा, 'और कान खोलके सुनल्यो। हम अफेयर-टफेयर ना करेंग। सीधे सीधे बिआह करेंगे, बिआह।"

"बस, चालू हा गयी।" देश ने बीडी निकालते हुए कहा, "कभी कभी तो हम इ सोच मे पड जात है कि तोरा दिल ढेर बडा है कि तोरी जवान। जबान जरा छोटी होती तो सवा लाख रुपये की औरत होती त।"

'और अब केतने की है?"

"अब? अब तो त सवा दू लाख की है। चलाये जा जबान अपनी। सच पूछ तो अपने लोग की जिन्दगी म तेरी जवान के सिवा चलता क्या है। घडी चलती नही। खरचा चलता नही"

"एक ठो नयी घडी काह ना ले लेत।"

"अरे टाल घडी-ओडी को।" देश ने कहा, 'टाइम देखके जिय म का मजा। सवा चार बज गया। मुस्कुराये का टम है। रात का डेढ बज गया। थक्थकाके सपना देखे का टैम है। घडी बिल्कुल फजूल चीज है।'

"इ तो तुम उल्लूपने की बात कर रहे हो। घडी रहे से आदमी सब काम बखत पर कर लेता है।"

"सूरज के हाथ मे कौन ओमेगा आटोमेटिक बँधी है। दाम, पन्दरह सौ चौरानव रुपया पचहत्तर पैयसा। या चाद के हाथ मे कौन रोमर कम्पनी की आटोमेटिक घडी बधी है। दाम साढे सात सौ।"

"तुह भात-भात की घडी का नाम और दाम कयसे मालुम हो गया?"

"अरे भाई, घडी न बाधें तो क्या रुआब डाले के वास्ते दाम भी न जानें। नाम और दाम हर चीज का मालुम रहे को चहिए। का पता कहा कौन चीज की बात निकल आय।"

"घडी पर याद आया। महनाज का बिआह घडी, रेडियो और साइकिल पर रुक गया है।' बिल्लो ने कहा।

"कुछ फरज तो हम लोग का भी है। घडी और रेडियो हम लोग दे दें।"

'घडी मे बहुत पयसा लगगा।" देश ने कहा, "रेडियो और साइकिल दे दें।"

"न। घडी और रेडिया।' बिल्लो ठन गयी।

'रेडियो और साइकिल।" देश ने कहा।

घडी और रेडियो।"

"अच्छा ऐयसा किया जाय। न तोरी। न हमरी। त घडी और रेडियो कह रही। हम रेडियो और साइकिल कह रह। रेडियो देवे की राय हम दूनो की है। बाकी चीजा का इंतिजाम कर लें उस्ताद खूद कही स।"

कमाल करते हो।' बिल्लो बोली, "बिचारे गरीब आदमी है घडी और साइकिल दू चीज कहा से खरीदग ? रेडियो और घडी हम लाग दे दें।"

"फिर वही मुर्गी की एक टाग। घडी देवे की कोई जरूरत नही। साइकिल काम की चीज है।'

देखा, बात मत बढाव। हम कह दिया कि साइकिल नही देंगे तो नही देंगे।"

'अच्छा बमक मत। उस्ताद से पूछ लेत है। जो घडी का बंदोबस्त ना भया होगा तो घडी ले दग। हो गया होगा तो रेडियो और साइकिल ले देंगे। पर रेडियो ता खरीद लिया जाय। ऐयसा कर। कल चार बजे गैरिज आ जा। वही मे रेडियो खरीदते हुए लौट आयेंग।'

दूसरा दिन मगल का था। लाण्ड्री बंद रहती थी।

इतवारी बाबा एक सेठ का पीछा कर रह थे। इन्हे जिद कि उससे कुछ लेके रहगे और शायद उसन कसम खा ली थी कि नही देगा। कि यकायक इतवारी बाबा की आखें भटक गयी। सामने साइकिल की दुकान म उन्ह बिल्लो जैसी एक लडकी दिखायी दी। बिल्लो और साइकिल की दुकान ? वह चकरा गये और वह सठ गायब हो गया।

बिल्ला उनसे बेखबर रुपये गिन रही थी कि बाबा की आवाज आयी, 'अरे तुम का कर रही हो साइकिल की दुकान पर।'

बिल्लो रुपये छिपाती हुई पलटी।

'ना बाबा। क दिन से सोचत रहे कि एक ठो छोकरा और साइकिल रख लें। फिर सनीमा म सलाइड चलवा दें कि जनता लाण्डरी कटरा मीर बुलाकी, एलाहाबाद नम्बर-५, घर से मले कपडे ले आती है और घर पर साफ कपडे पहुचा दती है। बिजनिस मे बहुत फरक पड जायगा इससे।'

नही यह बात तो तुमन ठीक सोची।' बाबा ने कहा, 'हम भी देखते हैं। कोई अच्छा इमन्दार छोकडा मिल जाता है ता पकड लिआत हैं। तुह अभी देर लगिह ?'

'थोडी दर तो जरूर लगिह।'

'तो हम चल रह।'

इतवारी बाबा चले गय। दुकानदार मुस्कुराया और बिल्ला की तरफ

जरा सा झुका और बोला 'आपकी अपनी लाण्ड्री है ?"

बिल्लो सर हिलाकर फिर रुपये गिनने लगी।

"तो एक दिन हम भी धो दो।" दुकानदार ने कहा।

बिल्लो ने उसकी तरफ देखा। पी गयी। रुपये बढाकर बोली, 'यह लो अपना दो सौ चालिस।

रुपये लेने मे दुकानदार ने उसका हाथ जरा सा दबा दिया और बिल्लो ने लप्पड जड दिया।

"हरामी ! मा का दल्ला—साला। त हम्मे समझा का रहा " वह उसे मारने लगी।

"बहनजी "

"अरे तेरी बहनजी गयी तेल बेचे। "

कुछ लोग आ गय दुकान मे।

"क्या हुआ बहनजी ?" एक ने पूछा।

"एही से पूछिए। हाथ पकडता है। कहता रहा कि हम्मे भी धो दा। तो धुलाई करते रहे इसकी।"

लागो न दुकानदार को देखा। दुकानदार घिघिया गया।

क्या वे " एक आदमी उसकी तरफ बढा।

"अब हम साइकिल का दू सौ दस से बेसी एक पैसा ना देंगे।"

'ठीक है बहनजी।' दुकानदार ने कहा। तब बिल्लो लोगो की तरफ मुडी।

"जाय दिजिए। एक बेरी हाथ पकडे के बदले म, भगवान झूठ न बुलावे, चार-पाच लप्पड तो हमी मार चुके हैं।" फिर वह दुकानदार की तरफ मुडी, "साइकिल पहुच जाय ठीक पते पर नही तो ' अपनी बात खत्म किये बिना, दो सौ चालीस से दस-दस के तीन नोट निकालने के बाद बाकी पसे दुकानदार के मुँह पर फेंककर वह दुकान स चली गयी।

बाहर पूरा शहर था। सजी हुई दुकाना और खाली जेबोवाला शहर। साइकिल रिक्शे थे। उनकी घण्टिया थी। उन पर बैठी हुई हल्की भारी सवारिया थी। बिल्लो पैदल ही चल पडी। दुकानें देखती हुई। अपन घर के लिए छोटी-मोटी चीजें पसन्द करती हुई। मोल-तोल करती हुई। देश के बारे मे सोचती हुई। दिल-ही दिल मे हिसाब लगाती हुई कि अब शायद इतना रुपया जमा हो गया है कि जमीन खरीदकर एक कमरा और दालान बन जाये। दूसरा कमरा बाद मे बनता रहेगा। अब देश के साथ रहने के बाद भी उससे अलग रहना बिल्लो को बहुत खल रहा था

वह गरेज पहुची तो देश इंतिजार करता मिला। दोना चल ही रहे थे कि बाबू साहब की कार आ गयी।

अरे भई जरा देखना। साइलेंसर म क्या हो गया है। बाबू साहब न कहा जो खुद ही कार ड्राइव कर रहे थे। फिर उनकी नजर बिल्लो पर पड गयी। पूछन लगे, "यह कौन है ?"

'यह हमारी होनेवाली बाइफ है बाबू साहब।" देश न कहा।

अच्छा अच्छा। बाबू साहेब मुस्कुराय 'भई देश मैं तुमसे कुछ बातें भी करना चाहता था।'

'जरूर साहब। कहिए।' देश ने कहा।

इत्मीनान से करन की बातें हैं। मैंन शम्सू मियाँ से भी कह दिया है। भई, भारत एक प्रजातन्त्र है। मैं खुद जनता का आदमी हूँ। राजनीतिक मतभेद तो होता ही रहता है। इसका मतलब यह थोडी हो गया कि हम तुम दो हो गये। वह जो मसल है— लाठी मारे से कही पानी अलग होता है।

'बराबर होता है साहब। पाकिस्तान बन गया कि नही ? यह बिल्लो बोली।

देश न उस कुहनी मारी।

बाबू गौरीशकर पाण्डेय जोर से हँस पड।

'कुहनिया काहे को रह हो बिचारी को ?' बाबू साहेब न कहा, 'बिटिया ने तो बहुत समझदारी की बात कही। खर। कहने का मतलब यह था कि तुम यह न सोचना कि आशाराम के चक्कर म जो आ गये थे तुम लोग, तो हम खफा हो गय हाग तुम लोग स। अरे भई, यूनियन बनाना तो मजदूरा का हक है। जब मैं मौजूद हू तो आशाराम क्या बनाये यूनियन ? और जो यूनियन उसने बनायी थी उसका नतीजा भी देख लिया। इसी खयाल स मैंने आज शम्सू को भी बुलाया है। तुम भी आ जाव। खाना भी वही खाना।

खाना।

देश चक्करा गया।

उसने बिल्लो की तरफ देखा। बिल्ला ने आंखा स हा कह दिया। बाबू साहब यह सब तमाशा देख रहे थ पर अनजान बने खडे रहे।

'जी आ जाऊँगा।" देश न कहा साइलेंसर देख लू।'

'घर तक तो चली ही जायगी। बाबू साहब न कहा "तुम दोना की शाम क्यो खराब करें ?'

बाबू साहब चले गय।

'साइलेंसर की आवाज तो बिल्कुल ठीक लगती रही।" देश ने सर खुजाते हुए कहा "इ चक्कर का है आखिर ?"

"अरे जो भी हो चक्कर।' बिल्लो ने कहा, "तूह का लेना-देना।'

"इ भी ठीक है। चल।'

दोनो गैरेज से बाहर आ गय।

एक खाली रिक्शा जा रहा था। देश ने हाथ दिया। रिक्शा रुक गया।

"जीरो रोड का क्या लोगे ?" बिल्लो ने कहा।

"अरे मोल-ताल का कर रही है।' देश बैठन लगा।

"तैं करे दयो।' बिल्ला न उसे रोक लिया।

'आठ आना।" रिक्शेवाले न कहा।

"देहली का किराया ना पूछ रहे।' बिल्लो ने कहा, "चार आना देंगे।"

देश ने रिक्शेवाले को आख मार दी। वह राजी हो गया। दानो बैठ गये।"

'चार आना बचाया ना।" बिल्लो न कहा।

"अर तरा तो जवाब नहीं है बिल्लो।' देश ने कहा।

रिक्शवाला नौजवान था। रिक्शा हवा स बातें करन लगा। बिल्लो बच्चो की तरह खुश हो गयी।

'जरा रोकना।' बिल्लो ने हाँक लगायी।

रिक्शेवाले ने ब्रेक लगाय। रिक्शा तेजी से रुका। बिल्ला रिक्शेवाले पर जा पडी और खिलखिलाकर हँस पडी।

'एको एही छोड देते ह। एक ठो फोटो खिचवाते चलते है।" वह उतर आयी।

सामने फोटोग्राफर था। फुटपाथ पर। स्ट्रीट का पर्दा लगाय हुए। बिल्लो की आख बचाकर देश ने रिक्शेवाले को एक चवन्नी और थमा दी। रिक्शेवाला मुस्कुराकर आगे चला गया।

"एक फोटो मे हम दूनो का हो जायेगा ना।" बिल्ला ने फोटोग्राफर से पूछा।

"हागा कस नही।" वह बोला, "कार म बठियेगा कि हवाई जहाज पर ?"

'एँ ?" बिल्ला चकरा गयी।

"हवाई जहाज कहा स आयगा ?"

"वह मैं लाऊँगा।"

बिल्लो ने दश की तरफ देखा। इतना बडा फसला वह अपनी जिम्मेदारी पर नही करना चाहती थी।

"मोटर ठीक रहेगी। मोटर मिकानिक की वाइफ मोटर पर अच्छी लगती।" देश ने कहा।

फोटोग्राफर ने कार का बट-आउट लगा दिया। देश बिल्ला का लेवर बट आउट के पार लगे हुए स्टैंड पर बैठ गया। दोनों ने स्टियरिंग व्हील पर शान से हाथ रख लिया। गुजरनेवाले कुछ लोग यह तमाशा देखने को रुक गये।

"मुस्कुराइए।" फोटोग्राफर ने कहा।

"ए खाक पड़े तर मुह म!" बिल्ला ने कहा, 'हम काहे का मुस्कुरायें तार कह मे?"

'मुसकुराये बिना तस्वीर अच्छी ना आती।' देश ने कहा, "और ते मुस्कुराती बहुत अच्छी भी लगती है।"

"हट, बदमास कहीं का।" बिल्ला ने शर्मा कर कहा। पर वह मुस्कुरा भी दी।

'आवे घण्टे म ले लीजियेगा तस्वीर।'

"लौटत वक्त ले लेंगे।' देश बोला।

दोनों खुश खुश आगे बढ गये।

खुश हो जाना कितना आसान लगता है।

सामने ही गजानन्द रेडियो हाउस था। दोनों उसमे चले गये।

गजानन्द दुकानदार ने जो यह सुना कि वह रेडियो खरीदने तो उसने बडी आवभगत की। आजकल तो लोग ट्रांजिस्टर खरीदने आते हैं दो बैण्डवाला। वह खुश खुश उन्हें रेडियो दिखलाने लगा कि एक लौण्डा गजानन्द के लिए एक मैले गिलास मे चाय लेकर आ गया। अब जाहिर है कि वह गाहक के होते खुद तो चाय पी नहीं सकता था तो उसने जिद करके चाय का गिलास बिल्लो को दे दिया और लौण्डे से बोला कि दो चाय और लाये।

बिल्ला ने तीन सौ अटठारह रुपये का एक रेडियो पसन्द कर लिया। चार सौ वह घर से लेकर चली थी। कपडे के बल्वे से उसने नोटो की गड्डी निकाली और नये नोट बचा बचाकर गिनने लगी।

"यह लया भया। ठीक से गिन लो।" उसने तीन सौ अटठारह दुकानदार की तरफ बढाये।

"रक्खे पर रखवा दें?

"नाही जी। हम खुद उठा लेंगे।'

देश ने रेडियो उठा लिया। चलत चलते बिल्लो को याद आया कि गिलास की चाय खत्म नहीं हुई है, तो मुडकर उसने गिलास उठाया और गटागट पी

गयी।

"इ का हरकत है! का समझता होगा वह! सोचेगा कयस दलिददर लोग हैं। कभी चाय नहीं पी है साएद।

"उ कुछ सोचे। कोई मुफ्त म ना पिलाइस है। रेडिया के दाम म चाय का पैयसा भी सामिल कर लिया होगा।"

'जरा धीरे बोल।"

काह को बोलें धीरे! बडा आया है दिल म सोचेवाला। अरे ई माटी मिले के दिल मे हम्म का लेना-देना?"

देश लगभग उस घसीटता हुआ दुकान स निकल गया।

'आफत की पुडिया है ई लडकी।" दुकानदार ने चायवाले लौण्डे मे कहा जो दो गिलास चाय लेकर आ गया था "एक गिलास त पी ले। जाडा बहुत है। पीछेवाली कोठरिया मे चलव?"

लौण्डा मुस्कुरा दिया। बोला, "तोह हर बखत एही सूझता है। दीवार दिखलाव तो चलें।"

'हां-हां, दिखला देंगे ब।" गजानन्द न जल्दी से कहा और लौण्डे को घसीटते हुए पीछेवाली कोठरी मे ले गये।

दुकान अकेली रह गयी।

भागी-भागी बिल्लो आ गयी। उसने दुकान का खाली देखकर हैरानी स इधर-उधर देखा।

'अरे।" फिर वह जोर से बोली, "कहा गये भाई!'

बाबू गजानन्द दिल ही दिल मे उसे हजारो गालिया दत पिछली कोठरी से बाहर आय और उस देखते ही जल्दी स मुस्कुराने लगे।

"दफ्ती का डिब्बा ना दिया।' बिल्लो ने कहा।

लौण्डा पिछली कोठरी स निकला और बाबू गजानन्द की तरफ देखकर शरारत से मुस्कुराता हुआ बाहर चला गया। वह अपनी चवन्नी एडवान्स करवा चुका था। गजानन्द दिल मसोस कर रह गये। यह चवन्नी वसूल थोडी होगी!

बिल्लो काडबोड का डिब्बा लेकर बाहर आयी। देश फोटोग्राफर की दुकान पर अपनी और बिल्लो की तस्वीर देख रहा था। बिल्लो ता उस तस्वीर को देखकर निहालो निहाल हो गयी। लगता था जैसे वह असली मोटर पर दश के साथ बठी हुयी है।

'बिल्कुल अस्ली मोटर लगती है।" बिल्लो ने कहा।

"जब इसे अपन घर म टागोगी तो अस्ली ना लगेगी। पर फिकर क्या करती हो डारलिंग ? हम तुम्हारे वास्ते अस्ली मोटर खडी कर देंगे एक दिन। "

विल्लो न जो देखा कि देश सपना के पख लगाकर उड रहा है तो उसने फौरन रिक्शे की तरफ इशारा किया जिस पर रेडियो रखा हुआ था और रिक्शे-वाला आराम स बैठा बीडी पी रहा था।

"किराया चढ रहा।" विल्लो ने कहा।

देश बेबसी से उसकी तरफ देखके मुस्कुरा दिया।

"सपना देखे मे का नुक्सान है ?" देश ने कहा।

'जागे के बाद बहुत तकलीफ हो है।" बिल्लो यह कहती हुई रिक्शे पर जा बैठी और मजबूरन देश को भी आना पडा। बिल्ला ने अपनी गोद म काडबाड का डिब्बा खोला और दश ने रेडियो उसम उतार दिया और रिक्शा चल पडा और बाजार मे किसी ने न जाना कि वह एक सपना फुटपाथ पर फेंककर कटरा मीर बुलाकी जा रहे है।

रिक्शा जब 'गली द्वारिकाप्रसाद म मुडा तो पहलवान न हाँक लगायी।

'इ का खरीद लिआये तुम लोग ?"

'उस्ताद महनाज के जहेज के वास्ते रेडियो खरीदिन हैं।" बिल्लो न कहा।

रिक्शा नही रुका।

'क्या खरीद लिआय भाई ?" जोखन ने आवाज लगायी।

रेडियो है।" देश ने कहा, "उस्ताद मँगवाइन है महनाज के जहेज के वास्त।'

रिक्शा नही रुका।

डिब्बे मे का है बिल्लो ? इतवारी बाबा न पूछा।

महनाज बाजी के जहज का रेडियो है। मामू मँगवाइन है। तीन सौ अट्ठारह रुपय का। मलटवस उप्पर से।'

रिक्शा नही रुका।

रिक्शा शम्सू मियाँ के घर के सामने रुका। बिल्लो की गोद स रेडिया लेकर देश खडा हो गया। बिल्ला न रिक्शेवाले को पस दिय। फिर दाना घर म चले गय।

छोटा-सा घर था। बिल्लो के सपनवाले घर के बराबर। कभी उस घर म भी सपना की रेल-पेल रही होगी पर अब सन्नाटा था। लगता था जैस इस घर की कभी आँख ही न लगी हो और उसकी दीवारा और आँगन और दिना और राता न कभी कोई सपना ही न दखा हो।

फत्तो उनके पाव पर मुक्किया मार रही थी और वह धीरे-धीरे कराह रह थे कि आगे-आगे देश रेडियो उठाये हुए और पीछे-पीछे बिल्लो साडी के खूट मे रिक्शेवाले से बची हुई रेजगारी बाधती हुई। शम्सू मिया उठ बैठे। फत्तो लपक्कर देश के पास आ गयी।

"ए मे का हा मामू ?"

"तोरी अम्मा का रेडियो है।" देश ने रेडियो को लक्डी की बेपीठवाली कुरसी पर रखते हुए कहा और शम्सू मिया के पास जा बैठा और उनके बण्डल से एक बीडी निकालने लगा। शम्सू मिया ने कुछ नही कहा। देश ने उल्टी बीडी मुँह मे रखकर फूक मारी, फिर सीधी बीडी मुह मे रखी और उसे जलाने के बाद दियासलाई के शोले पर उसे सेंकने लगा। शम्सू मिया ने फिर भी कुछ नही कहा। अस्ल म उनके गले मे आसुओ ने गिरह डाल दी थी और उन्हे अब्दुल हक याद आ रहा था।

"इ बजता कैयस है ?" फत्तो की आवाज आयी।

'हाथ मत लगा माटी मिली।" महनाज की आवाज आयी, "बापे के साथ तै सब भी मर बिला गये होते तो तनी चैन मिलता हम्मे। खुद तो चले गये और हमरी छाती पर कोदो दले के वास्ते त सभन को छोड गय।"

"अरे-अरे-अरे !" बिल्लो ने कहा, "पागल हो गयी हो का बाजी ? बच्चन को कोस्ते सरम ना आती !"

"ई बच्ची है। हट माटी मिली।" महनाज ने फिर फत्तो को एक हाथ जड दिया।

"अल्ला मिया का गुस्सा फत्तो पर काहे उतार रही हो बेटा !" शम्सू मिया ने कहा।

नाना की हमदर्दी पाकर फत्तो ने रोना शुरू किया और उसी वक्त उम्मन आ गयी एक लॉली पॉप चूसती हुई।

"जोखन नाना दिहिन हैं।" उम्मन ने एलान किया।

"ए भाई इ जोखन चा ऐयसे सखी हातिम कबसे हो गये !" महनाज ने कहा, "हम छोटे रहे तो ऊ हम्म तो कभी ना चुसाइन चुसनी।"

"आप कल कहते रहे कि साइकिल का बन्दोबस्त हो गया है। मतलब ई कि खाली घडी बची।" बिल्लो न कहा।

"बन्दोबस्त तो घडियो का हो गया रहा। पर आजे बूबू का खत आया है कि एल्लाक मियाँ मीसा मे बन्द हो गये '

घर म सन्नाटा हो गया।

कटरा था ही कितना बडा ! सबको पता चल गया कि मास्टर एस्लाक जो शम्सू मिया की खालाजाद बहन के बटे थे और जिनस महनाज़ की शादी तै थी, मीसा म बन्द हो गय। जोखन फौरन हमदर्दी करन आ गया। जोखन, जो शम्सू मिया स उम्र म कुछ ही छाटा रहा होगा और जिसे महनाज़ जोखन चा कहती थी और महनाज़ के बच्चे जोखन नाना।

थोडी देर हमदर्दी करन के बाद जोखन ने कहा, "अरे शम्सू भाई। बेऔरत का भी काई घर हो है। कब से सोच रह कि कोई सरीफ बेवा लडकी मिले ता निकाह कर ले। दू एक बच्चे भी हा उसके तो भी चलेगा

शम्सू मिया पी गये। उन्हाने जोखन की तरफ देखा। काला रग। चुरक्का खिचडी दाढी, कि देख के मतली आने लग पुरानी दाद के कारण जाँघो को लगातार खुजलात हुए और खुजलाने की लज्जत से तरह-तरह की आवाज़ निकालत हुए।

यह बात भी कटरा मीर बुलाकी म सबको मालूम हो गयी। फत्तो ने बच्चो को बताया कि जोखन नाना से उसकी माँ का ब्याह होनवाला है। वह बहुत खुश थी क्याकि उसके लिए शादी का मतलब था हगामा। बाजा गाजा। गाना-बजाना पुलाव कोमा

और इस खबर न लोगो को इतना उलझाया कि लोग यह तक भूल गये कि शम्सू मिया और दश को बाबू गौरीशकर लाल पाण्डेय एम० पी० न रात को खान पर बुलाया है।

बाबू साहब की अपनी समस्याएँ थी। ऊपर' से हुक्म आया था कि किसी-न किसी तरह मजदूर आन्दोलन को कम्युनिस्टो के हाथ स निकाल लेना चाहिए। सी० पी० आई० ता फिर भी चल जायगी पर सी० पी० एम० का हर मोर्चे पर राजनीतिक हार का सामना करना ही चाहिए और यह बाबू साहब की बदनसीबी थी कि प्रदेश काग्रस न यह जिम्मेदारी उन्ह सौप दी। और यदि उन्ह कद्र म मन्त्री होना था ता यह पापड बेलना लगभग जरूरी हो गया। तो उन्हान अपन घर म पहले चिराग-बत्ती करन का फसला किया और यूँ देर और शम्सू मियाँ उनके घर रात के खाने पर बुलाय गय।

'भया हम मालिक वालिक नही हैं। जनता और मजदूर भाय्या के सवक हैं बाबूजी न आलू के कबाबा की प्लट शम्सू मियाँ की तरफ सरकात हुए कहा।

अरे साहब, हम लाग आपक हुक्म स बाहर थोडे हैं।" शम्सू मिया न

कहा, "एक बेरी हम्म आसाराम चूतिया बना दिहिन तो " वह रुक गये। उन्हें पता नही था कि बाबू साहब जस लोगो के सामन 'चूतिया जस शब्दो का प्रयोग करना चाहिए या नही। वैसे वह अपने घर और महल्ले म धडल्ले से यही भाषा बोलत और सुनत थे। पर बाबूजी का घर न उनका घर था और न ही उनके महल्ले मे था। बाबूजी ताड गय। जोर स हँसे और बोले, "अरे शम्सू मिया, इसमे चतिया बनने की क्या बात है।"

शम्सू मिया की जान म जान आ गयी।

"हम तो चाहते है कि यूनियन बन," बाबू साहब ने बात आगे बढायी, "पर भाई आशाराम से क्या मतलब ? हम कौन कि हम रवाहमख्वाह। भइ आपसे क्या मतलब ? न आप माटर न आप मोटर मिकनिक। इस बास्त खुद श्रीमती गाधी ने आदश भेजा है कि यूनियन बनायी जाय परतु उसम बकर, लोग काम कर। राजनीति न घुसन पाय। तो हमने यह फसला किया कि पहले ही की तरह शम्सू मिया ता प्रेसिडेण्ट हो जायें और देसराज सेक्रेट्री। बल्कि हम तो यहा तक सोच रह ह कि गरेज की तरफ से आफिस ब्यरर लोग को कुछ जेबखच भी मिलना चाहिए। इससे बकज और मालिक के बीच एक नये रिश्ते की बुनियाद पडेगी "

शम्सू मिया तो जेबखच की बात सुनकर ढेर हो गये। वह यह भी भूल गय कि महनाज की शादी हात होत रह गयी है, कि शहनाज अब माशाअल्लाह स २८ साल की हो चुकी है और कवारी है, कि उनके चश्मे का नम्बर बदल गया है और वह दूसरा चश्मा नही खरीद पा रह है कि उन्हे हर महीन की बाइस चौबीस से 'सुन्नती' रोजे रखने पडते है

जेबखच की बात पहली घटा की तरह झूमके उठी और उनके सपनो और जरूरतो की जमीन पर टूटकर बरसी और वह शराबोर हो गये और उनके नथन पेट-भर खान की खुशबू से बस गय

फिर भी उन्होने 'हा कहने से पहन चोरी चारी देग की तरफ दखना मुनासिब जाना, क्योकि उनके ख्याल म देश जरा ज्यादा समझदार था इन मामला मे।

दश बाबू साहब की तरफ देख रहा था। बाबू साहब सर झुकाये खा रहे थे। उनके चेहर पर उसे कुछ दिखायी नही दिया ता अपनी प्लेट म निकली हुई खडी मसूर की दाल मे न जाने क्या तलाश करने लगा

"नाही बाबू साहब।" आखिर देश न कहा, "मजूर यूनियन मे आपका पयसा नही चलेगा।"

शम्सू मियाँ मायूस हो गये। उन्होंने गला साफ किया कि देश उनकी तरफ देखे तो वह इशारा करें। पर देश ने उनकी तरफ देखा ही नहीं। आखिर उन्हें बोलना पड़ा क्योंकि बाबू साहब उनकी तरफ देख रहे थे। तो उन्होंने कहा, "ई का बात भई! अरे भाई मालिक नहीं होयगा तो मजूर कहाँ से आयेंगे? हमको तो बाबू साहब की तजवीज, सच पूछो तो, बहुत पसन्द आयी।"

बाबू साहब मुस्कुरा दिये क्योंकि उन्होंने बाजी जीत ली थी।

देखिए उस्ताद ने कहा, 'हम लोग बाबू साहब के गरेज में काम करते हैं और मजूरी लेते हैं। कहिए ठीक।

'ठीक।" शम्सू मियाँ ने कहा।

"मतलब यह कि हम लोग बाबू साहब का नमक नहीं अपना पसीना खा रहे। कहिए ठीक।'

"फरज करो कह दिया। शम्सू मियाँ की नाक कट गयी। वह बाबू साहब के सामने इस बात पर ठीक कैसे कह देते।

"पर जेबखरच लेके हम लोग बाबू साहब के आदमी हो जायेंगे।" देश ने कहा, 'कौन मुँह लेके अपने अधिकार की लड़ाई लड़ेंगे?'

'लड़ने की जरूरते का है?" शम्सू मियाँ ने कहा "बाबू साहब मालिक हैं, खुद खयाल रखते हैं। नहीं तो हड़ताल टूटने के बाद हम्म-तुम्म कान पकड़के निकाल बाहर कर देते तो हम कैं बात टेढ़ा कर लेते इनका?'

नतीजा यह निकला कि शम्सू मियाँ बाबू साहब की बात मान गये और देश ने बाबू साहब की बात नहीं मानी और बाबू साहब का प्रोग्राम जरा-सा गड़बड़ हो गया। वह दरअस्ल चुपके से ट्रेड यूनियन आन्दोलन में घुसना चाहते थे, क्योंकि उत्तर प्रदेश में कोई बड़ा कांग्रेसी ट्रेड यूनियन लीडर नहीं था और उनका खयाल था कि यदि वह ट्रेड यूनियन लीडर हो जायें तो उन्हें केन्द्रीय सरकार में घुसना आसान पड़ेगा। वह एक 'नहरू मजदूर सभा' की स्थापना करना चाहते थे और यह काम वह अपने 'नेशनल गरेज' से शुरू करना चाहते थे।

डिनर फ़ेल हो गया। पर जिस बात पर उस वक्त किसी ने ध्यान नहीं दिया, वह यह थी कि उस रात बाबू साहब के कमरे में शम्सू मियाँ का रास्ता देश के रास्ते से अलग हो गया जो उनकी अपनी साधारण और छोटी और मलगुजी जिन्दगी के लिए बहुत बड़ा हादसा था।

बाबू साहेब की कोठी से दोनों साथ उठे। कटरा मीर बुलाकी वहाँ से बहुत दूर नहीं था। फिर भी देश शम्सू मियाँ को अपनी साइकिल के करियर

पर बिठलाके लाया था। वापसी भी उसी तरह हुई, पर रास्ते मे कोई खास बात चीत नही हुई दिसम्बर की तेज ठिठुरानेवाली हवा हड्डियो मे घुसी जा रही थी और शम्सू मिया उस पुराने आर्मीवाले ओवर कोट म सिमट जा रहे थे जो उन्होने कोई आठ बरस पहले पुराने कपडा की एक दुकान से खरीदा था।

रात चुप थी। रास्ता चुप था। और शम्सू मियाँ चुप थे। वह देश से अपने दिल की बात इसलिए नही कह रहे थे कि देश से उनके घर की हालत छिपी हुई नही थी और देश इसलिए चुप था कि वह उस्ताद के घर की हालत जानता था और यह भी जानता था कि 'जेबखर्च' से शम्सू मिया अपने सुन्नती रोज़ा से बच जाते शायद पर उसे इन शर्तों पर पेट-भर खाना मजूर नही था।

ऐसा नही कि देश म बडी राजनीतिक और सामाजिक चेतना थी। आशाराम के साथ दिन बिताने और उसकी तकरीरें सुनने के बाद भी उसकी समझ पर कोई सियासी धार नही आयी थी। पर इज्जत और बेइज्जती की बात वह समझता था और इसलिए उस ठिठुरा देनेवाली रात म उसे शम्सू मिया इतने भारी लग रहे थे कि उसके लिए साइकिल चलाना दूभर हो गया था। फिर भी वह साइकिल चलाता रहा क्योकि वह उस्ताद को बीच रास्ते मे अकेला नही छोड सकता था।

उनके घर के सामने उसने साइकिल रोकी। शम्सू मिया उतर गये।

"अच्छा, हम जा रहे " शम्सू मिया यह कहते हुए अन्दर चले गये, क्योकि दरवाज़ा उनके इन्तज़ार मे खुला हुआ था और देश अपने साथ अकेला रह गया। उसने जनता लाण्ड्री के बोड की तरफ देखा। वह भी रात म अकेला था पर उसे देश की तरह जाडा नही लग रहा था।

जमीन पर पाव टिकाये टिकाये देश ने बीडी सुलगायी

देश के चारो तरफ कटरा मीर बुलाकी सो रहा था। और रात जाग रही थी और आसमान बादलो से ढका हुआ था। मास्टर बदरुल हसन 'नायाब' मछलीशहरी की बाहरी बठक के सिवा कही रोशनी नही थी। बीडी का एक लम्बा कश लेने के बाद उसने साइकिल मास्टर की बैठक की तरफ मोड दी। बात यह है कि वह अपने साथ अकेला होना नही चाहता था

मास्टर बदर लिहाफ मे दुबके 'शमा का मुअम्मा भर रहे थे।

यह 'शमा' मुअम्मे किसी फेरीवाले की तरह रजाचा सर पर धरे घर-घर सपने बेचते फिरते थे। बारह आने म हज़ार सपने। सपने एक अच्छे-से घर के, सपने उस लडकी के जिससे आप शादी करना चाहते हैं, सपने उस लडके

के जिससे आप अपनी बेटी ब्याहना चाहते हैं, सपने एक रेडियो और एक मोटर और एक फ्रिज के, सपने कज से निजात के और हर माल मिलगा बारह आने।

मास्टर बदर बरमा से यह मुअम्मे हल कर रहा था। एक मरतबा तीन गलतिया पर दो रुपये चालीस पैसो का इनाम मिल भी चुका था। इसलिए हर बार अपन हल' भेजते वक्त उस पक्का यकीन होता कि इस बार तो एक लाख का बम्पर इनाम या पचास हजार का अव्वल इनाम कही गया ही नही है। महीने भर वह इसी नशे म रहता। फिर पता चलता कि उसके 'हल' मे चार गलतिया निकली और दो दिन वह अपने आपको गालिया देने मे गुजारता कि 'मुहब्बत' लिखते लिखते वह 'मुरव्वत क्या लिख गया। और फिर तीसरे दिन स वह नया मुअम्मा सँभाल लेता।

हर चीज के साथ मुअम्मो का भाव भी बढा। पहले दो कूपन बारह आने मे मिल जाते थे। फिर एक रुपये म मिलन लगे। फिर सपनो का दाम डेढ रुपये हो गया। पर भला कोइ सपनो का दाम देखता है!

इशारा था। बेमौका का इजहार भी कभी-कभी बना-बनाया काम बिगाड देता है।

मास्टर बदर कुरमुत्ता की तरह 'शमा' के चारो तरफ उग आनेवाली पत्रिकाओ म निकले हुए 'सही जवाब' देख रहा था[1]। तीन की राय मे मुहब्बत' उचित था। दो की राय मे मुरव्वत पर बक करना चाहिए। एक ने 'अदावत को भी चान्स दिया था। मास्टर बदुल हसन नायाब मछलीशहरी को यह तीनो ही शब्द उचित दिखायी दे रहे थे और वह उसी उधेड बुन म थे कि क्या भरें क्योकि कल पहली डाक से उन्हे अपना 'हल' भेजना था। उन्हे इस बार पहले या कम-से-कम दूसरे इनाम की सख्त जरूरत थी क्योकि शादी चाहे शहनाज ही स क्या न हो मुफ्त म थोडी हो जाती है। वह मौलवी खैराती का इकलौता बेटा है। दोनो बाप-बेटे बरसो स दूसरो के घर वलीमे[2] खाते चले आ रहे हैं तो अब वह उसकी शादी का वलीमा गोल तो नही कर सकते थे। दो सौ आदमियो ने

---

१ दिल्ली स निकलनेवाली मासिक पत्रिका शमा हर महीने एक मुअम्मा निकालती है। और लगभग तीस चालीस पत्रिकाए ऐसा निकलन लगी हैं जो उन मअम्मो पर अपनी राय छापती है और मअम्मा भरनेवालो को मअम्मा भरने म मदद देती हैं कि किस जगह पर कौन सा शब्द भरना उचित होगा।

२ दुल्हन के पहली बार ससुराल आने पर जो दावत दी जाती है। इस्लाम इस दावत को जरूरी मानता है।

भी खाना खाया तो लगभग दो-ढाई हजार की चोट होगी। और वह जब भी मेहमानों की फेहरिस्त बनाने बैठती, वह तीन साढे तीन सौ से नीचे न रुकती। और जब वह झल्लाकर यह बात मौलवी खैराती को बताता और उनसे कहता कि वह उसे कम करने की कोशिश करें और मौलवी साहब बीडी सुलगाकर सुनने बैठ जाते, तो हमेशा उसे यह पता चलता कि वह लगभग तीस चालीस जरूरी लोगों को भूल गया है। वह उस फेहरिस्त को फाड डालता और आस्तीनें चढाकर फिर लग जाता। अपने दिल में उसने तै कर रखा था कि फेहरिस्त को दो सौ से आगे नहीं निकलने देगा। मगर फेहरिस्त उसके काबू में नहीं आ रही थी। तो उसने एक और तरकीब सोची। वह बाबू नानबायी की दुकान पर जाकर बैठ गया कि मीनू ही को कुछ घटा बढाके बजट ठीक कर लिया जाये।

बकरे का कोरमा
बकरे का कलिया (आलू या अरबीवाला)
शीरमाल
आबी रोटी
पुलाव
शाही टुकड
मुजाफर

बाबू नानबायी ने पूछा "खायेंगे कितने लोग?" बद्रुल ने कहा, यही कोई साढे तीन चार सौ लोग। बाबू अपनी दाढी को खुजलाने में लग गया। बद्रुल इन्तजार करते रहे। खुजली खत्म होते होते बाबू ने दिल ही दिल में हिसाब लगा लिया था।

बोला, "साढे तीन सौ जने खायेंगे तो समझ लीजिए कि सवा पाच हजार और चार सौ जने खायेवाले हैं तो छ सवा छ हजार।'

दूसरा मीनू बनने लगा।

बडे[1] का कोर्मा
बडे का कलिया
आबी रोटी
शीरमाल
पुलाव
मुजाफर

---

१ गाय बैल भैंस के गोश्त को बडा गोश्त बोलते हैं।

बजट साढे तीन सौ आदमी चार हजार दो सौ।
चार सौ आदमी चार हजार आठ सौ।

तीसरा मीनू।

बडे का कलिया

आबी रोटी

पुलाव

फीरिनी

बजट साढे तीन सौ के लिए दो हजार आठ सौ।
चार सौ के लिए तीन हजार दो सौ।

मात्वी खराती को बताये बिना उसन यह तीसरा मीनू पसन्द कर लिया था। और उसने यह भी तै कर लिया था कि अब्बा चाहे बुरा मानें चाह भला, मेहमाना की फेहरिस्त को खच तानकर वह तीन सौ तक तो ले ही आयगा।

और सच्ची बात यह है कि उसकी शादी उसकी तरफ से वलीमे के कारण रुकी हुई थी और शम्सू मिया की तरफ मे दहज के कारण। माना कि मास्टर के अब्बा सिफ लडकी माग रहे है पर फिर भी शम्सू मिया का भी तो कुछ फज था। दहज तो आ हजरत[1] ने अपनी बेटी को भी दिया था। कौन कह कि मौला अली न कह दिया था कि दहेज नही मिलेगा तो बरात लौटा ले जायेंगे

और इस वलीमे और दहेज के चक्कर म मारी जा रही थी मास्टर बद्रुल हसन नायाब मछलीशहरी और शहनाज की मुहब्बत।

तो उधर शहनाज मुअम्मे हल कर रही थी और इधर मास्टर बद्रुल। इनाम किसी का नही मिल रहा था।

एक बार शहनाज ने सही मुअम्मा भर भी दिया तो उस बार दो हजार सही हल आ गय और शहनाज को साढे चौबीस रुपय का मनीआडर मिल गया और वह भी मनीआडर की फी काटने के बाद। यह साढे चौबीस रुपय दहेज और वलीमे के लिए काफी नही थे

तो शहनाज न देहाती और शहरी जिन्दगी के मुकाबले पर एक मजमून लिखा। मजमून यू था

"मुझे तो लगता है कि हमारी शादी शायद ही हो सके। दहज और वलीमा हमारी दुनिया म हमारी मुहब्बत से बडा है। तुमने मुगले आजम का वह गाना तो सुना होगा जब प्यार किया तो डरना क्या। मुझे निकाह क्या नही ले

---

१ मुसलमान अपने पैगम्बर को आं-हजरत कहते हैं।

जात " इस 'मजमून' म उसन वह सारे फिल्मी गान खपा दिय थे जा उसे याद थे। यह मजमून ठीक' होने के लिए मास्टर को खुद शम्सू मिया न दिया। मास्टर सन्नाटे म आ गया। उसने उस मजमून को ठीक करन मे कई दिन लगाये। आखिर सतरो के बीच मे उसन अपना जवाब लिखकर कापी फतो के हाथ भिजवा दी। उसन लिखा "फिल्म और जिन्दगी म बडा फक हाता है। फिल्म हीरो हीरोइन की शादी पर खत्म हा जाती है। शादी के बाद दोना पर क्या गुजरती है यह कोई नही जानता। मैं तुम्ह निकाल ला सकता हूँ। फिर कटरा मीर बुलाकी छाडना पडेगा। नौकरी से निकाल दिया जाऊँगा। नौकरी है तब तो खच चलता नही। नौकरी भी न होगी तो क्या करेंग—मैन नमाज पढनी शुरू कर दी है। तुम भी नमाज पढा करो और दुआ मांगो कि एक बार 'शमा' का पहला इनाम मिल जाये।

और वह दोनो फिर मुअम्मे भरन म लग गये

ब-मौका का इजहार भी कभी-कभी बना-बनाया काम बिगाड दता है।

मुहब्बत।

मुरब्बत।

अदावत।

तीना ही शब्द ठीक बैठते है। अब शमा का मुअम्मा बनानवाला बिचारा क्या जान कि उसके शब्दा की मायानगरी म वलीमे और दहज की जजीरो मे जकडा मास्टर बदुल और शहनाज का प्यार पडा है और इस मायानगरी की कुजी इन शब्दो मे स किसी एक शब्द के पास है

"का हो रहा है मास्टर ?" देश न बाहर ही म हाँक लगायी।

मास्टर हडबडाके उठ बठा। उसकी बनियाइन फटी हुई थी और मली थी। देश अन्दर आ गया।

"लगे हो मुअम्मे मे ?"

"नीद नही आ रही थी तो सोचा कि मुअम्मा ही भर डालू का पता, लडी जाय टिप्पस।" मास्टर ने कहा, "कहने से वायें किलू ई है कि बमौका डैश डैश का इजहार भी कभी-कभार बना बनाया काम बिगाड देता है। मुहब्बत, कि अदावत कि मुरब्बत ?"

"देखो भैया मास्टर बदर। मुहब्बत का तो बेमौका इजहार होय नही सकता। हर बखत ओके इजहार का बखत है। अब बची मुरब्बत। तो ऊ इजहार की चीजे नही होती। अदावत जरूर मौका-बेमौका देखके करना चाहिए। हम अभइ इहे घूतियापती करके चले आ रह बाबूजी किहाँ से। उस्तादो

हमरी बात पर तनी सा टिनिक गये हैं।"

बद्रल न कोई जवाब नहीं दिया। वह जवाब दे भी क्या सकता था! वह तो खुद ही अपने सवालों की फांसी गले म डाले झूल रहा था। देश बठ गया। मास्टर के बण्डल से बीडी निकालकर सुलगाते हुए उसन एकदम म कहा, "हम्मे लग रहा कि तू लोग का बिआह साइदे हो सके। न तुमको इनाम मिलिहे न तोरी बरात जैयह। भगा लिआव अम्मां को एक दिन जो कडा करके। फिर जो होइह, देख लिया जैयह।"

कमाल करते है आप।" बद्रुल ने कहा, 'यह कोई शिराफत हुई?'

'हा तो बयठ के मुहब्बत, मुरव्वत और अदावत की चटनी चाटो। चल हैं पियार करे।

मेरा प्यार तो अभी मुश्किल से दो ढाई बरस का है। आप क्या नहीं करते शादी?"

देश ने सुलगती हुई बीडी कमरे के कच्चे फश पर फेंक दी और बद्रुल डर गया। क्योंकि देश की आखो म गुस्से की लपक आ गयी थी। पर वह गुस्सा पी गया और बाला हमरा बिआह दहेज और वलीमे की खूटी पर लटका धूप ना खा रहा। हम खुद ना कर रहे बिआह। दस-पाच दिन मे जमीन की रजिस्टरी हो जाये दो फिर सुन लेना सहनाई। " मास्टर के बण्डल से दूसरी बीडी सुलगान के बाद वह खडा हो गया "तुम मुहब्बत अदावत का चक्कर चलाव। हम चले।"

'बैठिए ना थोडी देर।

"ना भाई। नीद आ रही। हम तो रोसनी देखके आ गये रहे मिनट भर के वास्ते।'

वह फिर कटरा मीर बुलाकी के अँधेर म उतर गया।

बद्रुल स उसने यह तो झूठ कहा था कि उसे नीद आ रही है क्योंकि नीद तो उसे बिल्कुल नही आ रही थी। उसे फिक्र लगी हुई थी कि जेबखचवाली बात पर बिल्लो क्या कहेगी। उसे लगभग यकीन था कि बिल्लो भी वही कहेगी जो उस्ताद ने नही कहा। जो उस्ताद की खामोशी ने कह दिया। तो इस वक्त वह चोरो की तरह घर मे जाकर पड रहना चाहता था कि बिल्लो को उसके आने का पता ही न चले। सवेरे की भीड-भाड म शायद वह बात भूल जाय।

पर उसकी बैठक म पहलवान और इतवारी बाबा शतरज खेल रह थे। वह बठक मे घुसा तो इतवारी बाबा कह रहे थ, 'लग रहा कि भगवान उप्पर बरफ की फक्टरी डाल लिहिन हैं। हमरे होस मे तो ऐयसा पाला कभी पडा

ना रहा । सह बचो पहलवान ।"

पहलवान सह बच गये । बोले, "हमरा तो खून खौल रहा सरे साम से ।"

'केह बात पर ?" दत्त न पूछा ।

"जोखन का मर्मो ना आयी महनाज के वास्त अपना पयाम दत ।'

"ए मे खून खौलाय की का बात है ?" इतवारी ने कहा ।

"है कैयसे नहीं ।' पहलवान टिक गये, 'जो सुनगा थू थू करेगा कि कटरा मीर बुनाकी म कैयसे लोग रहत हैं ।

"कोई ऊ थू थू थू ना करगा ।' इतवारी ने कहा "आजकल हर महल्ले म एक आध ठो जोखन और महनाज हैं। जिन्दगिये मयली हो गयी है पहलवान !" बिल्लो चाय की दो प्यालियाँ लेकर आ गयी । इतवारी न गम चाय की पहली चुसकी लकर कहा, 'जो कपडे की तरह उतर लायक रहती तो बिल्लो से हम जरूरन कहते कि जिन्दगी का जनना लाण्डरी म धोके ठीक से इसतिरी कर दे ।'

किसी ने कोई जवाब नहीं दिया । पहलवान न प्याली की आधी चाय तश्तरी मे उँडेलकर प्याली देश की तरफ बढा दी । देश वहीं बठ गया और चाय की चुसकियाँ लेने लगा । बिल्लो की बनायी चाय का मजा ही कुछ और होता था । पर वह बिल्लो की तरफ देख नहीं रहा था कि कहीं वह पूछ न बठे कि बाबू साहब के यहाँ कसी गुजरी ।

बिल्लो बोली, "कान खोलके सुन लें लोग "

सबने घबराकर उसकी तरफ दखा । देश ने फिर भी न देखा ।

शम्सू मामू इकार ना किहिन हैं । महनाज बाजी उनकी बेटी है । कोई जने को बीच मे बोले का जरूरत ना है। ऊ चाहे तो महनाज को अन्धे कुए म फेंक दें ।"

"का बात करती हो तुम," देश से चुप नहीं रहा गया, 'हमरे उस्ताद की बेटी हमरी बहन बराबर है । ओको उस्ताद उस झड्डूस से बिआहगे ता हम जरूर बोलेंगे । यू है हमरी जिन्दगी पर !"

"ए बेटा ," इससे पहले कि बिल्लो कुछ बोले, इतवारी बाबा बोल पड, 'अब थूके लाएक एतना काम होय लगा है ई मुलुक म कि थूक कम पडेवाला है । कोई मेठ-साहूकार को दूर की सूझय । ऊ लैसेस लेके अमरीका से थूक थोक मे खरीद लीहे और इहाँ बचना सुर कर दिहे "

'ते पर सरकार खफा होके थूक पर कण्ट्रोल कर दीह । और थूक मिले लगेगा रासन कारड पर ।'

सब हँस पडे । तनाव कम हो गया । पहलवान न चाय का शडाका मारा

और देश गनगना गया और उसन शिकायत भरी निगाहा स पहलवान की तरफ देखा। पर पहलवान का पता ही न चला। बिल्लो अन्दर चली गयी।

"ए महीने हम्मे कुल मिलाके अेक सौ बाइस रुपय की खराब बेकारी मिली है भीक म। जे खराब अठन्नी-चवन्नी को काई दुकन्दार हाथ न लगाय, थमा दया फकीर को और मुफ्त म ने ल्यो असिरवाद। हम तो उर्दू हिन्दी मे अेक ठो तख्ती लिखवाके टागेवाले हैं अपने गले म कि कृप्या खराब अठन्नी चवन्नी मत दिजिए "

देश ने कहा, आपका सूचती है दूर की।

बाबा बोला "हम ता साच रहे कि एक ठो आल इण्डिया भिकमगा फडरेसन बना डालें। आखिर भिकमगे लोग भी ओटर ह। और भगवान झूठ न बुलवाय, मुलुक म दू अढायी करोड स कम ना होगे हम लाग। तो हम लाग काहे को ओट दें सरकार चाहे अपोजीसन को ? हम लागन की उन्नति के वास्ते कोई का किहिस है आज तक ? और भया कोई ई बात भी नही कि हमरा ओट टाटा बिरला और लाल महम्मद बीडीवाले से कुछ कम है वजन म।'

'चुनाव लडे का सौक चर्रा रहा का ?" पहलवान न पूछा।

"क्यो न चर्राय सौक ?' बाबा ने पूछा, हम तो रायबरेली से चुनाव लडेंगे बिटिया रानी के खिलाफ्त म। कि हम उनह इ बता सकें कि ए बिटिया तूह को, हटाये वास्ते, गरीबी ना देखायी दे रही तो ल्या हम महजूद है तुम्हारे सामने। हटा दयो हम्म।'

'हम तो कभयी ना देंगे तुमका ओट इन्द्राजी के खिलाफ। बिल्लो पहलवान के लिए पान का बीडा लकर आ गयी।

"तू रायबरेली मे ओटरे ना हो।' देश न कहा।

'होते तब्बो ना देत।" बिल्लो न कहा।

"ए ही तो साला मिशटेक है जिन्दगी मे बिल्ला।' दश न कहा 'जनता साली मछली माफिक है। नेता लोग सपनो का चारा लगाके जिन्दगी के तलाब म काटा फेंकत है और हम लाग गपागप चारे के साथ काटा निगल जाते है। और फिर पाच बरिस के बाद जिन्दा करके तलाब म फेंक दिये जात है "

इतवारी बाबा और पहलवान भिड गय बहस मे। बात इन्द्रा गाधी की निकल आयी। इतवारी बाबा की लाजिक सीधी-सादी थी कि इन्द्रा गाँधी गरीबी देखिने ना हैं तो हटाये के वास्त बिचारू गरीबी का पहचनिह कयसे। बिल्लो इन्द्रा गाधी के साथ थी। और पहलवान बिल्लो के साथ थे। दश ने सोचा कि जान बचाने का इससे अच्छा मौका शायद ही मिले, ता वह चुपचाप सरक गया।

बिस्तर इतना ठण्डा था जैसे बफ की सिल । उसके दात बजने लगे । उसने गडाप से लिहाफ खीचा और सर ढक लिया और धीरे धीरे उसकी अपनी सास की गर्मी मे बिस्तर गम होने लगा और रगा म रेंगती हुई सर्दी पलग से नीचे उतर गयी । तब उसने बीडी सुलगाई । पासवाली बठक से पहल्वान और इसवारी बावा के लटने की आवाज अब भी आ रही थी । दीवार पर सामने शर्मिला टैगोर का एक फोटो टँगा हुआ था जो देश न किसी फिल्मी पत्रिका से काटकर दीवार पर चिपका दिया था । बिल्लो के बाद यदि कोई लडकी उस पसन्द थी ता वह शर्मीला टैगोर थी । उसके गाला के गडढे उसे बहुत अच्छे लगत थे । वैस उसकी कोठरी की दीवार पर जीनत अमान और रेखा की तस्वीरें भी थी । तस्वीर तो खैर हेमा मालिनी की भी थी । पर हेमा मालिनी उसे पसन्द नही थी इसलिए उसन उसके चेहरे पर मूछें बना दी थी और वह भी पहलवान छाप । हमा की तस्वीर की तरफ देख कर वह मुस्कुरा दिया

"कयसी गुजरी बाबू साहब किहा ?" बिल्ला की आवाज़ आयी ।

"क्या गजब करती हो तुम' देश ने कहा । "मामा ओमा जाग रह । तूहे इहा देख के का सोचेंगे ।"

'मतलब यह कि बाबू साहब किहा कुछ गडबड हो गयी है ।" बिल्लो ने उसकी बात का नोटिस लिय बिना कहा ।

"अरे नही भई ।' देश ने जसे मक्खी हँका दी । "गडबड का हो सकती है । खाया पीया, चले आये ।'

'ऊ खान पर बुलाइन काह को रहा ?" बिल्लो ने पूछा । "इ ता हम मान ना सकत कि उनह एकदम से तोरी और मामू का बडा पियार आ गया ।"

"यूनियन बनाये को बोले ।"

'और तुम मान गये होगे ।"

'हम्मे बिलकुल चूतिया समझती है का ।' देश ने कहा । हम भला फँसे वाले हैं उनके कम्पे मे । साफ मना कर दिया । तब तो ऊ सटपटा गये । बोले हम तुम दूनो की तनख्वाह कुछ बढा देंगे । हम तेपर भी ना फँस ।"

"केतना बढाये को बोले ?"

"ई तो हम नही पूछा ।"

"और का । ई पूछे की भला तुमको का जरूरत रही । केह मारे कि घर मे तो भगवान की दया से सबरे के वखत दस के नोट की और शाम के वखत पाच के नोट की बारिस होती है रोजाना ।"

'बस शुरू हो जा ।" देश ने कहा । 'अरे बिल्लो ! बाबू साहब सखी हातिम

की पिलौठी की औलाद तो हैं ना कि उनह गरज के दू आदमियन पर रहम आ गया। गरीब तो हम सब हैं। फिर दू आदमी की तनखवाह क्या बढे। आसाराम ने जिंदगी म एक ही बात तो पत की कही कि पूजीपति जहर दे तो समझो कि परेसानी की कोई बात नही, मुन्ना ऊ माल पुवा खिलाय लग तो समझ लो कि कोई खतरे की बात जरूर है।'

'आसाराम की बात तो तुम मोसे करो मत।" बिल्लो न कहा। 'उनका बस चले तो गेराज बंद करा दें अपने इंकलाब जिंदाबाद के चक्कर म। मामा कहते रह कि ओबीन साहब जमीन का कागज तयार कर दिहिन ह। कल छुटटी है। परसा रजिसटरी करवा लिया जाय। चल तनी जमिनिया देख आयें।"

'इ कडकडात जाडे मे ?' देश ने कहा। बिल्लो ने उसे घूरना शुरू किया। "अच्छा भाई आस मत निकाल। चल। मुदा जमीन कही भागी ना जा रही है। कल भी ओही रहगी और परसो भी।"

देश गम गम लिहाफ से निकला तो उसे झुरझुरी आ गयी। पास वाले कमरे से पहलवान और इतवारी बाबा की बहस की आवाज अब भी आ रही थी। इतवारी बाबा अब भी इन्द्रा गाधी के विरोधी थे और पहलवान अब भी इन्द्रा गाँधी की तारीफो के पुल बाधने मे लगे हुए थे—

"अरे भाई कोई जबरदस्ती है," पहलवान की आवाज आ रही थी। "क्यो मिलें परधान मनतरी कोई से। और मिलना ही होगा तो बरजनेफ से मिलेंगी। ए भाइ, का नाम है माउजेतुग से मिलेंगी। निक्सन स मिलेंगी— मिले के वास्त एकठो जयपरकासे बाबू रह गये हैं का ?"

उन दोना ने इतवारी बाबा का जवाब नही सुना, क्याकि वह पिछने दरवाजे से निकल गय।

बाहर रात घर के अदर से ज्यादा ठण्डी थी। सर्दी की वजह से देश ने बिल्लो से लिपट जाना चाहा पर बिल्लो ने उसे डाट पिला दी। "हम्मे ई सब ना अच्छा लगता'—रात यह सुनकर मुस्कुरा दी। पास बैठा हुआ एक कुत्ता गुर्राया पर बिल्लो को पहचान कर चुप हो गया।

दोना चुपचाप चल पडे। रात के दान बजन लगे। कुहरा घना हो चुका था। सास के जरिए बदन मे उतरा जा रहा था।

"हम भी सोच रह कि जमीन लेते ही घर का काम शुरू करवा दिया जाय।" बिल्लो ने जाडे की तरफ से ध्यान हटाने के लिए बात शुरू की, 'एक ठो कमरा और दल्लान बन जाय ता हम अपने घर मे उठ जायें। बाकी घर अपना अराम से बनता रहिए।

"तुम तो ई बताव कि बिआह कब होगा क्याकि हम्मे आडा बहुत लग रहा।" देश न कहा।

"ढेर बौगव मत।" बिल्लो बोली। "बिआह बिना कौन काम रुका है तोरा। खाना वखत पर मिली जा है। कपडा धुला जा है—अरे हा, कपडे पर याद आया। छब्बिस रुपया पचास पयसा तारे पर धुलाई बाकी हे।"

'तुम अब बहुत बैयमानी करन लगी हो।' देश ने कहा। "छब्बिस रुपया पचास पैयसा कानी कहा से बाकी निकल आया। ठीक है। हम एक लाण्डरी वाली स बिआह कर वाते है। तुम्हारी दुकान पर कपडा धुलवाना ही बन्द कर देंग।'

'ढर इतराव मत।" बिल्लो ने कहा। 'बिआह के बाद हम तोरा कपडा मुफ्त मे ना धोय बाले हैं।" शायद वह कुछ और कहती पर सामने घर की जमीन पडी थी। उस देखकर वह चुप हो गयी जसे वह जमीन न हा, उसका भविष्य हा। उसके सपनो की कोपल हो।—"कैयसी अच्छी लग रही जमिनिया।'

देश खिलखिला के हँस पडा। पर बिल्लो ने उसे डाटा नही। उसने उसे घूर के भी नही देखा। वह शर्मा गयी क्याकि उसके हृदय मे शहनायी बजने लगी थी और जस महल्ले की तमाम औरतें ढोल पर गा रही थी—

चेहरा न करियो उदास, मया मैं तो पास रहूगी।
अपने ससुर का मैं बाबा कहूगी
तो बाबा न आयेंगे याद,
मया मैं तो पास रहूगी—

"कुछ बोले का एरादा ना है का ?" देश न पूछा।

'का बोल ?' बिल्लो ने पूछा।

"हम्म पता होता तो पूछते ही काह को ?' देश बोला। 'फिल्मि का हिरो हीरोइन हाये म एही फायदा है कि काई बात समझ म न आवे तो दन देना गाना शुरू कर देते हैं सब।'

"गाना दन दना यान कयसे आ जाता है सभन को ?"

'एही तो हम भी साचते रहते हैं।"

'ना भया।' बिल्लो बोली। 'हम्मे फिलिमवाली जिन्दगी ना चहिए। रात दिन गाना गायेंग तो काम कब करेंगे। और काम ना करेंगे तो खायेंगे का।'

हर सपने के गले मे यही फन्दा है कि खायेंगे क्या। यह फन्दा अग्रेजो के

जमाने मे था। नहरू क जमान म भी रहा। शास्त्री के जमान म भी रहा। इन्द्रा गाधी के ज माने मे भी है।—लगता है आजादी म कही खाट है। काई मिलावट है। इमिटेशन है। चावल पाँच रुपये किलो। शक्कर साढ़े सात रुपय किलो। अरहर की दाल साडे चार रुपय किला। मिटटी का तल कभी है कभी नही है। प्याज दो रुपय किलो। सपना—सपना तो खुले बाजार मे मिलता ही नही। चोर बाजार म जाव और सपना खरीदो। और वहाँ भी ठिकान म सपने मुशकिल ही से मिलत हैं। किसी का बाना झडा हुआ है। किसी की कगर झडी हुई है। कोई बीचोबीच स चिटका हुआ है—महनाज जोखन म ब्याह दी जाती है जो उसके बाप शम्सू मियाँ से उम्र म कुछ ही छोटा हागा। शहनाज और मास्टर बद्रुल हसन नायाब मछली शहरी की शादी टलती ही जा रही है क्योकि न शम्सू मिया दहज का बजट बना पात है, न बद्रुल हसन वलीमे का।—बहुत दिनो के बाद कटरा मीर बुलाकी म एक अच्छी बात हुई। देश और बिल्लो की शादी हा ही गयी—

आशाराम ने कलम रोक लिया। वह उस अच्छी बात का पूरा मजा लेना चाहता था।

देश और बिल्लो की शादी मे सारा कटरा मीर बुलाकी उमड आया था। बस महनाज नही आयी क्याकि जोखन मिया महल्ला यूथ कांग्रेस के अध्यक्ष हो गये थे और देश की शादी म शरीक होना राजनीतिक दृष्टिकोण से ठीक नही था क्योकि देश आशाराम का दोस्त था और आशाराम सरकार के दुश्मना म गिना जाने लगा था। जोखन ने तो शम्सू मियाँ को भी यही मशविरा दिया कि वह भी इस शादी मे शरीक न हा क्याकि वह मोटर मिकेनिक्स यूनियन के अध्यक्ष हैं और दश उस यूनियन का विरोधी है। पर शम्सू मियाँ ने यह बात न मानी। देश से उनके तअल्लुकात वसे तो बाबू साहब के यहा खाना खान वाली रात ही गडबड हो गये थे। बैस दोना मिलते उसी तरह पर अब शम्सू मियाँ देश के खाने म पहले की तरह शामिल न होत।—तो धीर धीरे देश भी खिच गया। सलाम दुआ हो जाती पर दिलो के दरवाजे जसे बन्द हो गये थे। पर शहनाज को इन बातो से क्या मतलब था। वह माभा लायी। उसने ढोल पीटे। अपनी आवाज फँसायी। नेग पर खूब-खूब लडी और जब बिल्लो विदा होकर जाने लगी तो बाबुल गाते-गात महनाज रो पडी।—बाकी औरतें गाती रही—

दमडी का सेंनुर महग भइल बाबा,
चुनरी भइल अनमोल।
एही रे सेंनुरवा के कारन रे बाबा,

छुडल्यो मैं देस तुहार।
डालिया का वास पक्डे रोयें वीरन भैया
वहिना मोरी दूर देसी भई, परदेसी भई।
कौन लगयह बजरिया मे आसिर बीरन के अँसुअन का मोल रे
बाबुल,
चुनरी भइल अनमोल—

जब यह गाना बना होगा तो "अनमोल" का मतलब कुछ और रहा होगा। पर अब "अनमोल" का मतलब सूखा, फीका और बेदद "अनमोल' ही है—चुनरी वाकई बहुत महगी हो गयी है—तमाम औरतें रो रही थी और गा रही थी और देश दूल्हा बना हुआ था और बिल्लो दुल्हन और वह बिल्लो का अपने घर ले जा रहा था—अपने नये घर। वह अपनी नयी जिन्दगी अपने नय घर म शुरू करना चाहते थ।

वही लोग बराती थ। वही लोग घराती। पहलवान न बटी बिदा की और नये घर मे बहू उतारी।

घर म पहला कदम रखत ही बिल्लो ने चुपके म घूघट के अन्दर आख खोल दी। वह देखना चाहती थी कि उसका घर कसा लग रहा है। पतग के कागज की झण्डिया लहरा रही थी। आगन मे लगी हुई चमेली हवा म हाथापाई कर रही थी। या शायद सर उठा उठा कर आनेवाली नयी जिन्दगी को देखने की कोशिश कर रही थी।

शहनाज बिल्लो को घर के अकेल कमरे मे पहुचा गयी। कटरा मीर बुलाकी की तमाम जवान ब्याहता औरतें बिल्लो को तरह-तरह के मशविरे दे रही थी —फिर किसी बडी-बूढी, शायद सकीना बी न उन्हे डाट पिलायी और तमाम औरतें बिल्लो को अकेला छोडकर चली गयी और उस तक उसके दिल की धडकना की आवाज बिल्कुल साफ आने लगी जैस वह कही बिल्कुल पास ही धडक रहा हो।

"डर लगे तो हम्मे बुला लिहो।' बाहर स किसी की आवाज आयी और फिर एक कहकहा गूजा जैसे कोई नारपाल छूट गया हो और हर तरफ उस कहकह के फूल बिखर गय और कभी न शर्मानेवाली बिल्लो शर्मा गयी।

अच्छा चलत जा लोग।" किसी और की आवाज आयी, ढेर छी-खी करे की जरूरत ना है।"

कहकहा फिर पडा। फिर हँसने की आवाजें दूर होती गयी और फिर सन्नाटा हो गया और दरवाजा खुलने की आवाज आयी। यह आवाज भी इतन

पास से उभरी जसे दरवाजा आँगन के पास नहीं, ठीक उसके दिल के पास खुला हो।—फिर कदमों की आवाज आयी। इस आहट को वह खूब पहचानती थी। यह देश की चाप थी। उसने कनखियों से दरवाजे की तरफ देखा। देश चौखट पर रुका हुआ उसे देख रहा था। उसने जल्दी से आँखें बन्द कर लीं।

सामने दीवार पर वह तस्वीर फ्रेम में जड़ी हुई टँगी थी जो कई साल पहले फुटपाथ पर खिंचवायी गयी थी और जिसमें देश एक बड़ी सी कार ड्राइव कर रहा था और बिल्लो अकड़ी हुई उसके पास बैठी थी। उसने साँस इस डर से रोक रखी थी कि कहीं तस्वीर बिगड़ न जाये।

देश अन्दर आ गया। घबराया हुआ वह भी था। उसने कमरे का दरवाजा धीरे से बन्द करना चाहा पर सफल न हुआ। दरवाजा धड़ से बन्द हुआ और उसने घबराकर बिल्लो को देखा। उसे यकीन था कि बिल्ला जरूर चिल्लायगी कि नया दरवाजा तोड़ना है का—पर बिल्ला ने तो कुछ भी नहीं कहा तो उसने अपना गला साफ किया कि बिल्लो शायद अब मुड़े। पर बिल्ला का सर तो कुछ और झुक गया। तो उसे हँसी आ गयी, उसे अपनी इस हँसी की आवाज बड़ी अजीब लगी। आज तक वह इस तरह नहीं हँसा था।—वह खुद अपनी हँसी की आवाज से झेंप गया। उसने फिर बिल्ला की तरफ देखा। वह उसी तरह आँखें बन्द किये और सर नहुड़ाये बैठी हुई थी। वह तो घबरा गया कि बिल्ला को हो क्या गया है। आखिर वह पलंग के पास पहुँच गया और एक बार फिर गला साफ करने के बाद बोला। 'मतलब ई कि तुम आज से हमरी पत्नी और हम तुम्हारे पति।—" बिल्लो का सर और झुक गया। उसने झुककर बिल्लो का मुँह देखा और बोला "तू तो आज कल से भी जियादा खूबसूरत लग रही हो।' बिल्लो फिर भी कुछ नहीं बोली तो उसने हिम्मत करके उसकी ठोड़ी उठायी। बिल्लो की आँखें और सख्ती से बन्द हो गयीं और उसका साँस तेज चलने लगा। वह बोला 'पहिले तो हमरी हिम्मते ना होती रही भीतर आय की। बाहर एतनी भीड़ रही कि हम का बतायें। सब के सामने कयसे आ जाते।—मतलब ई कि लोग का सोचत—सब जने को पता है कि आज हमरा तोरा बिआह हो गया है। सबको ईहो मालुम कि तुम इस कोठरी में मौजूद हो। एक एक पाव मन मन भर का हो गया। पसीना छूट गया। ते पर लगे सब लोग हँसने। तो हम घबरा के अन्दर चल आय।—ऐ भाई दुलहा बन से हम बदल गये हैं का। तुम हमको पहचान ना रही हो। अरे तो साफ सुन लो कि ना पहचानोगी तो जो छ रुपया अस्सी पयसा धुलाई का बाकी है हम मार बैयठेंगे।

बिल्लो ने एकदम से आखें खोल दी और उसकी तरफ देखते हुए बोली "छ रुपया अस्सी पैसा कैसे ? नौ रुपया पतिस पैसा बाकी है। परसा दू ठो बुसट और पतलून ना धुलवाये रह्यो अरजण्ट ?"

"लूट पड गयी है का। दू बुसट, दू पेंट की धुलाई दू रुपया पैंतिस पयसा ? हम आज से ना धुलवायेंगे अपना कपडा जनता लाण्डरी म।"

"तो और कहा धुलवायेंगे ?'

"नयी दुलहिन हो के पटर पटर बोलत सरम नही आती। ढेर टें टें करेगी तो अभई ले लेंग एक ठो चुम्मा।'

बिल्ला का चेहरा शर्म से लाल हो गया और उसकी बडी बडी भूरी आखें झुक गयी। देश न उसके गले मे बाह डाल दी और बोला, 'कितन दिन इन्तिज़ार करना पडा है इस दिन का। छुए तक ना देती रही तुम। जुदाई की तडपन सूद समेत वसूल करे का जमाना आ गया।—चच, अरे आख खोलके देख तो ले कि दुलहा बने हुए हम कयसे लग रह। खाल न। ई डबल सीस मे आज हम रात भर अपना मुह देखे वाले हैं।"

बिल्लो न आखें खोल दी और देश उस डबल शीशे म अपनी और अपने प्यार की और अपन भविष्य की सूरत दखन म लग गया।

कटरा बी आर्जू

होली का दिन था।

कटरा मीर बुलाकी भी सात रंगों में शराबोर इन्द्रधनुष की तरह फैला हुआ था। बिल्ला नाच रही थी। शेख गालियाँ बक रहा था कि होली के दिन गाली बकने का कोई बुरा नहीं मानता।—

वह जुम्मे का दिन भी था।

मौलवी खैराती और शम्सू मियाँ इधर उधर देखकर अपने घरों से निकले। सन्नाटा था।

"पिछवाड़ेवाली गली से निकल लिया जाय। शम्सू मियाँ ने कहा।

दोनों दबे पाँव चोरों की तरह पिछवाड़ेवाली गली की तरफ बढ़े। देश बंगरा तो इस ताक में ही न थे। सब निकल आये। कुछ कटरा मीर बुलाकी के लोग थे और कुछ कटरा मीर बुलाकी के लोग नहीं थे। मौलवी खैराती और शम्सू मिया ने घिघियाकर पहलवान की तरफ देखा।

"बहुत चट बनत रहे।"

'जुम्मे के मारे लुका गये रहे।' शम्सू मियाँ ने कहा, "नहीं तो का कभईं ऐयसा भया है कि हम होली न खेलें। अभइ रंग खेलेंगे तो फिर नहाए को पड़ेगा। जुम्मे का बखत निकल जायेगा।

'अरे मियाँ लोग को तो कोइ बहाना चहिये होली न खेने का।' किसी बाहरवाले ने कहा।

पहलवान ने उसे वह लप्पड़ दिया कि वह लुढ़कनियाँ खाकर दूर जा गिरा।

"ई कटरा मीर बुलाकी है।" पहलवान ने कहा, "खबरदार जो इहाँ हिंदू मुसलमान का चक्कर चलाया। ई सब करना है तो अतरसुइया जाव या अटाले का चक्कर लगाव।"

वह बाहर वाला हाथ पाव का अच्छा था। उठा।

"तारी तो हम मा—' देश ने उस इससे ज्यादा न कहने दिया। वह उसे मारने लगा। शम्सू मिया ने देश का हाथ पकड लिया, 'अरे पागल! पागल हो गया है। सरम न आती आज तहवार के दिन दगा करते।"

देश रुक गया।

"अरे बेटा देश', मोलवी साहब ने कहा जिन्होंने वे दाग सफेद खादी का कुरता-पाजामा पहन रक्खा था, 'रंग से होली खेलो बेटा। खून से होली खेलने में क्या मजा है। चलो हम जुमे की नमाज कजा कर लेंगे।'

"कजा कयसे कर लोगे जुम्मे की निमाज। कोई मजाक है।" पहलवान ने कहा "और ई साला होता कौन है हमरे महल्ले की निमाज कजा करवाये वाला? निकल हमर महल्ले से।"

'काहे को निकलें।' बाहरवाले ने कहा, "महल्ला कोई के बाप का ना है। मिया लोग का जुम्मा तो १५ अगस्त सन ४७ को चला गया पाकिस्तान। होली से परहेज है तो इहाँ रहे की जरूरत का है।"

"ए भरभितने।" पहलवान ने कहा 'शम्सू मिया इ महल्ले में चव्वन बरस से रह रहे। एतनी तो अभी तोर बाप राधेश्याम की उमिर ना होगी।'

"दखा पहलवान बाप का नाम मत लो।" उसने कहा।

'काहे न लें व?" पहलवान ने पूछा "तोरा नाम अवतार। तोरे बाप का नाम राधेश्याम। कहे त दादा का नाम भी बता दें लगे हाथ।" पहलवान ने पच से जमीन पर थूक दिया। फिर वह देश की तरफ मुडे, 'देखो जी। ऊनियन पूनियन तो हम जान ना। शम्सू मिया और मोली साहब को जुम्मा महजिद तक पहुचा आव।"

देश सर खुजलाने लगा। उदास भी हो गया। क्योंकि आज उसे पहली बार पता चला कि उस्ताद और उसके बीच कितनी दूरी आ गयी है। बाबू साहब की दावतवाली रात और होली के उस दिन में कोई दूरी नहीं थी—मुश्किल से ढाई तीन महीने थे उस रात और इस दिन के बीच में। पर इन ढाई तीन महीनों ने जाने क्या कर दिया था। जैसे दोनों बदलकर कोई और हो गये थे। जैसे वह दोनों एक दूसरे को जानते पहचानते ही नहीं थे।

शम्सू मिया ने दावतवाली वह रात आखों में काट दी थी।

अंदर सब सो चुके थे। शम्सू मिया चुपचाप अपने पुराने लिहाफ में घुस गये। इस लिहाफ की रुई तीन बार धुनवायी जा चुकी थी।—परंतु उस ओढ़ने से यह तसकीन जरूर हो जाती थी कि बदन पर लिहाफ है और इस खयाल से जाड़ा कुछ कम लगने लगता था। सकीना बी फत्ता और उम्मन का लिहाफ की तरह ओढ़ लिया करती थी इसलिए उनकी रातें उतनी ठण्डी नहीं होती थीं। महनाज़ के पास वह लिहाफ चल रहा था जो बेवा होने से दो महीने पहले बना था इसलिए लगभग नया था और उसमें उसके पति की महक सी थी। तो वह उस लिहाफ से लिपटी हुई गहरी नींद सो रही थी। शहनाज़ किकुड़ी हुई थी और शायद जाग रही थी—या शायद सो रही थी।

जाड़ा ज्यादा होता तो शम्सू मिया अपना आर्मी वाला कोट उतारे बिना ही लेट लिया करते थे। उस रात भी उन्होंने यही किया पर वह रात पिछली रातों से ज्यादा सर्द थी और उनकी आत्मा में एक नयी सर्दी भी घुसी जा रही थी। यह सर्दी थी इस खयाल की कि देश ने, जिसे वह अब्दुल हक से कम नहीं चाहते थे, आज पहली बार उनकी बात काटी थी और जिस बात की तरफ से आज तक वह नजर चुराते चले आ रहे थे वह बात देश ने उनकी आंखों में शहतीर की तरह डाल दी थी और वह बात यह थी कि वह बड़े घटिया, टुच्चे और ज़लील आदमी हैं। वह 'जेबखर्च' के लालच में उन तमाम मिकनिकों का हुक्म बेचने पर तैयार हो गये थे जिन्हें उन्होंने अपने अब्दुल हक के साथ कारों की बारीकियां बतायी थीं और जो उन्हें उस्ताद पुकारा करते थे।

ऐसा नहीं था कि शम्सू मिया यह समझे ही न हों कि बाबू साहब कह क्या रहे थे और चाहते क्या थे। वह चाहते थे कि शम्सू मिया और देश अपने साथियों से गद्दारी करें। शम्सू मिया यह बात फौरन समझ गये थे। देश भी समझ गया था। फर्क यह हुआ कि देश ने अपने आपको बेचने से इनकार कर दिया और शम्सू मिया अपने आपको बेचने पर तैयार हो गये।

तो नींद कम आती। आज रात वह अपने बड़े अब्दुल हक से जैसा दोबारा बिछड़ गये थे।—और सारा घर उनके इस दर्द से बेखबर सो रहा था। ना काफी लिहाफों में किकुड़ी मार सो रहा था और जाड़ों के खत्म होने का सपना देख रहा था।

शम्सू मिया करवटें बदलते रहे। नींद नहीं आयी। उन्होंने एक बीड़ी सुलगा ली। बीड़ी खत्म हो गयी। नींद नहीं आयी। एकदम से चाय पीने का जी चाहने लगा। तो वह उठे और दबे पांव दालान से आंगन में उतर गये। ओलती से कुहरा टपक रहा था। वह अपने हाथों को तेजी से मलते हुए और मुंह

से तरह-तरह की भिची हुई आवाजें निकालते बावरचीखान की तरफ लपक गये। वह जानते थे कि चूल्ह में एक उपला दबा होगा। तो उपले जोड़कर उन्होंने वह दबा हुआ उपला निकाला। जलता हुआ एक टुकड़ा तोड़ा और चाय के लिए आग बनाने लगे।

'हम्म काहे ना जगा लिया।" शहनाज आ गयी। अपनी फटी हुई दुलाई आढ़े हुए।

"हम सोचा कि तोरी नींद काहे को खराब करें।' शम्सू मिया ने कहा।

शहनाज उन्हें सरकाती हुई चूल्ह के पास बैठ गयी। बोली, "चूल्हा जलाना मरदन का काम ना है।"

शम्सू मियाँ कुछ नहीं बोले।

शहनाज फुकनी लेकर फूकें मारने लगी और छोटा सा बावरचीखाना उपलों के गाढ़े धुएँ से भर गया। शम्सू मिया का दम घुटने लगा पर बावरचीखाने में आग सुलग रही थी। बाहर रात निपोड़े जाड़े की रात खड़ी थी।

बावरचीखाने में सन्नाटा हो गया।

शहनाज ने अलमूनियम की पतीली में पानी चढ़ा दिया और तब उसने देखा कि बड़ा अँधेरा है। तो उठकर उसने सुइच नीचे किया और जीरो पॉवर का बल्ब जल गया जिससे अँधेरे में कोई खास कमी नहीं हुई पर लगा कि जैसे उजाला हो गया है।

'काहे को बुलाइन रहा बाबू साहब ?" शहनाज ने पूछा।

"तन्ख्वाह बढ़ाय की बात करे।'

शहनाज समझी कि शम्सू मिया तंज कर रहे हैं।

'ना बताना चाह रहें तो मत बताइये।'

"अल्ला कसम बटा।"

"इ बात करे के वास्ते खाने की दावत की क्या जरूरत थी।' शहनाज ठेठ खड़ी बोली में आ गयी क्योंकि उसे याद आ गया कि कुछ दिनों बाद वह हाई स्कूल का इम्तिहान देने वाली है और उसकी गिनती पढ़े लिखों में होने लगेगी।

"एही सोच के तो देश छटक के अलग खड़ा हो गया कि दाल में कुछ काला जरूर है।' शम्सू मिया ने कहा, मुदा हम मान गये और हम इ कहित हैं कि भाई मान लिया तो कौन कयामत आ गयी कि देना फूल गये हमसे ?"

शहनाज कुछ नहीं बोली।

शम्सू मियाँ ने पल भर उसके बोलने का इन्तिजार करने के बाद खुद बोलना शुरू कर दिया, 'ऊ तो छुटट साड है। न आगे नाथ, न पीछे पगहा। पहल-

वान की दुकान चल रही। जिन्लो की लाण्डरी चल रही। तीन पट साय वान और तीन जाडा हाथ काम कर वाने। मुदा हम वा करें। कमाय वाल अकेले हम। एतना ता जुड ना रहा कि दू जोडा कपडा और दू-चार नग तावे का बरतन देके तूरें बिदा कर दें। अकडें ऊ जे के सिर पर काई जिम्मेदारी न होय।—" वह चुप हो गय।

शहनाज़ न पतीली म चाय की पत्ती गुड और चुटकी-भर नमक डाल के पतीली को फिर ढक दिया। फिर-वह अपने लिए तामचीनी का एक प्याला उठा लायी जिसकी तामचीनी जगह जगह म उखडी हुई थी और उनके लिए वह बेकुण्डे वाली प्याली म चाय बनान लगी। चाय की प्याली उसन चुपचाप बाप के सामन सरका दी। शम्मू मिया न पहली चुसकी ली।

"तोरा इमतहान कब म है ?'

"माच म होगा है।'

फिर सन्नाटा।

'भैया से ऊ कहिन हैं कि ननीजा निकले के बाद पढाय की नाकरी मिल सकती है।"

"मुदा ऊ ई कयसे माच लिहिन कि हम तूह नोकरी करे देंगे ?' शम्मू ने सवाल किया और इस सवाल का शहनाज़ के पास कोई जवाब नहीं था। वह अपने पाँव के अगूठे के नाखन का खुरचने लगी। शम्मू मियाँ ने कहा, 'बिआह के बाद जा जी चाह करवा लें। मुन बिआह से पहले हमरी बेटी आकरी नोकरी नहीं कर सकती। साफ बात है।'

शहनाज़ फिर चुप हो रही।

"तनी सी चाय और द दो।' उन्होंने बकुण्डेवाली प्याली शहनाज़ की तरफ़ बढायी। उसने उसम पतीली से और चाय उँडल दी और शम्मू मिया चाय की चुसकियाँ लेन लगे।

उधर दालान म सकीना पेशाब के लिए उठी। बावरचीखाने म रोशनी देखकर उन्हें आश्चय हुआ। पशाब करके वह सीधी बावरचीखाने मे आयी।

'बाप बेटी मे का मिसकोट हो रहा है एतनी रात गये ?" सकीना ने सवाल किया।

जवाब देने की जगह शहनाज़ अपनी माँ के लिए भी तामचीनी के प्याले मे चाय उँडेलने लगी और शम्मू मिया बडी मेहनत से एक बीडी सुलगाने मे लग गये। सकीना प्याला थामकर बठ गयी। गम गम प्याला उसे अपने ठण्डे-ठण्डे हाथो मे बडा अच्छा लगा। अपने नथना से निकलती हुई भाप को उसने बडी दिलचस्पी से

देखना शुरू किया क्योंकि इतना तो वह समझ ही गयी थी कि यह चाय की पार्टी यू ही नहीं चल रही है।

"हम सोच रहे कि' शम्सू मिया ने कहना शुरू किया "जोखन से महनाज का निकाह पढा दें।"

"बिलकुले सठिया गये हो का ?" सकीना ने पूछा और शम्सू मिया ने एक-रार में सर हिला दिया और सकीना लाजवाब हो गयी और शहनाज रोने लगी। क्योंकि दो बच्चा की मा होने का मतलब यह नहीं था कि महनाज बूढी हो गयी है। क्योंकि उसके मा बाप जोखन से महनाज की शादी इसलिए नहीं कर रहे थे कि वह इसे मुनासिब समझते थे बल्कि यह शादी वह इसलिए करना चाहते थे कि महनाज और उसकी दोनो बच्चियां, फत्तो और उम्मन को दो वक्त का खाना खिलाना उनके लिए सम्भव नहीं था।—यह बडा बेदद एहसास था।

"तोरी मरजी।" सकीना ने कहा 'देस से भी पूछ ल्यो।"

"देस से काहे को पूछ लें ?" शम्सू मिया हत्थे से उखड गये। "ऊ कौन है। काजी कि मुफ्ती ? वह वा— उन्ह अपनी बीवी और बेटी से आखें चुरा कर भाग जाने का मौका मिल गया और वह भागकर अपने बिस्तर मे जा घुसे और बावरचीखाने मे मा बेटी के साथ उनके दिल का सन्नाटा और ठण्डी बेदद रात का बमुरव्वत अँधेरा और जीरो पॉवर का एक जलता हुआ बल्ब और गुड की ठण्डी होती हुई चाय का प्याला रह गया।

दूसरे दिन जोखन से महनाज की शादी भी तै हो गयी और आल इण्डिया मोटर गरेज वकज यूनियन भी बन गयी। शम्सू मिया नेशनल एडहाक कमेटी के अध्यक्ष बना दिय गये और तै हुआ कि अगस्त सितम्बर में पहला अखिल भारतीय सम्मेलन इलाहाबाद ही मे बुलाया जाये। बाबू साहब ने कहा कि यदि यह सम्मेलन अक्तूबर की बीस को किया जाये तो प्रतिनिधियो के रहने-सहने और खाने पीने का खच नेशनल गैरेज उठा लेगा।

बाबू साहब का प्रोग्राम यह था कि उनके स्वर्गीय पिता श्री शिवशकर पाण्डेय की पच्चीसवी बरसी के अवसर पर यूनियन का उदघाटन हो और उसमे श्री सजय गाँधी चीफ गेस्ट होकर आयें। जाहिर है कि कम-से कम एक बार तो उन्ह बाबू साहब के घर आना ही पडेगा तो उसी बहाने 'पण्डित शिवशकर पाण्डेय मार्ग' की मरम्मत भी हो जायेगी और वह कुछ चौडी भी कर ली जायेगी ताकि श्री सजय गाधी की सवारी ठीक ठाक से 'शकर निवास' तक जा सके।

देश से दोनो बातो मे राय नहीं ली गयी। यूनियन के मामले मे उससे राय

वही ली गयी तो ज्यादा दुख नहीं हुआ। पर जब शम्सू मियाँ ने उससे पूछे बिना जोखन से महनाज की शादी तय कर दी तो उसे बड़ा दुख हुआ।

देखो बेटा बात यह है" इतवारी बाबा ने कहा 'कि जो काम मजबूरी से किया जाता है ओ मे आदमी अपने लोगन से ऐसे ही आप चुराता है। तुम उनके अपन हो इस वास्ते तुमसे नहीं पूछा।'

"और का।" पहलवान ने कहा। हम ई नहीं मान सकित हैं कि इ रिस्ता ऊ खुसी से किहिन होगा।"

"खुसी चाहे बेखुसी" देश ने कहा, 'हम्म उस्ताद से ई उम्मीद ना रही।"

और उसी दिन से उसने शम्सू मिया से कतराना शुरू कर दिया। खुद शम्सू मिया भी उससे निगाहें बचाकर गुजरने लगे। पर जब शम्सू मिया न होते तो वह उसी तरह दिन में एक बार उनके घर जाता। सकीना से बातें करता। शहनाज से छेड़छाड़ करता। उसके कोसने सुनता और यह पता ही नहीं चलने देता कि शम्सू मिया से उसे कोई शिकायत है।

जोखन बड़े धूम की बरात लाय। आगे-आगे सेहरा बाधे हुए जोखन किसी तांगे के घोड़े पर सवार। पीछे पीछे कागज की फुलवारी। बराती। बाजा-गाजा। डाल बरी के रवान—बरात के साथ एक लौण्डे का तायफा। लोग उससे छेड़ छाड़ करते हुए। वह लोगों को तुर्की ब-तुर्की जवाब देता हुआ।

शम्सू मिया के घर के सामने तम्बू तना हुआ था। फत्तो और उम्मन अच्छे कपड़े पहन दरी के फर्श पर करतबाजियाँ खा रही थीं। बाबू साहब मौजूद थे और उनके आ जाने से शम्सू मियाँ का सर उठा हुआ था। घर के अंदर औरतें गालियां गा रही थी—

सुन रे बने तारी बड़की बहिनिया
कोठे पे बैठी है पहिने नथुनिया
प्यार देती है सबको उधार चने के खेत में—

कि बरात आ गयी।

"अरे ऐ उमनिया। फत्तो चीखी, 'तनी जोखन नाना को देख रे। कयसे लग रहे।"

तमाम लोग ज़ोर से हँस पड़े और जोखन दिल ही दिल में फत्तो की माँ बहन एक करते हुए किराये पर लायी हुई मसनद पर तकिये से टिककर बैठ गये और बरात के साथ आयी हुई आतशबाज़ी छोड़ी जाने लगी और कटरा मीर बुलाकी में बहुत दिनों के बाद फूल बरसे और आतशबाज़ी के फूलों को देखकर कटरे के बच्चे तालियाँ बजाने लगे और बूढ़ों की आखों में बचपन की चमक आ

गयी।

बाबू साहब तो खैर बड़े आदमियों की तरह हुक्म चला रहे थे पर वास्तव में बरात के स्वागत और बरातियों की देख भाल का सारा काम पहलवान कर रहे थे। बाबू साहब तो 'ऐ। सुनो' 'अरे भई जरा उधर भी देख लो—" के सिवा बस यह काम कर रहे थ कि दिल्ली से इण्डस्ट्री के मन्त्री और आल इण्डिया नैशनल ट्रेड यूनियन के अध्यक्ष के भेजे हुए तारों का जिक्र कर रहे थे कि ज्यादा से ज्यादा लोग सुन लें और यह देख ल कि उनके साथ रहने म कित्ती भलाई है वरना कहा एक जाहिल, बूढा मोटर मिकनिक और कहा केन्द्रीय मन्त्री। मन्त्री ने महनाज के लिए अपनी शुभकामनाएँ और शम्सू मिया के लिए मुबारकी भेजी थी।

कटरा मीर बुलाकी के इतिहास मे पहली बार डाकिया उसकी सीमाओ मे किसी मन्त्री का तार लेकर आया था और कटरे के सर पर जैसे तार के गुलाबी कागज का साफा बँध गया था और कटरा फूला नही समा रहा था और तार आन की खुशी म यह भी भूल गया था कि महनाज की शादी उस जोखन दुकानदार से हो रही है जिसे महनाज की बेटिया नाना पुकारती हैं।

बस देश नही था।

देश बुलाया नही गया था।

शम्सू मिया का कहना था कि जो आज अब्दुल हक होते तो का हम उनह छपवा के नवद भेजत। और देश कहना था कि जो अब्दुल हक होते ता क्या शम्सू मिया अब्दुल हक से राय किये बिना महनाज का रिश्ता तै कर देत।

दोनो ही सच बोल रहे थे। सच मे यही तो खराबी है कि दाहने मे बायें वाला भी सच है और ऊपर स नीचेवाला भी।—तो देश और शम्सू दोनो ही अपन-अपन निजी सचा की ढाल तलवार लगाये पतरे बदल रह थे। दिल दोनो ही के दुखे हुए थे। जाहिर दाना ही नही कर रह थ।

"भैया हम तो जरूर जायेंगे। पहलवान ने कहा।

'जाना ही चहिए। बिल्ला ने कहा।

"हम कोई का राज रह ?" देश ने कहा।

चुनाचे पहले बिल्लो गयी कि उस शादी के बहुत गीत याद थे। फिर पहलवान गये और देश घर म अकेला रह गया।

शम्सू मिया ने बाबूराम को बुलाया था। आशाराम को नही बुलाया था। बाबू साहब तो चाहत थे कि बाबूराम भी न बुलाय जायें पर इस पर शम्सू तैयार न हुए। तो बाबूराम शादी मे मौजूद थ और आशाराम को चूकि मह•

नाज की शादी म न जाना बहुत अजीब लग रहा था इसलिए वह देश के पास आ गया। और आतशबाजी और बिजली की झालर की रोशनी स हटकर कान में जनव लपेट पशाब करते हुए जगदम्बा प्रसाद न आशाराम को "चुपके से" 'सबकी आख बचाकर' "गई रात को" देश के पास जात देख लिया।

अच्छे पुलिसवाला की पहचान यह है कि जरूरत के वक्त वह मुनासिब यादें जेब म हाथ डालकर तड से निकाल लेता है। मिसाल के तौर पर यदि बाबू जगदम्बा प्रसाद हेड कास्टबिल न उस रात आशाराम को देश के घर जात न देख लिया होता तो शायद यह कहानी किसी और रास्त पर गयी होती।—पर उस बात का जिक्र आग चलकर होने ही वाला है इसलिए यहाँ इतना ही बताने पर बस करता हू कि आशाराम देश के घर गया और जगदम्बा प्रसाद न उस जाते देख लिया और आशाराम ने, हालाकि, जगदम्बा प्रसाद को पशाब करते देख लिया था पर उसने इस बात को कोई खास अहमियत न दिया।

क्या भइ ' आशाराम न कहा, तुम्ह भी नहीं बुलाया रम्मू मिया ने '"

'अरे तो कौन हम महनाज की शादी का पुलाव गोस खाय बिना दुबले हुए जा रह। देश ने कहा।

आशाराम हँस पडा। उस कभी-कभार अपन स सात आठ साल बडा यह देश बिल्कुल बच्चा सा लगता था। किसी बात पर रूठा हुआ। फूला हुआ। ठना हुआ—और उन क्षणा मे देश के लिए उसके प्यार का रग कुछ और गहरा हो जाया करता था।

'देखो देश, राजनीति—"

"राजनीत गयी अपनी मा के भो—' वह रुक गया। "राजनीति को गलि आये से का फायदा। ऊ न हमरी उस्ताद है और न हमर दोस अब्दुल हक की बाप। पर तुम्ही बताव आसा बाबू का उस्ताद का इ करना चहिए था ?"

' सबके गले म अपनी अपनी मजबूरिया की फासी होती है देश।" आशाराम बोला।

' आपके गले म कौन फासी है ? ' देश ने पूछा।

'तुम्हार गले म यह फासी नही तो तुम उस यूनियन म शामिल क्यो नहीं हुए ? '

' इ तो कोई बात ना हुई।' देश बोला, "हमरा बिकके को जी ना चाहा। दखिए आसा बाबू हम न कागरेसी हैं न कम्युनिस्ट न सोसलिस्ट। हम खाली खूली दस हैं। और बिकाऊ ना है। बात यही खतम। बाबू साहेब जेबखरच की

बात न निकालते ऊ रात तो हम साइद चले ही गये हात उनकी यूनियन मे। पर एका मतलब ई किधिर स निकल आया कि उस्ताद हम्मे हमरी बहिन के बिआह मे न बुलायें ?"

आशाराम के पास इस सवाल का कोई जवाब नही था।

तो दोना चुप हा गये और महनाज के ब्याह के गीता की आवाज कुछ और साफ हो गयी। वहा काफी देर सन्नाटा रहा और काफी देर तक गानों की आवाज आती रही। फिर शायद लौण्डे का नाच शुरू हो गया। वह गा रहा था

रसगुल्ला घुमाय के मार दियो रे।
पहिला रसगुल्ला मैंने ससुरजी को मारा।
पहिला रसगुल्ला मैंने ससुरजी का मारा।
उनका बूढा समझ के छोड दियो र।
रसगुल्ला घुमाय के मार दिया र—

आशाराम उदास हा गया। घुमा के मारने के लिए रसगुल्ला है कहा महनाज ? रसगुल्ला है कहा ? शक्कर सात रुपये किला। माश की दाल चार रुपये किलो। दूध तीन रुपये किला।—ससुरजी को मारने के लिए रसगुल्लो का बन्दोबस्त हो ही नही सकता—तो उसका जी उचाट हो गया। उसने देश की तरफ देखा। वह छोटी छोटी खुशिया पर बाजार के भाव के लगाये हुए घाव देख सकता था पर बनिया को गाली देकर रह जाता था। उस यह पता नही था कि बनिये खुद उसी बाजार मे कुकरमुत्ता की तरह उगते है जिसमे भाव चढते है और आदमी की जरूरत का पत्थर गले मे डाले उसकी शिराफत नग पाव बेबसी से इधर उधर देखती फिरती है कि शायद कहीं सस्ती की छाव का छोटा सा टुकडा मिल जाय।

देश की राजनीति उसका अनुभव थी, उसकी विचारधारा नही थी बाबू साहब और मिसेज गाधी और मरारजी भाई और अटल विहारी वाजपयी और जयप्रकाश नारायण की तरह उसका पशा भी नही थी। और यही देश की आसानी भी थी और उसकी दुशवारी भी।

सोचना टढा काम है।

और दश को पता ही नही था कि आशाराम के सीने मे कैसा तूफान आया हुआ है।

अच्छा भई मैं चल दिया।" आशाराम खडा हो गया।

बठिये ना।" देश न कहा, हालाकि वह चाहता यही था कि आशाराम चला जाये क्याकि वह थोडी देर अपने साथ अकेला रहना चाहता था।

नही ।" आशाराम ने कहा । "नीद आ रही है ।"

देश न कुछ नही कहा । आशाराम चला गया । दरवाजा अपने साथ अकेला रह गया । वह दरवाजा बन्द करने के लिए उठा । सामने आशाराम अपने ओवर कोट के कालर उठाए हुए और सर्दी से बदन चुराए चला जा रहा था ।

आशाराम के सामने उजाला था । तम्बू के नीचे सारा कटरा जमा था और लौण्डे का नाच देख रहा था और उस पर गन्दे जुमले और फबतिया उछाल रहा था और कहकहे लगा रहा था और अपनी जाघें खुजला रहा था और औरतें इधर उधर से झाक रही थी और एक दूसरे को कुहनिया कुहनिया कर भिची भिची हँसी हँस रही थी और बच्चे बडो की निगाह बचाकर एक दूसरे को उँगलिया रह थे

'अरे आशा बाबू आप शादी म नही आ रह है क्या ?" मास्टर बद्रुल हसन नायाब मछली शहरी एक दम स जो अँधेरे के बाहर आये तो आशाराम चिहुँक के एक कदम पीछे हट गया ।

"शम्सू मिया ने मुझे और देश को बुलाया नही ।" आशाराम ने सान्गी से कहा ।

भूल गये होगे बिचारे ।'

"भूलन के लिए हम ही दो लोग रह गये थे ?'

नायाब मछली शहरी के पास इस सवाल का जवाब नही था ।

'अपनी शादी म तुम तो बुलाना नही भूल जावेंग ?" आशाराम ने पूछा ।

'अरे यह क्या कह रह है आप ।' बद्रुल ने खीसें निकाल दी । 'मैंने तो मेहमाना की फेहरिस्त पहले से तयार कर ली है इसी मारे कि बाद म शर्मिन्दगी न हो ।

'कब हो रही है तुम्हारी शादी ?'

'यह बताना तो मुशकिल है ।" बद्रुल ने कहा । 'करने को तो अभी महराज बाजी के निकाह के फश पर अपना निकाह भी पढवा लें । पर अब्बा कहते हैं कि वलीमा वाजिब है । और वलीमे का जुगाड बठ नही रहा है । सुन रह हैं कि मिसेज गाधी टीचरा की तरक्की बढवानेवाली हैं । एक बीस रुपया भी बढ जाये तो सब मुशकिलें दूर हो जायें । दो तीन टियुशन भी ले लिया है ।

'एक बात का खयाल रखना ।" आशाराम ने कहा । अपनी शादी म देश को बुलाना न भूलना '

अरे यह क्या कह रह है आप ।' बद्रुल फर्याद करने लगा । उनके बिना

तो मेरी शादी हो ही नहीं सकती। उन्हीं की वजह से तो हो रही है शादी नहीं तो मैं शहनाज को गालिब मीर पढाता रह गया होता।' आशाराम मुस्कुराता रहा। बद्रुल को खयाल आया कि शायद वह पूरी बात नहीं कह सका इसलिए बोला। 'शहनाज ने तो घर म बडा बवाल मचाया कि उसके नैया नहीं आयेंगे तो वह भी शादी म शरीक नहीं होगी। इस पर शम्सू चा ने उसे एक लप्पड भी मार दिया। वह '

तुम तो मिया वलीम का बन्दोबस्त करके शादी कर ही डाला अब।' आशाराम न बात काटी। क्योंकि वह इस तफसील मे पडना नहीं चाहता था कि शहनाज के गाल पर शम्सू मिया की उँगलियो के निशान उभरे कि नहीं उभरे।

आशाराम यह बात समझ सकता था कि शम्सू मिया देश से क्या खफा है। वह उससे खफा नहीं थे। वह उससे झेंपे हुए थे क्योंकि खुद उनके सिवा यह बात केवल देश जानता था कि वह बाबू गौरी शकर पाण्डेय, एम पी, के हाथ बिककर मोटर वकर्ज यूनियन के अध्यक्ष बने हैं।

आशाराम यह भी जानता था कि आदमी, मजबूरी हो तो, बिक भी जाता है पर अपने बिकने से खुश कभी नहीं होता।

पर बद्रुल से रुखसत होकर जब वह अपने घर की तरफ चला तो उसे लगा कि उसके मुँह का मजा बिल्कुल बिगड गया है। उसे रात भी कडवी लग रही थी। एक सिग्रेट जलाकर वह तेज-तेज कदमो से अपने घर की तरफ चल पडा। सामने से जैसे अँधेरे की भीड उसके बदन से टकराती शायद शम्सू मियाँ के घर की तरफ भागी जा रही थी—महनाज की शादी म शरीक होने के लिए।

रामदयी ने दरवाजा खोला तो वह आशाराम की सूरत देखकर धक से रह गयी।

का बात है।" रामदयी ने कहा—पूछा नहीं, कहा। उसके लहजे मे सवाल नहीं था। वह आशाराम को बता रही थी कि वह परेशान है और मा ने उसकी परेशानी देख ली है इसलिए झूठ बोलने की जरूरत नहीं है।

रामदयी दादा-पोते के बीच बढते हुए खिचाव की दलदल मे फँस गयी थी और निकलने की कोई सूरत दिखायी नहीं दे रही थी।—आशाराम इकलौता बेटा था। रामदयी के पास आशाराम के बारे मे हजारो सपने थे। छोटे सपने। बडे सपने। रगीन सपने। नक्शीन सपने कि आशाराम के पास एक बहुत बडी मोटर है—शहर मे चलनेवाली बसो से भी बडी मोटर जिसे खुद आशाराम चला रहा है। और पीछे रामदयी बैठी है अपने पोते दयाराम को गोद मे लिये

हुए। पोते को दाल आ रही है। उसने तो बहुत कहा कि इस हालत मे सुहागा लगात है पर दयाराम की माँ यानी उसकी बहू डाक्टरनी है। उसकी घरेलू बातें सुनकर हमेशा हँस देती है कि मम्मी आप किस जमाने की बातें करती हैं। सुहागे मे क्या होनेवाला है—रामदयी के सपना की बहू रामदयी की गँवारू भाषा नही बोला करती थी। वह तो श्रीमती गांधी की तरह खडी भाषा बोलती थी और सूरत म वह श्रीमती गांधी से कही ज्यादा अच्छी हुआ करती थी। बस उसके रग के बारे मे वह कोई फैसला नही कर पाती थी। वह खुद तो यह चाहती थी कि उसकी बहू खूब गोरी चिट्टी हो पर आशाराम को साँवला रग पसन्द था। वह लटकी प्रेमानारायण जो उसके साथ पढा करती थी कैसी साँवली सलोनी थी। बडा नाक नक्श बडी-बडी गहरी भूरी आँखें। नमकीन साँवला रग—प्रेमा एक गुजरी हुई बात हो चुकी थी पर रामदयी उसे अब तक भूल न पायी थी। और जब रामदयी नही भूल पायी तो भला आशाराम कैसे भूलता।

प्रमा अब भी पुरवाई की तरह उसके दिल के अन्दर बाहर चलती रहती थी और उसके दर्दों को जगाती रहती थी।

प्रेमानारायण बी० ए० म उसक साथ थी। पर आशाराम स्टूडेंट फेडरेशन मे चला गया और प्रमा स्टडेंट काग्रेस म—प्रेम और अलगाव दोना साथ साथ बढे। वह कहती थी कम्युनिस्ट रूस और चीन के दलाल हैं। यह कहता था काग्रेसी अमरीका के हाथ बिके हुए है। वह कहती थी पाकिस्तान को अमरीका उकसा रहा है और चीन उसकी हिंदुस्तान दुश्मनी को हवा दे रहा है। वह पूछता था कि पाकिस्तान को हवा खान का शौक नही है पर जो सरकार बहुमती सरकार नही होगी वह यह हथकण्डे नही आजमायगी तो कितने दिन टिकगी? यहा हिन्दू मुसलिम, ब्राह्मण अछूत, महाराष्ट्र तामिलनाडू म झगडे होत रहत ह। वहा शीआ सुन्नी मुसलिम कादयानी, बगाली पजाबी बलवे होते हैं कि दोना ही सरकारें जनता की सरकारें नही हैं—यह सुनते ही प्रेमा बिफर जाया करती थी और नाचने खसोटने लगती थी और अपने बचाव के लिए वह उसके दोना हाथ पकड लिया करता था और उसे चुप कराने के लिए वह प्रेमा के होठा पर अपन होठ रख दिया करता था—एक दिन रामदयी न यह झगडा खत्म होत हुए देख लिया और उस दिन पहली बार रामदयी ने यह भी देखा कि प्रेमा के साँवले रग के नीचे लाल रग की एक तह भी है—तो उसे वह साँवला रग एकदम स बहुत अच्छा लगा था और तभी से उसके सपना का रग कभी साँवला हो जाता और कभी गोरा

प्रेमा और आशाराम अलग भी हो गये पर रामदयी ने अपने सपना का रग नही बदला क्योकि अलग होन के बाद भी प्रेमानारायण ने अभी तक शादी नही की थी। आशाराम भी शादी की बात टाल जाता था। प्रेमा आकाशवाणी से समाचार सुनाने लगी थी और आशाराम अब तक वही लाल टहका सपने बुनने मे उलझा हुआ था।

प्रेमा चूकि आकाशवाणी दिल्ली पर थी इसलिए रामदयी आकाशवाणी दिल्ली के प्रोग्राम बराबर सुनती रहती थी। क्या पता कब उसके सपना की बहू की आवाज आ जाय। बसे महीन मे एक-आध बार प्रेमा रामदयी को खत भी लिखती ही रहती थी। यह खत वह बाबूराम से पढवाकर सुना करती थी और उन्ही मे जवाब भी लिखवाया करती थी। उन खता मे कभी आशाराम का कोई जिक्र नही हुआ करता था फिर भी रामदयी चुपके से, आशाराम की आख बचाकर, वह खत आशाराम के तकिये के नीचे रख आया करती थी और इस टोह मे लगी रहती थी कि आशाराम को वह खत पढता देख ले और वह उस हर बार प्रेमा का खत पढत दखती भी और यह देखकर वह मर-मर जाती कि खत पढने से आशाराम के चेहर की उदासी का रग थोडा-सा और गहरा हो जाता है।

पर उस रात आशाराम के चेहरे की उदासी का रग कुछ और ही किस्म का था।

आशाराम ने रामदयी की तरफ दखा। और अपनी मा के लिए हमशा की तरह उसका दिल बहुत दुखा। इस बूढी औरत को भी क्या जिन्दगी मिली है जवानी इस डर म गुजरी कि कही अग्रेज सरकार की चलायी हुई कोई गोली उसके पति को ना आ लगे। और बुढापा इस अदेशे म गुजर रहा था कि कही काग्रेस सरकार की चलायी हुइ कोई गोली उसके बेटे को न आ लगे। गोली वही थी। सीन वही थे। लवनवी दग्रानेवाले हाथ बदल गय थे।

उसके मुह का मजा कुछ और ज्यादा बिगड गया होता अगर उस य मालूम होता कि अशफाकुल्लाह खा एस-आइ-२ खास तौर स उसकी निगरानी प मुकरर किये जा चुके हैं कि यह पता चलाया जा सके कि 'कटरा बी आज क्या बला है और यह कि अशफाकुल्लाह खा की डायरी म रोज कटरा मी बुलाकी मे चद लोगो के नाम बार बार जगह पा रहे है। मशहूर यह किया गय था कि जगदम्बा प्रसाद हड कास्टेबिल छुटटी पर है पर वास्तव म वह आशारा की निगरानी कर रहे थे और अशफाकुल्लाह खाँ एस-आइ-२ की डायरी का पे भर रहे थ।

अशफाकुल्लाह खां चाहते थे कि 'हुक्मनामान वाला'[1] को हवा लगने से पहले वह उस बे-बी आइ साजिश का पता चला लें। उन्होंने इस सिलसिले में सैकड़ों हायत फरमाइशी किस्म के ख्वाब भी देख डाले थे। हिन्दी फिल्मों के सारे 'चेज सीन' उन्हें जबानी याद थे और वह उन्हीं सीनों के आधार पर हिन्दी फिल्मों का मजाक उड़ाया करते थे पर जब 'बे-बी-आइ' फाइल का चक्कर चला और उन्होंने सपने देखने शुरू किये तो वह मुजरिमों को दौड़ाने और उनका पीछा करनेवाले हिन्दी फिल्मों के तमाम सीनों को अपने ख्वाबों में शरीक करने लगे—वह देखते कि आशाराम एक बड़ी कार पर तेजी से चला जा रहा है। उन्हें रास्ते में एक स्कूटर खड़ा दिख जाता है। स्कूटरवाला सड़क पर एक तरफ खड़ा एक दरख्त के तने पर पेशाब कर रहा है। फर्ज की धुन में वह उसी स्कूटर पर आशाराम की बड़ी इम्पोर्टेड कार का पीछा करते हैं—खतरनाक मोड़ों से गुजरते हैं—आशाराम की चलायी हुई गोलियों से हर बार साफ बच जाते हैं क्योंकि वह हीरो हैं और गोली उन्हें लग ही नहीं सकती—आखिर एक जगह आशाराम की गाड़ी उलटकर गहरे खड्डे में गिर जाती है और उसमें आग लग जाती है।—यह अपने स्कूटर ही में उस पर छलांग लगाते हैं—पर अकेले मुजरिम से लड़ना हीरो की शान के खिलाफ है इसलिए ठीक उसी वक्त न जाने कहां से आशाराम के पचास साठ साथी निकल आते हैं और मुक्केबाजी शुरू हो जाती है—आशाराम के चन्द साथियों को वह अच्छी तरह पहचानते हैं। देशी, भोलेनाथ पहलवान, मास्टर बद्री रामअवतार मिकैनिक—यह सारे के सारे वह लोग हैं जिनके नाम आशाराम के सिलसिले में जगदम्बा प्रसाद लेते रहते हैं। फिर जैसा कि हर फिल्म में होता है—अशफाकुल्लाह खां सबको मार पीटकर पटरा कर देते हैं और आशाराम को हथकड़ी लगाकर स्कूटर की तरफ चलने लगते हैं। सीन डिजाल्व होता है। राष्ट्रपति उन्हें गैलेंट्री पदक दे रहे हैं और सामने ही हीराबाई एक कुरसी पर बैठी पान चबा रही हैं और मुस्कुरा रही हैं—कभी कभी यह हीराबाई उनकी मां बीवी या श्रीमती गांधी में भी डिजाल्व हो जाती

अशफाकुल्लाह खां के ख्वाबों में जगदम्बा प्रसाद हेड कास्टेबिल के लिए कोई जगह नहीं थी। पर इसका मतलब यह नहीं कि जगदम्बा प्रसाद के पास अपने ख्वाब ही न रहे हों। उसके ख्वाब भी अशफाकुल्लाह खां के ख्वाबों ही जैसे थे। फर्क बस इतना था कि अपने ख्वाबों के हीरो खुद बाबू जगदम्बा प्रसाद

---

१ ऊपर के आफिसर।

हेड कास्टेबिल हुआ करते थे।—दोनो ही को यह मालूम था कि वह एक दूसरे के ख्वाबा मे शरीक नही हैं पर एक दूसरे स उन दोनो को कोई शिकायत नही थी।

अशफाकुल्लाह खा जिला जौनपुर के रहनवाले थे। उनके खानदान म थाने दारी की परम्परा चली आ रही थी। उनके परदादा इलाहाबाद कोतवाली के इन्चाज रह चुके थे। बडी धाकडी म कोतवाली की थी मरहूम ने। कहते है कि उन दिना रहमतुल्लाह खा शहर कोतवाल की मरजी के बगर इलाहाबाद मे पत्ता नही हिलता था। बडे-बडे गुण्डा का उन्होन यू सीधा कर दिया था कि उनके तबादले के बहुत दिनो बाद भी उन गुण्डा ने अपने आपको टढा करन के बारे म नही सोचा। अशफाकुल्लाह खा अपने दादा के किस्स यू सुनात जस यह वहाँ मौजूद रह हा। दादा एनायतुल्लाह खा न बनारस के चत गज थाने और फिर कोतवाली चौक के इलाके मे अपना सिक्का चलाया। बनारस के महाजन उनके नाम मे कापते थे और हर महीन की पहली को अपन हिस्स का नज्राना खा साहब के घर पहुचा जाया करत थे और उन्ही पसो स खा साहब ने चहार-सू वाली जमीन लकर दुकानें बनवायी जिनका किराया आज तक अशफाकुल्लाह खा खा रह थे। उनके पिता विलायतुल्लाह खा सब इस्पक्टरी मे आगे न बढे। पर उन्होने कोतवाली गाजीपुर म सकेण्ड आफिसर की हैसियत से वह धूम मचायी कि लोग अशफाकुल्लाह खा के दादा और परदादा की कोतवाली भूल गय। सन बयालीस मे पण्डित शिवशकर पाण्डेय ने उन्ही की मदद स सरकारी खजाना लुटवाया था और अपने हिस्से के खजाने से उन्होन कराकत और नदगज वाली जमीनदारी खरीदी थी जा आजादी के बाद बाडा म बदलकर सौ के चौसठ के भाव बिक गयी थी। बाकी के चालीस बाबू महावीर प्रसाद महाजन से अशफाकुल्लाह खा ने अपनी थानेदारी के जमान मे वसूल कर लिये थे।—परन्तु परदादा, दादा और पिता म से किसी ने कोई ऐसा काम नही किया था जिसकी वजह से खानदान का नाम ऊँचा होता। न उन्होने सुल्ताना डाकू को पकडा न मानसिह डाकू को गोली मारी। बाप न पण्डित नहरू पर लाठी चाज अवश्य किया था पर अशफाकुल्लाह खा अब उसका जिक्र नही करना चाहत थे। इसीलिए वह रिटायर होन स पहा तक कोई एसा काम जरूर कर गुजरना चाहत थे जिसकी वजह से उनकी आइन्दा नस्लें किसी मजमे म बैठकर उनका जिक्र करें ता आस पासवाले पलट के देखें—इत्तिफाक म जगदम्बा प्रसाद हड कास्टबिल ने वह कारनामा गिलौरी की तरह चादी के वरक म लपेटकर उनके सामने पश कर दिया।

जैसा का मुसतकिल बन्दोबस्त तो लगभग हर कांग्रेसी मन्त्री करवाना चाहता था पर बुरा हो प्रजातन्त्र का। इसलिए अशफाकुल्लाह खा किसी मौके की राह देख रहे थे और "के बी आइ फाइल" को कलेजे से लगाये अपनी तरक्की के सपने देख रहे थे।

इस निजी ख्वाब मे न उन्होने अपनी दाश्ता हीराबाई को शरीक किया था और न ही अपनी पत्नी आलमआरा बेगम को। आलमआरा बेगम ने तो खैर कभी पूछा ही नही क्याकि अब खाने के वक्त के सिवा अपने मियाँ से उनकी मुलाकात बस ईद बकरईद के दिन हो जाया करती थी। और चूकि यू वह एक तरह से बिल्कुल बेकार हो गयी थी और वक्त काटे नही कटता था इसलिए वह अपना ज्यादा वक्त सोने के गहने बनवाने और इम्पोर्टेड साडिया खरीदने मे सफ किया करती थी। इलाहाबाद आकर उन्होने पर्दा भी उठा दिया था और अकेली सिनेमा देखने भी निकल जाया करती थी। नसबन्दी का प्रोग्राम चलाने मे वह बहुत आगे-आग थी। उन्होंने अपना ऑपरेशन सबसे पहले करवा दिया था कि कोई डर ही न रह जाये और किसी कहानी के जन्म लेने का किस्सा ही न उठे। इस काम से फारिग होकर वह घर के पले हुए नौकर के साथ "शॉपिंग" के लिए निकल जाने लगी। उसका नाम रऊफ था। वह आलमआरा बेगम से कोई सत्तरह-अटठारह बरस छोटा था। पर आलमआरा बेगम की काठी अच्छी थी। अपनी उम्र से बीस बरस कम लगती थी और लोग उन्हे खुश करने के लिए उनकी बेटी लैला की बडी बहन कहा करते थे। यह लैला बीस बरस की थी और उर्दू म एम ए कर रही थी और उसने "उर्दू एक स्वतन्त्र भाषा" शीपक के साथ एक लेख लिखा था जिसकी वजह से उर्दूवालो मे उसकी धूम हो गयी थी। और वह जलसो मे साहित्य और साहित्यकारो की समस्याओ पर पेपर पढने या भाषण देने के लिए बुलायी जाने लगी। इस लैला के कपडे "जनता लाण्डरी" मे धुलते थे। आलमआरा बेगम ने तो बहुत कहा कि वह मूई भी कोई लाण्डरी है। लोग क्या कहगे। सूरजनाथ सिह, जो तुम्हारे अब्बा से जूनियर हैं, उनकी बेटी के कपडे सिवल लाइन की "स्वान लाण्डरी" मे जायें और तुम पर लैला हमेशा उनकी बात काट देती। यही कहती ममी। मैं हिपॉक्रेट नही हू। और लाण्ड्रियो मे कपडे धुलते हैं। पर बिल्लो गन्दे कपडो की इज्जत करती है और फिर आलमआरा बेगम तुरन्त उसकी बात काटती ऐ बस रहने दो बेटा। उसकी जबान की गन्दगी के आगे तो दुनिया के सारे साबुन हार मान लें। अस्ल मे आलमआरा बेगम बिल्लो से यू खफा हो गयी थी कि एक दिन कही से लौटते वक्त उन्हे खयाल आ गया कि लला के कपडे नही आये

हैं तो उन्होने तागा कटरा मीर बुलाकी की तरफ मुडवा दिया। तांगा लाण्ड्री के बाहर रुका। रऊफ अन्दर गया। वहाँ उसने बिल्लो पर राय डालना चाहा। बिल्लो कहा किसी के रोब मे आनेवाली थी। बरस पडी। ता रऊफ को मन्न पर आलमआरा बेगम लाण्ड्री म जा घुसी। उनका खयाल था कि यह सुनते ही बिल्लो के हाथ पाँव फूल जायेंगे कि वह बेगम अशफाकुल्लाह खा हैं। पर लगा ऐसा कि जैसे बिल्लो ने कभी अशफाकुल्लाह खा का नाम ही न सुना हो। उसने आलमआरा बगम को भी खरी खरी सुना दी और आलमआरा बगम को मजबूरन यह धमकी देते हुए लाण्डी स निकल आना पडा कि वह इस लाण्ड्री की इट स इट बजवाये बिना चैन स नही बठेगी

और यू कोई आठ साल के बाद वह अपने मिया से बोली "दखिय। यह बिल्लो बडी बदतमीज है।"

अशफाकुल्लाह खा यह बात पहले से जानत थे इसलिए चुपचाप खाना खाते रहे।

बन्द करवा दीजिए उसे किसी दफा म।' आलमआरा बेगम न हुक्म-सा दिया।

'देखूगा।" अशफाकुल्लाह खा ने कहा

यह बात है ११ जून सन ७५ की।

सडी हुई गर्मी पड रही थी। बरसात का कही पता नही था। इतनी हवा भी नही थी कि जिसमे कोई एक पूरा साँस ले सके। आसमान और जमीन के बीच मे लू की उडायी हुई धूल अटी हुइ थी जो धीरे धीरे बिस्तरा और बन्न और आगन मे बरस रही थी

बिल्ला के छोट-से आगन मे बिजली का नया पखा चल रहा था। यह दहेज का पखा था। आशाराम ने बिल्लो को दिया था। उषा कम्पनी का लाल पखों वाला। पर अँधेरे म उषा कम्पनी के उस पखे स गम हवा निकल रही थी। बिल्लो की आँख खुल गयी। पास वाले बँसखट पर देश पडा हुआ था। केवल एक अण्डरवियर पहन। बिल्लो न हाथ बढाकर उसे छू दिया। उसे छूने स उसे बडा इत्मीनान हो गया जसे उसने किसी सपन को छू लिया हो। वह मुस्कुरा दी अशफाकुल्लाह खा की बेगम आलमआरा से अपने बगडे की बात उसने देश को नही बतायी थी। उसके सर पर यू ही बडी जिम्मदारियाँ थी। बरसात आ रही थी और पानी पडने से पहले सामने वाला उसारा न पड गया तो बरसात कमरे मे आ जायेगी। शायद घर पूरा बन जान स पहले उसे घर मे उठ आने की जिद करनी ही नही चाहिए थी। मामा ने तो समझाया

भी था कि जल्दी क्या है। पर वह मामा को कसे बताती कि जल्दी क्या है। जल्दी यह थी कि अब उससे देश बिना रहा नही जा रहा था देश ने भी समझाया कि जल्दी क्या है। पर वह देश को कैसे बताती कि जल्दी क्या है। जल्दी यह थी कि अब उससे देश बिना रहा नही जा रहा था और शादी वह, अपने घर मे उठे बिना, करने पर तैयार नही थी।

बिल्लो का जी चाहा कि हाथ बढाकर देश को फिर छू ले तो उसने देश को फिर छू लिया। देश ने करवट ले ली और पलग के दूसरे किनारे पर चला गया। बिल्लो हँस पडी। फिर कुछ सोचकर वह उठी और कमरे के अन्दर चली गयी। फिर उसने बत्ती जलायी। कमरे मे उसने सौ किलोवॉट का बल्ब लगा रक्खा था। इतवारी बाबा ने कहा भी कि इसकी क्या जरूरत थी। पचीस पावर का बल्ब काफी है। पर वह नही मानी। उसे ज्यादा रोशनी से प्यार था, जिसमे वह अपने घर को साफ-साफ देख सके और अपने घर की दीवारो और आगन से बात कर सके।

कमरे म सामने ही मिसेज गाधी की, किसी पत्रिका से काटी हुई, तस्वीर चावल लगाके दीवार से चिपकायी हुई थी। उसके साथ ही एक कैलेण्डर था। श्री राम आगे आगे तीर कमान लगाये। उनके पीछे सीता मैया और उनके पीछे लक्ष्मणजी तीर कमान लगाये। एक हिरनी उन्हे प्यार से देखती हुई। पीछे एक पवत। बफ मे ढका हुआ। नीचे एक छोटी-सी नदी बहती हुई और उस नदी के पानी से सर निकाले हुए 'श्री राम वनवास बीडी" का बण्डल। सामनेवाली दीवार पर वह मोटरवाली अकेली तस्वीर।

उसने मिसेज गाधी की तस्वीर की तरफ देखा। वह भी उसकी निगाह मे पूजने के लायक थी क्योकि जो वह न होती तो बाबू साहेब ने तो फाका करवाने मे कोई कसर नही छोडी थी। उन्होंने पता नही क्या गोलमाल किया कि यह साबित हो गया कि गरेज घाटे मे चल रहा है जब कि उसी बरस उन्होंने अपनी बेटी को साढे पाँच लाख का दहेज दिया था। काशी मे गगाजी के किनारे नयी कोठी बनवायी थी। बस वरकरा को बोनस देने के लिए पैसा नही था। शम्मू मिया ने बाबू साहब का साथ दिया तो जाहिर है कि यूनियन भी उधर ही गयी पर बिल्लो के लाख समझाने के बावजूद देश नही माना। वह भूख हडताल पर बैठ गया। आशाराम ने कहा कि खाली-खूली भूख हडताल से कुछ नही होगा। उसके पीछे कोई राजनीतिक ताकत होनी चाहिए। तो देश ने उन्हे यह कहकर घुडक दिया था कि हम राजनीति फाजनीति ना जानते साहब। हम तो फाका करे की परटिटस कर रह कि कुछ दिन जीके बाबू साब की खिदमत

कर सकें। और चूंकि उसके पीछे कोई आंदोलन नहीं था इसलिए बाबू साहब ने उसे डिसमिस कर दिया।

बाबूरामजी बिचारे ने बड़ी सहायता की। वह यह सारी नाइंसाफी देख रहे थे। उन्होंने जिला कमेटी के अध्यक्ष होने के नाते बाबू साहब से कहा भी कि उन्हें यह नहीं करना चाहिए था। बाबू साहब हँसकर टाल गया। पर बाबू रामजी चुपके नहीं बैठे। उन्होंने श्रीमती गांधी को फौरन खत लिखा कि यह खुली नाइंसाफी है। बाबूरामजी और पण्डित नेहरू दोस्त रह चुके थे। पण्डित जी इलाहाबाद आते तो उनसे मिलने उनके घर जाते। वह तो उन्हें मन्त्री भी बनाना चाहते थे पर बाबूरामजी ही ने मना कर दिया और पण्डितजी बिचारे चुप हो गये। फिर उत्तर प्रदेश सरकार ने उन्हें सिमेंट का होल-सेलर बनाना चाहा। पर उन्होंने मना कर दिया। वह चाहते तो सिफारिश करने को अपना धंधा बना सकते थे। पर उन्होंने वह भी न किया। वह अपना मासिक "साहित्य" ही निकालते रहे और उसमें घाटा उठाते रहे। पर ऐसे आदमी की इज्जत तो होती ही है। इसलिए मिसेज़ गांधी को जो उनका खत मिला तो उन्होंने फौरन जवाब दिया। देश से कहिए कि बैंक से कर्ज लेकर अपनी वर्कशॉप खोल ले। प्रदेशी राजनीति में वह बाबू साहब की तरफ से जरा-सा खिंच भी गयी थी।

यह खबर जंगल की आग की तरह सारे इलाहाबाद में फैल गयी कि खुद मिसेज गांधी ने देश को बैंक से कर्ज दिलवा के वर्कशॉप खुलवायी है। लोग तो यहां तक कहते सुने गये कि मिसेज़ गांधी ने एक रात को फोन घुमा दिया बैंक के मनीजर को कि देस हमारा खासुलखास आदमी है।

देश ने अपनी वर्कशाप का नाम "इन्द्रा मोटर वर्कशॉप' रक्खा। बाबूराम जी ने उसका उदघाटन किया। आशाराम भी आया पर वह देश के इस कांग्रेसी झुकाव से खुश नहीं था। पर देश ने फिर भी यही कहा कि उसे राजनीति से कोई तअल्लुक नहीं, उसे तो जीने के लिए पैसे कमाने हैं। और अब तो जिम्मेदारी भी बढ़ गयी है। ब्याह हो चुका है। थोड़े दिनों में वह बाप बन ही जायेगा तो आनेवाले कल के बारे में भी तो सोचना चाहिए। आशाराम ने उसे बहुत समझाना चाहा कि आनेवाला कल भी गुजरनेवाले या गुजरे हुए कल ही की तरह निजी नहीं हो सकता। और वह अकेले उसके नये घर में आनेवाला भी नहीं है। इसलिए उसे सबके साथ ही उसके स्वागत की तैयारी करनी चाहिए और उस लाने के लिए रात से संघर्ष करना चाहिए। उन दोनों की इस बहस में कभी-कभार बाबूराम भी बोल पड़ते और फिर दादा-पोते में ठन

जाती। देश की आर्थिक हालत और वतमान की आर्थिक दिशा और पैदावार और माग और मजदूरी के रिश्तो पर बातें होने लगती यह बातें न बिल्लो समझती, न देश की समझ मे आती। बिल्लो तो रामदयी के पास जा बैठती और घर के काम मे उसका हाथ बटाने लगती और उसे यह राय देने लगती कि अब आशा बाबू का ब्याह कर देना चाहिए। और इस बात पर रामदयी प्रेमा नारायण की बात लेकर बैठ जाती। पर देश वही बैठा उनकी बातें सुनता रहता और समझने की कोशिश करता रहता। पर कभी-कभी उसे ऐसा लगने लगा था जैसे बाबूरामजी ठीक कह रहे है। जो ऐसा न होता तो भला बक उसे कज देता और वह अपनी बकशॉप खोल पाता ? और यह जो रोज आकाशवाणी वाले बताते रहते हैं कि इतनी जमीन बे-जमीने खेतिहर मजदूरो मे बाट दी गयी या यह कि इतने लाख नये रोजगार पैदा किये गये, या इतने लाख मीटर कपडा बाहर भेजा गया जिससे इतनी बचत हुई बाहरी मुद्रा की तो यह सब झूठ थोडी होगा। उसने कोई सौ-दो सौ तो डाकुमेंट्रिया देखी होगी जिनमे यह दिखलाया गया है कि इन्द्राजी के जमाने म देश ने कितनी उन्नति की है। कितनी खुशहाली आयी है देश मे। खुद देश टेरिलीन की शट पहनता था। विल्स सिग्रेट पीने लगा था। कुछ तो हुआ था और इसलिए वह बाबूराम जी की बातो पर हुकारी भरने लगा और आशाराम को मायूसी होने लगी।

आशाराम अब एक पेशावर सियासतदाँ हो गया था। एक आदमी के इधर-या उधर होने से उसकी सेहत पर कोई असर नही पडता था पर देश से जैसे उसका कोई और रिश्ता भी था। उसने २८ फरवरी को अपनी डायरी मे देश के भटकने का गम मनाया भी। लिखता है

'देश सिफ एक मजदूर नही। देश मेरा पहला साथी भी है। मेरी ऐनक भी है, जिसे लगाकर मैं मजदूर वग की समस्याओ को समझ सका हूँ और लाल क्राति का सपना देख सका हू। बिल्लो के घर का सपना केवल देश और बिल्लो का नही। मैं भी वह सपना देखने के लिए जागता रहा हू। देश का बाबूजी के साथ हो जाना मेरी बहुत बडी निजी हार है। क्या मेरी राजनीतिक समझ और चेतना मे कही खोट है ? यह प्रश्न मैं किससे करूँ। जो अपनी नादानी से इस प्रश्न का जवाब दे सकता था वह तो बाबूजी की हा मे हाँ मिलाने लगा है। कैसी अजीब बात है कि जिस देश ने शम्सू मिया का बिकना देख लिया था वह खुद अपने बिक जाने को न देख सका प्रेमा होती तो मैं उससे पूछता। उससे लडता। बहस करता। और अपने दिमाग से शक के जाला को साफ कर लेता पर प्रेमा तो दिल्ली आकाशवाणी से लोगो को यह बताने म लगी हुई है कि

भारत में एक नया सूर्य उदय हो चुका है। एक नये, बहुरंगी भविष्य की कोंपल फूट चुकी है। यदि ऐसा है तो वह बहुरंगी कोंपल मुझे क्यों नहीं दिखायी देती।

पर इन्द्रा के सामने ऐसी कोई उलझन नहीं थी। वह राजनीति की पतंग के पेच नहीं लड़ा रही थी। उसे यह भी नहीं मालूम था कि वह इस पतंग बाजी में मांझे की तरह है। पतंग भी नहीं। डोर है जो किसी और के हाथ में है किसी और के इशारे पर पतंग को इधर-उधर मोड़ती रहती है। देश को लेकर की उलझन-सी बातें नहीं मालूम थीं इसीलिए वह खुश थी। आदमी को और चाहिए क्या। अपना घर। बिल्लो जैसी पत्नी। और "इन्द्रा मोटर वर्क्स" के पास यह तीनों चीजें थीं। अब जिसकी किस्मत ही में ग़रीबी लिखी लगी हो उसकी गरीबी इन्द्राजी बिचारी कैसे हटा सकती थीं। उसने तो एक खटारा फोर्ड साढ़े चार सौ में खरीद ली थी और अपना सारा वक्त उसकी मरम्मत में लगा रहा था। उसने यह बात बिल्लो से छिपा रक्खी थी। वह उसे एक दिन चौंका देना चाहता था यह कहकर कि ऐ बिल्लो चल जरा घूम आयें। बाहर गाड़ी खड़ी है। वह आखें बन्द करके बिल्लो का खिला हुआ चेहरा देख सकता था। वह उस खुशी को महसूस कर सकता था जो यह सुनते ही खुशबू का तरह बिल्लो के दिल में तैर जानेवाली है और देश खुशी के इस ख्याल हो मस्त था। आदमी का यही तो कमाल है कि कल की खुशी के सपने देखकर वह एक तरह से खुशी ओवर-ड्राफ्ट कर लेता है। तभी तो वह जिये चला जा रहा है। सपने छीन लीजिए आदमी से, वह आज नहीं, अभी मर जाये तब भी।

इन्द्रा ने वह फोर्ड खरीदने के लिए पांच सौ भी बड़ी तरकीबों से जुटाये। जाहिर है कि वह बिल्लो को बताये बिना यह रकम डाकखाने से निकाल नहीं सकता था। उन दोनों का अकाउन्ट अब भी पोस्ट आफिस में था क्योंकि बैंकों पर बिल्लो का भरोसा नहीं था। देश तो खैर ईमानदार आदमी है पर हर आदमी एक नाड़ी है। वह इसी तरह कर्ज देते रहे तो दीवाला मार के बैठ जायगा एक न एक दिन। पोस्ट आफिस फिर सरकारी चीज है। पैसा जमा करो तो सरकारी मुहर लगती है। पैसा निकालो तो सरकारी मुहर लगती है। और मुहर भी ऐसी पक्की रोशनाई की होती है कि लाख मिटाना चाहो तो न मिटे। इसलिए उसके लिए पोस्ट आफिस ही ठीक था।

और पांच सौ कोई पांच रुपया नहीं होता कि आयें बायें शायें करके ले लिये जाय। तो उसे वही पुरानी महनाज के दहेजवाली तरकीब सूझ गयी। चुनांचे

उसकी बकशाप म पुर्जे टूटने लगे। बिल्लो खूब खूब खोली पर चारा क्या था। और यू थोडा थोडा करके देश ने उस फाड का दाम चुकता किया। फिर वह उसमे लग गया—वह जैसे अल्लाह था और मुटठी-भर मिटटी से आदमी का पुतला बना रहा था—धीरे धीरे उस कार की शक्ल निकलने लगी। फिर धीरे-धीरे उसम जान पडने लगी। बिल्लो को चूकि हरा रग बहुत अच्छा लगता था इसलिए उसने उस कार पर हरा रग स्प्रे करवाया और उसी दिन बिल्लो के लिए उसने हरे रग की एक साडी भी खरीदी। पीपल के जवान पत्तो वाला हरा रग। वह कार मे बठ गया। पर कार मे बैठकर वह कोई और आदमी लगने लगा। धत माला—उसने अपने आपको गाली दी और कार को आगे बढा दिया।

शहर वही था। सडकें वही थी। सडका के कनारे खडी हुई जागती-सोती दुकानें वही थी। लाग वही थे। गूजती हुई आवाजें, नाम, गालिया—सब कुछ वही था पर देश को नया नया-सा लग रहा था जैसे वह इस शहर मे पहली बार आया हो और इन लोगो को पहली बार देख रहा हो और इस भाषा को पहली बार सुन रहा हो।

सामने इतवारी बाबा का अडडा था। और इतवारी बाबा अपनी जगह पर टाट बिछाये बठे थे। उनके पीछे दीवार पर श्रीमती गाधी का मुस्कुराता हुआ एक बहुत बडा पोस्टर था जो पिछले साल उनके आने पर लगाया गया था, जिसमे वह मुस्कुरा रही थी और उनके दात किसी टूथ पस्ट के इश्तिहार की तरह उजले और चमकदार दिखायी द रह थे। देश ने इतवारी बाबा के सामने कार रोक दी। इतवारी बाबा ने उसकी तरफ देखा। पर वह इतवारी बाबा को यह बतानेवाला नही था कि यह कार किसी और की नहीं, उसी की है। यह बात तो सबस पहले वह बिल्लो को बताना चाहता था।

"घर चलना हो तो चलो।" देश ने कहा।

"अभई दू घण्टा बाकी है डियूटी बदले मे।" इतवारी ने कहा।

बात यह है कि अपनी उम्र का खयाल करते हुए उसने अपनी जगह की तीन शिफ्टें चलाना शुरू कर दिया था। बाकी दो शिफ्टें किराये पर चलती थी। पहली शिफ्ट म रामदीन की अम्मा बैठती थी जिसे भीख मांगना आता ही नही था। पर मजबूरी थी। रामदीन रेजा[1] था। एक घर की छत बन रही थी। वह नये पडे हुए चून की गच पीट रहा था कि छत बैठ गयी और उसके हाथ पांव बेकार हो गये। इन लोगो की तो कोई यूनियन भी नही। घर बनवाने

---

१ घर बनाने में जो मजदूर इट चूना उठाते हैं वे हमारी तरफ रेजा कहे जाते हैं।

वाले ने कह दिया कि छत उसने थोड़ी बनायी थी। बैठ गयी तो वह क्या करे। उसका तो खुद पौने दो हजार का नुकसान हो गया—रामदीन कँवारा था। मा के सिवा कोई और था ही नहीं घर मे। मा के हाथ म राशा था। कोई काम कर ही नही सकती थी। रामदीन वैसे कटरा मीर बुलाकी मे रहा करता था। उसके पिता अच्छे मिस्त्रियो मे गिने जाते थे। पर उन्हें पटाव का काम आता था। डाट डालना नही आता था तो मरते मरते वह भी "रेज़ा" हो गये थे। फिर रामदीन न भी वही काम शुरू कर दिया। लोग घर तो बनवाते ही रहते हैं। अच्छी कमाई हो जाती थी। छोटी-मोटी मरम्मत का काम वह ऊपर-ऊपर से भी ले लिया करता था। निहायत फिल्मी बात यह हुई कि उसकी शादी होने से चार दिन पहले वह छत बैठ गयी। पहले तो अडोस पडोस स खाना आता रहा। पर कटरा मीर बुलाकी म ऐसा कौन रहता था जोखन के सिवा जो दो आदमियो को आराम से खिलवा सके और जोखन को यह खयाल नही आया। धीरे धीरे खाना आना कम हो गया। बिल्लो से देश ने कहा कि क्या वह लोग उनके लिए दो वक्त की रोटी नही भेज सकते। बिल्लो एक वक्त की रोटी पर राज़ी हो गयी। तो एक वक्त की रोटी का बन्दोबस्त हो गया। अब बची दूसरे वक्त की रोटी, कपडा, घर का किराया। कोई बीमार हो तो दवा का दाम

तो एक दिन इतवारी बाबा ने रामदीन की माँ को पहली शिफ्ट पर बिठला दिया। पर रामदीन की अम्माँ को तो भीख माँगना भी नही आता था। उससे हाथ फैलाया नही जाता था। तो इतवारी न उससे कहा कि उसे हाथ फैलाने की जरूरत ही नही है। बस एक प्याला सामन रखकर वह सडक की तरफ पीठ करके चुपचाप बैठ जाये। रामदीन की अम्माँ यही करने लगी।[1]

काम पर जाने के लिए सवेरे के वक्त निकलनेवाले लोग नम दिल होते हैं। दिल तो वही शाम तक जाकर सख्त होता है। तो यह लोग जब रामदीन की अम्माँ को यू सडक की तरफ पीठ किये बैठा देखते तो उनका नम दिल पिघल जाता और वह यह सोचकर उसके प्याले म कुछ न कुछ डाल ही देत कि उनकी हालत इस रामदीन की अम्माँ से तो अच्छी ही है।

तो पहली शिफ्ट रामदीन की अम्माँ की हो गयी। दूसरी शिफ्ट (जाडों म) खुद इतवारी बाबा किया करते थे कि धूप की गर्मी मिलती रहे। गर्मियो मे वह

---

१ मैं बार-बार रामदीन की अम्माँ इसलिए कह रहा हूँ कि बहुत कोशिश करने पर भी मुझे उसका नाम न मालूम हो सका। कटरा के लोग उसे इसी नाम से पुकारा करते थे और शायद उसे भी अपना नाम याद नहीं रह गया होगा। मैं उससे मिल न सका क्योंकि वह सिख दंगो के दौरान मार्च दगे में मारी गयी।

तीसरी शिफ्ट किया करत थे कि कुछ तो आराम मिले। तो जाडो मे तीसरी और गर्मियो म दूसरी शिफ्ट अल्ला रक्खे किया करता था। यह अल्ला रक्खे भी कटरे ही का था। अधेड उम्र का आदमी था। पहले बाप की कमायी खाता था। फिर बडे भाई की कमायी खाने लगा। फिर अपने बेटे की कमायी खाया किया। बाप मर गया। बडा भाई पाकिस्तान चला गया। बेटा हिन्दू मुसलिम दगो मे मारा गया। अल्ला रक्खे को कोई काम आता ही नही था। वह कोई काम जानना भी नही चाहता था और अब काम सीखने की उम्र भी नही थी। और कटरेवाले उस निकम्मे को खिलाने पर तैयार भी नही थे। तो इतवारी ने डेढ रुपये रोज पर एक शिफ्ट उसे थमा दी थी। और यू उनकी बडे आराम से कट रही थी। इसीलिए जब उन्होने दो घण्टे की दुहाई दी तो देश जल गया।

'अरे तोरे दू घण्टे का मतलब का है।" देश ने कहा। "बेला वजह मे जी जलाते हो। अरे हम लोग दिन रात खून पसीना एक करत हैं तब कोई तरह दू बखत की रोटी जुडती है। तोरा का है। हाथ फैला के बैयठ गए।"

'तनी हाथ फैयला के देखाव, बोले से पहिले।"

"लो फयला दिया।" देश ने हाथ फैलाकर कहा। "अरे ई भी कोई काम मे काम है।"

"ऊ जो गजा आदमी आ रहा।' इतवारी बाबा ने कहा। 'तनी ओसे दू पैयसा माग के देखाव।'

'माग लेते है।' देश ने कह तो दिया। पर जब वह आदमी पास आया तो देश ने अपना बढा हुआ हाथ वापस ले लिया। इतवारी मुस्कुरा के रह गया। देश ने उसकी तरफ देखा और उसे अपनी तरफ देखता हुआ पाया तो भल्ला गया। बोला "हम ई कहित हैं बाबा कि ऊ जो तुम बोलते हो ना, हम उही भुला गये रहे।"

कौन लम्बी तकरीर है कि भुला गया।" इतवारी ने कहा। "एयसे हाथ फलाव।" उसने हाथ फैला दिया। देश ने नक्ल की। 'अब कहा। भगवान के नाम पर बूढे को पाच पयसा दते जाव भया। बस यही तो कहना है।"

पर देश वही नही कह पाया। और तब बाबा ने कहा 'हम उल्लू थोडे है कि हफ्ते म एक दिन की छुटटी मना हैं। चलो।" इतवारी कार मे बठ गया और कार चल पडी।

"केकी गाडी मिल गयी है तू ह चक्कर मारे के वास्ते ?"

'अरे जो गाडी की इसटेरिंग अपने हाथ मे हो ऊ गाडी अपनीये समझो।"

"बिल्लो को लेके सलीमा जा रहे हो का ?"

'पता नही।' देश ने कहा। "ई सब तो बिल्लो के मूड पर है न।"

कार मे सन्नाटा हो गया। कार के बाहर जिन्दगी का वही हगामा था। सामने सिनेमा के सामने बडी भीड थी। पुलिस डण्डे घुमा रही थी। रिश्वत ले रही थी और टिकटो के ब्लैक में बिकने का बन्दोबस्त कर रही थी—उस भीड म उन्हे बदर और शहनाज के चेहरे भी दिखायी दिये। दोनो बहुत खुश थे। शहनाज आइसक्रीम खा रही थी और मास्टर बदर ब्लक मे टिकट बेचनेवाले से मोलभाव कर रहे थे और अपनी माचिस से पास खडे पुलिस कास्टेबल की सिग्रेट भी जला रहे थे—हान बजाती कार उनके पास से गुजर गयी पर उन्होंने ध्यान नही दिया और वह ध्यान देते भी क्या। वह तो यह सोच भी नही सकते थे कि कटरा मीर बुलाकी का देश अपनी कार मे बैठा नजर आ सकता है।

"ए भाई ई दूनो सनीमा देख देख के कब तक गुजारा करिह आखिर।" इतवारी बाबा ने कहा।

"तो और का करें बिचारे लोग ?" देश ने पूछा। वह रियर-व्यु मिरर में अब भी उन्ही को देख रहा था। "टिकट ना मिला।' यह कह कर उसने गाडी एक तरफ करके रोक ली।

"रुक काहेको रयो ?'

'उनह भी लेत ही चलें। नही तो छ आना दीह लोग रक्शे का।"

"आना कयसा भई।" इतवारी ने कहा।

और देश हँस पडा।

बदर और शहनाज।

बदर और शहनाज के हँसने की आवाज भी पास आ गयी। उन्होंने फिर कार पर ध्यान नही दिया। यकायक देश चिल्लाया 'कटरा मीर बुलाकी चार आना। कटरा मीर बुलाकी चार आना—" शहनाज और बदर दोना चौंके। अब उन्होने देखा कि चमचमाती हुई हरी कार मे देश है और दरा के पास इतवारी बाबा हैं।

"अरे अम्मा देख का रही हो। जल्दी से बैयठो।—'

"आग लगे आपकी जबान म।— कोसती हुई शहनाज कार मे जा घुसी और उसकी नयी सीट म धँस गयी। वह सीट बदर को बाहा से ज्यादा नम थी। उसने नये मखमली रेक्सीन पर हाथ फेरा और उस लगा जसे यहा से वहाँ तक बीर बहूटियाँ बिछी हुइ हैं—देश ने रेडियो ऑन कर दिया।

'अब आप प्रेमा नारायण से हिन्दी म समाचार सुनिए। आज नयी दिल्ली मे दिल्ली युनिवर्सिटी टीचज यूनियन की सभा मे बोलत हुए श्रीमती गाधी ने कहा

कि शिक्षा हर आदमी का पैदायशी हक है। भोपाल मे सोफिया कालेज के अखिल भारतीय मुशायरे का उदघाटन करते हुए रक्षा मन्त्री श्री जगजीवन राम न कहा कि श्रीमती गांधी के हाथो म भारत और भारतीय साहित्य का भविष्य सुरक्षित है। जमशेदपुर म एक सभा म शिक्षा मन्त्री डाक्टर नूरुलहसन ने श्रीमती गांधी के एक स्टेचू का निकाव उठाया। यह स्टचू तांबे का है। कल अलइता लिया का एक जम्बो विमान हाइजैक कर लिया गया। अब आप पूरे समाचार सुनिय।"—देश ने रेडियो सीलोन लगा दिया और कोई फिल्मी गाना आने लगा।

"ए भाई, जब ऊ हवाई जहाज म इन्दरा गांधी ना रही तो ओका जिकिर आकासवाणी पर कयसे आ गया ?" इतवारी ने कहा।

'देखो बाबा," देश झल्ला गया। "हर बखत पजा झाडे उनही के पीछे मत भागा करो।'

और क्या।" बदुलहसन नायाब मछली शहरी ने कहा। "जो वह न होती तो अब तक यह मुल्क तबाह-बरबाद हो चुका होता।'

"का एलाहाबाद बक जयपरकास बाबू के कहे से हम्मे करज दिहिस है ?" देश ने सवाल किया।

"आप दख लीजिएगा।" बदुलहसन नायाब ने कहा। 'उनके सिवा कोई गरीबी नही हटा सकता। और वह हटा कर रहेगी।"

"जब तक हम और रामदीन की अम्मां और अल्ला रक्खे खाव नही हटाय जाते, हम ना मानेंगे।"

"हम तो सुना है कि तुम मुसायरे मे धूम मचाके आये हो।"

"अरे नहीं भाई साब।" मास्टर साहब शर्मा गय। "हम क्या मचायेंगे धूम।"

"तनी हम भी तो सुनें।" देश ने कहा।

"अज करता हूं।" मास्टर साहब फौरन तैयार हो गए। "नज्म का उन वान है नया सूरज।" फिर वह गुनगुनाने लगे। देश ने शीशा चढा दिया। फिर तमाम शीशे चढ गय। और मास्टर बदुलहसन नायाब मछली शहरी लहक-लहक्कर अपनी नज्म सुनाने लगे

सारी रौनक, ताजगी, बस इन्दिरा गांधी की है।
देश मे तो रोशनी, बस इन्दिरा गाधी की है।
ललिये मुसतकबिले हिन्दोस्ता उसकी कनीज,
गसुओ की बरहमी बस इन्दिरा गाधी की है

"ए मास्टर ई नजम है कि आकासवाणी का समाचार।" बाबा के लहजे कोई सवाल नही था। मास्टर बद्र घबराकर चुप हो गय। "हम्मे उतार दयो टा।"

"सठिया गये हो का ?' देश ने कहा।

'हम ई कहित है भया कि हर मरज की दवा जय सिया राम।—" वह पनी बात पूरी न कर सका क्योकि देश ने गाडी वाकई रोक दी। और इत री की तरफ देखे बिना बोला "हमरी गाडी म बयठ के कोई इन्द्राजी को ली ना दे सकता।"

कार म सन्नाटा हो गया। झल्लाहट के इज़हार के लिए कोई तयार नही । पर अब तो गाडी रुक चुकी थी। इतवारी बाबा चुपचाप दरवाजा खोल र नीचे उतर गये। कार आगे बढ गयी। इतवारी बाबा पीछे रह गये।

'हम जे थाली मे खायें ओ ही मे छेद करे वाले लोगन मे से ना हैं।' थोडी र के बाद देश ने शायद अपने ही सामने अपनी सफाई पेश की। शहनाज़ चुप ी। बद्रुलहसन ने कुछ नही कहा। कार हवा से बातें करने लगी।

'गली द्वारका प्रसाद' के नुक्कड पर बद्रुलहसन ने कहा 'हमे यही उतार जिए।"

गाडी रुकी तो 'पहलवान टी स्टाल' पर बैठे हुए तमाम लोगो ने देखा कि डी देश चला रहा है और उसी गाडी से मास्टर साहब उतर रहे हैं और ी गाडी मे शहनाज़ बैठी है। लोगो को शहनाज़ का चेहरा नज़र नही आया। : लोग उसका बुरका पहचानते थे। पर किसी को कुछ पूछने का मौका नही ला क्योकि कार गली द्वारका प्रसाद' मे उतर चुकी थी और जब तक कोई ु पूछे काफी आगे जा चुकी थी। चूकि उस वक्त वहाँ शम्सू मियाँ भी थे लिए बद्रुलहसन से भी किसी ने सवाल करना उचित न जाना। और वह भी ली द्वारका प्रसाद के अन्धेरे म उतर गया।

मगर देश शहनाज़ को उतार कर फिर लौटा क्योकि उसका नया घर 'पण्डित शिवशकर पाण्डेय मार्ग पर था, जिसमे पहलवानवाल कमरे की त पड रही थी और बाहरी बैठक की दीवारें उठ रही थी।

चायखाने के पास उसने कार रोकी।

"ए मामा।' उसने हाँक लगायी। "हम लोग साढे नौवाला शो देखे जा ' हैं।"

'लाटरी लग गयी है का ?" न जाने किसने पूछा। "गाडी तो बहुत फस-नाम है।'

"कब लियो ?" पहलवान ने पूछा।

"अब हम का बतायें मामा—"

"अरे तुम का बताओगे बेटा ! बताते तो रहे स्वर्गीय पिताजी। एक दिन एयसा भया कि—" वह चूतड एक तरफ से उठाकर पादने के लिए रुके।

"वाह ! का सुर मे हो आजकल।" किसी ने कहा।

"अरे भैया कमरदीन, हम का हागे सुर मे। सुर मे तो हुआ करते रहे स्वर्गीय पिताजी, कि पादें तो आवाज सिद्धी इहाँ से आनन्द भवन तक जाये—'

जोरदार कहकहा पडा। देश ने मौके का फायदा उठाया। निकल गया।

'इजिन की अवाज तो फाड की ना है।' शम्सू मियाँ ने कहा, "मुदा काम अच्छा किया है।"

"मतलब ई कि देस गाडी ले लिहिन।" मामा को अपनी बात पर यकीन नही आया।

'गाडी अवाज से मालिक की नही, मिकानिक की लग रही।" शम्सू मियाँ ने कहा।

पहलवान जोश म खडे हो गये "ए नरेणा ! अरे जल्दी कर। दुकान बन्द करे का टैम हा गये—"

'का ?" एक गाहक ने कहा, "तोर सिर की घडी तेज चले लगी है साइद। कौन दिन तोरी दुकान रात के डेढ दू बजे से पहिले बन्द भई है, ऐ ?"

'हम अभइ आ रहे—" पहलवान दुकान से उतरकर देश के घर की तरफ लपक लिय। अस्ल म वह इस खुशी मे रोना चाहते थे कि देश के पास अपनी कार आ गयी है बाबू साहब की तरह—दुकान से चन्द कदम आगे बढके उन्होने कारपोरेशन के अँधेरे मे नाक सुडकना और आँखें पोछना शुरू कर दिया।

सामने ही वह हरी गाडी खडी थी।

पहलवान ने उसे प्यार से छुआ। उनके छूने मे लगभग वही प्यार था जो उनके हाथो मे बिल्लो या देश के बचपन को छूते समय आ जाया करता था। आँसू का एक कतरा कार पर टपक पडा। पहलवान ने जल्दी स अपनी धोती से उसे साफ किया और उसे उस वक्त तक घिसते रहे जब तक कि आसू के उस कतरे की नमी बिल्कुल खत्म नही हो गयी और तब वह दरवाजा खोलकर अन्दर गय। सामनेवाले ओसारे मे बिल्लो मुह फुलाये बैठी थी और कोठरी के दरवाजे से टिका हुआ देश अपना सर खुजला रहा था।

बिल्लो बस पल भर के लिए मोटर की खबर सुनकर ताजा कली की तरह खिल के फूल बनी क्योकि फिर उसे खयाल आ गये कि मोटर खरीदने मे पसा

लगा होगा और फिर बात हाथ से निकल गयी। उसने जमीन-आसमान एक कर दिया। मतलब यह कि देश उससे चोरी करता है। उससे झूठ बोलता है। उससे अपनी कमाई छिपाता है—नही तो मोटर खरीदने का पैसा कहाँ से आया ! और लाटरी लग गयी रही तब भी बताये को तो चहिए रहा। मोटर बिना जीप मे कोई फरक ना पडता रहा। जो पैयसा माटीमिली मोटर मे लगा है उतने से तो घर पक्का हो जाता—देश के पास इनमे से किसी बात का जवाब नही था, इसलिए वह चुप खडा सर खुजला रहा था।

मामा पर किसी की निगाह नही पडी और वह दब पाव जैसे आये थे बस ही चले भी गये।

बिल्ला का मूड कुछ यू भी बिगडा हुआ था कि अभी कुछ देर पहले अशफाकुल्लाह खा की आलमआरा बेगम से उसकी तू-तू मैं मैं हो चुकी थी और वह झल्लाहट म लाण्डरी बन्द करके घर आ गयी थी।

यह बात है ११ जून सन ७५ की।

जस्टिस सिहा अपने बगले म जाग रहे थे क्योकि यह रात उनके सोने की रात नही थी। न० १ सफदरगज मे श्रीमती गाधी जाग रही थी कि यह उनके सोन की रात नहीं थी। महात्मा गाधी की समाधि, मौलाना आजाद की कब्र, सदाकत आश्रम की कुटिया—विधान सभा की तरफ जाती हुई सीधी, चौडी सडक, राष्ट्रपति भवन की दीवारें—सभी की नीद उडी हुई थी कि यह उनम से किसी के सोने की रात नही थी—पटने की सडको पर नारे जाग रह थे और विद्यार्थिया के दिला का सन्नाटा जाग रहा था।—पर आम लोग सो रह थे। मजदूर, किसान, छाटे बडे दुकानदार, सफेद कमीजें पहननेवाले बाबू लोग। हामियोपथी और ऐलियोपेथी के डाक्टर, हकीम और वैद्य सभी सो रहे थे—क्योकि सब जानत थे कि फसला क्या होगा। लेकिन जब सुबह हुई तो पता चला कि कोई कुछ नही जानता था।

इलाहाबाद हाईकोट का वह कमरा खचाखच भरा हुआ था जिसमे जस्टिस सिहा राजनारायण बनाम इन्द्रा गाँधी केस मे अपना फैसला सुनानेवाले थे।

१२ जून की सुबह म कोई खास बात न थी। गर्मी वसी ही थी। चौक के घण्टाघर की घडी बस ही बन्द थी। इक्का रिक्शा, ताँगा और कारो के बीच स पत्रल उसी तरह आ-जा रह थे। दुकानें उसी तरह खुली हुई थी। कादिर हलवाई की दुकान पर इमरतियाँ उसी तरह छानी जा रही थी। लू उसी तरह सवर ही से चलन लगी थी। और काई यह जानने के लिए परेशान नही था कि आज क्या फैसला होनवाला है। देखा तो बिल्ले स यह कहकर अपनी बक-

शॉप गया था कि वह शाम को कलवाली हरी साडी बाँधकर तयार रहे। आज चला जायेगा इन्दिराजी की जीत की खुशी म सिविल लाइन खाना खाये अपनी कार म बैठकर। और इन्दिराजी के जीतने की खुशी म बिल्लो ने यह बात टल जाने दी कि देश ने फिर वही कलवाली बात निकाली।

कारवाली बात पर उसने देश को माफ नही किया था। गयी रात तक वह अकेली देश से लगडती भी रही थी क्योकि देश तो चुप साध के लेट गया था और उसकी डाँट सुनत सुनत सो गया था। पर वह बमकती रही थी। लेकिन चूकि देश बोल नही रहा था, इसलिए उसे लडने म कोई मजा भी नही आ रहा था। और जब बोल्ते-बोलते उसने एकदम से देश के खर्राटे की आवाज सुनी तो उस हँसी आ गयी। उसने वही खडे-खडे देश की लायी हुई हरी साडी बाधी और फिर अपना नकली चमडेवाला बैग लेकर वह महनाज की तरह बडी शान स आँगन म चली-फिरी।

महनाज सोशल वरकर हो गयी थी। दिन-रात 'यूथ काग्रेस' करती रहती थी। नसबन्दी के बारे मे उसने कई तकरीरें याद कर ली थी। जनान मकाना मे जाती और औरता को नसबन्दी के फायद बताती। 'निरोध' का डिब्बा बैग से निकालकर औरता को दिखलाती—हालत यह हो गयी थी कि औरतें उसकी सूरत स शर्मान लगी थी—बिल्लो को तो उसने पहचानना ही छोड दिया था। उसकी आखो पर मुसतकिल धूप का रगीन चश्मा चढा रहता। कटरा मीर बुलाकी म निकलती तो कटरवाला से सलाम की उम्मीद करती। महल्ले के बच्चे उसे देखत ही निरोध निरोध' चिल्लाने लगते। एक तरह से उसका नाम ही 'निरोध' पड गया था।

कटरा मीर बुलाकी के लिए वह दिन बडी हैरत का था जिस दिन महनाज ने पर्दा उठाया था और साडी पहने, बैग झुलाती एकदम सामने आ गयी थी—सबसे पहले तो खुद उसे शम्सू मिया ने नही पहचाना था—उन्होने सोचा था कि ए भाई ई एकदम्मे से महनाज जसी दूसरी लडकी कहाँ से आ गयी! यह बात वह सकीना का बता ही रहे थे कि महनाज आ गयी थी। वही साडी पहने, वही चश्मा लगाय और वही बैग झुलाती। सारा घर सन्नाटे मे आ गया था।

"ए बहिनी खुदा की मार हो तोरी सूरत पर।" सकीना ने कोसना शुरू कर दिया था।

पर जब यह पता चला कि वह डेढ सौ महीना तनख्वाह पायेगी तो सबकी जान म जान आ गयी थी और इस मौके का फायदा उठाते हुए उसने सबको समझा लिया था कि पदा कोई ऐसी जरूरी चीज नही है। अस्ल चीज तो आखो

का पदा है।

और उस दिन के बाद से वह बराबर खुली फिजा मे ऐंडने लगी थी।

और एक दिन तो उसने हद कर दी कि पहलवान की दुकान पर नसबन्दी का पोस्टर पहुचा गयी। अब वहा किसी की समझ मे नही आ रहा है कि किधर देखे। पर यह अपना बडे आराम से खडी हो गयी और नारायण को हुक्म देने लगी कि यह पोस्टर दुकान मे किस तरह और कहा लग जाना चाहिए।

बिल्लो उस रात को याद करके हँस पडी। बाप रे बाप, मामा कैसा बमके रहे ऊ दिन! दुकान बन्द करके सीधे पहुच गये रह शम्सू मामू के घर कि समझा दयो अपनी महनाज टहनाज को। सरम भी ना आती, ऊ लडकी को। अपन बाप के दोस्तन से नसबन्दी की बात करती है

देश नीद मे कुछ बोला। बिल्लो ने पलटकर उसकी तरफ देखा। पर वह करवट बदलकर फिर सो गया।—वास्तव म वह सोया ही नही था। झगडा खत्म करने के लिए सोता बन गया था। इसीलिए जब बिल्लो ने ठीक उसके सामने खडी होकर अपनी साडी खोली और बेखयाली मे उसके पायती डाल दी तो उस साडी की छुलन स उसके बदन मे गुदगुदी की एक अजीब सी लहर दौड गयी। उसका जी चाहा कि तकिये को भीच ले और खिलखिला के हँसने लग। पर वह अपना जी मार गया और चुपचाप बिल्ली को आँगन मे कूल्हे मटकात देखता रहा। फिर बिल्लो दरवाज़ा खोलकर बाहर जाने लगी तो वह चकराया। चुपके स वह भी उठा। पलग चर्राया तो वह वैसे-का वैसा रुक गया, फिर बहुत धीरे धीरे सास रोके हुए उठा और पजो के बल चलता हुआ वह भी बाहर चला गया।

बिल्लो बाहर कार के सामन खडी थी। देश दरवाज़े ही पर रुक गया। बिल्लो उसके आने से बेखबर कार की तरफ देखती रही। फिर उसे वह तस्वीर याद आयी जो एक दिन फुटपाथ पर खिचवायी गयी थी और अब भी कमरे म टँगी हुई थी। फिर उसने हाथ बढाकर कार को यू छुआ जैस वह पानी के बुल-बुले की बनी हुई है और साँस की ठेस से भी टूट सकती है—कार के चिकन हरे रग के बदन को छूते ही उसकी आँखो म आँसू आ गय और देश न पीछे स उस अपनी बाँहो मे जकड लिया और बिल्लो को लगा जैसे यह भी सुहागरात है और वह दुल्हन बनी बैठी है और देश उसके पास आया है—वह शर्मा गयी।

चल तनी घूम आयें।" देश ने कहा।

बिल्लो के जवाब का इन्तिज़ार किये बिना वह अन्दर भागा। उसने जाँघिय ही पर कमीज डाल ली और कार की चाबी लिये हुए बाहर आ गया। बिल्लो

उसका हुलिया देखकर हँस पड़ी।

"पतलून काहे ना पहिया ?"

"टैम ना है।" वह कार का दरवाजा खोलते हुये बोला। फिर, जैसा कि उसने फिल्मो मे देखा था, वह अदब से खुले दरवाजे के साथ खड़ा हो गया और बिल्लो, जैसा कि उसने फिल्मो मे देखा था, हँसती हुई बैठ गयी।

गयी रात के सन्नाटे मे देश की हरी फोड इलाहाबाद की सूनी सडको पर चक्कर काटती रही। चौक का घना बाजार सो रहा था। चौक का घण्टाघर जाग रहा था। चौक की कोतवाली ऊँघ रही थी। रानी मण्डी की गली रात के नशे मे लडखडा कर जसे गिर गयी थी और उसे अपने तन बदन का होश नही था। सर कही था पाँव कही था। नवहत पब्लिकेशज़ के बोड पर एक अकेला बल्ब किसी उल्लू की तरह बैठा हुआ, बिना आँख झपकाये उस गली की तरफ देख रहा था। पोस्ट आफिस मे सन्नाटा था। हजारो खत, हजारो लिफाफे, पास्टकाड, मनीआडर के फाम, तार के फाम मुहरें, रसीदें—सब सो रहे थे—समय जैसे रुका हुआ था। बस एक हरी फोड जाग रही थी और रास्तो की शबनम चाटती फिर रही थी

यकायक सामने मे एक बिल्डिग उभरी।

'ई का है ?" बिल्ला ने पूछा।

'हाई कोरट।" देश ने कहा, "एही तो कल राजनराएन वाले केस का फैसला होनेवाला है।"

फैसला।

क्या ताकत है इस शब्द मे ! क्या भरोसा है इसकी आवाज मे ! स्टेनलेस स्टील की तरह बेदाग और मजबूत। हिंदुस्तान की जुडिशरी की आजादी का प्रतीक। आम आदमी के जीने की अलामत। सपनो का खलिहान।—फैसला। यह एक शब्द न होता तो आदमी कब का मर चुका होता।

देश ने एजिन बन्द कर दिया वह दोनो अपनी हरी कार मे बठे-बैठे हाईकोट को देखते रहे। और यह यकीन उन दोना को था कि मिसेज़ गाधी के हारने का तो सवाल ही नही उठता।

यह यकीन उनकी तरह बहुत लोगो को था। कुछ को इस आधार पर यकीन था कि यही इन्साफ का तकाजा है या, कि नाइन्साफी यही करती आयी है। अदालतें हमेशा सरकार या ताकत का साथ देती हैं। क्या सुकरात को सजा नही दी गयी थी ? क्या मसीह को सलीब नही चढाया गया था ? क्या गैलीलियो के साथ इन्साफ हुआ था ? क्या ब्रूनो को न्याय मिला था ? क्या अमरीका और

अफ्रीका के कालो को वही इन्साफ मिल रहा है जो वहा के गोरा को मिलता है ? क्या जूलियस फ्युचिक, चार्ली चैपलिन, पॉल रॉब्सन—हजारो-लाखो नाम थे। हजारो-लाखो इन्साफ हुए थे। इन अनेका सवाला के सामने सवालिया निशान नही थे। क्योकि यह सवाल थे ही नही। यह तो इतिहास था। और इतिहास के सामने किसने सवालिया निशान लगाया है ?

हरी फोर्ड मुडी और वापस चली गयी। इलाहाबाद हाई कोर्ट की बिल्डिंग राह के अँधेरे मे अकेली रह गयी।

फैसला

जस्टिस सिंहा अपनी कार से उतरे।

हाई कोर्ट में बड़ी चहल पहल थी, पर एक अजीब-सा तनाव भी था। तनाव जस्टिस सिंहा की आत्मा में था। एक बेनाम डर। एक अजीब-सी बेचैनी। उन्होंने भीड़ की तरफ देखा। यह भीड़ रोजानावाली भीड़ से मुख्तलिफ थी।

जो फैसला दुनिया में किसी को मालूम नहीं था वह जस्टिस सिंहा को मालूम था और यह खयाल एक पहाड़ की तरह उनके कंधों पर उग आया था और उन्हें लग रहा था कि जैसे कंधे टूट जायेंगे। उन्होंने कार के अन्दर से फैसले की फाइल उठायी। यह फैसला उन्होंने अपने स्टेनो को डिक्टेट नहीं किया था। यह फैसला उन्होंने अपने टाइपिस्ट से टाइप नहीं कराया था। यह फैसला उन्होंने खुद लिखा था। रातों की नींद हराम करके।[1] और यह फैसला लिखते वक्त वह जानते थे कि वह किसी एलेक्शन पटिशन का फैसला नहीं बल्कि हिन्दुस्तान के इतिहास का एक चप्टर लिख रहे हैं

---

१ जस्टिस सिंहा ने अपना फैसला डिक्टेट भी किया था और टाइप भी करवाया था। पर मैं इतिहास नहीं उपन्यास लिख रहा हूँ और उपन्यासकार के नाते मुझे फैसले का टाइप होना अच्छा नहीं लग रहा है। हो सकता है वह टाइपिस्ट इतना ईमानदार न निकलता। जो ऐसा होता तो बाद के उन्नीस महीने न जाने कैसे निकलते। जस्टिस सिंहा ने वह फैसला टाइप करवा के गैरजिम्मेदारी का सुबूत दिया। वैसे मैं उनके फैसले के कई हिस्सों से भी सहमत नहीं हूँ और इमरजेंसी के लिए कुछ वह भी जिम्मेदार हैं।

मैं, राही मासूम रज़ा, यहाँ इस कहानी मे चन्द लमहा के लिए दाखिल होने की इजाजत चाहता हूँ। मुझे आपसे कुछ कहना है। जो बातें मैं कहना चाहता हूँ वह मैं इस उपन्यास के किसी पात्र से भी कहलवा सकता था पर उसमे कोई मजा नही। मैं नही चाहता कि मेरी बात किसी पात्र के सर की टोपी बनकर रह जाये।

मैं यह नही मानता कि अदालता म कानून चलता है और कानून के आधार पर फसले होते हैं। आई पी सी वाले मुकदमो मे चाहे कानून चल भी जाता हो कि वहाँ झूठ या सच साबित किया जा सकता है। पर जिन मुकदमो मे राज निति या विचारधारा या उसूलो की बात आन पडी हो उनमे कानून अन्धा-बहरा नही रह जाता। उसके चेहरे पर आँखें उग आती हैं। नाक बन जाती हैं। कान निकल आते हैं। दुनिया का कोई जज ऐस मुकदमो मे अपनी विचारधारा, अपने उसूल और अपनी राजनीति से दामन नही बचा सकता। जस्टिस सिहा ने जो फैसला किया वह कानूनी फैसला नहीं था, राजनीतिक फसला था। यह कहकर मैं अदालत की तौहीन नही कर रहा हूँ बल्कि उस फैसले को तसलीम करते हुए उस पर अपने विचार प्रकट कर रहा हूँ। मैंने इमरजेंसी के जमाने मे भी श्रीमती गाँधी का विरोध करने की हिम्मत की थी और मैं श्री जयप्रकाश नारायण के आन्दोलन से भी सहमत नही था। क्याकि श्री जयप्रकाश नारायण की राजनीति ने कभी मेरे दिल को नही छुआ। मैंने उन्ह हमेशा जनता की मुखालिफ सफ मे खडा पाया है। फिर जो लोग उनके साथ लग लिये थे वह भी कुछ भले लोग नही थे। बिहार के सारे बेईमान मिनिस्टर उनके साथ लगे हुए थे। बिहार मे उन्ह पहले कभी बेईमानी नही दिखायी दी और जब उस स्टेट को एक ईमानदार चीफ मिनिस्टर मिला तो बिहार के बेईमान लोगा को साथ लेकर जयप्रकाशजी ने धावा बोल दिया और जनसघ, आर एस एस, प्रेममार्गिया और जमाअते इसलामी जैसे घोर अवाम दुश्मनो से गठजाड करते हुए उन्हें जरा तकल्लुफ न हुआ। मार्क्सवादी कम्यु निस्टो ने भी इस मोर्चे का साथ दिया और यू जनसघ ने दिल्ली मे सरकार बना ली। श्रीमती गाँधी और उनकी काँग्रेसी सरकार की हार बडी खुशी की बात है। पर जो लोग जीते वह भी कुछ बहुत अच्छे लोग नही हैं। मुरारजी भाई आजादी के साथ मिनिस्टर बने थे। क्या उनके जमाने मे कोई बेईमान था ही नही? उन्होंने कब और कितनी बार उन बेईमानो के खिलाफ आवाज उठायी? पटेलजी के खिलाफ जस्टिस छागला का फसला मौजूद है। पटनायक साहब 'सिराजुद्दीन केस मे नामजद थे। स्वर्गीय डाक्टर तासीर का एक शेर याद

आ गया

दावरे-हश्र मेरा नामये-आमाल न देख,
इसमे कुछ पर्दानशीनो के भी नाम आते हैं।

जिन लोगो के नाम गाधीजी के कातिलो म लिये जाते हैं वह गाधीजी की समाधि पर इन्सानी दोस्ती की कसम खाते दिखायी देते है। इमरजेंसी एक भयानक काली रात थी। श्रीमती गाधी ग्रहण की तरह हमारे सविधान के चाद को लग गयी थी। पर उस रात के खत्म होने के बाद सवेरा नही हुआ। मुझे तो ऐसा लगता है कि एक रात खत्म हुई और दूसरी रात शुरू हुई।

इमरजेंसी लागू होने के कुछ ही दिना बाद मुझसे एक हिंदुस्तानी पत्रकार मिलने आये थे जो शायद बर्मा मे रहते हैं और वहाँ के पत्रो के लिए काम करते हैं। उनसे मैंने यही कहा था कि इमरजेंसी लगाना या न लगाना केवल कोई राजनीतिक सवाल नही है। मुझे शर्म यह सोचकर आती है कि हिन्दुस्तानी बुद्धिजीवियो ने इसके खिलाफ कोई आवाज नही उठायी। कम्युनिस्ट बुद्धिजीवी तो खुल्लमखुल्ला इमरजेंसी का साथ दे रहे थे और हिंदुस्तानी साहित्य का इतिहास उन्हे कभी क्षमा नही करेगा।

अण्डरग्राउण्ड आन्दोलनो से मेरा कोई सम्पर्क नही रहा। पर थोडी जान-पहचान जरूर रही जिससे थोडी बहुत बातें मालूम होती रहती थी। और मैं सोचा करता था कि कल जब मेरा देश मुझसे सवाल करेगा तो मैं क्या जवाब दूगा। उन दिनो मैं एक उपन्यास लिख रहा था। सौ पन्ने लिखे होगे कि जी उचाट हो गया और मैंने राजकमल की श्रीमती शीला सन्धू को लिखा कि मैं एक और उपन्यास 'कटरा बी आर्जू' लिख रहा हू। तब मुझे लग रहा था कि श्रीमती गाँधी चुनाव करवायेंगी और चुनाव से पहले इमरजेंसी जरूर उठेगी। उसी उम्मीद मे यह उपन्यास शुरू किया था कि दोबारा इमरजेंसी लगने मे पहले इसे प्रकाशित करवाया जा सकेगा। और फिर जो होगा देखा जायेगा। तब मुझे यकीन था कि चुनाव म काग्रेस ही जीतगी। चुनाव का नतीजा आने स पहले मैं यही सोचता रहा। और इसीलिए मैं वोट देने नही गया कि कोई मेरे वोट के लायक था ही नही। पर चुनाव का नतीजा जस्टिस सिंहा के फसले से ज्यादा चौंकानेवाला निकला। यह उपन्यास खत्म होने से पहले इमरजेंसी और उसके साथ काग्रेस सरकारें भी खत्म हो चुकी थी। परन्तु मेरे खयाल म इस उपन्यास की जरूरत खत्म नही हुई है क्योकि यह मेरे और इमरजेंसी के नाजायज तअल्लुकात की निशानी है। और इसका नाम फिर भी 'कटरा बी आर्जू' ही है क्योकि आर्जू का मौसम खत्म नही हुआ है और शायद कुछ दिनो

मैं, राही मासूम रज़ा, यहाँ इस कहानी में चंद लमहों के लिए दाखिल होने की इजाज़त चाहता हूँ। मुझे आपसे कुछ कहना है। जो बातें मैं कहना चाहता हूँ वह मैं इस उपन्यास के किसी पात्र से भी कहलवा सकता था पर उसमें कोई मज़ा नहीं। मैं नहीं चाहता कि मेरी बात किसी पात्र के सर की टोपी बनकर रह जाये।

मैं यह नहीं मानता कि अदालतों में कानून चलता है और कानून के आधार पर फ़ैसले होते हैं। आई पी सी वाले मुक़दमों में चाहे कानून चल भी जाता हो कि वहाँ झूठ या सच साबित किया जा सकता है। पर जिन मुक़दमों में राजनिति या विचारधारा या उसूलों की बात आन पड़ी हो उनमें कानून अंधा-बहरा नहीं रह जाता। उसके चेहरे पर आँखें उग आती हैं। नाक बन जाती हैं। कान निकल आते हैं। दुनिया का कोई जज ऐसे मुक़दमों में अपनी विचारधारा, अपने उसूल और अपनी राजनीति से दामन नहीं बचा सकता। जस्टिस सिंहा ने जो फ़ैसला किया वह कानूनी फ़ैसला नहीं था, राजनीतिक फ़ैसला था। यह कहकर मैं अदालत की तौहीन नहीं कर रहा हूँ बल्कि उस फ़ैसले को तसलीम करते हुए उस पर अपने विचार प्रकट कर रहा हूँ। मैंने इमरजेंसी के ज़माने में भी श्रीमती गांधी का विरोध करने की हिम्मत की थी और मैं श्री जयप्रकाश नारायण के आन्दोलन से भी सहमत नहीं था। क्योंकि श्री जयप्रकाश नारायण की राजनीति ने कभी मेरे दिल को नहीं छुआ। मैंने उन्हें हमेशा जनता की मुखालिफ़ सफ़ में खड़ा पाया है। फिर जो लोग उनके साथ लग लिये थे वह भी कुछ भले लोग नहीं थे। बिहार के सारे बेईमान मिनिस्टर उनके साथ लगे हुए थे। बिहार में उन्हें पहले कभी बईमानी नहीं दिखायी दी और जब उस स्टेट का एक ईमानदार चीफ़ मिनिस्टर मिला तो बिहार के बेईमान लोगों को साथ लेकर जयप्रकाशजी ने धावा बोल दिया और जनसंघ, आर एस एस, प्रेममार्गियों और जमाअते इसलामी जैसे घोर अवाम दुश्मनों से गठजोड़ करते हुए उन्हें ज़रा तक़ल्लुफ़ न हुआ। मार्क्सवादी कम्युनिस्टों ने भी इस मोर्चे का साथ दिया और यू जनसंघ ने दिल्ली में सरकार बना ली। श्रीमती गांधी और उनकी कांग्रेसी सरकार की हार बड़ी ख़ुशी की बात है। पर जो लोग जीते वह भी कुछ बहुत अच्छे लोग नहीं हैं। मुरारजी भाई आज़ादी के साथ मिनिस्टर बने थे। क्या उनके ज़माने में कोई बेईमान था ही नहीं? उन्होंने कब और कितनी बार उन बेईमानों के ख़िलाफ़ आवाज़ उठायी? पटेलजी के ख़िलाफ़ जस्टिस छागला का फ़ैसला मौजूद है। पटनायक साहब 'सिराजुद्दीन केस' में नामज़द थे। स्वर्गीय डाक्टर तासीर का एक शेर याद

आ गया

दावरे-हश्र मेरा नामये-आमाल न देख,
इसमे कुछ पर्दानशीनो के भी नाम आत हैं।

जिन लोगो के नाम गांधीजी के कातिलो मे लिये जाते हैं वह गांधीजी की समाधि पर इन्सानी दोस्ती की कसम खाते दिखायी देते हैं। इमरजेंसी एक भयानक काली रात थी। श्रीमती गांधी ग्रहण की तरह हमारे सविधान के चाद को लग गयी थी। पर उस रात के खत्म होने के बाद सवेरा नही हुआ। मुझे तो ऐसा लगता है कि एक रात खत्म हुई और दूसरी रात शुरू हुई।

इमरजेंसी लागू होने के कुछ ही दिनो बाद मुझसे एक हिंदुस्तानी पत्रकार मिलने आये थे जो शायद बर्मा मे रहते हैं और वहाँ के पत्रो के लिए काम करते हैं। उनसे मैंने यही कहा था कि इमरजेंसी लगाना या न लगाना केवल कोई राजनीतिक सवाल नही है। मुझे शर्म यह सोचकर आती है कि हिन्दुस्तानी बुद्धिजीवियो ने इसके खिलाफ कोई आवाज नही उठायी। कम्युनिस्ट बुद्धिजीवी तो खुल्लमखुल्ला इमरजेंसी का साथ दे रहे थे और हिंदुस्तानी साहित्य का इतिहास उन्हें कभी क्षमा नही करेगा।

अण्डरग्राउण्ड आन्दोलनो से मेरा कोई सम्पर्क नही रहा। पर थोडी जान-पहचान जरूर रही जिससे थाडी बहुत बातें मालूम होती रहती थी। और मैं सोचा करता था कि कल जब मेरा देश मुझसे सवाल करेगा तो मैं क्या जवाब दूगा। उन दिनो मैं एक उपन्यास लिख रहा था। सौ पन्ने लिखे होगे कि जी उचाट हो गया और मैंने राजकमल की श्रीमती शीला सधू को लिखा कि मैं एक और उपन्यास 'कटरा बी आर्जू' लिख रहा हूँ। तब मुझे लग रहा था कि श्रीमती गाधी चुनाव करवायेंगी और चुनाव से पहले इमरजेंसी जरूर उठेगी। उसी उम्मीद म यह उपन्यास शुरू किया था कि दोबारा इमरजेंसी लगने से पहले इसे प्रकाशित करवाया जा सकेगा। और फिर जो होगा देखा जायेगा। तब मुझे यकीन था कि चुनाव मे कांग्रेस ही जीतेगी। चुनाव का नतीजा आने से पहले मैं यही सोचता रहा। और इसीलिए मैं वोट देने नही गया कि कोई मेरे वोट के लायक था ही नही। पर चुनाव का नतीजा जस्टिस सिंहा के फसले से ज्यादा चौंकानेवाला निकला। यह उपन्यास खत्म होने से पहले इमरजेंसी और उसके साथ कांग्रेस सरकारें भी खत्म हो चुकी थी। परन्तु मेरे खयाल म इस उपन्यास की जरूरत खत्म नही हुई है क्योंकि यह मेरे और इमरजेंसी के नाजायज तअल्लुकात की निशानी है। और इसका नाम फिर भी 'कटरा बी आर्जू' ही है क्योंकि आर्जू का मौसम खत्म नही हुआ है और शायद कुछ दिनो

बाद फिर आजू करना हिम्मत का काम बन जायेग।

आइए अब १२ जून सन ७५ की तरफ लौट चलें।

एलाहाबाद हाई कोट का कमरा नम्बर २४ खचाखच भरा हुआ था। कही तिल रखने को जगह न थी। सासें सासो से उलझी पड रही थी। यह भीड राजनीतिक थी। आदशवाली राजनीति नही। पशेवाली राजनीति। राजनीति म इन लोगा के सपने नही, पसे लगे हुए थे। लाखा लाख रपये। हजारो लाइसेंस। लाखो ठेके सडक बनाने के ताकि बेरोज़गारी चल सके। गाव से शहर की तरफ। छोट शहरा से बडे शहरो की तरफ।

जस्टिस सिहा ने मजमे की तरफ देखा, फिर वह पिछले दरवाज़ से कमरा नम्बर २४ मे दाखिल हुए। तमाम लोग खडे हो गये। उनके साथ तमाम लाइसेंस, तमाम रिश्वतें तमाम साजिशें, बेईमानी की सारी दौलत—हर चीज उठ खडी हुई और किसी ने उस सपन की तरफ ध्यान नही दिया जो सबसे अलग-थलग कमरा नम्बर २५ मे एक तरफ खडा जस्टिस सिहा की तरफ देख रहा था।

जस्टिस सिहा के बैठते ही तमाम लोग, तमाम लाइसेंस, तमाम ठीके बैठ गय, बस वह सपना खडा रहा पर किसी ने उसकी तरफ ध्यान ही नही दिया।

कमरा नम्बर २४ मे शातिभूषण, राजनारायण के वकील, मौजूद नहा थे क्याकि शायद वह यह यकीन किये बैठे थे कि जिरह-बहस करके वह अपना फज़ अदा कर चुके हैं। फसला तो जाहिर है। परतु इन्द्रा गाधी के वकील सतीशचन्द्र खरे मौजूद थ क्याकि शायद वह भी यही सोच रह थे कि फसला तो जाहिर है। वह सपना भी सांस रोके चुप खडा था क्योकि वह भी यही सोच रहा था कि फसला तो जाहिर है—पर फैसला जाहिर ही ता नही था। तमाम लोग एक महत्त्वपूण बात भूल गय थे कि वह एलाहाबाद हाइकोट म हैं और एलाहाबाद हाई काट सरकार के खिलाफ फसला देने के लिए मशहूर है। वह सरकार चाह अग्रेज की हा या काग्रेस की।

'राजनारायण-बनाम इन्द्रा गांधी।' पुकार ने एलान किया और जस्टिस सिहा न फसले की फाइल खोली और सामन के मजमे की तरफ फिर देखा, गला साफ किया और कहा

'मैं सिफ फैसला सुनाऊंगा और फैसला यह है कि राजनारायण का पटिशन मान लिया गया—"

किसी को अपने कान पर यकीन न आया। सतीशचन्द्र खरे सन्नाटे म आ गय और फिर वह अकेला सपना तालियां बजाने लगा और उस अकेली ताली

की आवाज ऐसी लग रही थी जैसे साठ-पैंसठ करोड लोग तालिया बजा रहे हो—और फिर तमाम लोग एक साथ बोलने लगे और जस्टिस सिंहा पिछले दरवाजे स अपने रिटायरिंग रूम मे चले गये।

नम्बर एक सफदरगज मे यह खबर सुनकर सनाटा हो गया।

लोग आने लगे।

सुभद्रा जोशी ने कहा त्यागपत्र दे देना चाहिए।

जगजीवनराम ने कहा त्यागपत्र दे देना चाहिए।

स्वर्णसिंह ने कहा त्यागपत्र दे देना चाहिए।

यशवतराव चव्हाण न कहा त्यागपत्र दे देना चाहिए।

श्रीमती गाँधी ने सुना। और यह सुनकर वह मुस्कुराती रही।

फिर दूसरा रेला आया।

यशपाल कपूर ने कहा त्यागपत्र नही देना चाहिए।

सिद्धायशकर रे ने कहा त्यागपत्र नही देना चाहिए।

रजनी पटल ने कहा त्यागपत्र नही देना चाहिए।

ओम मेहता न कहा त्यागपत्र नही देना चाहिए।

पी एन हक्सर न कहा त्यागपत्र नही देना चाहिए।

श्रीमती गाँधी ने सुना। और यह सुनकर वह मुस्कुराती रही।

और तब सजय गाधी ने माँ की आँखो मे आखें डालकर कहा त्यागपत्र नही देना चाहिए।

श्रीमती गाँधी खुद भी यही सोच रही थी। उन्होंने फसला किया कि त्याग-पत्र नही देना चाहिए। और उनका फैसला सुनते ही अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी की समव मे यह बात आ गयी कि श्रीमती गाधी को त्यागपत्र नही देना चाहिए। जस्टिस सिंहा क्या बेचत हैं। वह होते कौन हैं प्रियदशनी को राजगद्दी से हटानेवाले और एक मोटे थलथले दमाग मे एक नारे का केचवा कुलबुलाने लगा कि इन्द्रा हिन्दुस्तान है और हिन्दुस्तान इन्द्रा है।

जयप्रकाश नारायण ने पटने मे बडी सख्त तकरीर की।

राजनारायण ने माग की कि इन्द्रा गाधी को चुल्लू भर पानी मे डूब मरना चाहिए।

आकाशवाणी की एक न्यूज रीडर प्रेमा नारायण को जब यह खबर सुनानी पडी कि श्रीमती गाधी एलेक्शन पेटीशन हार गयी और अब वह छ साल तक कोई चुनाव नही लड सकेंगी तो वह रो पडी और उसे कई बार "क्षमा कीजियेगा" कहना पडा। वह यह सोच भी नही सकती थी कि मिसेज गाँधी कोई लडाई

हार भी सकती हैं। जिसने मुरारजी भाई को दूध की मक्खी की तरह निकाल फेंका हो वह भला किसी जस्टिस जगमोहन सिंहा से क्स हार सकती हैं।

वह दिन बहुत बुरा गुज़रा। प्रेमा को हर चीज़ झूठी दिखायी दे रही थी। अर जब माउण्ट एवरिस्ट काडबोड का निकला तो फिर कोई किस चीज पर भरोसा करे। उसने दिल ही दिल मे जयप्रकाश नारायण को बहुत गालियाँ दी। फिर भी तस्कीन नही हुई।—जिस इन्द्रा गांधी के लिए उसने आशाराम को छोडा था वह साबुन के बुलबुले की तरह टूट गयी तो अब प्रेमा नारायण जिय कसे और जिये किस मुह से ?—और जीने का मतलब क्या है ?

आशाराम की याद आते ही वह उदास हो गयी। उसे जाडो की वह दोपहर याद आ गयी जिसने उसके दिल को प्लेटफाम बनाकर उसकी महब्बत के खिलाफ तकरीर की थी। सर्दी ऐसी थी कि मुह से निकलती हुई भाप मे दिल की बात खोयी जा रही थी। कई दिनो की लगातार बारिश के बाद धूप निकली थी। पर धूप कुछ सहमी-सहमी सी थी। जैसे मुड-मुडकर पीछे देख रही थी कि कही बादल तो नही आ रहे हैं—हवा जसे सर्दी से भागी भागी फिर रही थी। पेडा के दात बज रहे थे। यूनिवर्सिटी के खुले बागीचे मे लडके-लडकिया ओवर कोट पहने, मफलर लपेटे, भारी स्वेटर पहने, जुर्राबें चढाये धूप के पीछे पीछे चल रहे थे। हँस-बोल रह थे। शायरी कर रहे थे। चगेज़ी अपनी गालियो भरी नज़्म सुना रहा था और लडके लोट पोट हुए जा रहे थे। जेबा मे भुनी मूगफलियाँ, हाथो मे नमक मसाले की पुडिया, क्रिकेट के मैदान म इण्टर-बसटी का कोई मच हो रहा था। वहाँ खेल कम हो रहा था और शोर ज्यादा हो रहा था—प्रेमा सोच भी नही सकती थी कि इस हसीन लिपटनेवाली दोपहर म वह आशाराम से जुदा भी हो सकती है। पर हुआ यही।

आशाराम और प्रेमा नारायण की राजनीतिक ऐनको के नम्बर अलग-अलग थे। प्रेमा नारायण की ऐनक के शीशो पर श्रीमती गांधी की तस्वीरें चिपकी हुई थी इसलिए उसे श्रीमती गांधी के सिवा कुछ दिखायी ही नही देता था। मार्क्सवाद या मार्क्सवाद लेनिनवाद मे क्या रक्खा है। असल चीज़ तो इन्द्रावाद है और वही हिन्दुस्तान की आर्थिक समस्याएँ दूर कर सकता है। आशाराम प्रेमा से सहमत नहीं था। पर उन दोनों म फक यह था कि आशाराम राजनीति और प्रेमा को गिड मिड करने पर तयार नही था और प्रेमा के प्रेम का जस कोई स्वतन्त्र वुजूद ही नही था। आशाराम कभी मजाक म भी श्रीमती गांधी के खिलाफ कुछ कह देता तो प्रेमा हत्थे स उखड जाती।

यही दिसम्बर की उस खूबसूरत दोपहर मे भी हुआ।

आशाराम भुनी मूंगफलियां लेकर लौटा और प्रेमा के पास घास पर बैठ गया। कागज का एक चोगा उसने प्रेमा की तरफ बढा दिया। दोनो मूगफली खाने लगे और दोनो के मुह भाड मे भुनी हुई मूगफली की सोधाहट से भर गये और दुनिया कुछ और हसीन हो गयी। किसी और गोल की तरफ से मूगफली के चोगे का फटा हुआ कागज उडता हुआ उनकी तरफ आ गया। वह किसी दनिक पत्र का एक टुकडा था। सामने ही मिसेज गाँधी की तस्वीर थी। वह मुस्कुरा रही थी। वही 'मकलीन मुसकुराहट'। आशाराम ने वह कागज उठा लिया और तस्वीर की तरफ देखता हुआ बोला, "यह राजनीति का धधा छोड भी दें तो मॉडलिंग करके खा कमा लेंगी।'

"देखो राम—"

"दख रहा हू।" आशाराम ने उसकी झल्लाहट बीच से काट दी। "स्वेटर नया है और तन पर सज रहा है। साडी भी बहुत खूबसूरत है और तुम तो खर हमेशा ही नयी और खूबसूरत दिखायी देती हो। अपनी मिसेज गाधी की तरह मुस्कुराना सीख लो तो तुम्हें प्रधानमन्त्री बनवा दूं।"

"तुम जलत हो कि वह तुम्हारी तरह रूस-चीन की दल्लाल क्या नही हैं।"

"यह दल्लाल अच्छा शब्द नही है। सुनने ही मे घटिया लगता है।" आशाराम ने कहा, "ओकर कहो। यह रिसपेक्टेबिल लगता है। वैसे इन बातो से कम्यूनिस्ट आदालन नही रुकनेवाला है।'

'क्या, क्या सन बयालीस मे तुम्हारी पार्टी ने गद्दारी नही की थी ?"

'यार प्रेमा। तुम छोडो न पालिटिक्स।"

'छोडू क्या ?"

"क्योकि तुम पोलिटिकल मिसटेक और गद्दारी मे फक नही कर सकती।"

"जब सारा देश स्वतन्त्रता सघष की तैयारी कर रहा हो, ऐसे मे यदि कोई किसी लडाई को केवल इसलिए कौमी जग कहके अग्रेजी सामराज का पिटठू बन जाये कि रूस भी लडाई मे शामिल हो गया है तो क्या यह कवल पोलिटिकल मिसटेक है ? यह गद्दारी है।'

'सन् चौदहवाली लडाई मे तुम्हारे बापू श्री मोहनदास करमचन्द गाधी ने लडाई को कौमी जग कहे बिना यही किया था। वह हिंदुस्तानियो को अग्रेजी फौजा म भरती करवा रहे थे ताकि व अग्रेजी सामराज का बचान के लिए अपनी जान द सकें। यह क्या था ?"

प्रेमा उसे घूरने लगी। वह बैठा मुस्कुराता रहा और मूगफली खाता रहा। प्रेमा ने मूगफली का चोगा उसके मुह पर खीच मारा और उठकर वहा से चली

गयी। आशाराम हँसकर रह गया। यह तमाशा कोई पहली बार नहीं हुआ था। उस प्रेमा को यू छेड़ने मे बड़ा मजा आता था। वह वहीं बठा धूप म बोर-बोर कर मूगफली खाता रहा। वह जानता था कि प्रेमा दस-बीस मिनट म वापस आ जायगी। पर उस बार ऐसा नहीं हुआ। प्रेमा नहीं आयी। उसने शत रख दी कि वह पहले गाँधीजी और मिसेज गाधी (कस्तूरबा नहीं इन्द्रा) के बारे मे बदत मीजी करने की म्राफी मागे। आशाराम को यह बात बुरी लगी। गाधीजी या इन्द्रा गाधी का उसकी मुहब्बत के बीच म आने का क्या हक है? उसने भी शत रख दी कि पहले प्रेमा कम्युनिस्टो को रूस चीन का दल्लाल और गददार कहने पर म्राफी माँगे। इस पर प्रेमा तयार नहीं हुई। तो उस पर आशाराम तयार नहीं हुआ—दूरिया बढने लगी। यूनिवर्सिटी म दिलो के टूटने और जिन्दा के टकराव की आवाज सुनी और सब हैरान रह गये क्योकि यह तो किसी न सोचा भी नहीं था। प्रेमा ने तो देश के लिए कई पैसेवाले लडको को ठुकरा दिया था और आशाराम तो किसी लडकी की तरफ देखता भी नहीं था। और यह बात सब ही जानते थे कि आशाराम की शिक्षा समाप्त होते ही दोनो की शादी हो जायगी।

रामदयी न अपने सीधेसाद गँवारू स्टाइल म बीचबचाव करवाने की कोशिश की पर दोनो अपनी जगह टिक गय थे और कोई पहल करने पर तयार नहीं था—चुनावे प्रेम पर दूरिया की धूल पडने लगी। कोई दिल की झाड पोछ रोज थोडी करता है और दिल वह चीज नहीं जिसकी झाड-पोछ का काम किसी नौकरानी या माँ के सुपुद कर दिया जाय।

प्रेमा जिद मे और कांग्रेसी हो गयी। आशाराम जिद म और बायी तरफ सरक गया और सी पी एम स भी उसके तअल्लुकात बिगडने लगे। चुनाव पर से उसका भरोसा अपने दादा की हार के बाद ही उठ गया था। वह जानता था कि वह जिस कण्डिडेट का साथ द रहा है वह उसके दादा के मुकाबले म कुछ नहीं। पर वह जीत गया। और वह इसलिए नहीं जीता कि उस कास्टिचुएन्सी म वामपथियो की ताकत ज्यादा थी। वह इसलिए जीता कि खुद कांग्रेसियो ने बाबूराम आजाद का साथ नहीं दिया था।—वह क्रान्ति की तरफ बढ गया और यू लगभग बिल्कुल अकेला हो गया क्योकि इलाहाबाद जैसे नौकरीपेशा शहर म क्रान्तिकारियो का क्या काम!

फिर प्रेमा दिल्ली चली गयी और आकाशवाणी पर यूज रीडर हो गयी और उसी दिन से आशाराम ने रेडियो पर हिन्दी समाचार सुनना बन्द कर दिया क्योकि प्रेमा की आवाज उसके दिल के जख्म और उसके प्रेम के अपमान के

घाव का हरा कर देती थी। वह अंग्रेजी मे समाचार सुनता था और उस पर बाबूराम से बहस हो जाती। बाबूराम अंग्रेजी नही जानते थे और हिंदी मे समाचार सुनना चाहत थे।

यह दोना यू लडते थे जैसे तल-उपरिया भाई हा। जस उन दोनो के बीच से एक और पीढी गुजर ही न चुकी हो। आशा के पिता।

राजाराम 'बेकल बाबूराम आजाद' के बेटे और आशाराम के बाप थ। आशाराम अपने बाप की परछाई बना रहता था। जाहिर है कि राजाराम 'बकल' बाबूराम को 'पिताजी' कहते थे इसलिए आशाराम भी अपने दादा का पिताजी ही कहने लगा क्याकि उस यकीन था कि उसके पिता जो करते हैं ठीक ही करते हैं। रामदयी और राजाराम की हजार कोशिशा के बाद भी उसने बाबूराम को दादा कहके नही दिया और घरवालो ने हार मान ली।

परन्तु बाद म उसका दादा को पिता कहना बाबूराम के बहुत काम आया। यह ठीक है कि बाबूराम और राजाराम मे हिंदी-उदू सवाल पर बडी भडपें हुआ करती थी। बाबूराम हिन्दी को भाषा ही नही मानते थे। उनका कहना था कि खडी बोली उदू बनकर जवान हुई। इस म्आमल म वह गाँधीजी की बात मानने पर भी तैयार नही थे। और राजाराम का कहना था कि भाषा ता हिंदी ही है जो फारसी लिपि म भी लिखी जाती है।—इस सवाल को लेकर घर म वह चीख पुकार मचती कि रामदयी घबरा जाती और पति से कहती कि वही क्यो नही चुप हो जाता। और यह सुनते ही बाबूराम हँस पडत और बहू स कहत कि जोर जोर स वह नही उनका प्यार बोल रहा है। उन बाप बेटा म दोस्ती थी। पर राजाराम म एक ही खराबी थी कि उसे राजनीति म कोई दिलचस्पी ही नही थी। वह कहता था कि वह तो कवि है और प्रेम करना उसका धम है। तो वह एक हिंदी पत्रिका निकालने लगा और बाकी वक्त कवि सम्मलनो मे गुजर जाता।

कलकत्ते मे एक अखिल भारतीय कवि सम्भलन का आयोजन हुआ। राजाराम गया। वहा नक्सलिया और पुलिस के टकराव के बीच मे फँस गया। जान बचाकर भागा—पुलिस न सोचा कि वह नक्सलिया है। दौडा लिया। वह पकडा गया। पुलिस कह रही थी कि नकसलिया है। वह कह रहा था कि वह 'बेकल' है।—पुलिस ने सोचा कि बेकल तो नकसलिये भी हैं इसलिए एक दीवार के सामने खडा करके पुलिस न उसे गोली मार दी। दूसरे दिन के अखबारा मे खबर आयी कि हिंदी का प्रसिद्ध कवि राजाराम बेकल' नकसलिया और पुलिस की एक भडप मे पुलिस की गोली स मारा गया। उमकी लाश से

कुछ ऐसे कागजात बर-आमद हुए जिनसे पता चलता है कि वह इस आंदोलन मे गले गले डूबा हुआ था और एक टोली का सरगना था और कवि सम्मलन का तो बस बहाना था। वह वास्तव म कलकत्ते म नक्सलियो की एक अखिल भारतीय बठक मे शिरकत करन आया था।

पुलिस का यह बयान नक्सलियो ने नही माना क्योकि वह जानत थे कि 'वकल' का उनसे कोई तअल्लुक नही था। पुलिस का यह बयान बाबूराम 'आजाद ने नही मान। क्योकि वह यह जानते थे कि यह बात गलत है।

तो अब उनके पास एक आशाराम रह गया और एक वह पत्र रह गया—हिंदी का वह पत्र जो राजाराम वेकल, उनका बेटा, उनका दोस्त निकाला करता था।

तो वह पत्र उन्होने बद नही किया। उन्होने हिन्दी सीखना शुरू किया और और वह पत्र निकालत रहे। सम्पादक का नाम बदल गया। अब उस पत्र के सम्पादक बाबूराम आजाद' थे।

इसलिए आशाराम अब उन्हें पिताजी कहता तो उन्हे लगता कि उनके पोते मे उनका बेटा भी जी रहा है। पर अब वह बूढे हो गय थे। नही, बूढे तो वह बहुत दिनो से थे। अब वह बहुत बूढे हो गये थे। पर खादी और काग्रेस पर उनका विश्वास अब भी उतना ही अटल, उतना ही अटूट था।

इसीलिए जब जस्टिस सिंहा के फसले की खबर आयी और आशाराम ने उनकी तरफ शरारत से देखा तो वह बडे यकीन से बोले, 'देख क्या रहे हो। नेहरू की बेटी को कुरसी का लालच नही हो सकता। शाम तक वह इसतेफा दे देगी।

आशाराम मुस्कुरा दिया।

रामदयी ने खुशामद भरी नजरो से बेटे की तरफ देखा। उसकी आँखें आशाराम से बोली, तुम्ही चुप हो जाव। बहस करे से का फायदा ? ई कभईं तोरे पिताजी की ना सुनिन तो तोरी का सुनिह ?—अपनी मा की आखो की बातें सुनकर भी वह मुस्कुराता रहा तो बाबूराम ने कहा, "इसमे मुस्कुराने की कोई बात नही। तुम देख लेना।"

जो उन्होन त्यागपत्र नही दिया तो आप काँग्रस छोड देंगे ?'

'यह जो तुम्हारी माँ है, रामदयी, यह अगर तुम्हारे साथ कोइ ज्यादती कर बैठे तो क्या तुम इसे माँ मानना छोड दोगे ? काँग्रेस मेरी माँ है। और प्रिय दशनी के इसतेफे से उसका कोई तअल्लुक नही है।"

इसतेफा देने पर तो बाबूराम 'आजाद नही तयार हुए पर उन्ह यकीन था कि उनकी प्रियदशनी भला ऐसा कसे कर सकती है कि जस्टिस सिंहा के फसले

के बाद भी कुरसी पर डटी रह ? यह तो नामुमकिन है। फिर भी आशाराम की मुस्कुराहट ने उन्हें परीशान जरूर किया। उन्ह लगा, जैसे आशाराम कोई ऐसी बात जानता है जो उन्हे नही मालूम। कही वाकई यही तो नही होन वाला है कि प्रियदशनी कुरसी पर बैठी रह जायेगी ?—तो उन्होने उसी वक्त एक तार लिखा अपनी प्रियदशनी के नाम कि उसे फौरन इसतेफा दे देना चाहिए और थोडे दिनो के लिए अपनी जगह पर बाबू जगजीवनराम को प्रधानमन्त्री बना देना चाहिए।

आशाराम यह तार देखकर भी मुस्कुरा दिया और बोला, "पिताजी, आप किस दुनिया मे रहत हैं ? भूल जाइए उस प्रियदशनी को जिस आपन गोद मे खिलाया है और जो अपने बाप जवाहरलाल नेहरू के साथ कई बार आपके टूटे हुए घर मे आ चुकी है। और जो आपको 'आज़ाद चचा' पुकारती है और जिसने छुटपन म एक दिन आपके सामने आपके दोस्त जवाहरलाल से पूछा था कि क्या आज़ादी आज़ाद चचा की वाइफ का नाम है—हमारे देश की प्रधानमन्त्री वह प्रियदशनी नही, वह इन्द्रा गाँधी है जो अपने सिवा किसी को पहचानती ही नही—।"

"तुम तार दे आव।" बाबूराम ने कहा।

आशाराम कन्धे सिकोडकर तार देन चला गया।

पहलवान के चायखाने मे सन्नाटा था। लोग थे, पर चुप थे। किसी को यकीन नही आ रहा था कि उन्होने जो सुना है वह ठीक सुना है।

"ए आशा बाबू," पहलवान ने आवाज़ दी, "किधर जा रह ?"

आशाराम रुक गया। पहलवान उसके लिए चाय बनाने लगे। चाय बनाते बनाते और आशाराम की तरफ देखे बिना पहलवान ने कहा, "हम लोग ई त किया है कि कटरा मीर बुनाकी का नाम कटरा इन्द्रा गाँधी कर दिया जाये।"

आशाराम ने पहलवान के हाथ से चाय की प्याली ले ली पर उसने उसकी बात के जवाब मे कुछ नही कहा। श्रीमती गाधी के हार जाने के बाद भी पहलवान की चाय का मजा वही था। आशाराम का मुह गम चाय मे घुली हुई बालाई की नर्मी से भर गया और वह यह सोचकर मुस्कुरा दिया कि किसी के हारने या जीतने से जिन्दगी का मजा नही बदलता।

कटरा श्रीमती गाँधी

बिल्ला इन्द्रा गांधी के मुक़द्दमा हारने के ग़म में इतना रोई कि उस दिन 'जनता लाण्डरी' को खोलना भूल गयी। अपने छोटे से इतिहास में 'जनता लाण्डरी' पहले दिन बन्द हुई थी। इतवारी बाबा को दूसरे दिन भी सुबह की चाय पीने के लिए पहलवान टी स्टाल के खुलने का इन्तज़ार करना पड़ा। किसी काम में बिल्लो का जी ही नहीं लग रहा था। फैसले के दिनवाली रात को तो उसके घर चूल्हा ही नहीं जला। दिल दर्द का भी दुखा। दिन का खाना तो वह ख़ुद भी टाल गया। पर रात को उसके पेट में चूहे कूदने लगे क्योंकि पेट के चूहे तो न राजनारायण को जानें न इन्द्रा गांधी को। पर बिल्लो मुंह लपेटे रो रही थी। देश उसके पास गया। उसके पास बैठ गया। उसके बालों से खेलने लगा। उसके बालों से खेलते खेलते वह पलभर को अपने पेट की भूख भूल गया और उसे यह भी याद न रहा कि आज ही दस बजे तो श्रीमती इन्द्रा गांधी, बबो को कौमियानेवाली इन्द्रा गांधी बक्का से कर्ज़ दिलवानेवाली इन्द्रा गांधी मुक़द्दमा हारी थी। बदन बदन को पुकारने लगा पर बिल्लो ने अनसुनी कर दी। वह रोती रही और देश उसके बालों से खेलता रहा और उसका सांस तेज़ होता रहा।—फिर एकदम से बिल्लो का एक ख़याल के सांप ने ऐसा डसा कि बिलबिलाकर उठ बैठी और आंसू पोंछते हुए बोली, "अब बकवा ई तो ना न कहिए कि तुरते करजवा वापिस करो ?"

देश हँस पड़ा। दुनिया भले बदल जाय पर बिल्लो नहीं बदलेगी।

"ई हँस्सी की बात ना है।" बिल्लो ने कहा, "मोटर में पैंयसा ना फँसाय

होते तो बक्वाले को देके खुसामद-दरामद करत कि थोडी-सी मुलहत दे दा। का पता मानी जाता। पर तूह तो मोटर का सौक चर्राया रहा। अब ओही से बोर-बोर के रोटी खाव।"

बडे ज़ोर की भूक लगी है।" दश को पट की भूख याद आ गयी।

"आग लगे तोरी भूक मे।" बिल्लो ने कहा।

'काहे को आग लगा रही हो हमर भया की भूख मे ?' आँगन मे पाव धरने के बाद बुरका हटाती हुई शहनाज़ ने पूछा।

देश और बिल्लो, दोनो ही ने शहनाज़ की तरफ देखा।

'हम पूछित है," बिल्लो ने दश से पूछा, "कि मास्टर बदर के आये का बखत हो गया का ?"

शहनाज़ शर्मा गयी। और आगन म फश की तरह बिछी हुई उदासी जैसे एकदम से खत्म हो गयी। बिल्लो खिलखिला क हस पडी और शहनाज़ बुरके को अलगनी पर फेंकती सामनेवाले पलग पर बैठ गयी। फिर उसने देश की तरफ देखा जिसने बिल्लो की आख बचाकर इशारा किया कि उसे बहुत भूख लगी है। शहनाज़ ने इशारा किया कि धीरज रक्खो। बिल्लो यह इशारेबाज़ी देखती रही पर अनजान बनी बठी रही जैसे कुछ देख ही न रही हो।

'तनी हमरे सिर म कँघइ कर दयो।" बिल्लो ने सर खुजलाते हुए कहा, 'लग रहा है कि जूयी पड गयी है।'

'कँघई-ओघई बाद म करेंगे।' शहनाज़ ने कहा, 'तुम पहिले मोको कुछ खिला दयो भाउज। पेट मे चूहा कूद रहा।"

'इ चूहा केका पहुच गया पेट मे ?" बिल्लो न पूछा।

दश घबराकर दूसरी तरफ देखने लगा। शहनाज़ ने बिल्लो को घूरा। बिल्लो बडी सादगी स शहनाज़ की तरफ देखती रही जसे उसे पता ही न हो कि अभी-अभी उसन जो बात पूछी थी उसका मतलब क्या निकलता है। और शहनाज़ के सारे बदन का खून उसके चेहरे म खिच आया और उसकी सांवली रगत के नीच गुलाबी रग छलकने लगा। इसी गुलाबी छलकन के लिए तो बिल्लो ने वह बात कही थी। वह मुस्कुरा दी।

'जाव हम तुमसे ना बोलत।" शहनाज़ न झल्लाये हुए शर्मीले लहजे म कहा। वह इस बात पर खफा नही थी। पर भया के सामने तो ऐयसी बात नही करनी चाहिए। वह क्या सोचते होगे—और वह जसे जाने के लिए उठ गयी।

"उठे गयी हो तो तनी चूल्ह मे आग बना दयो।" बिल्लो ने कहा।

शहनाज बावरचीखाने की तरफ़ चली गयी।

"तु हौ बडी बदमास।" देश ने कहा।

"ए मे बदमासी की का बात है ? आज नही तो कल चूहा दौडव ब ओके पेट मे।"

"अम्मा ना हाती ए वखत घर मे तो हम चूहा दौडा देत तारे पट म

बिल्लो ने उसे घूरा और उसके घूरने पर वह जोर जोर से हँसने लगा चूल्हा जलाती हुई शहनाज ने पलटकर उनकी तरफ देखा और वह बहुत हुई जैसे—अस क्या ? खुश हुई और ऐसी खुशिया के आगे पीछे कोई जैस होता।

"अब्बा कहते रहे कि भोलू-चा मिटिंग बुलाइन है आज रात को म भर की।" शहनाज ने बावरचीखाने से कहा।

"काहे की मीटिंग ?" देश ने पूछा।

"शाइद महल्ले का नाम बदले के वास्ते।"

"महल्ले के नाम मे कौन खराबी आ गयी ?" बिल्ला ने पूछा।

"सुन रह कि ऊ कटरा मीर बुलाकी को कटरा श्रीमती गाधी किया रह।" शहनाज ने चूल्हे पर अलमूनियम की केतली चढा दी। किसी ने दा से कुछ नही कहा। शहनाज बेसन गूधने बैठ गयी। पर वह कनखिया से और बिल्लो की तरफ देखती भी जा रही थी। उन दोनो मे कोई काना फूसी रही थी। फिर उसने देखा कि बिल्लो ने टेंट से दो रुपये का एक नोट निक कर देश को दिया और देश नोट को जेब म रखता बाहर चला गया।

'कहाँ भेज दिया भैया को ?"

"भेजा है कि एक ठो मास्टर बदर खरीद लिआयें। केह मारे कि तोरे म साब तो बलीमे के चक्कर म निकलेवाले ना हैं। और कोई दिन मामू का चल गया कि तू लोग इहा मिले आते हो तो खून पिये को दौड पडिह देस का-

मुस्कुराती हुई शहनाज एकदम से उदास हो गयी।

बिल्लो भी बावरचीखाने मे आ गयी और उसी के पास एक पटरे पर के प्याज काटने लगी और छोटा सा बावरचीखाना प्याज की तेज महक स गया और उन दोनो की आँखो से पानी बहने लगा। फिर उसने कुछ हरी मि बाटी और हरे धनिये की पत्तियाँ रगी और यह सब बेसन के उस आटे म मि दी जिसे शहनाज गूध रही थी। बोली, "जल्दी-जल्दी फुलौडी तल ल्यो। म साब आते ही होइह। उनह गरम-गरम फुलौडी खाये का बडा सौक है बात खत्म करके उसने दूसरे ऐले पर कढाई चढाकर उसमे सरसो का

डाला और शहनाज जल्दी-जल्दी बेसन फेंटने लगी और उसकी कलाइयो मे पडी हुई काच की चूडिया बजने लगी।

"मामा का नाम रख रहे अपने कटरे का ?" बिल्लो ने पूछा कि शहनाज की बेंप कुछ कम हो।

"कटरा श्रीमती गाधी।" शहनाज ने कहा, "यह तो बहुत बुरा हुआ न भाउज ?"

"बुरा ? खाली बुरा ? हमरा तो रोते रोते बुरा हाल हो गया। सात सनिच्चर की झाड़ू फिरे ई माटी मिले जगमोहन सिंहा पर। जगमोहन। तनी नाम देखो हरामी का—" दरवाजे की कुण्डी बजी। बिल्लो ने शहनाज की तरफ शरारत से देखा। शहनाज नीचे देखने लगी और उसका हाथ बेसन फेंटने मे और तेजी से चलने लगा।

'देश साहब हैं ?" मास्टर बद्रुलहसन नायाब मछलीशहरी की आवाज आयी।

'ढेर इतराव मत।" बिल्लो ने हाक लगायी, "हम्मे पता है कि तू कौन देस साहेब से मिले आये हो।'

"हुह् भाउज।' शहनाज ठनकी, "हम तो आके गुनहगार बन गय।"

बिल्लो हँसती हुई दरवाजे की तरफ बढ गयी। उसने दरवाजा खोला। सामने मास्टर बद्रुलहसन खडे थे।

'आदाब भाबी।"

"भीतर चल्के बयठो," बिल्लो ने कहा, "तारे भैया आते ही होइह। हम तनी मामा से एक ठो बात कहके आ रहें।"

मास्टर के जवाब का इन्तिजार किये बिना वह हवा हो गयी।

मास्टर बदर को मालूम था कि शहनाज वहा आयी हुई है इसीलिए बिल्लो के यू चले जाने पर वह बेंप से गये क्योंकि इसका मतलब यह था कि बिल्लो को यह मालूम था कि इस वक्त वह देश से मिलने नही आये हैं।—वह अन्दर चले गये।

शहनाज का हलक सूख रहा था। बिल्कुल तनहाई मे बदर मे यह उसकी पहली मुलाकात हो रही थी। और यह सोचकर न वह आयी थी न बदर। उन दोना ने तो बस यह साचा था कि दानो एक जगह होगे। चाह एक-दूसरे से बात भी न करें। पर एक दूसरे की तरफ देख तो लेंगे।

मास्टर बदर ने शहनाज को देख तो लिया। पर बावरचीखाने मे जाने की हिम्मत न हुई, हालाँकि उन्हे मालूम था कि उन दोनो को तनहाई का मौका

देनवाले देश और बिल्लो आवाज किये बिना अन्दर नही चले आयेंगे—फिर
मतलब यह कि कोई और भी आ सकता है। कोई कुजडन आ सकती है। क
नायन आ सकती है।

तो वह दालान म जा बठा और बास का चर्खीदार पखा झलने लगा।

घर मे सन्नाटा रहा।

मास्टर ने गला साफ किया "भाउज नही है क्या ?"

'जी नही," शहनाज ने कहा, "भया भी नही ह—"

कढाई म तेल कडकडा चला था। आवाज पर शहनाज कडाही की त
मुडी। कडाही मे तेल के छोटे-छोटे बुलबुले तर रहे थे। उसन फेंटे हुए बसन
एक बूद कडाही मे टपका दी और गम तेल म गिरते ही वह बूद तडपन लगी
नाचन लगी। पासवाले ऐले से केतली का पानी भी सनसनाने लगा था। तो श
नाज ने चाय का डिब्बा उठाया और साफी से केतली का ढक्कन उठाया। भ
उसकी सासा मे घुस गयी और उसने खौलते हुए पानी म चाय की पत्ती डाल
फिर दूध डाला। फिर चीनी डाली। फिर दो-चार छोटी एलाइचिया अ
लौंगें डाली और फिर चुटकी भर नमक टालकर उसन केतली का मुह ब
कर दिया और कढाही म फुलकियें डालन लगी।

मास्टर बदर दालान म बैठे पखा झलत रहे और दानो ही एक दूसरे
बार मे सोचत रहे और—साचते रहे कि वह दोना इस वक्त अकेले ह अ
थाडी देर बाद अकेले नही रह जायेंगे। दोना ने कई बार गला भी साफ किय
बदर ने उठकर बलुही सुराही से पानी पिया। शहनाज ने फुलकियो की ए
खेप उतारकर कडाही मे दूसरी खेप डाली—पर घर का सन्नाटा नही टूटा।

यह दोना कई बार सिनेमा हाल मे अकेले हो चुके थे। पर वहाँ भीड हो
थी। और उस भीड के शोर मे वह दोनो सरगोशी कर लिया करते थे। ए
यह मुकम्मल तनहाई—वह दोना ही इस तनहाई म डर हुए थे।

और चूल्हे पर चाय खौलती रही। और कडाडात तेल म फुलकिया नाच
रही और शहनाज सर नेहुडाये बैठी रही और मास्टर बदर पखा झलते र
और उन दोना के बीच मे २ जून की रात खडी रही।

एक प्याली चाय मिल जाती तो—" आखिर मास्टर न हिम्मत की।

शहनाज न कोई जवाब नही दिया। वह प्याली म चाय उँडलन लगी
और बदर चाय लेने के बहाने बावरचीखान म आ गया। शहनाज न चाय व
प्याली उसकी तरफ बढायी। प्याली लेत हुए मास्टर न, जान पर खेलकर उसव
हाथ छू दिया और शहनाज का बदन भन् से हो गया। सिनमा की भीड मे हा

का हाथ मे होना और मतलब रखता है। पर किसी घर के सन्नाटे मे तो बात ही और हो जाती है। शहनाज डर गयी। पर उसका जी यह भी चाहा कि उसके डर को एक तरफ ढकेलकर बदर उस अपनी बाहो मे ले ले। जसा हर फिल्म मे होता है—कि बाहर से बिल्लो की आवाज आयी, "हा-हा, ठीक है। भेज देंगे मीटिंग म।"

बाहर दरअस्ल कोई नही था। वह तो अन्दरवालो को यह बताना चाहती थी कि वह अलग हो जायें। बदर प्याली लेकर दालान मे भागा। शहनाज झपाक झपाक कडाही मे फुलकियें डालने लगी पर उसका दिल जोर जोर स धडक रहा था। और वह यह सोच रही थी कि अब वह बिल्लो की तरफ देखेगी कसे।

बिल्लो आ गयी। उसने यह जाहिर नही किया कि वह सबकुछ जानती है। मास्टर के हाथ मे पखा छीनकर वह अपने-आपको झलन लगी। बोली, "इ गर्मी मे तू लोग चाय कैयसे पीते हो मास्टर!

"हिन्दुस्तानी चाय गर्मी मे ठण्डक पहुचाती है।' मास्टर ने कहा।

फिर देश भी आ गया।

फिर शहनाज भी बावरचीखान से दालान म आ गयी।

गम-गम फुलकिया की प्लेट चारपाई पर रख दी गयी। देश टूट पडा। पहली ही फुलकी इतनी गम थी कि दात मारत ही उसका मुह गम भाप से जलने लगा और वह घबराकर मुह चलाता हुआ खडा हो गया। और तरह-तरह से मुह चलान लगा और मुह से तरह-तरह की आवाजें निकालने लगा।

शहनाज खिलखिलाकर हँस पडी। बोली, 'ऐयसी जलदी का रही?"

पर देश अभी बतान की हालत मे नही था।

"आप भी खाइए न भाबी!" मास्टर ने कहा।

"हमरी भूक तो सवेरे ही से मरी पडी है।" बिल्लो ने कहा।

"अरे भाबी!" मास्टर ने कहा, 'यह तो सियासत है। हार-जीत लगी ही रहती है। खाना-पीना छोडने से कैयसे काम चलेगा? जगमोहन सिहा हिन्दुस्तान के पसठ-सत्तर करोड आदमियो से बडे तो हो नही गये। जमहूरियत मे वह नही होता जो हजार बारह सौ रुपल्ली तन्ख्वाह पानेवाला कोई जज कहता है। जमहूरियत मे वह होता है जो जनता कहती है। जो अवाम कहत है—"

मास्टर ने दरअस्ल वह तकरीर शुरू कर दी जो आज रातवाली सभा के लिए उसने तैयार की थी। पर बिल्लो पर उसका कोई खास रोब नही पडा। क्योकि सबसे पहले तो यह कि वह जमहूरियत का मतलब ही नही समझी।

इस तकरीर का मतलब कटरा मीर बुलाकी के लोग भी पूरी तरह नही समझे।

बाबू गौरीशकर लाल पाण्डेय सभा के अध्यक्ष थे। बेदाग सफेद खादी की धोती। बेदाग सफेद खादी का कुरता। बेदाग सफेद खादी की टोपी। सफेदी की इस भीड मे उनका काला रग कुछ और निखर आया था। वह मास्टर बद्रुलहसन नायाब मछलीशहरी की तकरीर नही सुन रहे थे। वह अपने बारे मे सोच रहे थे कि यदि श्रीमती गाधी त्यागपत्र दे ही डालती हैं तो उन्हे किस गुट मे जाना चाहिए। उनके भविष्य का सवाल था। उनके लाइसेसो का सवाल था। उनके मन्त्री होने या न होने का सवाल था

"इसलिए हम ई कहित है,' पहलवान की आवाज आने लगी और बाबू गौरी शकर पाण्डेय चौंक पडे और अपने सर पर अपनी टोपी को सीधा करने लग। पहलवान सभा के सामने प्रस्ताव रख रहे थे और उनकी हालत पतली हो रही थी। कुश्ती लडना और बात है। किसी भरी सभा मे बोलना और बात है चाहे उस सभा मे वही लोग क्यो न हो जिन्हे आप उनकी या अपनी पैदाइश के पहले से जानते हैं। सामने खडा हुआ माइक्रोफोन पहलवान को कोई राक्षस लगा जो शायद मुंह से आवाज के निकलते ही उसे निगल जायेगा। घबराहट मे वह बोल कम रहे थे और गला ज्यादा साफ कर रहे थे। पसीने पसीने अलग हो रहे थ। "कि मुकदमा ससुर का चीज है। मुकदमे की तो मा—" पास ही बैठे हुए शम्मू मियाँ ने बहुत जोर से अपना गला साफ किया। पहलवान घबराकर चुप हो गये। बाबूराम मुस्कुराने लगे। मास्टर बद्रुलहसन ने देश को कुहनियाया। पहलवान ने फौरन गला साफ किया जैसे वह गला साफ करने ही के लिए बोलते-बोलत रुक गये हो। फिर बोलने लगे "हम इहाँ माँ-बहन की गाली बक्के वास्त ना खडे भय हैं। हम, खाली, का कहते हैं, पुरजोर अलफाज मे यह कहा चाह रह कि मुक दमा गया अपनी माँ की—" वह शम्मू मिया के गला साफ करन से पहले ही रुक गये। यह तो बडी उलझन की बात हो गयी। वह बात को जिधर से घुमा के निकाल ले जाना चाहते, वह माँ-बहन की गाली के नुक्कड पर आके रुक जाती। तो उन्होंने एक बार और गला साफ किया। बोले 'मुखतसर ई कि आज हम लोग ई फसला किया है कि आज से जो कटरा मीर बुलाकी को कटरा श्रीमती गाँधी न कहे ऊ साला अपने बाप के नुतफे स नही है। इतनी लम्बी बात वह एक साँस म कह गय और शम्मू मियाँ को खँखारने का मौका ही नही मिला। जब तक वह खँखारें-खँखारें, पहलवान अपनी बात खत्म करके पसीना पोछते बैठ गय। उन्होंने बाबूराम आजाद की तरफ झुककर उनके कान म कहा,

"हम सच कहित है बाबू साहेब। तकरीर करना कुस्ती लडे से बहुत जियादा मुसकिल काम है।"

प्रस्ताव पास करके सभा खत्म हो गयी। आशाराम इस सभा मे नही आया।

तीसरे दिन कारपोरेशन ने कटरा मीर बुलाकी की तख्ती उतारकर 'कटरा श्रीमती गाधी' की तख्ती लगा दी। और उस तख्ती के लगते ही बिल्लो यह भूल गयी कि जस्टिस सिंहा ने श्रीमती गाधी को हरा दिया है।

और जब आशाराम ने कहा कि मिसेज गाधी को यह नही करना चाहिए था तो देश मियाँ बीवी ने लगभग उसका मुँह नोच लिया। उस वक्त वह दोनो बाबूराम के घर पर थे। बिल्लो रामदयी की साडी पहुचाने आयी थी और देश यू ही साथ आ गया था।

जब बहस बहुत जोरदार हो गयी और रामदयी घबरा गयी कि कही आशाराम और देश म मारपीट न हो जाये तो बाबूराम ने बहस मे हिस्सा लेने का फसला किया। वह बोले, "पर आशाराम, जिन जस्टिस सिंहा ने राजनारायण को जितवाया है, उन्होंने बीस दिन के लिए अपने फसले को स्टे भी किया है। तो प्रियदशनी क्या त्यागपत्र दे?"

"इसलिए त्यागपत्र दे आपकी प्रियदशनी कि जिस चुनाव के आधार पर वह प्रधानमन्त्री बनी हुई है उसे हाई कोट ने नही माना है। खरे साहब न नये प्रधानमन्त्री के चुनाव के लिए स्टे लिया था।"

"तो का करें वह?" देश ने पूछा, 'जयपरकास नरायन को प्रधानमन्त्री बना दें?"

नही भई, त्यागपत्र दें उनके दुश्मन।" आशाराम ने कहा, 'यह औरत हिंदुस्तान को अपने बाप की जागीर समझती है।"

"मेरे घर मे नेहरू और उनके परिवार के लोगो का नाम इज्जत से लिया जाता है।"

'आपका घर हिंदुस्तान के बाहर नही है पिताजी।" आशाराम ने कहा, "और जितना अधिकार आपको उनकी इज्जत करन का है, उतना ही अधिकार मुझे उनकी इज्जत न करने का है।"

"मैं तुम्हारे अधिकारो की बात नही कर रहा था।' बाबूराम ने कहा, 'मैं अपन घर की बात कर रहा था। राजनीति दूसरी चीज है। यह राजनीति नही बदतमीजी है।"

रामदयी धक स हो गयी। बाबूराम न आज तक पोते से इस तरह की

बात नही की थी।

रामदयी ने आशाराम की तरफ देखा। आशाराम अपने दादा की तरफ देख रहा था और उसकी आखो मे विद्रोह था।

बिल्लो ने देश की तरफ देखा। देश ने इशारा किया कि इस वक्त चल देना चाहिए।

"अच्छा बाबू साहब,' देश न कहा, "हम चल रहें।"

बिल्लो भी खडी हो गयी।

देश बिल्लो को साथ लेकर चला गया। घर मे सन्नाटा हो गया। बाबूराम चर्खे पर बैठ गये। रामदयी कभी बेटे और कभी ससुर की तरफ देखने मे लग गयी। आशाराम अपने दादा की तरफ यू टकटकी बाधे देख रहा था जसे उन्हे उसने पहली बार देखा हो। जैसे यह आदमी ही न हो जिसके कन्धे पर बैठकर वह तालिया बजाते हुए अपनी माँ से कहा करता था 'अम्मा-अम्मा, देख हम पिताजी से बले हो गये—' यह वह आदमी भी नही था जो बरसात मे उसके लिए पुराने अखबार के कागज से तरह-तरह की नौकाएँ और स्टीमर बनाया करता और बरसती ओलती के नीचे जमा पानी मे वह नौकाएँ थिरकने लगती थी और स्टीमर नाचने लगते थे और वह उन नौकाओ और स्टीमरो पर बठकर लाल परी की तलाश मे चला जाया करता था—यह वह आदमी भी नही था जो इसी घर के दरवाजे पर उस शाम खडा उसकी राह देख रहा था जिस शाम वह पहली बार स्कूल से घर आया था—यह वह आदमी भी नही था जिसने प्रेमा के चले जाने के बाद उसके दिल का दद समझा था और जिसने कभी उसके सामने प्रेमा का नाम नही लिया था—सामने बैठकर चर्खा चलाते हुए आदमी को जैसे न उसने कभी देखा था और न ही उसके बारे मे किसी से कुछ सुना था

आशाराम उठा। वह बाबूराम के पास गया। दो ही कदम का तो फासला था। बाबूराम चर्खा चलात रहे। वह जानते थे कि आशाराम उनके पास आकर खडा हो गया है और इस इन्तजार मे है कि वह कुछ कहें। पर उन्होंने कुछ नही कहा। उनके लिए आशाराम उनकी उस कॉग्रेस से बडा नही था जिसके झण्डे-तले अग्रेजो के खिलाफ लडाई लडी गयी थी। जिसके झण्डे के नीचे बिसमिल ने सरफरोशी का गाना गाया था और गुलामी की जिन्दगी की तरफ हिकारत से देखकर मौत को गल लगा लिया था। जिसके झण्डे के नीचे सन ४२ म खुद बाबूराम ने मरने की कसम खायी थी। जिसके झण्डे के नीचे मरण व्रत रखे गये थे। जिसके झण्डे के नीचे पुलिस की लाठिया खायी गयी थी, जेल

की चक्कियां पीसी गयी थी, बाजारों में रसवा हुआ गया था—जिसके झण्डे में एक अनदेखा चौथा रंग भी है। महात्मा गांधी के खून का रंग। बाबूराम ने लगभग तेरह बरस इसलिए अंग्रेजी जेल में नहीं काटे थे कि उनके घर में उन्हीं का पोता उनकी कांग्रेस को गाली दे।

"यह घर आपका है पिताजी,' आशाराम ने कहा, "लेकिन यह देश सिर्फ आपका नहीं है।"

आशाराम उस घर में कभी न लौट आने के लिए उस घर से चला गया। बाबूराम ने पलटकर जाते हुए आशाराम की तरफ देखा भी नहीं। पर उन्होंने पहली बार यह जरूर सोचा कि जो आज आशाराम की जगह राजाराम रहा होता तो यूं उसके बुढ़ापे का अकेला छोड़कर न चला गया होता।—इस बारे में उन्हें बिल्कुल शक नहीं था कि आशाराम चला गया। पर चर्खे की रफ्तार वही रही और रामदयी को पता भी न चला कि आशाराम उसे छोड़कर न जाने कहां चला गया है। वह तो, बल्कि यह सोचकर, खुश हुई कि यह बड़ा अच्छा हुआ कि आशा चला गया। नहीं तो दादा पोते का झगड़ा न जाने कब तक चलता रहता। इसलिए इतमीनान का एक सांस लेकर उसने अपने दांतों तले खैनी दबायी और वहां से उठकर पड़ोस के घर में चली गयी।

बाबूराम अपने चर्खे के साथ बिल्कुल अकेले रह गये और उन्होंने पहली बार महसूस किया कि आशाराम कांग्रेस के मुकाबले में चाहे कुछ न हो पर उसके बिना जिन्दगी में कोई मजा भी नहीं है। और तब उन्हें पहली बार यह पता चला कि जब उनके पिता इसी तरह एक दिन उनके दादा को छोड़कर चले गये होंगे तो दादा कितने अकेले हो गये होंगे।

बाबूराम के दादा बाबू त्रिलोकीप्रसाद श्रीवास्तव मिरजापुर में मुख्तारी किया करते थे। सरकार में उनकी बड़ी मान-जान थी। बादशाह की बधगांठ पर उन्हें सरकार ने रायबहादुर भी बना दिया था। बेटे को उन्होंने लन्दन भेजकर बरिस्टर बनवाया। पर वह वहां से कांग्रेसी होकर पलटे। तब बाबूराम कोई दस साल के रहे होंगे। जब बाबू हरिमोहनदास श्रीवास्तव, बार-एट-लॉ ने बाप से कहा कि वह प्रैक्टिस नहीं करेंगे बल्कि देश की स्वतन्त्रता के संग्राम में हिस्सा लेंगे तो बाबू त्रिलोकीप्रसाद ने जमीन-आसमान एक कर दिया था। दस-ग्यारह साल के बाबूराम यह संग्राम देख रहे थे।—और आखिर में बाबू हरिमोहनदास श्रीवास्तव ने जो कहा वह बात बाबूराम को आज भी याद थी।

"पिताजी! देश का रिश्ता बाप के रिश्ते से ज्यादा बड़ा होता है।"

यह सुनकर बाबू त्रिलोकीप्रसाद श्रीवास्तव सन्नाटे में आ गये थे। और

उसी दिन बाबू हरिमोहनदास श्रीवास्तव, बार एट ला न अपना घर छोड दिया था। थाडे दिना के बाद वह पत्नी और बाबूराम को अपने साथ लेते हुए एलाहाबाद चले गये थे और जभी से यह परिवार एलाहाबाद मे रह रहा था।

लोगो को सिग्रेट-पान का शौक होता है। हरिमोहन बाबू को जेल जाने का शौक था जसे। एक सजा काटकर आते और दूसरी सजा काटने चले जाते और बाबूराम का बचपन अपनी माँ कमला देवी के साथ अकेला रह जाता।

आज जसे उस घर मे इतिहास अपने को दुहरा बैठा था। एक बेटा फिर बाप को देश-देशप्रेमी और बाप-बेट के रिश्त का फक बतलाकर घर से चला गया था—तो क्या मैं अपने दादा का प्रतिनिधि बन गया हू? क्या स्वतन्त्रता-सघष म वह हुए मेरे खून और पसीने का काई मूल्य ही नही? क्या देश प्रेम की परिभाषा बदल गयी है?—बाबूराम ऐसे किसी सवाल से घबराकर अपना रास्ता बदलने को तैयार नही थे। महात्मा गाँधी के झण्डे के सिवा हर झण्डा और उनकी बात के सिवा हर बात गलत है।—उन्होने अपन छाट स घर की तरफ देखा। घर मे उनके सिवा कोई नही था। आँगन मे तार की अलगनी पर रामदयी की साडी के पास ही आशाराम का एक कुरता सूखने के लिए टँगा हुआ था। दालान की छत से एक नगा बल्ब लटक रहा था। और तार समेत उसकी परछाइ ने दालान की दीवार पर एक लकीर सी डाल दी थी जो हवा क साथ हिल रही थी। आँगन मे साय लम्ब हा चले थे।—एक-दम से बाबूरामजी को लगा कि इस अकेले घर मे वह भी शायद दूसरी तमाम परछाइयो की तरह बस एक परछाई हैं। उनके बदन मे यकायक एक अजीब-बडी जानलेवा थकन यू रिसने लगी जैस बालू मे पानी उतरता है।

'हर राम!" कहते हुए घुटना पर हाथ रखकर वह खडे हा गय। बिजली के छोट-से पखे को उन्होंने बन्द कर दिया। उसके परा का नाच धीमा होन लगा। फिर वह पर अलग-अलग नजर आने लग। बाबूराम की निगाह उन परा पर यू जमी हुई थी जैस वह यह तमाशा पहली बार दख रह हा। फिर पर रुक गये और दीवार पर हिलनवाली परछाइ की लकीर रुक गयी और जस समय रुक गया और बाबूराम अपन अकेलेपन स डर-स गय। इतना डर तो उन्ह तब भी नही लगा था जब वह सन ४२ म जेल की एक कोठरी म तनहा बन्द कर दिय गये थे। कोठरी मे बस एक छोटी-सी खिडकी थी जिसम आसमान का एक छोटा-सा कोना नजर आता था। पर वह कोना सूरज के रास्त म था। तो उन्ह यह पता चलता रहता कि सूरज रोज निकल रहा है। और रात

को उस कोने मे दस-बारह तारे आ जाया करते थे। बाबूराम आजाद ने उन तारो के अलग अलग नाम रख छोडे थे। उन पर उन्होने अपनी सबसे खूबसूरत नज्म भी लिखी थी। अपने अकेले घर के सन्नाटे स डरकर उन्होने वह नज्म याद करनी चाही। दिमाग पर बहुत जोर दिया पर उस नज्म की एक लाइन न याद आयी वह आगन म उतर आये। आसमान नगा था। दूर दूर बादल का एक धब्बा भी नही था कि वह यह सोच सकते थे कि मौसम बदल रहा है। बाहरी दरवाजे की कुण्डी लगाकर बाबूराम ने ताला लगा दिया। इस ताले की एक कुजी रामदयी के पास थी और एक आशाराम के पास रहा करती थी कि वह रात बिरात आये तो किसी को जगाने की जरूरत न पडे। क्या वह कुजी अबकी इस्तमाल होगी? क्या वह भी हरिमोहनदास की तरह किसी नये घर की बुनियाद डालेगा जिसक आँगन के थालो मे नये किस्म के सपना के पौधे लगेंगे और नय रगो के फूल आयेंगे? क्या पीढियो से पीढियो का सम्बन्ध टूटना जरूरी है? और यदि जरूरी है तो हरिमोहनदास और बाबूराम के सपना मे फक क्यो नही था? इस तरह के बेशुमार सवालो ने बाबूराम को हर तरफ से घेर लिया। यह सवाल नये थे। और उन्ह यह नही मालूम था कि इन सवाला का जवाब क्या है और अपने-आपको इन सवाला का जवाब कैसे दिया जाता है। तो वह 'शिवशकर माग' पर यू ही, बिला मकसद चल पडे।

हवा म अभी तक काफी गर्मी थी। 'शिवशकर माग' पर धूल उड रही थी और एक बच्चा बफ की लाल शरबत म भिगोयी हुई चुसनी चाटता भागा जा रहा था पहलवान के टी स्टाल के सामन नारायण सडक पर पानी छिडक रहा था। और पहलवान आल्थी पाल्थी मारे बैठे हुए मिट्टी के बरतन मे लकडी की घाटनी स लस्सी घाट रहे थे। हाथ रोककर उन्होंने जीन के थैले मे सिल्ली स बफ काटकर डाली। फिर लकडी की मूगरी से बफ को कूटते हुए उन्होंने रामअवतार मिकानिक स कहा कि लग रहा है कि पानी दू एक दिन मे पडा ही चाह रहा। रामअवतार उनसे सहमत था। बफ कुट गयी। उन्होन कुटी हुई बफ को मिटटीवाले बरतन मे डालकर लस्सी को फिर घाटना शुरू ही किया था कि उनकी निगाह बाबूराम पर पड गयी और उन्होनि हाथ चलाते-चलाते हाँक लगायी, "सलाम बाबू साहेब।"

बाबूराम तो अपनी आत्मा के सन्नाटे से घबराये हुए थे ही। वह तो यह सोच-सोचकर डर रहे थे कि जो पहलवान ने उन्ह न देखा और आवाज न दी तो वह इस सन्नाटे का बोझ उठाये हुए कहाँ फिरेंगे मारे मारे! इसलिए पहल-

वान की आवाज़ सुनते ही वह दुकान की तरफ मुड गये।

"क्या हाल है भई ?" उन्होने टीन की एक कुरसी खचकर बैठते हुए कहा। पहलवान ने बिजली के मेज़ी पखे का मुह उनकी तरफ कर दिया। गम हवा के एक झपके ने पसीने को छुआ और ठण्डा पड गया, "एक लस्सी पिलाव भई।"

पहलवान चौक पडे। बाबूराम ने आज जिन्दगी मे पहली बार किसी दुकान पर बठकर कुछ खाने पीने का इरादा ज़ाहिर किया था। वह तो दुकान पर बैठकर खान को बदतमीज़ी कहा करत थे। हा, परदेस की बात और है। पहलवान मुस्कुरा दिये और बाबूराम समझ गय कि पहलवान क्या मुस्कुरा रहे हैं। पर उन्होने उस मुस्कुराहट का बुरा नही माना। पहलवान उनके लिए लस्सी बनान लगे और बाबूराम ने यू ही आसमान की तरफ देखते हुए कहा, "गर्मी से लगता है कि दो-एक दिन मे बारिश होने ही वाली है।"

'एही हम अभइ रामऔतार से कहित रह।' पहलवान ने कहा और फिर बहुत जी लगाकर बाबूराम की लस्सी के लिए बफ कूटने लगे। फिर दही के बरतन से महीन तारो का जालीवाला ढक्कन उठाया और ताबे के एक गोल टुकडे से लस्सी के लिए दही काटने लगे। लस्सी का गिलास मे उँडेलने के बाद उन्होन तांबे के उसी पतरे से दही की बालायी का एक टुकडा काटा और गाज दार लस्सी के गिलास मे डाल दिया और गिलास बाबूराम की तरफ बढाते हुए कहा, "इ आसा बाबू आज किधिर गये हैं बवण्डर की तरह ? हम पुकारते ही रह गय।'

'मुझे बताके तो नही गया।' बाबूराम न कहा और लस्सी का गिलास मुह स लगा लिया। खट मीठी लस्सी के साथ साथ बफ के दो चार छोटे छोटे टुकडे भी उनके मुह म फिसल आये और वह अपने मजबूत दाँतो से उन्ह चबान लगे।

बाबूराम के दाँत बडे खूबसूरत थे। बडे मज़बूत भी थे। वह इस उम्र मे भी कच्चे अमरूद और गन्ना इतमीनान से खा लिया करते थे। रामदयी के लगभग तमाम दात गिर चुके थे और वह नकली दाँत लगाया करती थी। इस बात पर वह दादा-पोते मिलकर उसका मज़ाक उडाया करते थे और वह बिचारी रोआसी हो जाया करती थी। अब अकेले क्या मजा आयेगा रामदयी के दाँतो का मज़ाक उडाने मे। यह सोचकर बाबूराम उदास हो गय। पर यह नियमो की लडाई थी। कुरुक्षेत्र म रिश्तेदारी नही देखी जाती। सबसे बडा रिश्ता खून का नही कर्तव्य का है।—वह लस्सी गटगटा गय और गिलास पहलवान को थमाकर उन्होने जेब म हाथ डाला।

"ना ना ना ई का कर रह आप ?" पहलवान ने कहा। "कौन कह कि आप रोजाना लस्सी पीये आइयेगा। पैयसा नही लेंगे।"

"मगर—"

"ए साहेब, सुनिए हमरी बात।" पहलवान ने बात काटी। "जे को इन्द्रा गाधी चाचा पुकारें हम ओसे लस्सी का पयसा ले सकत हैं भला।"

"मतलब हम कोई चीज़ ही नही।" बाबूराम न मुस्कुराकर कहा।

पहलवान ने जोरदार ठहाका मारा। फिर बण्डल से बीडी निकालते हुए बोले "ल्यो। कोई सुने बाबू साहेब की बात। अरे साहब, आपके कहे से तो हम कागरेसी बने। आप ना रहे होते तो हम और हम ही काहे को, सारा कटरा मीर बु—मतलब कटरा श्रीमती गाधी कमनिश्ट हो गया होता। सन ३५ लगा एत ई चुनाव, का ई कटरे का एक्को आट कागरेस के खेलाफ गया है ? और भगवान न चाहा तो जायेगा भी नही।"

यह थी बाबूराम की जीत। एक आशाराम हाथ से निकल गया तो क्या हुआ। यह पूरा कटरा उनका परिवार था। पहलवान के भरोसे के नलके तले बैठकर नहाने से उनके मन की उदासी और आत्मा की तनहायी का सारा मैल धुल गया। वह मुस्कुराते हुए उठ खडे हुए और ठीक उसी वक्त पतली सडक से बाबू गौरीशकर लाल पाण्डेय, एम० पी० की कार धल उटाती गुज़र गयी और बाबूराम खादी के रूमाल से अपने चेहरे की धूल झाडने लगे।

"ई साली सडक मे एही खराबी है।" पहलवान ने कहा। एक ठो मोटर गुजर जाये तो इतनी धूल उडाती है जैसे मिलिटरी का पूरा कॅवायी गुजर गया है। बाबू साहेब से कहिए ना कि सिरमिट की बनवा दें कि कोई चाहे तो रात को चद्दर बिछा के लेट भी रहे।

पहलवान ने जब यह बात बाबूराम स कही तो उन्हें यह नही मालूम था कि बाबू गौरीशकर पाण्डेय खुद भी इस सडक के बारे मे बडे-बडे प्रोग्राम बनाय बैठे हुए हैं—

मोटर वकज यूनियन की वजह से वह 'आल इण्डिया' किस्म के आदमी हो चुके थे। उनकी यूनियन को ट्रेड यूनियन ऐक्ट के तहत रिकॉगनिशन भी मिल चुका था। अखिल भारतीय सम्मेलन न होन के बावजूद बाबू साहेब उसकी अखिल भारतीय कमेटी के अध्यक्ष चुन जा चुके थे और उनके नय लेटर हट पर 'अध्यक्ष ए० आई० एम० डबल्यु० यू०' भी निसा हुआ था और पुराने लेटर पडो पर उनकी पत्नी घर का हिसाब लिखा करती थीं।

जस्टिस जे० सिहा के फैसले ने एक दिन के लिए तो उन्हें हिला

दिया था और वह यह सोचने भी लग गये थे कि बी० एल० डी० म जाना चाहिए या जनसघ म—पर फिर दिल्ली से फोन द्वारा सूचना मिल गयी कि श्रीमती गाधी त्यागपत्र नही दे रही हैं और बाबू साहेब जहाँ थ वही जमे बठे रह गय—बल्कि उन्होंने श्रीमती गाधी को एक लम्बा चौडा तार भी भेजा कि वह त्यागपत्र न दें क्योंकि जो उन्होंने त्यागपत्र दिया तो भारत की नया डूब जायेगी। गौरीशकर पाण्डेय और उनके साथ-साथ भारतवष की समूची जनता श्रीमती गांधी के साथ है—और यह तार देने के तीसरे दिन टण्डन पाक मे एक पब्लिक मीटिंग मे भाषण देते हुए जस्टिस सिंहा और जयप्रकाश नारायण के वखिय उधेड दिय। उन्होंने एलान कर दिया कि जयप्रकाश नारायण उनके तमाम चटट-बटटे जनता विरोधी और फासिस्ट हैं। प्रजातन्त्र का बस नाम लेते हैं पर वास्तव मे सेना को भडकाकर देश मे सेनाशाही चलाना चाहते हैं।—यह लोग तो इस लायक हैं कि किसी चौराहे पर इन लोगो को फाँसी दे दी जाय।—इस तकरीर की कटिंग भी बाबू साहब ने श्रीमती गाधी के पास भिजवा दी। फिर उन्होंने जिला कांग्रेस कमेटी की एक इमरजेंट मीटिंग बुलवायी और उसम परस्ताव पास करवाया कि जयप्रकाश नारायण और इस तरह के दूसर तमाम लोगा को एलाहाबाद का दुश्मन करार दिया जाता है और एलाहाबाद के बगर दश रह क्या जाता है। एलाहाबाद तो हिन्दुस्तान का दिल है। तीनो प्रधानमन्त्री देश को किसने दिये ? एलाहाबाद ने। उन्होंने तो यह भी माँग करवनी चाही कि जस्टिस सिंहा के खिलाफ कमीशन बिठलाया जाय। उनके ख्याल म सिंहा साहब ने घूस खाकर यह फैसला दिया है। और घूस आयी कहाँ स ? या तो अमरीका से या चीन से।—अरे साहब, किसी को जरा भी राजनीति की समझ होगी तो वह हाइ कोट के इस फसले म सा० आइ० ए० का हाथ साफ देख सकता है।—चीन का नाम तो वह यू ले रहे थे कि सी० पी० आई० के मित्र बुरा न मानें—इस परस्ताव की एक कापी भी १-सफदरगज भेज दी गयी।

नम्बर १ सफदरगज, नयी दिल्ली ११०००१ के पते पर ऐसे बगुमार परस्ताव और समाचार-पत्रो की कटिंगें आ रही थी। और फिर प्रधानमन्त्री उन्ही परस्तावो को देश की आवाज समझकर अपने दरवाजे पर लगी या लगवायी हुई भीडा का ऐड्रेस कर रही थी और पत्र पत्रिकाओ मे उनकी तकरीरो के साथ-साथ उनकी तस्वीरें भी छप रही थी।

और उन तकरीरो का आकाशवाणी से सुनकर और उन तस्वीरो को पत्र-पत्रिकाओ म देखकर कटरा मीर बुलाकी उफ कटरा श्रीमती गाँधी के लोग खुश हो रह थे।

देश टो टोक्र समाचार-पत्र तो पढ ही लिया करता था। तो बिल्लो न उसकी सुबह की डियूटी ही यह बाँध दी थी कि वह उसे अखबार सुनाया करे। वसे देश खुद भी सुबह की चाय के साथ अखबार पढना चाहता था ताकि घर से काम पर जाने के लिए निकले तो पूरी तैयारी से निकले। यह जानकर निकले कि रात वाली आकाशवाणी की न्यूज बुलिटीन के वाद देश मे कोई भारी और गम्भीर परिवतन तो नही हुआ।

तमाम सादा लोगो की तरह देश को यकीन था कि समाचार-पत्र और रेडियो झूठ नही बोलते। भई वह क्यो बोलेंगे झठ ? उन्हे झूठ बोलने की जरूरत क्या है ?

सवेरे की चाय की प्याली के साथ बिल्लो देश को समाचार पत्र भी थमा देती और वह समाचार पढने लगता। यदि बिल्लो को समाचार सुनने का शौक न हो गया होता तो भी देश जोर जोर ही स अखबार पढता क्याकि धीरे धीरे पढना उसे आता ही नही था।—एक दिन वह यूही चाय मे बोर-बोर के समाचार खा रहा था कि बिल्लो को पहली मतली आयी। देश तो घबराकर उठा और चाय की प्याली उछल गयी। अपना पेट पकडे उबकाइया लेती हुई बिल्लो प्याली टूटने पर उबकाई भूल गयी और उसकी खबर लेने लगी कि चाय की प्याली सामनेवाले नीम के पेड मे निबौडी की तरह तो फलती नही कि जाकर तोड लाओगे—

'तोरी मतली देख के हम घबरा गये रहे।" देश ने कहा। 'हम अभई बदर के अब्बा से होमोपेथी की दवायी माग लिआते हैं—" वह जाने के लिए उठा।

"अँ भायी कयसे पागल आदमी से पाला पडा है।" बिल्लो न कहा। 'ई दवायी वाली मतली थोडे है—" यह कहते कहत जो बिल्लो शरमा न गयी होती तो शायद देश की समझ मे बात न आयी होती। पर उसके शरमाने से वह समझ गया। और बात समझते ही वह वही आगन के कच्चे फश पर आल्थी-पाल्थी मार के बैठ गया।

"का होगा ?" देश ने पूछा।

"का पता।" बिल्लो ने कहा।

"लडको होये को चहिए।'

'फिर सुरू कर दिया ओही बात।"

"लडका पाले म कोई मजा ना है बिल्लो। प्रधानमन्त्री के नाम पर इन्दरा नाम रख लिया जैयह। लडका भया त का पुकारिहो ? जयप्रकास कि मुरारजी कि अटल बेहारी वाजपेयी ?"

"सजय ।" बिल्लो ने कहा ।

"लडका भया तो हम साले को फेंक आयेंगे कोनो घूरे ऊरे पर । स है । "

बस लडाई चालू हो गयी । यह लडकी पर जमा हुआ था और वा पर ।—और जो इतवारी बाबा न आ गये होत तो यह लडाई न जा तक चलती रहती । उनकी तबीअत आजकल कुछ खराब चल रही थी उन्होने तीसरी शिफ्ट किराये पर उठा रक्खी थी । आराम स गयी सोया करत थे और आराम स जरा देर म उठा करत थे । जनता ल भी अब मुह अँधेरे नही खुला करती थी । जिलाधीश का हुक्म था कि दुकान यदि वह खाने की नही है नौ बजे से पहले नही खुल सकती । द स दो बजे तक खान के लिए हर दुकान, यदि वह खाने की न हो तब, उ तिए बन्द होगी । और आठ बजे रात के बाद कोई दुकान, यदि वह खाने हो, बन्द हो जायगी । बिल्लो न बडी गालियाँ दी थी जिलाधीश को । वा होता है उसकी दुकान का वक्त मुकर्रर करनवाला ? पर जब पहलवान इतवारी बाबा न बहुत समझाया कि हर जगह उसकी जबान नही चल तो उसे अपनी जबान रोकनी पडी । पर जभी से वह सोच रही थी लाण्डरी बन्द करक खाने की कोई दुकान खोल ली जाय । पर देश इसके राजी नही हो रहा था और मामा भी समझा रहे थे कि खाने की दुकान म खराबी यह है कि राज की चीज रोज न बिके तो घाटा लग जाता है । बहुत सी परेशानिया भी है । अनाज ब्लक स खरीदो । सेल्ज टक्स वा रिश्वत दो । राशनिंग इन्स्पक्टर को दूध मलायी खिलाव ।—बरतन खर्च गिलास राज टूटगा । नौकर चाकर चोरी जरूर करेंग । गाहक लागा से क कि मसूर की दाल पकी है तो यह चने की दाल माँगेगा । कोई गोश्त नही ख कोई सब्जी नही खाता । कोई को पियाज की महक ना अच्छी लगती । लहसुन का ना हाथ लगाता—लाण्डरी का काम ठीक है । एक्के ठा इसतिरी एक्क ठो क्लफ । किस्सा खतम । कोई झगडा टण्टा नही ।—और पहल की इस लाजिक का बिल्लो के पास कोइ जवाब नही था । और इस पर इतवारी बाबा ने यह नुस्ता बाँधा कि भीख माग के बाद लाण्डरी चलाये से आसान काम काइ हैय नही कहने का मतलब यह है कि न बिल्लो ने अ धन्धा बदला और न इतवारी बाबा ने अपना । दोनो मज मे जिन्गी की पु डगर पर चले जा रह थे । सरकार काइ आ जाय लोग कपडे जरूर धुलव और लोग भीख भी जरूर माँगेंगे—और कपडा धाने धुलानेवाला तो चाहे

मर भी जाये पर भीख मागनेवाला तो भूखा रह ही नहीं सकता—नयी नयी आज़ादी के दिनो हिन्दू फकीर और मुसलमान फकीर का चक्कर चला था कुछ दिना पर भिखमगो को सेकुलर होने मे ज्यादा दिन नही लगे क्याकि आप मिसाल के तौर पर हिंदू फकीर को पैसा देना चाहते है और कोई हिन्दू फकीर सामन नही पड रहा है। अब आप फँस गये। वह पैसा लेकर आप घर म तो आ नही सकते क्याकि उतनी भीख देने की आपको आदत पडी हुई है—चुनाचे भीख देनवाला मे मानवतावादी विचारधारा ने सर उठाया कि साहेब फकीर तो फकीर होता है। हिंदू क्या और मुसलमान क्या ! और मज़े की बात यह कि भिखमगा की न कोई असोसियेशन न कोई यूनियन। सरकारें यूनियनबाज़ी से घबराती है। शायद इसीलिए भीख माँगन के काम मे दिन दूनी और रात चौगुनी तरक्की हा रही है। यदि हमारी पर कैपिटा इनकम का हिसाब लगात समय फकीरो की आमदनी को भी जोड तिया जाय तो पर कपिटा इनकम जा है उसम दूनी निकलेगी कम-स कम। और हम भीख मागे वाले समाज का तउन हिस्सा हैं कि हमरे जिय मरे से कोई फरक नही पडता। बाजार के भाव पर कोई असर ना पडता केह मारे की हम बजार से कोई चीज़ लेब ना करत। अरे जब बेमाग हर चीज़ मिल जाहै तो हम कोई चीज खरीदे क्यो जायें—

"फजूल बात मत किया करो बाबा।" बिल्लो ने हँसी रोकने की काशिश करत हुए कहा क्याकि वह जानती थी कि बाबा यह बातें ज्यादातर देश को चिढाने के लिए करते है। पर उस दिन तो देश का आधा ध्यान अपनी बटी मे लगा हुआ था। उसके पास बाबा की उटपटाग बातें सुनन का समय ही नही था। और बाबा तामचीनी के बडे प्याले मे भरी हुई मजेदार चाय की चुसकिया ले रहे थे। लेकिन इधर-उधर की हाकत हाकते इतवारी बाबा न एकदम से ऐसी बात कही कि देश भी चौक पडा—वह बाले "आज हम, उ जो रानी मण्डीवाले अकीक (अकीक) अहमद एडोकेट ह न उनके पास जाके अपना वसीयतनामा लिखवाया—'

दश मिया-बीवी उनकी तरफ देखन लग।

"बक मे बारह हजार तीन सौ सत्ताइस रुपया चौबिस पयसा नकद है। तो हम लिखवा दिया है कि हमरे मरे के बाद हमरा क्रियाकम तो चन्दे से किया जाये केह मार कि अपनी कमायी का कफन पहिने मे हम्म सरम आयगी। और हमरी राख कटरा मीर बुलाकी मतल्ब कटरा श्रीमती गाँधी की बउनो गन्दी नाली मे बहा दी जाय कि ओके गन्दे पानी मे मिल के गगाजी मे मिलना चाहता हूँ। साफ सुथरे गय तो मजा ना आयगा। खर ई तो अलग बात हो

गयी। ऊ जो बारह हजार तीन सौ है ओम से हजार रुपया फकीरा के के वास्ते है। बाकी रुपया हम तोरी स्वीमती गाधी के नाम कर दिया है उनके जमाने मे हमरे पसेवाल्न की बडी तरक्की भयी है। लोग कहत इजिनियर और डाक्टर बहुत बढ गय बाकी हम कहित है कि दस मे भीख वालन की आबादी बहुत बढी है '

इतवारी ने जो यह बात अपनी वसीयत से न शुरू की होती तो नायक और बिल्लो ने उसे तिक्काबोटी कर दिया होता। कसा झूठा है यह आद आकासवानी जो बोले ऊ गलत। पत्र पत्रिकाओ म जो छपे ऊ गलत। एही एक सच्चा हैं

पर बात इतवारी न अपनी वसीयत से शुरू की थी। इसलिए उसके होते ही घर मे सन्नाटा हो गया। सामने दीवार पर एक कलेंडर टँगा हुआ कभी उससे तारीख नही पूछी जाती थी क्योकि उसम से जनवरी का पन्ना तक नही फाडा गया था और तारीख जून की छब्बीसवी की थी। कैलेंडर मुहम्मद बीडी का था। ऊपर श्रीमती गाधी की मुस्कुराती हुई तस्वीर थी नीचे लाल मुहम्मद बीडी के बण्डल सजे हुए थ—देश को मिसज गाँधी का प अच्छा लगा था और इसीलिए यह कैलेंडर दालान मे टागा गया था कि घ सबसे ज्यादा इस्तमात होनेवाला हिस्सा यही था। दश तो ज्यादातर दालान मे फसड के चारपायी पर बैठा बठा खाना भी खा लिया करता था जब देश या बिल्लो ने कुछ नही कहा तो इतवारी ने उस कैलेंडर की त देखा। मिसेज गाधी का वह फोटो किसी और तरफ देख रहा था और चारप पर पडे हुए अखबार मे पहली खबर यह थी कि राष्ट्रपति ने कल रात ब बजे सारे देश पर इमरजेंसी लागू कर दी है।

गूगी बस्ती गूगे लोग

इमरजेंसी।
उजाला कहाँ है ?
न दिन में,
न घर में,
न इस रास्ते पर,
न उस रहगुजर में,
उजाला कहाँ है ?
उजाला कहाँ है ?

मैं अपने को धुंधला नजर आ रहा हूँ
उजाला कहाँ है ?
मैं खुद अपनी परछाई बनता चला जा रहा हूँ
उजाला कहाँ है ?
न गुजरा हुआ कल नजर आ रहा है
न फर्दा का कोई पता है
यहाँ से यहाँ तक
अँधेरे का एक सिलसिला है
अँधेरा
जो पिछले अँधेरों से बिल्कुल अलग,

तगरवा से जुदा है
अँधेरा
जो शायद बस एक पल है,
लेकिन
यह पल भी
गुजश्ता सदी से बडा है
सलीबा की मानिन्द दिल म गडा है
यकी है कि इस दर्द-तारीक का भी मदावा तो होगा
मदावा किधर है ?
मसीहा कहा है ?
उजाला कहा है ?
उजाला कहाँ है

उजाला दूर दूर कही नही था। गन्दे बदबूदार कुहरे की एक मोटी तह जैसे हर चीज पर जम गयी थी। कोई चीज साफ नही दिखायी दे रही थी। विधान सभा, हाई कोट, सुपरीम कोट। गाधीजी की समाधि, मौलाना आजाद की कब्र तिलक और गोखले के स्टचू, युनिवर्सिटियाँ, प्रेस गरज कि हर चीज पर अँधेरे की एक मोटी तह जमी हुई थी यह अँधेरा अजीब था मगर। आम तौर से किसी को दिखायी ही नही द रहा था। बहुत से बुद्धिजीवी भी इसे न देख पाये। ख्वाजा अहमद अब्बास, अली सरदार जाफरी, डागे, राजेश्वर राव, हिरेन मुखरजी, डाक्टर नूरुल हसन, कृष्णचन्द्र, कमलेश्वर, चित्रकार हुसन हजारा नाम हैं। इन लोगो ने अँधेरे को उजाला कहा और उसका स्वागत किया। यह सर जो अग्रेज के सामने नही झुके थे रास्ते भर सज्दा करते हुए नम्बर १ सफदरजग तक जा पहुचे और जिन सरो ने झुकने म और जिन जबानो ने कसीदा पढने से इनकार किया वह बहुत बुरी गुजरी उन पर। हमारा देश जिसके बारे म जहाँगीर ने कहा था कि जन्नत यही है, एक खँडर बन गया जिस पर कूडे की तरह कटे हुए सर और कटी हुई जबानो का ढेर लग गया और इस ढेर पर एक कुकुरमुत्ता उगा जिसका नाम सजय गाधी था। यह जमाना है वी० सी० शुक्ल ओम मेहता और वसीलाल जैसे लोगो के उरूज का। यह जमाना हैं बाबू जगजीवनराम, बहुगुणा, चौहाण जैसे लोगो के चुप रह जाने का। यह जमाना है चन्द्रशेखर, मोहन धारिया जैसे लोगो के सच बोलने का और सच बोलने की सजा भुगतने का। मैं इस युग को जयप्रकाश नारायण का युग नही मानता। परन्तु मैं यहाँ यह बहस छेडना नही चाहता क्योकि इस वक्त मैं एक

डिंग के खयाल से उन्हें रात भर पसीना आता रहा जिसे वह बरसात से पहले वाले हब्स का पसीना समझकर मौसम को गालियाँ देते रहे। पर वह घर में अकेले थे। बिल्ला के लाख कहने और देश की हजारों खुशामदों के बावजूद वह उनके नये घर में नहीं गये हालांकि उनका कमरा बनकर तयार हो चुका था। उन्हें बेटी के घर जाना अच्छा नहीं लग रहा था। माना कि देश भी बेटे से कम नहीं था पर उनके वहाँ होने से उन दोनों की जिंदगी में फर्क पड़ सकता है। पता नहीं पति पत्नी क्या बात करना चाहें। कैसे रहना चाहें। क्या खाना-पीना चाहें पर मामा सूरत पर सवार हैं उन्हें अकेले रहने की आदत नहीं थी। पर बिल्लो और देश के चले जाने के बाद उन्होंने अकेले रहने की आदत भी डाल ही ली किसी न किसी तरह। बस खाना खाने के लिए उन्हें बिल्लो के घर जाना पड़ता था और वह दोनों किसी कीमत पर यह मानने को तैयार नहीं हो रहे थे कि जब वह बच्चे थे तब भी तो पहलवान खुद ही खाना पकाया करते थे उन दोनों ने एक न सुनी। दिन का खाना तो बिल्लो दुकान पर पहुंचा जाया करती थी। रात का खाना वह उनके घर खाया करते और सवेरे का नाश्ता बिल्लो पुराने अखबार के कागज में लपेटकर साथ कर दिया करती थी। खाना खाने के बाद वह नीम के तिनके से खिलाल करते, नाश्ते की पोटली बगल में दबाये और बेतकल्लुफ सड़क पर जोर जोर से पादते हुए अपने घर लौट आते। इस इलाके में तो किसी की यह हिम्मत थी नहीं कि उनके पादने पर हँस दे घर आने के बाद वह लेट जाते। बत्ती बुझा देते और रात का अँधेरा ओढ़ कर सोने की कोशिश करने लगते। अकेला घर और अकेले घर की अकेली रात उन्हें अजीब लगती तो वह रामायण गुनगुनाने लगते और फिर भूली भटकी यादें आने लगतीं और चारपायी पर उनके पास बैठ जातीं यह यादें उनके बारे में कभी न होतीं। बिल्लो की माँ की याद भी न होती। उनकी तमाम यादें देश और बिल्लो के बचपन की होतीं और इन्हीं यादों को कोई कहानी सुनाते सुनाते या किसी शरारत पर प्यार से डाँटते डाँटते वह सो जाते। पर वह रात दूसरी तमाम अकेली रातों से अलग थी। कोई याद भी पास नहीं फटक रही थी। आकाश वाणी का भूत उनके सरहाने खड़ा था आखिर जब किसी तरह नींद न आयी तो वह बाहर निकल आये। मीर बुलाकी का कटरा नहीं श्रीमती गाँधी का कटरा मजे में गहरी नींद सो रहा था। लग रहा था कि इमरजेंसी में कुत्ते बहनचोद लोग भी भूकना कम कर दिहिन हैं सामने 'जनता लाण्ड्री' थी और उसके तख्ते पर इतवारी बाबा आराम से सो रहे थे। पहलवान उसी तख्ते पर जा बैठे। जेब से टटोलकर उन्होंने बीड़ी निकाली और उसे सुलगाकर लम्बे

लम्बे कश लेने लगे।

"एक ठो और बीडी होय तो हमहूँ जाग जायें।" इतवारी ने कहा। और यह कहकर इतवारी उठ बैठे। "का बात है ?" उन्होंने पूछा। 'नींद ना आ रही का ?"

"न।' पहलवान ने आधी पी हुई बीडी इतवारी बाबा की तरफ बढाते हुए कहा।

इतवारी बाबा ने वह बीडी ले ली और चुपचाप उसके कश लेने लगे।

"हमरी तो समझ म ना आ रहा कि हम बोलेंगे का कल रेडियो पर।"

"समझे की जरूरते का है।" इतवारी बाबा न कहा, "इ बेसमझे बोले का जमाना है। आशाराम बहुत समझदार बनते रहे ना। तो पुलिस से कबड्डी चालू हो गयी है। कहा तक छिपिह। आखिर पकडे जैयहे एक दिन। ऊ जो मसल है कि बकरे की मा क दिन खैर मनायेगी।"

आशाराम।

इमरजेंसी म आशाराम का क्या काम।

हेड कास्टबिल जगदम्बा प्रसाद और थानदार अशफाकुल्लाह खाँ के सपन के पूरे होने का मौसम आ गया था। तो इमरजेंसी लगने के दूसरे ही दिन अशफाकुल्लाह खा ने रोजनामचे म लिखा कि उन्हे शक है कि आशाराम यकीनन सरकार के खिलाफ कोई साजिश कर रहा है और इस साजिश का मरकज कटरा मीर बुनाकी है कि जिसका नया नाम कटरा श्रीमती गाधी रख दिया गया है। हड कास्टेबिल जगदम्बा प्रसाद ने इस साजिश की तफतीश म बडी मेहनत और इमानदारी स काम किया लेकिन यह साजिश इतनी गहरी है कि अब तक इसका कोई पता नही चल सका है। एस० आइ-२ ने जो जान से काम करके एक डाज़ियर तैयार किया है जिससे यह पता चलता है कि आशाराम कटरे के चन्द लोगो स बहुत ज्यादा मेलजोल रखता है। इन लोगो मे पहला नाम देशराज मोटर मिकैनिक का है जिसे प्रधानमन्त्री की सिफारिश पर बक लोन मिला था और जो आजकल जीरो रोड पर अपनी मोटर बकशाप चला रहा है। इसी देशराज ने आशाराम के कहने से बाबू गौरीशकर लाल पाण्डेय के नेशनल गरेज म हडताल करवायी थी। इस देशराज की नीयत पर भरोसा नही किया जा सकता। हुक्कामाने आला के हुक्म का इनतिज़ार है

अशफाकुल्लाह खा न अभी रोजनामचे म यह न लिखा होता पर इमरजेंसी से ज़रा वह भी डर गये थे शुरू-शुरू म और उन्ह डर था कि कही सी० बी० आइ० वाला ने सूघ लिया कि कटरा मीर बुलाकी म सरकार को उलटने की

कोई साजिश हो रही है और थानेदार इनबाज के बानो पर जूतर न रेंगी तो लने के दन पड जायेंगे। इसलिए उन्होंने मुनासिब यही जाना कि रोजनामचा कर देना चाहिए कि जब यह साजिश बेनकाब हो तो सरकार के इल्म में यह बात रहे कि यह खबर अशफाकुल्लाह खाँ थानेदार ने दी थी। जगम्बा प्रसाद का नाम तो उसने यू ही टाँक दिया था कि वह उसी कटरा का रहनेवाला था और यह खबर वास्तव मे वही लाया भी था। उन्हें यकीन था कि आशाराम के गिरफ्तार होते ही उन्हें किसी छोटे शहर की कोतवाली का चार्ज तो मिल ही जायगा।

आलमआरा बेगम तो कोतवालन बनने के ख्वाब तक देखने लगी थी क्या कि अशफाकुल्लाह खाँ इस किस्म की बातें उन्हें जरूर बता दिया करते थे। वह खा साहब के कोतवाल होने के बाद लला की शादी करना चाहती थी कि कोतवाल की बेटी के लिए शहर के महाजन दहेज भेजवाते हैं। एक ही बेटी थी। वह उसका ब्याह बडे चाव और हौसले से करना चाहती थी। किसी को यह कहने का मौका क्यो मिले कि आलमआरा बेगम ने अपनी इकलौती बेटी को उस थानेदार या एस० पी० से कम दहेज दिया। वह तो चाहती थी कि यू० पी० पुलिस के हलकों मे धूम मच जाय कि साहब ब्याही तो गयी अशफाकुल्लाह खा की बेटी। एक सौ दस तो जोडे दिये। कोई जोडा पाँच सौ से कम का नहीं था। पन्द्रह सेट गहनों के कि कोई सेट महीने भ दोबारा न पहनना पडे। फिर पुरानी तर्ज वाले खानदानी जेवर अलग कि फिर उनका फशन आ गया है। तो आलम-आरा बेगम की दादिया सास वाला नौरत्न गुलूबन्द, याकूत वाला जोशन और दस्त बन्द, जडाऊ पात बालिया और कगन, मोतिया का सतलडा चादी के सब बरतन तो खैर दिये ही जायेंगे। दूल्हा को एक कार और प्लैटीनम का मिग्रेट केस तो देना ही पडेगा। फिर बरात वाला का जोडा। बर बिरादरी, पुराने नौकर चाकर सात आठ लाख से कम खर्च नही होगा। अब यदि इलाहाबाद कोतवाली का कोई अफसर डीएम अपनी बेटी की शादी म, चाहे वह इकलौती ही बेटी क्यो न हो, सात आठ लाख रुपये खर्च करेगा तो भवें जरूर तनेंगी। पर जो यह शादी किसी छोटे शहर के कोतवाल की बेटी की हो तो लखनऊ को खबर भी न होगी। अब गाजीपूर, आजमगढ या बलिया की परवा कौन करता है! इसीलिए उन्होंने हजारो मन्नतें मान डाली कि आशाराम पकडा जाय और उसके मियाँ का तबादला किसी छोटे शहर मे हो जाये।

आशाराम से आलमआरा बेगम को कोई जाती शिकायत नहीं थी। वह तो उसे जानती भी नही थी। बस एक बार देखा जरूर था। वह किसी की गिरफ

तारी पर शोर मचाने उनके घर आ गया था। उसका कहना था कि खा साहब ने रिश्वत खाकर उस आदमी को किसी और के जुर्मों पर पर्दा डालने के लिए पकड लिया है। उस वक्त वह 'निरजन' म कोई फिल्म देखने जा रही थी। यह तो उन्हें लैला ने बताया था कि वह आशाराम है।

और लला ही की वजह से आशाराम काफी दिना तक पुलिस के पजे मे बचा रहा।

हुआ यह कि जब कातवाल ने रोजनामचा देखा तो उसने फौरन डी० आइ० जी० को रिपोट की कि उसने पता चलाया है कि आशाराम सरकार का तख्ता उल्टने का कोई प्रोग्राम बना रहा है और उस साजिश का कोड नाम कटरा बी आर्जू' है।

चक्कर यह था कि पुलिस के लाग सरकार को खुश करने मे लगे हुए थे। और सबके सब एक-दूसरे से बाजी मार ले जाने की फिक्र मे थे। कोतवाल श्री बाके बेहारी लाल गुप्ता आइ०पी०एस० के आदमी थे। तोड जोड के आदमी भी थे। वह इस कोशिश म थे कि इमरजेसी मे जब सुप्रीम कोट के जजो की सीनियरी नहीं चलती तो यू० पी० पुलिस किस खेत की मूली है। वह क्या सीनियर आफिसरा को काटकर डी०आइ०जी० बनने के चक्कर चलाय हुए थे और जब उन्ह ही 'कटरा बी आजू साजिश' की भनक पडी तो उन्होने उसे लपक लिया। इस साजिश का पदा यदि वह फाश कर सकें तो उन्ह डी०आइ०जी० बनने स रोक कोई नही सकता। पर वह यह भी नही चाहते थे कि डी०आइ०जी० को बताये बिना कुछ करें क्योकि राजनीति का कुछ नही है। क्या पता कौन किसका रिश्तेदार निकल आये ? इसलिए उन्होने रिपोट तो कर दी पर चुपके से एक खुफिया खत लेकर अशफाकुल्लाह खा को लखनऊ रवाना कर दिया कि वह खत मुख्यमन्त्री को दिया जाय।

खा साहब ने इस मौके को गनीमत जाना। मुख्यमन्त्री उन्ही के गाव के थे। उनकी रिआया रह चुके थे और अब भी बहुत खयाल करते थे। चुनाचे उन्होन मुख्यमन्त्री को खूब नमक मिच लगाकर अपनी रिपोट दी और आखिर मे उन्ह गुप्ताजी का खत भी द दिया। मुख्यमन्त्री दिल ही दिल मे गुप्ताजी से नाराज थे कि सात आठ साल पहले, जब कि मुख्यमन्त्री मुख्यमन्त्री नही थे बल्कि अपोजीशन के एक एम०एल०ए० थे, गुप्ताजी ने उनके एक आदमी को फासी की सजा दिलवायी थी। गुप्ताजी इस बात को भूल चुके थे। पर मुख्यमन्त्री को यह बात याद थी। और जब वह पत्तोर त्रास करके सरकार से मिल गये तो उन्होन गुप्ताजी स खूब दोस्ती की। वह गुप्ताजी को ऐसी जगह मारना चाहते थे कि

जहा माँगे पानी न मिले और इमरजेंसी के शुरू मे उन्हे यह मौका मिल गया। उन्होंने खाँ साहब से कहा कि वह गुप्ताजी को इस साजिश म लपट लें तो वह उन्हे एलाहाबाद कोतवाली का इनचाज बना देंगे। अशफाकुल्लाह खाँ खुश खुश एलाहाबाद लौट आये कि जब मुख्यमन्त्री ने जबान दे दी है तो भला अब उन्हे कोतवाल एलाहाबाद होने से कौन रोक सकता है एलाहाबाद का कोत वाल होने का मतलब यह था कि वह सब इन्स्पेक्टर से सीधे एस०पी० हो जायेंगे। इमरजेंसी मे कुछ भी हो सकता है पर वहाँ लखनऊ मे मुख्यमन्त्री की अपनी परशानिया थीं। वह जानते थे कि और कितने लोग उत्तरप्रदेश के मुख्यमन्त्री बनना चाहते हैं। तो यदि उनमे से किसी को इस 'कटरा बी आजू साजिश' की भनक पड गयी और उसने भनुक दिया श्रीमती गाँधी या सजय गाँधी से तो उनका पत्ता साफ हो जायगा। इसलिए वह पहली फ्लाइट स दिल्ली के लिए रवाना हो गये। उन दिनो काग्रेसी मुख्यमन्त्रियो का ज्यादा वक्त यू भी दिल्ली म गुजरा करता था।

और यू मिसेज गाधी की निजी इटेलिजेंस को 'कटरा बी आर्जू साजिश' का फाइल मिल गया। पर मुख्यमन्त्री ने अब भी इतमीनान का साँस नही लिया। उनके धड के लिए यही बात काफी थी कि श्रीमती गाधी की सरकार उलटने का नक्शा उनके प्रदेश म बनाया जा रहा था इसलिए सजय गाधी को खुश करने के लिए उन्होंने अपने प्रान्त म नसबन्दी का कोटा खुद ही दुगना कर दिया। इस पर नम्बर एक सफदरजग ने उनकी पीठ थपथपायी और वह खुश-खुश लखनऊ लौट आये। और के० बी० ए० फाइल' सी० बी० आइ के हवाले कर दिया गया। अब चूकि यह फाइल सी० बी० आइ० को नम्बर १ सफदरजग से मिला था इसलिए यह तो साबित करना ही पडेगा कि कटरा बी आजू के कोड नाम से एलाहाबाद मे कोई आशाराम दिल्ली सरकार का तख्ता उलटने की कोशिश कर रहा है। चुनाँचे सी०बी० आइ यह साबित करने के लिए एला-हाबाद मे आ गया।

इस बात की खबर एलाहाबादियो को नही हुई कि उनका ऊघता मल्हता शहर इतनी बडी साजिश का मरकज बना हुआ है। लेकिन अशफाकुल्लाह खा के एक साले सी०बी०आइ० मे थे। इसलिए उनके घर मे यह खबर आ गयी।

खुर्शीद आलम खाँ को अपनी भाजी लैला से बडा प्यार था और लला को क्राइम फिक्शन पढने का बडा शौक था। कई बार ऐसा हो चुका था कि लला स गप लडाते म लला अपनी सान्गी मे कोई ऐसी बात कह गयी कि खुर्शीद आलम खा को सुराग मिल गया। परन्तु क्या के० बी० ए०' केस म भी वह लला से

राय लें ? वह अपने बहनोई अशफाकुल्लाह खाँ स खुश नही थे क्योकि उन्ह मालूम था कि उनकी बहन आलमआरा खुश नही है। उन्ह हीराबाई की बात भी मालूम थी इसलिए वह नही चाहत थे कि के० बी० ए० केस मे अशफाकुल्लाह खाँ को कोई फायदा हो। तो उन्होने आखिर लला की मदद लेने का फैसला कर ही लिया। और यह फसला उन्होन उस दिन किया जिस दिन उन्हें पता चला कि लैला के कपडे 'जनता लाण्डरी' मे धुलत हैं और यह जनता लाण्डरी उसी कटरा मीर बुलाकी मे है जहा आशाराम के० बी० ए० साजिश कर रहा है। उनका ख्याल था कि बम की कोई फैक्ट्री तो निकले गी ही। हो सकता है नाट छापने का कोई प्रेस भी निकल आये क्याकि पस के इस युग मे बगावत के लिए भी केवल सरफरोशो से काम नही चलता। बगावत भी एक 'बिग बिजिनेस बन चुकी है और टिकिय चोटट बगावत नही कर सकत। आशाराम चूकि कम्युनिस्ट है इसलिए उसे यकीनन पाकिस्तान और चीन से मदद मिल रही होगी। यदि यह क्लियु हाथ लग जाये तो हो सकता है कि वह 'रा' के चीफ भी बना लिये जायें।

लैला को चूकि जासूसी उपन्यास पढने की लत थी इसलिए वह एक जवान 'मिस मापुल'[1] के खवाब भी देखा करती थी। खुर्शीद आलम खा को लला की यह कमजोरी मालूम थी। तो उन्होंने लला को अपने राज म शरीक कर लिया और चूकि लैला मिसेज गाधी की फन भी थी इसलिए उन्होने लैला से यह भी कहा कि मिसज गाधी उसे शुक्रिय का खत भी लिखेंगी। फिर क्या था ! लला नशे म आ गयी। इतना तो उसे जासूसी उपन्यासा के पढने स ही पता चल चुका था कि यह काम राजदारी के होते हैं और किसी को कानो कान खबर नही लगनी चाहिए पर बटू कोई ऐसा वैसा नही है।

यह बटू लैला का ब्वाय फ्रेंड था। दोनो शादी वादी नही करना चाहत थे। बस यू ही एक सिलसिला सा चल रहा था। बटू का पूरा नाम बनवारी लाल था। पेंटर था। लला चुपके चुपके उसके लिए मॉडलिंग किया करती थी कि कला की सवा करने का भी लला को बडा शौक था। वह इधर उधर मिला करत थे। लैला एक अबाशन भी करवा चुकी थी। बटू एक बोहीमियन था। रिश्तो का नही मानता था। हर बात भड से कह दिया करता था और यही लला को अच्छा लगता था। और इसीलिए वह पहली बार उसके लिए माडलिंग

१ आगाथा क्रिस्टी का एक कैरेक्टर। यह बुढ़िया घरेलू बातें और मिसालो से बडे-बड जुर्मों का पता चला लिया करती है और असली मुजरिम की तरफ इशारा कर देती है जिस पर कभी पुलिस की आँख ही नही पडती।

करने पर तैयार हुई थी।—धीरे धीरे बटू ने उससे कहा कि तमाम ओल्ड मास्टर्ज ने 'न्यूड' बनाये हैं। उसके बिना चित्रकला सम्पूर्ण नहीं होती। और वह 'न्यूड' की मॉडलिंग के लिए कहां से लड़की लाये। उस वक्त तक लैला उसकी महानता की कायल हो चुकी थी इसलिए राजी हो गयी। और जब एक बार कपड़े उतर गये तो उतर गये। एक ग्रेट आर्टिस्ट की कीप बनने में वह किसी की पत्नी बनने से ज्यादा खुशी महसूस करने लगी। पत्नी बनने में क्या धरा है!—अब जिस आदमी से उसने अपना बदन नहीं छिपाया था उसे के० बी० ए० की बात क्या छिपाती?—तो उसने बटू को बता दिया कि वह सी० बी० आइ० की मदद कर रही है के० बी० ए० साजिश का पता चलाने में। और यह काम इतनी राजदारी से हो रहा है कि लोकल सी० बी० आइ० क्या यू० पी० की सी० बी० आइ० को इसका पता नहीं है।

लैला को बटू के बारे में और सबकुछ मालूम था पर यह नहीं मालूम था कि वह उत्तर प्रदेश में सी० बी० आई० का इनचार्ज है। बटू ने उसे यह बात इसलिए नहीं बतायी थी कि यह बताने से उसके आर्टिस्ट होने का इमेज बिगड़ता था। और वह खुद भी इमरजेंसी लगने के बाद से युनिवर्सिटी के विद्यार्थियों और टीचरों के खिलाफ जासूसी करने का काम कर रहा था और उसी के इशारे पर युनिवर्सिटी के कई विद्यार्थी और टीचर 'मीसा' के चंगुल में आ चुके थे।

लैला तो फुलझड़ी छोड़कर चली गयी। पर बटू चकरा गया। यह कैसे हो सकता है कि आशाराम कोई इतनी बड़ी कांसपिरेसी करे और उसे हवा तक न लगे! पर यदि दिल्ली में खुर्शीद आलम साहब आ गये हैं तो यकीनन कोई खास बात होगी और यदि उन्होंने इस साजिश का पर्दाफाश कर दिया तो उसका और उसके पिता का क्या होगा! उसे तो यह भी नहीं मालूम था कि खुर्शीद आलम कितना जानते हैं। लैला को उन्होंने सारी बातें थोड़ी बतायी होंगी। हो सकता है कि वह आज-कल में आशाराम को पकड़ ही लें। मतलब कि शायद इतना समय भी नहीं कि वह अपने पिता से राय ले सके। ऐसी बातें फोन पर तो नहीं हो सकती—इसलिए उसने वह किया जो आम तौर पर पुलिस के लोग या पुलिस के एजेंट नहीं करते। आशाराम को खुर्शीद आलम या तो नहीं पकड़ेंगे। इसलिए उसने उसी वक्त उस अखबार के आफिस का फोन घुमाया जिसमें आशाराम काम करता था। आशाराम से उसकी हल्की-सी मुलाकात भी थी कि अपनी विचारधारा में वह 'लेफ्टिस्ट' था।

'मैं बटू बोल रहा हूँ।' उसने आशाराम के फोन पर आने के बाद कहा।

'क्या हाल हैं?' आशाराम ने पूछा।

"वह जो कल कही बाहर जानेवाले हैं ना ?" उसने कहा।

"मैं ? नही तो।" आशाराम ने कहा।

"मझसे क्या छिपाना।" बट्टू ने कहा। "हो सकता है कि कुछ अनवाटेड लोग आपस आज ही मिलने आ जायें। इसलिए कल की जगह आज ही चले जाइए।" उसने यह कहकर फोन बन्द कर दिया। किसी स्विच बोड से गुजरने वाली बातचीत मे वह इससे ज्यादा कह भी नही सकता था।

पर आशाराम सिलसिले के कट जाने के बाद रिसीवर की तरफ देखता रह गया। उसकी समझ मे उस बातचीत का मतलब ही नही आ रहा था।—और फिर उसकी समझ मे बात आ गयी।

दो दिन के बाद खुर्शीद आलम खां ने आशाराम से बात करने का फैसला किया। पर जब तक तो आशाराम कहा का कहा पहुच चुका था। पता चला कि दो दिन से वह आफिस ही नही आया है। यह सुनकर खुर्शीद आलम खां के हाथो के तोते उड गये। वह अपनी भेजी हुई वह रिपोर्ट तो अब वापस ले नही सकते थे जिसमे उन्होने यह लिखा था कि कटरा मीर बुलाकी सचमुच एक गहरी साजिश का गढ है और उन्हे यकीन है कि वहा बमो का कोई कारखाना जरूर है। हो सकता है कि नोट भी छापे जाते हो। आशाराम ही के० बी० ए० साजिश का सरगना है इसलिए उन्होने उसे गिरफ्तार करने का फैसला कर लिया है—और उन्हे यकीन है कि वह आशाराम से उसके साथियो के नाम और बमो के कारखाने का पता पूछने मे कामयाब हो जायेंगे।—बमो के कारखाने की तरफ से वह जरा फिक्रमन्द नही थे क्योकि कही से बमो का कारखाना बर आमद कर लेना कोई मुश्किल काम नही था। सवाल तो यह था कि अब वह आशाराम को कहा से बर-आमद करें

इसलिए एक पुरानी मस्जिद के खँडर से उन्होंने बमो का एक कारखाना तो बर-आमद कर ही लिया कि दिल्ली से कुछ तो कह सकें। जिस दिन पुलिस ने मस्जिद के खडर पर छापा मारा उस दिन सारे कटरे मे खलबली पड गयी। हिन्दुओ और मुसलमानो दोनो ही ने बुरा माना और तब फैसला किया गया कि आकाशवाणी से कटरे ही के लोगो की जबान से इमरजेंसी की तारीफ कर वायी जाये। और यू शम्सू मिया का इन्तिखाब किया गया। शम्सू मिया मे, मौके के लिहाज से, दो खूबिया थी। एक तो यह कि वह मुसलमान थे और दूसरी यह कि कटरे वाले उनकी बडी इज्जत करते थे। परन्तु जो सिर्फ शम्सू मिया का बयान आकाशवाणी से सुनवाया जाता तो मुमकिन है एलाहाबाद वाले यह सोचते कि सरकार लीपा पोती कर रही है क्योकि शम्सू मिया तो बाबू

गौरीशकर पाण्डेय के आदमी मशहूर ही थे इसलिए पहलवान, दश और बिल्लो को भी चुना गया कि इन लोगा की भी कटरे मे बडी इज्जत थी और यू भी सरकार आम लागो स इमरजेंसी की तारीफ करवा-करवा के देश के तमाम लोगा को यह यकीन दिलाना चाहती थी कि इमरजेंसी वाकई बडी अच्छी चीज है और जो लोग इमरजेंसी के विरोधी हैं वह वास्तव मे देश-द्रोही हैं—सरकार आम लोगा को बडी हद तक यह बात समझाने मे सफल भी हो गयी थी। इसीलिए देश न तो आकाशवाणी वालो से साफ कह दिया था कि सच बोलने का पैसा तो वह ले नही सकता। उसके यह कहने से आकाशवाणी वाले चपलकश मे पड गय कि अब क्या करें। कोई झूठ बोले या सच पर आकाशवाणी वाले पैसा दिय बिना तो बुलवा नही सकते।

बडी मुसकिल दस ए पर तैयार भया कि ठीक है ता हमरी बुलवायी परा-इम मिनिस्टर फण्ड म दे दी जाय।" पहलवान ने कहा और बीडी का बण्डल इतवारी बाबा की तरफ बढा दिया। इतवारी बाबा ने चुन के एक बीडी निकाली और अँधेरे म उस दखने के बाद बोले

'लाल महम्मद बीडी मे अब ऊ पहिले वाली बात नही रह गयी है।"

पहलवान अपनी बीडी सुलगान म लगे हुए थे इसलिए कुछ न बोले।

'एहू के बारे मे दू लफज काहे न बाल देत रेडियो पर कि इमरजेंसी साहब लाल महम्मद स कह कि पहिल जयसी बीडी बनाना शुरू कर दें नही तो मीसा म पकड के बन्द कर दिये जायेंग।'

'चूतियापन्ती की बात मत किया करो। पहलवान ने दियासलाई का शोला इतवारी की तरफ बढात हुए कहा। 'रेडियो पर ऐयसी छोटी छोटी बात ना कही जाती।"

बीडी छोटी बात ना है। इतवारी ने कहा। "आजादी के पहल दाम का रहा एक बण्डल का ?"

"अँह।' पहलवान खडे हो गय। 'माँ चुदाव अपनी। अधेरी जमीन पर पच से थूककर वह आगे बढ गय और इतवारी बाबा अपनी सुलगी हुई बीडी के साथ जनता लाण्डरी के अँधेर तख्ते पर अकेले रह गये और बडी सजीदगी स यह सोचन लग कि पत्ता वही है, सुर्ती वही है, धागा वही है। फिर तीस बरस मे बीडी का दाम जमीन से आसमान पर क्या चला गया ?

इतवारी बाबा यह सोचत हुए लेट गय कि यदि उन्ह भी आम लोगा की तरह कपडा-लत्ता खरीदना पडता और घर गृहस्थी का बाझ उठाना होता ता इतिए टट' हा चुका होता अब तक।—उनके ठीक सामन अँधेर रास्त पर

पहलवान चले जा रहे थे अपनी बीडी पीते।

पहलवान ने बीडी फेंक दी। इतवारी के कहने के बाद से उस बीडी का मजा वाकई अजीब सीठा-सीठा-सा लगने लगा था। और पता नही बिल्लो ने कुरते और लुगी पर ठीक से इसत्री की कि नही। ए भायी कही ऐयसा न होय कि उहाँ ठीक समय पर न पहुच सकें। सरकारी मामला है। ज़रा देर हुई और पता चला कि नैनी[1] मे बयठे चक्की पीस रहे हैं।

यह डर बिल्कुल नया था। अग्रेज़ो के ज़माने म भी हज़ार तरह के डर थे पर यह नही था। एक अनदेखी हथकडी वातावरण मे झूल रही थी और किसी को पता नही था कि वह कब किसके हाथ मे पड जायेगी।

पहलवान को इस डर की पूरी चेतना नही थी फिर भी एक बचैनी सी तो थी ही। उन्होने बण्डल से बीडी निकाली। फिर इरादा बदल गया। वही बीडी है ना। बीडी को उन्होने बण्डल मे वापस रख दिया। कही दूर से किसी मुग के बाँग देने की आवाज़ आ रही थी।

साला।" पहलवान ने कहा। 'इमरजेंसी लग गयी है तो साला बखत से पहले ही बाग देवे लगा।" एक रिक्शे की घण्टी की आवाज़ पर वह मुडे। सामने अँधेरा था। उस अँधेरे से घण्टी की आवाज़ आ रही थी। फिर रिक्शे की परछाइ उभरी। पहल्वान एक तरफ हो गये। जब रिक्शा पास से गुज़रने लगा तो बदर की आवाज़ आयी "अरे आप एतनी रात गये याहाँ क्या कर रहे हैं साहब ?"

"तू कहाँ जा रह हो ?' पहलवान ने पूछा।

एक दास्त की शादी है। पानीपत बरात जा रही है।"

"ताहरियो सादी होगी कि दोस्तने सादी मे सरीक हो होके जिन्दगी गुजार दोगे ?"

रिक्शेवाला हँस पडा।

'चुप। भोसडी के।" पहलवान ने उसे डाट पिलायी। "इमरजेंसी म भी बेवत्ती के रिक्सा चला रहा।" रिक्शेवाला सर खुजलाने लगा और पहलवान बदर से मुखातिब हो गये 'हम देख रहे कि अब हम्म तोरी सादी के बारे मे कुछ करे को पडेगा। तोरे अब्बा से कुछ होय वाला ना है।"

"नही चा, यह बात नही है।" बदर ने कहा। "शम्सू चा और अब्बा मे आज बात हो गयी। अगले चोद की बारह को निकाह हो जायेगा इशाअल्लाह।"

---

१ ननी सेंट्रल जेल, एलाहाबाद

"चलो, भगवान तुम दोना को खुस रक्खे।" पहलवान न कहा। "तोरी गाडी का बखत हो गया कि दू मिनट है ?"

"काफी वक्त है अभी।"

पहलवान ने जी कडा करके बीडी सुलगा ही ली।

"भायी हम्मे इ बताव कि रेडियो पर बोला कयसे जाता है। तू तो कानी कै बेरी मुसहरा पढ चुके हो। मतलब कि बहुत जोर-जोर से बालना पडता होगा न ?"

'नही साहब। न जोर स बोलना चाहिए न धीर स। बस जैसे आप बोलते हैं वसे ही बाल दीजिएगा।"

"ए भायी आदमी दूर होता है त हम चिल्ला के बोलत है। करीब होता है तो धीरे धीरे बोलते हैं।"

"जसे आप इस वक्त मुझस बातें कर रहे हैं।"

'अच्छा—" और ज़रा-सा चूतड उठाकर उन्हान पादना शुरू किया। रात क सन्नाट मे यह आवाज़ जो एक दम से आयी तो रिक्शेवाला चौंक पडा और उसके चौंकन पर बदर को हँसी आ गयी और वह हँसत हुए बोला "वहाँ, रेडियो स्टेशन पर यह मत कीजिएगा।"

'ल्यो।' पहलवान न कहा, 'हम्मे एक दम्मे स चूतिया समझ लिय हो का ?"

रिक्शा आग बढ गया। और पहलवान को फिर लुगी कुरत की समस्या ने आ दबोचा। तो उन्हान सोचा कि चलके बिल्लो से पूछ ही लना चाहिए। बीडी फेंककर वह लम्बे-लम्बे डग भरते बिल्ला के घर की तरफ चल पडे।

पण्डित शिवशकर पाण्डेय मार्ग' पर रात उतनी अँधेरी नही थी। यान की बत्तियाँ जल रही थी। बस कही-कही, जहा बल्ब फ्यूज हो गये थे वहाँ रात के धब्बे-से ज रूर थे। उनकी आहट पर एक आवारा कुत्त ने सर उठा उनकी तरफ देखा फिर कुछ सोचकर उसने भाकने का इरादा खत्म कर दिया। पहलवान उसकी तरफ देखते हुए बिल्लो के घर की तरफ बढ गये।

दरवाजे पर रुककर वह ज़रा हिचकिचाये कि इतनी रात गये कुण्डी बजायें या न बजायें। और हो सकता है कि वह कुण्डी बजाये बिना लौट आय होते। पर अन्दर स बिल्लो और देश की बाना की आवाज़ आने लगी और उन्हाने कुण्डी बजा दी।

दरवाज़ा खुलने मे देर नही लगी। देश न दरवाज़ा खोला। वह पहलवान को देखकर चौंक पडा।

'ऐयसे बक्र-बक्र हमरा मुह देख की ज़रूरत ना है। पहलवान यह कहत

हुए घर मे आ गये। देश ने किवाड फिर अन्दर से लगा दिया। पहलवान ने देखा कि सामने दालान म बिल्लो हाथ मे चाय का प्याला लिये खडी है।

मामा को देखकर बिल्ला भी चकरा गयी। पर मामा आराम से चारपायी पर आल्थी पाल्थी मारकर बैठ गये।

देश बावरचीखाने से एक प्याली लेता हुआ आया। बिल्लो और देश मे से किसी ने यह पूछना मुनासिब न जाना कि इस वक्त क्या आये है। हालाकि दोना सोच यही रह थ और थाडे परशान भी थे। पर लगता था कि जैस पहलवान किसी जल्दी मे नही हैं। बात यह ह कि उन दाना का जागता पाकर खुद पहलवान इस सोच म पड गय थे कि यह दोना इतनी गयी रात तक जाग क्यो रह है। कही दोना म किसी बात पर बगडा तो नही हा गया ? तो वह इस बात पर झेंप-झेंपे से बैठे थे कि शायद ब मौका आ गय है। पर आ गय हैं तो एकदम स उठ के चले भी नही जा सकते। थोडी देर तो बैठना ही पडेगा। तो यह दिखाने के लिए वह लट गय कि इधर से गुजर रहे थ इसलिए वहा भी आ गय।

बिल्लो न केतली से प्याली म चाय उँडेली और प्याली उनकी तरफ बढायी। चाय की प्याली लेन के लिए वह फिर उठ बठे और साँसर म चाय उँडेलने लग। फिर दा एक बार फूक मारकर उन्होन पहला सडाका भरा और देश को लगा जस उनके शडाके की आवाज कोस दो कोस तो जरूर गयी होगी।

'आज साली नीदे ना आती रही कोयी तरह।" पहलवान ने सासर का बडी एहतियात से चारपायी की पटटी पर टिकात हुए कहा। फिर बीडी के बण्डल के लिए उन्हाने जेब म हाथ टाला। चारपायी हिली। चारपायी हिली तो साँसर भी हिला और देश ने जल्दी स झुककर हाथ लगा दिया। पहलवान ने बीडी सुलगायी और एक लम्बा कश मारन क बाद बोले "तो हम चले गये इतवरिया कि हा। ऊ ससुर लगे ओ ही ईर घाट मीर घाट की हाके। तो हम अपनी जान बचा के भाग उहा से।" वह दश की तरफ मुडे जो साँसर सँभाले बैठा हुआ था और बोले रस्त मे का देखत है कि तोरे मास्टर बदर बारिया-बिस्तर सभाल खस पर बैयठे चले जा रहें। हम पूछा। भयी किधिर चल्यो। तो बोले कि कोयी दाम्त की सादी म—हा, पानीपत जा रह। तो हम कहा कि जाते-जात ई बतात जाव कि रेडिया पर कैस बोला जाता है। बस ऊ सुरू हा गये कि न धीरे न तेज। ई तो बहुत चक्कर म फँस गय हमर लोग।

"चक्कर क्या है " दश ने कहना गुरू किया।

"चक्कर है कैयस नही।" बिल्लो ने बात काटी। "ई बखत हा गया एही

बात पर सोचते-सोचत ।'

पहलवान ने इतमीनान का सास लिया कि दोनो मे झगडा नही हुआ है ।

"हमरे कुरत-लुगी पर इसतिरी कर दिये हो कि ना ?" पहलवान न पूछ ही लिया।

'सामे को कर दिया रहा ।"

'हमरे खयाल मे तो नहाना धोना सुरू कर देना चाहिए ।' दश न कहा ।

"उहा साढे दस बजे पहुचे को है न ।" बिल्ला न कहा । "ता आधी रात स तैयारी सुरू करे की का जरूरत है ?'

"खैर आधी रात तो तुम गलत कह रही हो ।' देश ने अपनी कलाई पर बँधी घडी दखते हुए कहा । 'साढे चार बज रहा । हम तो कहत ह मामा," वह मामा की तरफ मुड गया, "कि सरकारी मामला है । घण्टा भर पहिल पहुच म कोयी नुकसान नही है ।'

"और का ! ' पहलवान ने कहा । "आकाशवाणी की घडी तेजो हो सकती है । ऐयसा न होय कि हम तो पहुचे उहाँ अपनी घडी दख के और पता चले कि उहा की घडी तो साढे बारह बजा रही । पता चला उहयो मे भीतर कर दिये गये ।"

"हाँ तो अभयी काह ना चल चलें ।' बिल्ला ने जलकर कहा । 'घडी तेज हो जायेगी ।' वह बरतन समेटती बावरचीखाने की तरफ चली गयी । पहलवान ने अपने सासर की तरफ देखा । देश अब तक उसे सँभाले हुए था । उन्होने बीडी देश को थमाते हुए सॉसर उठा लिया और दूसरे शडाके मे सॉसर की चाय नीचे उतर गयी । और वह खडे हो गये और जरा जोर मे बोले 'हमरा लुगी कुरता दे दयो कि हम चल के तैयार होना सुरू करें । तू बैयठ के घडी दखो ।'

बिल्ली बरतन खँगालने बठ चुकी थी । कलाई मे माथ पर आये हुए बाल हटाती हुई बोली "हमरा हाथ बझा है । मामा का कपडा निकाल दयो । अरजट धोया है । डेढ रुपया धोलायी । एक रुपया इसतिरी करायी । अढायी रुपया ले लीहो ।"

"हम घर से पैंयसा लेके ना आय हैं ।" मामा ने फरयाद की ।

"अच्छा कल द दीहो बाबा ।"

'पैंयसा ना छोडेवाली है ।' दश ने भुनका । "हमसे ता पेसगी धरवाये लगी है ।

'एही मारे हम बिआहे ना किया ।' मामा ने कहा ।

'का खुसुर-फुसुर हो रही ? बिल्ली ने पूछा ।

"अरे नाही र।' मामा ने कहा, "दुसरी बात है।"

'का हे दुसरी बात ?" बिल्लो ने पूछा।

"तोको कैसे बतायें !" मामा ने बेचारगी से कहा, "मर्दानी बात है।"

इस बीच म देश ने उनके कपड़े उन्हे थमा दिये और वह सर खुजलाते चले गये। देश बावरचीखाने मे जाकर बिल्लो के पास बैठ गया और बरतन धोने मे उसका हाथ बँटाने लगा।

"अब जमीन पर ऐसे बैठे म तकलीफ हो है।" बिल्लो ने कहा।

उसका पेट काफी निकल आया था। देश ने उस निकले हुए पेट की तरफ बड़े प्यार से देखत हुए कहा "हम्मे तो लग रहा कि भगवान हमरी और तोरी अपलिकेसन एक साथे मजूर कर दिहिन हैं।"

"का ?"

"एतन डबल पेट म खाली एक बच्चा तो हो ना सकता।'

बिल्लो ने जल्दी से पेट को साडी से छिपा लिया। और पेट को यू साडी से छिपाती हुई बिल्लो उसे तमाम हेमामालनियो, तमाम रेखाओ, तमाम राखियो और तमाम जीनत अमानो से कही ज्यादा खूबसूरत दिखायी दी और उसे इतना प्यार आया कि उसने उसे गोद म उठा लिया और उसकी फरयादा के बावजूद आँगन पार करके दालान तक ले गया और फिर उसने इसे इतनी आहिस्तगी से चारपायी पर रक्खा जसे बुढिया के काते की बनी हुई औरत हो

वह दोनो यह भूल गये कि उन्हे साढे दस बजे रेडियो स्टेशन पहुचना है।

'हम सोच रह कि एको भी तो एक ठो कमरा चाहिए।' देश ने कहा।

कमरा का होगा !"

"क्या ?" देश ने कहा। "लडकी बडी होगी तो माँ-बाप के साथ रहेगी का ?'

लडकी होबे ना करिहे।" बिल्लो बोली।

"तू जिद बहुत करे लगी हो।"

काह ना करें जिद ?"

देश के पास इस सवाल का क्या जवाब हो सकता था ? कुछ नही। तो वह चुप रहा गया और बिल्लो के निकले हुए पेट की तरफ देखने लगा और बिल्लो ने बडे प्यार से उसके मुह को दूसरी तरफ फेर दिया।

"आज महनाज बाजी आयी रही।"

"ऊ कसे रस्ता भूल पडी इधिर का ?"

"समझाये आयी रही कि अब तोरी नसबन्दी हो जाये को चाहिए। जोखन

चाचा तो ऊथ कांग्रेस की महल्ला कमेटी के सदर हो गय हैं। महनाज बाजी इहो बताती रही कि बाबू साहेब के पिता पण्डित बानी कौन की पचीसवीं बरसी में सजेय गाँधीयो आयेवाले हैं। शम्सू चचा ऊ जसन कमेटी के बानी का हो गये हैं। टेलिवीजन वाले आके फोटो उतरिहे ऊ जसन का। लता मगेसकर बुलायो जा रही गाये के वास्ते और दलीपकुमार आयेवाले हैं पण्डितजी की फोटो को फूलमाला पहिनाये के वास्ते "

"हम तो सुना रहा कि सजय गाँधी आ रह।'

'ऊ तो आ ही रह।" बिल्लो ने कहा 'उनका बहुत बड़ा जलूस निकले वाला है। महराज रीवा का हाथी आ रहा उनकी सवारी क वास्त। रेडियो वाल ऊ जलूस और आम सभा का आँखो देखा हाल सुनेंगह देस-भर को '

रेडिया की बात निकली तो उन्हे अपनी रिकार्डिंग याद आ गयी और वह फिर परशान हो गय।

'चले की तैयारी करे को चहिए अब।' बिल्लो ने कहा।

'अभईंए से ?' देश ने पूछा।

'मामा ठीके कहत रह।" बिल्ला बोली "थोडी देर पहिले पहुचे म कौनो शान थोडे घट जैयहे।"

देश का मूड तैयारी करने का नही था। वह तो अभी बहुत देर तक फूल हुए पेटवाली इस बिल्ला को चुपचाप देखत रहना चाहता था जो उसे आज भी और इस आलम मे भी दुनिया की सबसे खूबसूरत औरत दिखायी दे रही थी। पर वह यह भी जानता था कि बिल्लो की बात टाली भी नहीं जा सकती।

'पहिले तू नहा ल्यो।' देश ने कहा, 'हम तो मरद जात हैं। दुइ मिनट म तैयार हो जाँगे।'

बिल्लो यह बात मान गयी।

उसके चले जाने के बाद भी देश देर तक उस चारपायी पर प्यार स हाथ फेरता रहा जैसे बिल्लो लेटी हुई हो। उसे जिंदगी से कोई शिकायत नही थी। उसका गैरेज मजे म चल रहा था। बैक का कर्ज उतरता जा रहा था। जनता लाण्डरी भी धूम मचाये हुए थी। बस एक बेटी हो जाय तो उसकी जिंदगी भरपूर हो जाये। किसी चीज की कमी ही न रह जाय। पछत वाले गुस्ल खाने से बिल्लो के गुनगुनाने की आवाज आ रही थी। गीत के बोल साफ नही सुनायी दे रहे थे। पर यह जरूर पता चल रहा था कि बिल्ला बहुत खुश है। और बिल्लो की खुशी के सिवा देश को चाहिए क्या था। वह उठा और पजो के बल चलता हुआ गुस्लखाने की नीचे पर्दे की दीवार के पास रुका। बिल्लो

की गुनगुनाहट बन्द हो गयी थी और चूड़ियाँ तेजी से बजने लगी थी। शायद वह साबुन लगा रही थी। क्युटीकोरा साबुन की खुशबू उसके नयना को छूने लगी। वह पजा के बल उठकर गुस्लखाने म झाकने लगा।

बिल्लो अपने नगे बदन मे साबुन लगा रही थी। उसके नगे बदन के साथ उसका फूला हुआ पेट बडा अजीब लग रहा था। वह बठी भी कुछ अजब तरह से थी। फसकडी मार के क्योकि अब नीचे बैठने म उसे परेशानी होती थी।

बिल्लो देश की आखो से बेखबर बदन पर साबुन लगाती रही। फिर जरा जोर स बोली, "चूल्हे पर चाय का पानी चढा दो। हम दु मिनट मे निकल रह।"

'अच्छा।' देश ने कहा।

इस कदर पास से जो उसकी आवाज आयी तो बिल्लो ने चौंककर देखा और उसे सामने से झाकता पाकर घबरा गयी और उसने अपने बदन को दोनो हाथो से छिपाने की नाकाम कोशिश की। प्यार स शमायी हुई आवाज मे बोली 'बेसरम कही के।"

देश हँसता हुआ बावरचीखाने म चला गया और चूल्हा जलाने लगा। कोई मिनट भर के बाद बिल्लो तौलिये मे अपने लम्बे बालो को झटकती हुई निकली और आगन म पडे हुए बँसखट पर बैठकर बाल सुखाने लगी।

"तुह ऊ दिन याद है जे दिन तूसे कानी केकी साडी जल गयी रही जेका दाम भर को पडा रहा?"

"क्या?"

"ओ दिन हम तोसे झूठ बोले रहे।" देश ने कहा। "हमसे कोयी की गाडी का पुजा उर्जा ना टूटा रहा। हम महनाज के मियाँ के वास्ते रिस्टवाच खरीदे के वास्त झूठ बाले रह कि त ऐयसे तो खरीदे ना देवे"

देश समझ रहा था कि इतने बरसो बाद भी यह बात सुनकर बिल्लो दर गुजर करनेवाली नही है। पर यह कहकर वह अपनी छाती स एक बोझ हटाना चाहता था। उसने बोझ हटा दिया। पर बिल्लो के कहकहे के लिए तो वह तयार ही नही था। वह घबरा गया। उसने बिल्लो की तरफ देखा। वह हँसते-हँसते बहाल हुई जा रही थी।

"ए मे हँस्से की का बात है?" देश जरा सा बुरा मान गया।

'ओ दिन हमहू झूठ बोले रहे। साडी ओडी ना जल्ली रही। महनाज के मियाँ के वास्ते साइकिल खरीदना रहा कि तू तो साइकिल के नाम पर चिल-पो मचाये लगिहो।"

"हें।"

और फिर देश भी हँसने लगा।

"हम कै दिन से ई सोच रह कि अब अकेले काम ना होता। उस्ताद को भी साथ लगा लें। बाबू साहब को तो लीडर बनना रहा। बन गये। उस्ताद बिचारे वैसे ही गलत नम्बर की ऐनक लगाये घूम रह। एक दिन महनाज मिल गयी तो हम बहुत डाट पिलाया कि फैसन करके नसबन्दिये कराती फिरिहो कि उस्तादो की तरफ दखिहो कभी। एक ठो ऐनक बनवा दो। तो महनाज कहे लगी कि हम तो ऐनक की दुकान खुलवा दें अब्बा को पर वह मानें भी।"

'काह ना मानते?'

"दमाद के पैंयसे से ऐनक ना लगा सकते ऊ।" देश ने कहा, 'और अब्दुल-हक ससुर पाकिस्तान मे जमे बैंयठे हैं। और अपने को हम का कह "

बिल्लो समझ गयी कि देश से शम्सू मिया के बिना जिया नही जा रहा है। तो उसने बात बदल दी। बोली, "जब तक पानी खौले खौले तुम नहा ल्यो।"

देश नहाने चला गया।

ओलती से उजाला आगन मे बरसने लगा और ज़मीन से आसमान तक एक दूधिया रोशनी फैल गयी। चिडिया घोसला से निकलकर आगन म उतर आयी और एक कव्वा रोज की तरह न जाने कहाँ से उडता हुआ आया और तार की अलगनी पर बठकर पहले तो तार पर चोंच घिसता रहा और फिर न जाने क्यो आवाज़ें देने लगा।

बिल्लो ने नयी साडी बाध ली जो खास रेडियो स्टेशन जाने के लिए बडी और छोटी तमाम दुकानो के चक्कर लगाकर खरीदी गयी थी। फिर वह चप्पल पहनी गयी जो साडी के रग से मैच करने के लिए शहनाज के कहने से खरीदी गयी थी। शहनाज खुद साथ गयी थी और चप्पलो को साडी के साथ लगा-लगाकर उसने बडी मुश्किल से एक चप्पल पसन्द की थी। फिर उसन पहली बार लिपस्टिक लगायी। यह लिपस्टिक और इसके साथ की कई चीज़ें आशाराम ने उसे शादी पर दी थी। लिपस्टिक लगात-लगाते वह आशाराम को याद करके उदास हो गयी। उसे यकीन नही आ रहा था कि आशाराम जसा शरीफ लडका ऐसी अच्छी सरकार का तख्ता उलटने के लिए मस्जिद मे बम बनायेगा। पर लैला के मामूं को झूठ बोलने की क्या जरूरत है? कौन कहे कि आशाराम से उनकी कोई जाती लडाई है उसन आईने मे अपना मुह देखा। चेहरे पर थोडी सूजन थी। सूजन तो थोडी थोडी सारे बदन पर थी। पर सकीना ममानी कह रही थीं कि बच्चा होय म ऐयसा हो जाता है

देश चाय लेकर आ गया। वह उसकी तरफ देख के मुस्कुरायी। वह अपनी आखें मलने लगा और फिर उसे देखकर उसी से पूछने लगा, "मेम साहब, इहां हमरी घरवाली बयठी रही। ऊ कहां चली गयी ?"

'हम नही जानटा।" मेम साहब ने गरदन अकडाकर कहा और फिर दोनो हंसने लगे। और अभी अपनी हंसी के बीच मे थे कि कुण्डी बजी और देश चाय की प्याली बिल्लो को थमाकर दरवाज़ा खोलने चला गया।

दरवाजे पर बुरका पहने शहनाज़ खडी थी। नकाब उठा हुआ था।

अरे अम्मा।' देश न कहा।

कीडा पडे आपकी ज़बान मे। बोहार जायें आपकी अम्मा " शहनाज दुआएं देती हुई अन्दर आ गयी और बुरका उतारती हुई बिल्लो से बोली, "अब्बा भेजिन हैं कि जाके बिल्लो को तैयार करवा दो। रेडियो स्टेशन का मामला है। देर नही होनी चाहिए पर आप तो तयार बैठी है।"

"उस्ताद भेजिन हैं ?" देश को यकीन न आया।

"नही तो क्या मुझको पागल कुत्ते ने काटा था कि मुहअंधेरे आ जाती।"

देश मुस्कुरा दिया। मास्टर बद्दुलहसन नायाबमछली शहरी के इश्क ने और कुछ सिखाया हो न सिखाया हो पर शहनाज़ को खडी बोली बोलना जरूर सिखा दिया था। और इस नयी भाषा के साथ शहनाज़ उसे कुछ अजीब सी लगन लगी थी। यह नयी भाषा सुनने मे अच्छी जरूर लगती है पर सुनने मे जसे अपनी नही लगती। बोलनेवाला भी जसे कोई और हो जाता है। महनाज न भी यूथ काग्रेस और नसबन्दी का मोर्चा सँभालने के बाद यही भाषा बोलना शुरू कर दिया था पर उसके बोलन में शहनाज़ के लहजे की सफाई नही थी। वह बोलती थी तो ऐसा लगता था जस हेमामालिनी का गाना लता मगेश्कर गा रही हैं।

"भामा की दुकान खुली कि नही ?" देश ने पूछा।

"आज कैसी दुकान !" शहनाज ने कहा, "उन्हे बाजी सिखला रही हैं कि कैस बोला जाता है रेडियो पर।"

बात यह है कि महनाज़ कटरा मीर बुलाकी' मे रेडियो की एक्सपट थी। महिलाओ के प्रोग्राम मे कई बार 'नसबन्दी' के बारे म होनेवाली बातचीत मे हिस्सा ले चुकी थी। वमे मास्टर बदर भी कई बार रेडियो पर शेर सुना चुके थे पर महनाज़ यूथ कांग्रेस की 'लीडर' थी। उसन कटरे की तमाम जवान लड-कियो और औरतो को यूथ काग्रेस मे भरती कर लिया था। एक दिन तो कटरे की औरतें बुरका पहन पहनकर और घूघट निकाल निकालकर कटरे की सफाई

पर उतर आयी। बाबू साहब ने प्रेस को बुला रक्खा था और देश-भर मे महल्ले की सफाई करनेवाली औरतो की तस्वीर छपी थी। औरतें तो नजर नही आ रही थी, हाँ बुरकें और घूघट जरूर थे। महनाज की तस्वीरें उनके इण्टरव्यु समेत उन्ही पत्र पत्रिकाओ म 'समाचार' के शुक्रिये के साथ अलग छपी थी यह तस्वीरें छपने के बाद से महनाज अपने आपको कटरा मीर बुलाकी की 'मिसेज गाधी' समझने लगी थी और वह चाहती थी कि महल्ले के लोग उसे यही कहकर छेडा करें

महनाज की रोशनी मे जोखन मियाँ दुकानदार भी नहाय खडे थे। दुकान पर बठने का उन्ह मौका ही नही मिलता था। वह नसबन्दी के लिए दौरे किया करते महनाज के साथ कभी लखनऊ, कभी रायबरेली, कभी बनारस

महनाज के असर के साथ-साथ उनका असर भी बढ रहा था। और महनाज ता अफसरा के तबादले के लिए सीधे मुख्यमन्त्री को फोन घुमा दिया करती थी। शहर मे उसका तूती बोल रहा था। लोग उससे डरते थे। हुक्काम उसमे राय लेने आत थे। सुबह से उसका दरबार शुरू होता तो गयी रात चलता रहता। कइयो की तकदीर बिगाडी जाती। कन्यो की नयी तकदीर लिखी जाती

उस लगभग अनपढ महनाज का यह रतबा न होता। पर हुआ यह कि अपनी एक तकरीर म सजय गाँधी ने उसका जिक्र कर दिया था। मिसाल देत-देते कह दिया था कि उत्तर प्रदेश की मुख्यमन्त्री कटरा मीर बुलाकी की महनाज जी भी हो सकती हैं सजय गाधी का यह मतलब हरगिज नही था पर यह 'खबर समाचारवाले ले उडे। आकाशवाणी ने इसे उछाला। लखनऊ टी वी पर समाचार के बीच महनाज की तस्वीर का इसशन आया और लोग समझ बैठे कि सजय गाँधी कह रहे हैं तो इसका मतलब यह है कि उत्तर प्रदेश की मुख्यमन्त्री तो वह होने ही वाली है। तो सरकारी एम० एल० ए० और एम० पी० लोग उसके गिद चक्कर काटने लगे और मुख्यमन्त्री की नीद हराम हो गयी। यह बात उसे बाबू गौरीशकर पाण्डेय एम० पी० ने बतायी कि उत्तर प्रदेश मे इस वक्त सबसे ज्यादा ताकतवर वही है। वह नही मानी, तो बाबू साहब ने कहा कि हाथ कगन को आरसी क्या है। घुमाव एक फोन मुख्यमन्त्री का। उन दिनो बाबू साहब डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट से बिगडे हुए थे इसलिए उन्होने फोन यह करवाया कि डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट नालायक है। यूथ काग्रेस के प्रोग्राम मे सरकारी सहायता नही देता इसलिए उसका तबादला किसी छोटे जिले म कर दिया जाय। शाम तक तार से तबादले का हुक्म आ गया और वह बिचारा दुपोरिया हँका दिया गया।

परन्तु उस दिन के बाद से महनाज़ बाबू साहब के काबू मे भी नही आयी। अब वह बाबू साहब से पूछे बिना मुख्यमन्त्री को फोन करने लगी और पत्र-पत्रिकाओ मे आये दिन उसके बयान और इण्टरव्यु प्रकाशित होने लगे तो दिल्ली ने भी उसके सर पर हाथ रख दिया और ग्रूप कांग्रेस के बडे-बडे लीडरो से उसकी सतबाजी शुरू हो गयी बम्बई के एक प्रोड्युसर ने उसे अपनी एक फिल्म मे हीरोइन का रोल भी आफर किया पर जोखन मियाँ इसके लिए तयार न हुए क्योकि फिल्म मे इतनी आमदनी कैसे हो सकती है। पर उस दिन एलाहाबाद के निरजन सिनेमा मे बीस मिनट तक तालियाँ बजती रही जिस दिन एक सरकारी डाक्युमेटरी मे पहली बार महनाज़ दिखायी दी। डयूक आफ विंडसर की तरह जोखन मिया पीछे-पीछे थे।

देखते देखते महनाज मे एक स्यासी समझ भी आ गयी और बाबू साहब डर कि कही वह आनेवाले चुनाव मे उनकी जगह पर पार्टी का टिकट न पा जाय। पर बिचारे मजबूर थे। कर ही क्या सकते थे। दरबारदारी करते रहते थे।

और यू देखते देखते कटरा मीर बुलाकी मे पहली दो मज़िलोवाली कोठी बनी जिसका नाम 'जोखन भवन' रक्खा गया जो थोडे ही दिना मे 'आनन्द भवन' से ज्यादा मशहूर हो गया। इसमे महनाज़ के आफिस का एक बडा कमरा था। मोटे गददो वाले सोफे, भदोयी की एक फैक्ट्री का दिया हुआ दबीज़ और मुलायम रेशावाला कालीन, दीवार पर सजय गाधी और मिसेज़ गाधी की तस्वीरें एक बडा मेज जिस पर दो इच मोटे काच का टॉप, एक चादी का कलमदान जिसकी दवाता मे रोशनाई कभी डाली ही नही गयी क्याकि वह 'माब्लाँ' कलम से दस्तखत किया करती थी।

उसके मेज़ से ज़रा हटकर उसकी सेक्रेट्री का मेज़ था। अपनी घूमने वाली कुरसी पर बठी हुई लला महनाज़ को नये फशनो के बारे म बताती रहती थी। महनाज़ ने उसी से मेक-अप करने की कला सीखी थी। बालो मे तेल डालना उसने छोड दिया था। नाखून लम्बे हो गये थे और उसपर नाखूनो के रग की नेल पालिश हर वक्त चमकती रहती थी। हफ्ते मे एक रात मड पैक लगता। बाल शम्पू से धोये जाते। बिजली के ड्रायर से सुखाये जाते। कलज़ लगाए जात। रात को पहले क्लेंज़िग मिल्क से मेक-अप उतारा जाता, फिर चेहरे पर कोल्ड क्रीम लगायी जाती, चेहरे का मसाज किया जाता और तब लेटने की नौबत आती। सुबह को सिट-अप्स, गहरी सासो के पाच मिनट और फिर शीश आसन। भवें टुईजर से उखाडी जाती। फाउनडेशन लगता। मेकअप शुरू होता।

फिर साडी लपेटी जाती। मचिंग ब्लाउज, मचिंग चप्पल, मचिंग रूमाल मैचिंग नल पेंट मचिंग बिंदिया, मचिंग बैग दूसरा दिन शुरू हो जाता। इसकी सिफारिश करनी है। उसे तरक्की दिलवानी है। उसे डिसमिस करवाना है। इस अखबार को इण्टरव्यु देना है। उस साप्ताहिक को अपना लेख भेजना है

पर मस्जिद से बरआमद होनेवाले बमों के कारखाने के बारे में बोलना उसने मुनासिब न जाना। लैला ने भी मना किया। पर वह सिर्फ तमाशायी बनी बैठी भी नहीं रह सकती थी इसलिए उसने आकाशवाणी को हुक्म दिया कि कटरा मीर बुलाकी के लोगों से इमरजेंसी की तारीफ करवायी जाय और यूं शम्सू मियाँ, बिल्लो और देश के नाम आकाशवाणी से बुलवा आ गया। बाद में महनाज ने मुनासिब जाना कि पहलवान को भी बुलवा लिया जाय। तो पहलवान भी बुलवा लिये गये।

"अरे आप घबराने क्यों है ?" महनाज ने पहलवान से शायद पचासवीं बार कहा, और यह कहने में उसने शायद पचासवीं बार ही 'अरे और 'घबराते के 'र' को रोटी की फोपी की तरह रेल किया कि लैला अपने र को यूं ही फाफी बनाया करती थी। "आई मीन कि डाच यू वरी" उसने अंग्रेजी में भी समझा दिया और लैला ने बड़ी मुश्किल से हँसी रोकी।

शम्सू मियाँ भी आ गये। महनाज के आफिस के वातावरण में शम्सू मियाँ कुछ ज्यादा ही गरीब नजर आये। महनाज जल गयी। वह अपने इस बेवकूफ बाप से झल्लायी-झल्लायी-सी रहने लगी थी। आदमी को कुछ तो दूसरों का ख्याल करना चाहिए। इन्हें किस चीज की कमी है ?पर यह बेटी की चीज को हाथ नहीं लगा सकते। वह एक जुडिशल मैजिस्ट्रेट से महनाज की शादी लगा रही थी। तो न वह मानी और न यह माने।

सच्ची बात यह है कि शम्सू मियाँ को महनाज की यह तरक्की अच्छी नहीं लगती थी। बेईमानी का पैसा दो दिन चलिहै तो उन्होंने महनाज से मिलना-जुलना भी कम कर दिया था क्योंकि उसके आफिस का चपरासी उन्हें अजीब निगाहों से देखा करता था। वह तो पाँचों वक्त की नमाज में यह दुआ माँगा करते थे कि सिविल लाइन वाला बँगला जल्दी से बन जाय और महनाज अपने बँगले में उठ जाय। पर हुआ क्या था कि बंगला आधा बन चुका था कि जमीन के किसी वारिस ने दावा ठोक दिया कि जमीन सरकार की थी ही नहीं तो उसने महनाज बेगम के हाथ रुपये गज के हिसाब से बेच कैसे दी। जमीन का मामला यह है और वह प्रार्थना करता है कि महनाज बेगम को बेदखल किया जाय

वह आदमी तो मीसा' में अन्दर कर दिया गया लेकिन वह मूल कारण के

किसी और नेता का रिश्तेदार था इसलिए पगडी उलझ गयी। वह छूट गया और महनाज ने उस मजिस्ट्रेट का तबादला करवा दिया जिसने उसे खुश करने के लिए उस आदमी को 'मीसा' में अन्दर कर दिया था। महनाज उस आदमी से मिलने उसके घर भी गयी। बाबू गौरीशंकर पाण्डेय साथ गये और उस आदमी को महनाज ने यकीन दिलाया कि उसकी गिरफ्तारी में उसका हाथ नहीं था। उस आदमी ने शायद यकीन भी कर लिया। पर वह जमीन छोड़ने पर तैयार न हुआ इसलिए मुकदमा चलता रहा। एक अदालत से वह हारा। दूसरी अदालत से वह जीत गया और अब केस हाई कोर्ट में था और बँगले की तामीर का काम रुका हुआ था और महनाज को मजबूरन उस गन्दे महल्ले में रहना पड़ रहा था। वह तो बाबू साहब के कहने से किसी किराये के बँगले में उठ गयी होती पर लला ने उसे समझाया कि यदि वह किसी किराये के बँगले में उठी तो उसकी पोलिटिकल इमेज' पर बुरा असर पड़ेगा। लोग चुनाव के दिनों में कह सकते हैं कि वह गरीबों से भागती है। अपने बँगले में उठने की बात और है। वह लला की बात मानकर रुक गयी। पर कटरा मीर बुलाकी उर्फ कटरा श्रीमती गाँधी में उसका जी नहीं लग रहा था। हर तरफ बदबू, हर तरफ गन्दगी जाहिलों का पड़ोस विदेशी मेहमानों को वह इस महल्ले में बुला नहीं सकती थी। अब बाबू शिवशंकर पाण्डेय की पच्चीसवीं में संजय गाँधी आ रहे हैं। जो उसका बँगला तयार हो चुका होता तो वह उन्हें डिनर पर बुलाती, पर यहाँ क्या बुलाये, बासमती चावल डोलों की तरह दिखायी देंगे प्लेटों में

"आदाब अब्बा।" उसने शम्सू मियाँ को सलाम किया।

"जीती रहो।" शम्सू मियाँ ने दुआ दी।

"क्या कोई और कोट नहीं है आपके पास कि यह पहनकर आप आल इण्डिया रेडियो जा रहे हैं?"

"का खराबी है ई कोट में?" शम्सू मियाँ ने अपने कोट की तरफ देखते हुए कहा, एक बटन गायब था। उसपर उन्होंने जल्दी से हाथ रख लिया, "चलो पहलवान, अब चला जाये नहीं तो देर हो जैहे।"

पहलवान उठ खड़े हुए। शम्सू और पहलवान दरवाजे की तरफ मुड़े और ठीक उसी वक्त बिल्लो के साथ-साथ देश दाखिल हुआ।

बाबू गौरीशंकर लाल पाण्डेय एम० पी० के घरवाले डिनर की रात के बाद अब देश और शम्सू मियाँ का आमना सामना हुआ। इतने पास से कि दोनों ने एक-दूसरे की आखों की घबराहट देख ली।

"सलाम उस्ताद।" देश ने कहा।

'जीते रहो।" उस्ताद ने जवाब दिया।

वफ नही पिघली।

पहलवान ने दोना की तरफ देखा। बोले, "बस अब दूनो जने ई चूतिया चक्कर खतम करत जा।"

और वह दोनो शायद इसी इन्तिज़ार म थे कि कोई कहे तो वह यह 'चूतिया चक्कर' खत्म करदें। दोना ने वह 'चूतिया चक्कर' खत्म कर दिया।

शम्सू मियाँ की आँखें भीग गयी। देश झेंपकर इधर-उधर देखने लगा।

उन दोना ने एक दूसरे को सामने पाकर पूरी तरह यह महसूस किया कि वह एक-दूसरे के बगैर अधूरे थे। दोना को अब्दुलहक याद आ गया। देश आसू पी गया पर शम्सू मियाँ उस लिपटाकर बच्चा की तरह रोने लगे।

सबने उन्ह रोने दिया। फिर वह खुद ही चुप हुए और आसू पोछत हुए पहलवान से बोले, "हमरे खयाल म अब चलना चाहिए।"

किसी ने जवाब नही दिया। लैला अपने नाखून को रेती से घिस रही थी। महनाज़ सामने रक्खे हुए एक सकुलर को 'पढ' रही थी। पहलवान, शम्सू मियाँ और बिल्लो को लकर देश महनाज़ के आफिस से निकल गया।

कमरे मे फिर भी सन्नाटा रहा। लला नाखून घिसती रही और महनाज़ सर्कुलर को पढती' रही।

"आपका नाम ?" प्रेमानारायण ने पूछा।

प्रेमा का तबादला एलाहाबाद कर दिया गया था क्योंकि खुर्शीद आ
का खयाल था कि आशाराम कभी न कभी उससे मिलने की कोशिश
करेगा। दिल्ली से उन पर दबाव पड रहा था कि आशाराम को गिरफ्तार
जरूरी है। पर आशाराम मिले तब तो वह उसे गिरफ्तार करें।
देश, पहलवान और महनाज के बावजूद शम्सू मियाँ पर कडी निगाह रख
थी। पर देश किसी से मिल नही रहा था और उनकी समझ मे नही आ
था कि वह दिल्ली को क्या जवाब दें। तो उन्होने यह तै किया कि सीधे
लिया घी नही निकलेगा। आकाशवाणीवाला को उनके इस प्रोग्राम की
नही थी इसीलिए बिल्लो से अपनी बातचीत रिकार्ड करते समय प्रेमा
की आवाज मे कोई तनाव नही था।

"बिल्लो।" बिल्ला ने कहा।

"पूरा नाम क्या है ?" प्रेमा ने पूछा।

'पता नही। हम तो जबसे होस सँभाला है इहे नाम सुन रह औ
पर बोलत चले आ रहे।"

प्रेमा जवाब की इस सादगी पर मुस्कुरा दी।

'आप करती क्या है बिल्लो देवी ?"

कटरा श्रीमती गाँधी म हमरी जनता लाण्डरी है। हमरे पति को
मन्त्री बक मे करजा दिलवा दिहिन है। तो उनकी इन्दिरा मोटर वकसाप

जीरो राड पर।'

'इमरजेंसी के बारे मे आपका क्या खयाल है बिल्लो देवी ?"

"बहुत अच्छा खयाल है। जब से इन्दिराजी इमरजसी लिआयी हैं दस म बहुत तरक्की हुई है। पुलिसवाले कपडे की धोलायी देवे लगे हैं। चीनी और सोन के भाव मे फरक हो गया है। हमरी तो भगवान से एही पराथना है कि भगवान इन्दिराजी को जिन्दा रक्खे कि ऊ इमरजसी बनाय रह।'

रिकाडिग रूम की लाल बत्ती प्रेमा के इशारे पर बुझ गयी।

प्रेमा यही सवाल पूछते पूछते बोर हो गयी थी। आज यह आठवां बयान था। उसने मुश्किल से आती हुई जमाही रोकी। अब बस एक देशराज मिकैनिक रह गया है। उसका इण्टरव्यु रिकाड हो जाये तो वह कटीन मे बैठकर काफी की दो प्यालिया पिए कम स कम।

दरवाजा खुला। आकाशवाणी के प्रचार विभाग का एक आदमी देश को लेकर आया और बिल्लो को लेकर चला गया। प्रेमा न उस आदमी की तरफ किसी दिलचस्पी से नही देखा। वह तो बस यह जानती थी कि उसे उस आदमी से वही सवाल करने हैं जो दूसरो से कर चुकी है और उस यह भी मालूम था कि यह आदमी भी वही जवाब देगा जो दूसरे दे चुके हैं। फिर भी आनेवाले पर उसकी एक निगाह तो पड ही गयी थी। वह यह देखकर मुस्करा दी कि आनेवाले ने बिल्कुल नया जोडा पहन रक्खा है। जूते भी नये है और उसके बदन से किसी सस्ते सेंट की महक भी आ रही है। कान मे दबा हुआ इत्र का फाया भी उसने देख लिया। फिर वह आदमी बठ गया और वह उससे बेतअल्लुक बैठी बत्ती के लाल होने की राह देखती रही।

उसने रिकाडिग रूम की तरफ देखा। साउण्ड वाले ने तयार रहन का इशारा किया। प्रेमा ने गला साफ किया। देश न बहुत सा थूक घाट क अपना गला तर किया। बत्ती लाल हो गयी।

'आपका नाम ?' प्रेमा ग्रामोफोन रिकाड की तरह बजी।

'देशराज।" देश की आवाज काफी ऊँच सुरो मे निकली। फिर वह खुद ही झेंप भी गया।

इतना जोर स बोलन की जरूरत नही है। प्रेमा न कहा।

'का बतायें साहब ' देश सर खुजलाने लगा।

हां तो देशराजजी, यह बताइए कि आप करत क्या है ?"

'साहेब हम पहिले नौकरी करते रह। फिर इमरजसी आ गयी और हम्म धक मे बजा मिल गया। अब हमरी अपनी बकसा है।'

"तब तो आपको इमरजेंसी से बडा फायदा हुआ ?"

"हम्मे ही थोडे फायदा हुआ ? सब गरीब जनता को फायदा हुआ। एक ठो हमरे दोस्त रह आशाराम " देश बताये हुए जवाबो से बहक गया। प्रेमा ने उसकी तरफ देखा। तो यह आशाराम का दोस्त है। यह नये कपडे पहनकर रेडियो स्टेशन आनवाला जाहिल गँवार आशाराम का दोस्त है। उसका जी चाहा कि वह देश से उसके दोस्त 'आशाराम' की बात करे। पर वह ड्यूटी पर थी। यहा उसे इस आदमी स इमरजेंसी की तारीफ करवानी थी। अभी उसके पास आशाराम के बार मे सोचने का वक्त नही था। उसने अपनी बडी बडी उदास आखो स देश की तरफ देखा। वह उसी की तरफ देख रहा था। बे-बाक आँखो से लेकिन उन आखा मे कोई पयाम नही था।

'आशाराम को अभी छोडिए दशराज जी, मैं "

'छोडें कैयसे साहब ? दश ने उसकी बात काटी, 'ई बात ठीक है कि ए बखत उनके नाम वारट है। पुलिस उन्हे खोज रही। इमरजेंसी का फायदा उन्हें देखायी ना दे रहा। पर हम लोग की दोस्ती बहुत पुरानी है साहब। सच पूछिए तो राजनीति का सौक हम्म उन्हीने सिखाया।'

प्रेमा को याद आ गया।

तो यह वह देश हैं। और वह गभवती औरत जो अभी-अभी बाहर गयी है वह उसकी घरवाली बिल्लो है।

लाल बत्ती बुझ गयी। प्रेमा चौक पडी। अभी तो बात खत्म नही हुई थी। फिर बत्ती बुझ क्यो गयी ? रिकार्डिग रूम से एक आदमी उसे इशारा कर रहा था।

"मैं अभी आयी देशजी।" यह कहती हुई वह देश को उस कमरे म माइक्रोफोन के साथ अकेला छोडकर बाहर चली गयी। कॉरिडार मे एक आदमी खडा था।

"मेरा नाम खुर्शीद आलम है।" उसने अपना परिचय करवाया।

'कटरा मीर बुलाकी बम केस वाले खुर्शीद आलम साहब ?" प्रेमा ने पूछा।

"जी हाँ।'

प्रेमा ने इस डर से अपनी निगाहें झुका ली कि कही खुर्शीद आलम खाँ उसकी आँखो म अपन लिए भरी हुई नफरत देख न लें।

'यह जो आदमी है आपके साथ, देश, यह आशाराम का दोस्त है। रिकार्डिग की फिक्र न कीजिए। जरा टोह लेने की कोशिश कीजिए, आशाराम के

बारे म।"

"जी ?"

"देखिए मिस नारायण," आलम साहब न कहा, "हमे मालूम है कि आप आशाराम से शादी करनेवाली थी। हमे यह भी मालूम है कि पोलिटिकल डिफरेंसज की वजह से आपने उन्ह अपने जीवन से निकाल दिया। मैं इस फसले पर आपको मुबारकबाद देता हू। आशाराम प्रधानमन्त्री का दुश्मन है यानी वतन का दुश्मन है। उसकी गिरफतारी मे मदद करना आपका फज है "

फज।

हर जमाने मे सरकारें इस शब्द का मतलब बदलती रहती है। कभी फज यह भी हो जाता है कि प्रेमिका अपने बेगुनाह प्रेमी के खिलाफ जासूसी करे। राजनीतिक मतभेद और मुखबिरी मे कुछ तो फक होना चाहिए। जो आदमी रिकार्डिंग रूम मे बैठा उसका इन्तिजार कर रहा होगा उससे वह पहली बार मिली है। पर वह रेडियो स्टेशन और पुलिस स्टेशन म फक करता होगा। उसे यह कौन बताये कि रेडियो स्टेशन भी पुलिस स्टशन हो गया है और उसका बयान लिया जा रहा है

प्रेमा जिन्दगी म पहली बार अपनी निगाहो से गिरी। उसने सोचा कि उसे मिसेज गाधी के नाम एक बेनाम खत तो लिखना ही चाहिए कि खुर्शीद आलम जैसे पुलिस आफिसज उन्ह जनता से दूर ले जा रहे हैं

एकदम स उसने महसूस किया कि खुर्शीद आलम खा, बगर आखें झपकाये उसकी तरफ देख रह है। और वह डर गयी। मिसेज गाधी को बानाम खत लिखने का खयाल भी उसके दिल से निकल गया क्योकि उसने उडती-पडती सुनी थी कि यह राजनीतिक बन्दियो से बदसुलूकी करने का मौसम है। गायत्री देवी, राजमाता ग्वालियर, मृणाल गोरे नक्सलिये प्रेमा काप गयी। वह जानती थी कि वह आशाराम से बिछडने के दद के सिवा कोई दद झेल ही नही सकती

खुर्शीद आलम खाँ अब भी उसकी तरफ देख रहे थे।

कोशिश करती हूँ।" प्रेमा ने खुर्शीद आलम से कहा और उनकी तरफ देखे बिना रिकार्डिंग रूम की तरफ चली गयी।

दरवाजे के शीशा लगे गोल कटाव से देश नजर आ रहा था। वह उसी तरह अकडा हुआ बठा था जैसा वह उसे छोड गयी थी। वह दरवाजा खोलकर अन्दर चली गयी। सामने दीवार पर लगी हुई घडी की सेकेंड की सूई समय के गिद चक्कर काट-काटकर समय को चाटती चली जा रही थी। लाल बल्ब

बुझा हुआ था। वह अपनी कुरसी पर बठ गयी। सामने रिकार्डिंग रूम मे हेड फोन लगाय खुर्शीद आलम खा बैठ हुए थे। देश की उनकी तरफ पीठ थी।

प्रेमा ने महसूस किया कि उसका गला सूख गया है। उसने थूक घोटकर गला तर किया।

"हा तो देशराजजी, हम लोग कहा पहुचे थे ?"

देश की समझ मे सवाल ही नही आया। बोला, "तब से इहँई बैयठे हैं चुपचाप।"

प्रेमा से मुस्कुराया भी न गया। उसने आलम साहब की तरफ देखा। उनकी आखें उसी पर थी। वह घबराकर देश की तरफ देखने लगी।

'हम लोग आपके दोस्त आशाराम की बातें कर रह थे। प्रेमा को लगा, जैसे यह सवाल करनेवाली आवाज़ किसी और की थी।

"आप प्रमाजी है न ?" देश न पूछा।

प्रेमा धक से हो गयी।

"हम तब्ब से सोचत रह कि आपको कहा देखा है।" दश ने कहा, "आसा बाबू के कमरे मे आपकी एक ठो तस्वीर देखा रहा। आसाराम बाबू बहुत हीरा आदमी हैं प्रेमाजी, हम गरीब लोग के वास्त तकरीर तो बहुत लोग भाडा किये पर लडे खाली आसा बाबू, ऊ अगर हिम्मत न दिलाइत होता तो बिल्लो का घर ना बन सकता रहा।"

बिल्ला कौन ?"

"हमरी घरवाली।" देश झेंप गया, "ठन गयी रही कि घर बनाये बिना बिआह ना करेंगे। सब लोग ओका मजाक उडाते रह। खाली आसा बाबू ओके साथ रहे। और साहब घर बन गया।"

"कभी तुमस मुलाकात होती है उनकी ?' प्रेमा ने सवाल किया। पर वह यह चाहती थी कि देश ताड जाय और इस सवाल का जवाब न द। पर खुर्शीद आलम खाँ उसी की तरफ देख रहे थे और वह देश को इशारे से मना भी नही कर सकती थी।

'एक मरतबा मिले रहे।" दश न कहा।

'और पूछो और पूछो," खुर्शीद आलम न इशारा किया।

'कहा मिले थे ?" प्रेमा रिकाड की तरह बज गयी।

'बाबूरामजी, मतलब आसा बाबू के दादा, तो उनह घर से निकाल दिहिन हैं। ऊ तो साफ कह दिहिन कि बिटिया रानी का दुसमन हमरा दुसमन है। पर एक दिन एक ठो लौंडा आके हमस कहिस कि आसा बाबू रात के

११-१२ बजे हमसे मिला चाहते हैं टडन पार्क मे, तो हम उहयी जाके मिले। आपो की बात किहिन, असिल मे हम कहा उनसे कि और कहा ता पुलिस आपका छोडेवाली ना है। प्रेमाजी के घर जाके छिप रहिए कुछ दिन, तो ऊ बहुत उदास हो गये। बोले, नही दस, हमरा और उनका रास्ता अलग हो गया है। हम कहा, का बात करते हैं साहब, बिल्लो हमसे रोजाना लडती है त का एका मतलब ई है कि ऊ हम्मे पिआरो ना करती। पिआर दुसरी चीज है। राजनीति दुसरी चीज है "

देश बोल रहा था। प्रेमा सुन रही थी। पर वह तो कनखियो स खुर्शीद आलम की तरफ देख भी रही थी और उसने देखा कि हेड फोन उतारकर वह कमरे से चले गये।

"तो इमरजेंसी से आप खुश हैं ?' प्रेमा ने सवाल किया।

"बहुत खुश हैं साहब।"

"आपका बहुत-बहत शुक्रिया।" प्रेमा ने हाथ जोड लिये। "बाहर आपको चेक मिल जायेगा।"

"चेक कैयसा साहब ? हम सच बोले का दाम ना ले सकते।'

देश चला गया।

प्रेमा अकेली रह गयी। थकी हुई, निढाल, जख्मो से चूर, अपनी निगाहा से गिरी हुई। उस यह सोचते डर लग रहा था कि अब देश का क्या बनेगा ? क्या गुजरेगी उस पर ? कितना दद झेल सकता है वह ?

दुख जमाने मे वहुत से है महव्वत के सिवा

कुहर के खेत म
सारी पगडण्डियाँ खो गयी।
कापला रुक गया।
क्या पता दिन है या रात है।
हर हथेली की आँखें खुली हैं, मगर
सूझता ही नही।
दूसरा हाथ है—या—कोई राहजन।
—धूप का कापला खेमा-जन हो गया।
कुहर खेमो प है।
कुहर खेमो मे है।
धूप की बूद जमने लगी।
—जम गयी।
धूप की बूद गुम हो गयी।
कुहर की यह खडी फम्ल अब देखिए,
कितने दिन मे कटे।
धूप का खेमा-जन कापला कब चले।

बिल्लो अधेरे आगन मे अकेली थी। रो नही रही थी। रो चुकी थी। मामा के बहुत कहने के बाद भी वह रात गुजारने उनके घर नही गयी कि क्या पता देश कब आ जाये। और मामा के बहुत कहने के बाद भी वह इस बात

पर तैयार नही हुई थी कि मामा रात को यही रह जायें।

वह हैरान थी कि देश चला कहा गया। बिला बताये हुए वह मामा की दुकान तक नही जाता था। उसन दरवाजे की तरफ देखा। दरवाजा भिडा हुआ था। मामा जाते-जाते भेड गये थे। कह गये थे कि वह अदर से कुण्डी लगा ले। पर उससे उठा ही नही गया।

बिल्लो तीन दिन से घर मे अकेली थी। सब हमदर्दी करने आ चुके थे। शहनाज। सकीना बी। शम्सू मियाँ। शहनाज तो लगभग दिन भर रही थी। शाम को बडी मुश्किल से गयी थी और सवेरे फिर आ गयी थी। एक बार महनाज भी आयी थी। पर वह बैठी नही थी। उसे किसी मीटिंग म जाना था और वह इस डर स भी नही बैठी थी कि उसकी साडी 'क्रश' हो जायेगी। लला भी उसके साथ आयी थी और बिल्लो न लला से कहा था 'ए बहिनी, तनी अपने अब्बा से कहा ना कोइ बखत जी लगा के कि हमरे आदमी को खोज दें।" लैला ने घबराकर वादा भी कर लिया था और महनाज ने भी कहा था कि वह डॉ० एम० साहब से कहगी। पर उसके बाद से न लैला आयी न महनाज। और आज तो उसन शहनाज स श्रीमती गाँधी के नाम अपनी तरफ से एक खत भी लिखवाया था

स्रीमती गाँधी को मालूम हाय कि इहाँ सब खरियत है और भगवान की जात से उमीद है कि उहाँ भी सब खरियत हागी। खास बात इ है कि तीन दिन भया हम दूनो परानी रेडियो टेसन गये आपकी इमरजसी की तारीफ करे। हम दूनो परानिया ने खूब-खूब तारीफ की। जब तारीफ करके बाहर निकले तो टेसनवाले लगे चेक थमाये। हम कहा कि हम चक ना लेंगे। नकद दो। हमरा मरद तो पयसा लेवे पर तयार ना होना रहा कि हम सच वाले की मजूरी ना लेंगे। ऊ ता जब हम कहा कि स्रीमती गाधी जब खुद दे रही है तो हम मना कर वाले कौन। हम लोग भागा ना न रहा। उनका असीरवाद समझ के ले ल्यो। तब ऊ राजी भया। बोला, तु जब तक रसीद पर अँगूठा लगाव हम तनी पिसाब कर आयें। बस तबका गया ऊ अभी तक ना आया है। इदिराजी को इहा मालूम हो कि हमर आदमी को आप खुद सिफारिस करके बक से करज दिलाया है। और हमरे मरद ने अपनी बकसाप का नाम भी आपके नाम पर इदिरा मोटर बकसाप रक्खा है। इहाँ के थेनदार असफाकुल्ला खाँ की बीवी स एक दिन कपडे की धुलायी पर हमरा झगडा हो गया रहा। तब्ब स जलती हैं हमस। आप बजरिया तार उनमे कहिये कि हमरे मरद को खाज दें। थाडे लिक्खे को बहुत जानिय और खत को तार समझिये।"

शहनाज़ लिखती जाती थी और भाषा ठीक करती जाती थी। पर जब बिल्लो ने खत सुनाने को कहा तो उसने फिर बोली में अनुवाद करके सुनाया। और खत की तरफ से इतमिनान हो जाने के बाद उसने उस खत पर अँगूठा लगा दिया था। उसे यकीन था कि उस खत को पढते ही मिसेज़ गांधी अश्फाकुल्लाह खाँ को तार देंगी कि देशराज को फौरन तलाश किया जाये। इस खयाल से उसे थोड़ी-सी तसकीन हुई और तब उसे याद आया कि परसो से उसने कुछ खाया ही नही है। कैसे खाती। पर मिसेज़ गांधी पर उसके भरोसे ने उससे कहा कि जीने के लिए खाना ज़रूरी है। देश के लिए क्यो परेशान होती हो। देश तो मिल ही जायेगा। तो वह पलग से उठी और दरवाज़े मे कुण्डी लगाती हुई बावरची-खाने मे चली गयी और चाय के लिए चूल्हा जलाने लगी। फिर चूल्हे पर केतली रखकर वह वही चूल्ह के पास बैठ गयी और आग का तमाशा देखने लगी और फिर यही सोचने लगी कि देश एकदम से गायब कहा हो गया—और यह बात उसे कभी मालूम ही न हो सकी कि देश को रेडियो स्टेशन के पेशाबखान ही से खुर्शीद आलम खाँ ने लपक लिया था।

देश जब तक चौंके-चौंके वह पुलिस की बन्द गाडी मे बन्द किया जा चुका था।

अरे। मुदा हम किया का है साहब।" उसने फरयाद की।

किसी ने जवाब नही दिया। पुलिस की बन्द गाडी चलती रही।

खुर्शीद आलम खाँ ने इन "कामो' के लिए एक बँगला सरकारी किराये पर ले रक्खा था। इसमे एक कमरा रेडियो स्टेशन के रिकार्डिग थेटरो की तरह साउड प्रूफ था। उसी साउड प्रूफ कमरे मे देश से उनकी पहली मुलाकात हुई। देश अब भी समझ रहा था कि ज़रूर कोई गलतफहमी हुई है इसलिए उसने खाँ साहब को सलाम किया। खा साहब ने जवाब नही दिया।

"तो आशाराम से तुम्हारी दोस्ती थी ?" सवाल किया गया।

"हा साहब।"

"और यह जानते हुए भी कि सरकार उसे तलाश कर रही है तुम टडन पाक म जाकर उससे चुपचाप मिल आये ?"

"हाँ साहब। ई गल्ती तो हमसे हो गयी।" देश ने कहा। "हम ऊ रात उनको बहुत समझाया कि सरकार की खिलाफत करना गल्त बात है। इमरजसी से गरीब आदमी का बहुत भला भया है। पर ऊ मनबे ना किये। पर हिम्मत ना हारे हैं। "

"उसके बाद कब मिले तुम उससे ?" सवाल न उसकी बात काटी। और

इस बार खा साहब की आवाज़ म कोडे का सडाका था।

देश ने उनकी आँखो म देखा। "देखिए साहब।" उसने कहा, "हम सरीफ आदमी हैं। स्रीमती गाँधी खुद अपने कल्म से लिख के हम्मे बक से करज दिला इन हैं कि हम अपनी बकसाप खोल सकें। हम आपकी सेकाएत बोल देंगे उनसे।"

"जगदम्बा प्रसाद ! इस बहनचोद की शिकायत इसकी गाँड मे घुसेड दो।" खुर्शीद आलम खाँ ने कहा।

बाबू जगदम्बा प्रसाद तो हुक्म के गुलाम थे। वह देश की शिकायत देश की गाँड मे घुसाने के काम मे लग गये। दो और सिपाहियो की मदद से जग दम्बा प्रसाद ने उसे नगा किया। फिर वह लोग उस पर पिल पडे। ठोकरें। लातें। डण्डे। थोडी देर तक तो देश को दद का एहसास रहा। फिर दद का एहसास मिट गया। हर चीज़ धुधली धुधली दिखायी देने लगी और फिर सूरज बिल्कुल डूब गया और दिन के सवा तीन बजे रात हो गयी।

उसे होश आया तो जहाँ-जहाँ तक उसका बदन था वहाँ वहा अब सिफ दद रह गया था। और उसकी ज़बान सूखकर तालू से जा मिली थी। उसने बडी मेहनत से जबान को तालू से जुदा किया। फिर ज़बान को होठो पर फेरा। कोई फायदा नही हुआ। फिर उसने थूक घोटने की कोशिश की। पर मुह मे थूक था ही नही। तब उसने आखें खोली। खुर्शीद आलम खाँ सामने बठे सिग्रेट पी रहे थे और जगदम्बा प्रसाद पास खडे हुए थे।

"देखो।' खुर्शीद आलम ने कहा। 'शायद होश आ गया बहनचोद को।"

जगदम्बा प्रसाद ने बहनचाद की तरफ देखा।

"जी सरकार। होश आ गया बहनचोद को।"

"ज़रा पानी पिलाव साले को।" खाँ साहब ने कहा।

जगदम्बा प्रसाद ने देश के मुह पर पानी के छीटे दिये और उसके मुह मे भी कुछ पानी टपकाया। देश ने आँखें खोलकर जगदम्बा प्रसाद की तरफ देखा और न जाने क्यो हजार मुहे दद के चगुल म होने के बावजूद वह मुसकुरा दिया और बोला "बिल्लो से कह दियो दीवानजी कि हम बहुत अराम से हैं। परे सान होये की जरूरत नहीं है।'

'अरे सरकार जो पूछ रह बता के छुटटी करो।" जगदम्बा प्रसाद ने कहा।

'क्या कह रहा है ?' खा साहब ने पूछा।

'बताने को तैयार है साहब।' जगदम्बा प्रसाद ने देश को आँख मारते हुए खाँ साहब से कहा।

"दीवार स लगा के बिठला दो। हुक्म दिया गया।

हुक्म पूरा कर दिया गया।

"टण्डन पाक वाली मुलाकात के बाद तू कब मिला आशाराम से ?"

'ओके बाद उनस हमरी भेंट नहीं हुई साहब।"

"आशाराम कहा छिपा हुआ है ?' पल भर तक उसे घूरते रहने के बाद खाँ साहब ने सवाल किया।

'हम्म नही मालूम साहब।"

"जगदम्बा प्रसाद!"

जगदम्बा प्रसाद न अपना नाम खत्म होते होते देश के हाथ पर अपना एक भारी बूटवाला पाव रख दिया। देश तडप गया। पर उसम इतनी ताकत नही थी कि हाथ को उस भारा पाववाले जूते के नीचे से निकाल सके।

खुर्शीद आलम खा उठकर उसके पास आ गये।

"आशाराम कहाँ है ?"

तक्लीफ स उसकी जान निकली जा रही थी। उसने सवाल ही नही सुना। वह तो बस वेबसी स जगदम्बा प्रसाद की तरफ देखता रहा और खा साहब ने उसके सीने पर सिग्रेट बुझा दी। वह जो तडपकर उछला तो उसका हाथ जगदम्बा प्रसाद के पाव के नीचे से निकल गया। और उनको झटका लगा और वह अपने वदन का बोझ न सँभाल पाय और गिर गये और बाकी दोनो सिपाही हँसने लगे और उस साउड प्रूफ कमरे मे उन कहकहो की आवाज सुनके खुर्शीद आलम खा के रोगटे खडे हो गये और फिर सिपाहियो को एकदम से खयाल आ गया कि वह अपने आफिसर के सामने हँसने की बदतमीजी कर रहे है तो वह एकदम मे चुप हो गये और उस साउड प्रूफ कमरे मे एकदम से बडा हैवतनाक सन्नाटा हा गया। और उस सन्नाटे मे देश के सिसकने की आवाज और भयानक लगने लगी।

"देखो देशराज," खा साहब ने कहा, "बता दोगे तो और तकलीफ नही होगी। नही बताओगे तो बदन की एक-एक हड्डी का सुर्मा बना दूगा।" उनकी आवाज मे नर्मी थी। देश सोच भी नही सकता था कि इस नर्मी के पीछे कोई ठोकर भी है। इसलिए जब एक नोकदार जूत की टो उसके पेट मे घुस-सी गयी तो वह चीख पडा और खाँ साहब ने पूछा "आशाराम कहा है ?"

दश न बडी हिकारत से खानसाहब की तरफ देखा और बोला 'नही बताऊँगा। उखाड लो जो उखाडा जाये।"

फिर जो कुछ हुआ उसे देश के लिए याद रखना मुश्किल हो गया।

जगदम्बा प्रसाद ने उसे घसीटकर दूसरी दीवार पर दे मारा। और फिर

तीनो सिपाही बड़ी मेहनत से 'पूछगछ' करने लगे। उसे उलटा लटका दिया गया। उसके पाखाने की जगह से पिसी हुई लाल मिर्च भर दी गयी। उसे इलेक्ट्रिक के शाक दिये गये पर उसे भी जिद आ गयी थी कि वह अपने दोस्त का पता नहीं बतायेगा। यह न जाने कितनी बार बेहोश हुआ और उसे न जाने कितनी बार होश आया। उसने गिनना भी छोड़ दिया था। वह सिर्फ यह खेल खेल रहा था कि यह शर्त लगाता अपने आपसे कि ठोकर कहाँ पड़ेगी। या डण्डा कहाँ पड़ेगा। या सिगरेट कहाँ बुझायी जायेगी। और अगर उसका अन्दाजा सही निकलता तो उसे एक अजीब सी खुशी होती अब उसे यह सोचकर शर्म भी नहीं आती थी कि वह इतने लोगों के सामने नंगा है क्योंकि बदन तो था ही नहीं। बस एक अथाह नाकाबिले-बरदाश्त दर्द था और दहकती हुई आग-सी एक प्यास थी सामने किसी ने पानी का एक गिलास रख दिया। उसने कनखियों से तीनों सिपाहियों की तरफ देखा। वह सुस्ता रहे थे। थानेदार साहब भी कहीं और देख रहे थे। उसने तै किया कि उछलकर गिलास पर जा पड़े और एक साँस में सारा पानी पी जाये और ठण्डे गिलास को अपने गालों से लगा ले। पर जब उसने गिलास की तरफ उछलना चाहा तो पता चला कि वह उछल नहीं सकता। घुटनों के नीचे शायद हड्डियाँ टूट गयी थीं। वह कोई और आदमी बन गया और यह सोचने लगा कि वह कौन-सी चोटें होंगी जिन्होंने हड्डियाँ तोड़ी होंगी। उसने जैसे पलटकर 'पूछगछ' के सारे सीक्वेंस को देखा। स्लो मोशन फिल्म की तरह हर चोट आहिस्ता आहिस्ता उसके बदन की तरफ आयी और उसने देखा। फिर भी वह यह तै न कर सका कि किस चोट ने दीवार बनकर उस गिलास की तरफ जाने से रोक रक्खा है। पर प्यास फिर भी थी और पानी फिर भी सामने था। पल भर को उसका जी चाहा कि आशाराम का पता बताकर पानी का वह गिलास खरीद ले। हट साला गाड़ू उसने अपने आपको गाली दी। और कमजोरी का वह क्षण टल गया। एक गिलास पानी के लिए वह अपने दोस्त की जिन्दगी नहीं बेच सकता था। परन्तु प्यास? प्यास तो वैसी ही थी। लगता था कि दुनिया के तमाम रेगिस्तान सिमटकर उसके होठों पर आ गये हैं। तो अपनी प्यास की तरफ से ध्यान बँटाने के लिए वह अपनी छोटी छोटी यादों की रेजकारी गिनने लगा। आदमी के पास हजारों हजार यादें होती हैं। जब वह बिल्लो के साथ पहली बार सिनेमा देखने गया था। जब उसने शहनाज को पहली बार अम्मा कहा था। जब उसने पहली बार किसी कार के एंजिन को हाथ लगाया था जब उसने वह खटारा फोड़ खरीदी थी। जब उसने उसे अपने हाथों से ठीक किया था जब लोगों ने उसे सुहाग

रात के एक खास पल म बिल्लो के साथ अकेला छोडकर कमरा बन्द कर दिया था। जब उसने फुटपाथ पर बिल्लो के साथ तस्वीर खिचवायी थी। जब उसने पहली बार यूनियन के जल्स म आगाराम को हटाकर पहली तकरीर शुरू की थी

हजारो दीय जल गये और उसे अपने बदन का हर दद और साफ दिखायी देने लगा तो उसने घबराकर यादो को निकालकर दिल के दरवाजे को कुण्डी लगा दी और पानी के उस गिलास और अपनी प्यास के साथ अकेला रह गया।

गिलास उसी तरह सामने रक्खा हुआ था और तीना सिपाही उसी तरह जैसे उसे भूले हुए से थे और खुर्शीद आलम खा किसी और तरफ देख रहे थे।

तो वह बच्चो की तरह बकयाँ चलता हुआ धीरे धीरे गिलास की तरफ रेंगने लगा। लगता था जैसे पानी का गिलास सकडो मील दूर है और जैसे यह दूरी अपनी खुरदुरी उँगलिया से उसके दुखते टपकत बदन पर तज दद का कोई लेप लगा रही है। पर वह हिम्मत न हारा क्याकि उसकी प्यास उसे घसीटती हुई गिलास की तरफ ले जा रही थी। दद को रोकन के लिए उसन दात होठा मे धँसा रक्खे थे दाँत बँस कम रह गये थे। पर जितने थे वह जसे उसकी प्यास स मुह छिपाने के लिए उसके हाठा मे छिपन की कोशिश करने लगे और उसका मुह फिर उसके गम नमकीन लहू से भर गया और उसे अपने बचपन का वह दिन याद आ गया जब उसकी उँगली मे सूई चुभ गयी थी, खून निकल आया था और उसने उँगली को चूम चूसकर खून का बहना बन्द किया था।

अब गिलास पास आ गया था। उसने अपना एक हाथ मुश्किल से उठाया और गिलास की तरफ बढाया गिलास पीछे सरक गया। उसने आखें उठायी। जगदम्बा प्रसाद गिलास को पकडे हुए मुसकुरा रहा था पर एक पल मे जग दम्बा प्रसाद, बाकी दोना सिपाही, खुर्शीद आलम खा, वह कमरा, बला का दद हर चीज गायब हो गयी। बस वह गिलास रह गया और उसकी प्यास रह गयी और वह रह गया। और वह फिर गिलास की तरफ बढा गिलास भी चलन लगा। पर गिलास गोलाई म चल रहा था। तो वह भी गोलाई म चलने लगा। चार जोडे टागो के, आठ जाडे जूतो के और एक गिलास पानी का। बक ग्राउड बदलता रहता। कभी भारी जूतोवाली टागें बक ग्राउड मे आती तो कभी काले नोकदार जूतावाली टाँगें। तो कभी वह टाग जिसकी पिण्डली की खाकी पटटी पर रोशनाई का एक दाग है। तो कभी उन जूता वाली टाँगें सामने आती जिनकी ठोकर ने उसके सामने के तीन दाँत ताडे थे

और फिर वही भारी जूतोवाली टागें

बाबू जगदम्बा प्रसाद हेड कास्टबिल इस खेल से बोर हो गये तो उनको

नजर परोवाले उस झाड़ू पर पड़ी जो कमरे के एक कोने मे न जाने कब से रक्खा हुआ था। गिलास दूसरे कास्टेबिल को थमाकर बाबू जगदम्बा प्रसाद उठकर परा के झाड़ूवाले कोन म गए। खुर्शीद आलम खा भी हैरान कि यह उधर क्या गया। जगदम्बा प्रसाद ने पल-भर परा को देखा और फिर उन्होंने एक पर का चुनाव किया और उसे झाड़ू से निकालकर वापस आये। खुर्शीद आलम खा अब भी हैरान थे। बाबू जगदम्बा प्रसाद ने वह पर देश के चूतड मे खोस दी जहा अब भी तीन दिन पहले भरी जानेवाली मिच की जलन मौजूद थी पर का रग गहरा नीला था तीना सिपाही ज़ोर ज़ोर से हँसन लगे और देश इस हँसी और चूतड मे उगे हुए मोर के पर और बदन के दद मे बपरवा पानी के गिलास के लिए उसके साथ-साथ दद और ज़िल्लत के उस कमरे मे बकैया चलता रहा[1]

गिलास रुक गया। देश का हाथ गिलास तक पहुच गया। पर किसी हाथ ने उस गिलास को बडी मजबूती से पकड रक्खा था। देश न बडा ज़ार लगाया पर गिलास आजाद नही हुआ। कुछ पानी जरूर छलका। एक बूद उसके हाथ पर गिरी और उसका हाथ जैसे अपनी प्यास से जल गया।

"आशाराम कहा है ?" न जान कहा से न जाने किसकी आवाज़ आयी।

आशाराम ? आशाराम कौन ? देश न अपन आपस सवाल किया और चट से कोई चीज़ उसके दिमाग मे टूट गयी और फिर जसे प्यास भी खत्म हो गयी। उसने खुर्शीद आलम खा, जगदम्बा प्रसाद और दूसरे तीनो बेनाम कास-टेबिला की तरफ देखा और चिल्लाया "बालो स्रीमती गाधी की जय, बोलो स्रीमती गाधी की जय " उसे लगा कि उसकी आवाज़ से कायनात भर गयी है पर यह सिफ उसका खयाल था। उसके मुह से काई आवाज ही नही निकल रही थी। उसके होठ ज़रूर हिल रह थे। खुर्शीद आलम खा ने उसके हाठो मे अपना कान लगा दिया और यह सुन सके कि देश क्या कह रहा है। मगर उन्हे अपने सुने पर यकीन न आया। उन्हान घबराकर अपने सिपाहिया और फिर देश की तरफ देखा। पर देश वहा था ही नही। देश ता उनकी तरफ दखकर मुसकुराया और फिर बकैया चलने लगा। अब उसके बदन मे कहीं दद नही था और वह लगातार वही बात कहे जा रहा था

"स्रीमती गाँधी की जय। स्रीमती गाधी की जय '

(१) यह टाचर मेरी ईजाद नहीं हैं। मझे यह काम नहीं आता। यह टार्चर मैंने दूसरी किताबा से निकाले हैं और इस यकीन के साथ निकाल हैं कि उन किताबों के लेखक बुरा नहा मानेंग।

मेरे पते से गैर को क्यो तेरा घर मिले

देश न आशाराम का पता नही बताया। हालांकि वह देश का पता बताकर अपनी जान बचा सकता था। पर सादा आदमी था। और सादा आदमी दोस्तो से गददारी नही करत। लेकिन हकीकत यह है कि जो देश आशाराम का पता बता देता तब भी आशाराम खुर्शीद आलम खा के हाथ नही आता क्योकि वह उस पते पर था ही नही। वह कलकत्ते की एक जेल म था। मुहम्मद यूसुफ, कैदी नम्बर ३११ के नाम से।

आशाराम ईमानदार आदमी था। वह इमरजेसी के खिलाफ भी था पर उसने इमरजेंसी के खिलाफ कोई काम नही किया था क्याकि वह जानता था कि वह टाचर बरदाश्त नही कर सकता। उसने तो सी० पी० एम० भी छोड दी थी पर अपने गुरूर की वजह से बाबूराम जी को यह बता न सका था। कोई यह कहना नही चाहता कि वह कायर है। इसलिए जब उसके खिलाफ वारट कटा तो एक तरफ वह बहुत डरा पर दूसरी तरफ खुश भी हुआ कि सरकार न उसका कोई महत्व तो समझा। पर उसे यह पता नही था कि उसने किया क्या है। किस सिलसिले में पुलिस उसे तलाश कर रही है ? और ऐसा क्या हो गया है कि उसकी गिरफतारी के लिए दिल्ली से खुर्शीद आलम खाँ को बुलाना पडा ? फिर भी बट्टू का कहा मानकर वह अण्डर-ग्राउण्ड चला गया। पर रहा इलाहाबाद ही मे। लेकिन जब मस्जिद से बम का कारखाना बर आमद हो गया और उस सिलसिले म उसका नाम लिया जान लगा तो उसे पसीना आ गया और उसी रात टण्डन पाक मे देश से मिल कर वह कलकत्ते चला गया। उसने देश का अपना कलकत्ते का

पता भी दिया। उसे देश पर भरोसा था। फिर कलकत्ता जाते हुए उसे खयाल आया कि पुलिस उसका पीछा नहीं छोड़ेगी तो वह घबरा गया। रेल के डिब्बे में उसी बम-काण्ड की बात हो रही थी। एक नौजवान आदमी उस बात पर हिकारत से हँस दिया और अगले स्टेशन पर उतार लिया गया तो वह डर से काँप गया। इमरजेंसी से पहले और इमरजेंसी के बाद की जेल में बड़ा फर्क हो गया था। वह राजनीतिक आदर्शों के नाम जेल जाने के लिए अब तयार नहीं था। तो कलकत्ते में रेल से उतरने के बाद वह उस पते पर गया ही नहीं जो देश को दे आया था। कई दिन परेशान रहा। सोता तो चौंककर उठ जाता। लगता कि जैसे पुलिस आ गयी है। सोता रहता तो सपना देखता रहता कि वह पकड़ा जा रहा है और पुलिस पूछ-गछ कर रही है। टार्चर कर रही है और वह पहली ही चोट पर चीखकर जाग उठता और देखता कि अपने सड़े हुए होटल के कमरे के अँधेरे में वह अकेला है और मच्छर मच्छरदानी में घुस आये हैं और फिर वह सवेरे तक जागता रहता। यह सपने इस हद तक उसके दिमाग पर हावी हो गये कि वह सोने से डरने लगा और हर आदमी उसे पुलिस का मुखबिर दिखायी देने लगा। वह अपनी परछायी से चौंकने लगा। अपने दिल की आवाज को पुलिस की दस्तक समझने लगा और उसे यकीन हो गया कि इस बेपनाह डर के साथ जीना मुश्किल है। तब उसे एक तरकीब सूझी। उसने सोचा कि सबसे ज्यादा सुरक्षित जगह जेल ही हो सकती है। पुलिस आशाराम को हर जगह खोजेगी परंतु उसका ध्यान जेल की तरफ नहीं जायेगा। तो उसने बिला टिकट सफर किया। पकड़ा गया। सजा हो गयी और वह बहुत दिनों के बाद चैन की गहरी नींद सोया और बहुत दिनों के बाद उसे एक ऐसी रात मिली जिसके माथे पर उन डरावने सपनों का गुदना नहीं गुदा हुआ था।

काफी दिनों के बाद आशाराम सुबह को जागा तो उसे मन में न सोने की थकन नहीं थी। सेल के दरवाजे के बाहर सुबह हो चुकी थी। हाते की दीवार के पार पेड़ थे और उन पेड़ों पर चिड़ियाँ चहचहा रही थीं और धूप उनकी फुनगी पर बैठी नीचे छिपे हुए अँधेरे को झुक झुककर देख रही थी—बहुत दिनों के बाद वह मुसकुराया और उसे देश याद आया और वह सोचने लगा कि देश क्या कर रहा होगा

देश उससे बहुत दूर इलाहाबाद के एक बँगले में था। उसे कपड़े पहना दिये गये थे। उसके जख्मों की मरहम पट्टी करवा दी गयी थी। उसके हाथों की उँगलियों पर पट्टियाँ थीं। उसके दाहिने पाँव पर घुटने के नीचे तक प्लास्टर था। बायें पाँव की एड़ी पर पट्टी थी। आँखों में कोई पहचान नहीं थी

और वह एक कोने मे बैठा मन्त्र जाप कर रहा था

"श्रीमती गाधी की जय। श्रीमती गाधी की जय "

खुर्शीद आलम खाँ और बाबू जगदम्बा प्रसाद उसके सामने लाचार से खडे थे।

"इसे तो अब यहाँ रखने से कोई फायदा नही।" खुर्शीद आलम खा ने कहा। 'दो चार दिन मे इसका प्लास्टर कट जाय तो रात को ले जाकर कटरे मे छोड आव "

जगदम्बा प्रसाद ने कोई जवाब नही दिया। उन्होने बस एडियाँ बजा दी।

"उस बहनचोद आशाराम के लिए कोई और तरकीब करनी पडेगी।" खुर्शीद आलम ने कहा। "साला जाज फनाडिस हो गया है "

जो उन्ह मालूम होता कि आशाराम आराम से कलकत्ते की एक जेल मे बैठा राटियाँ तोड रहा है तो उनका ब्लडप्रेशर अवश्य बढ गया होता।

सच्ची बात भी यही है कि जेल म आशाराम की बडे मजे मे गुजर रही थी कि एक दिन पुलिस आयी और उसी के सेल के एक कैदी को ठोकरें मारती हुई ले गयी। उसे बाद मे पता चला कि वह कदी एक नकसलिया था और एक और नाम से जेल मे बन्द था। बाकी कदिया ने उस नकसलिये की उस गिरफ्तारी को कोई महत्व नही दिया पर आशाराम ने उस रात फिर वही सपन देखे और पसीने मे तर ब तर जागा। और उसे फिर उस अनदेखे खौफ ने जकड लिया जिसने जिन्दगी का रूप बिगाड दिया। वह प्रेमा से एक डाइन बन गयी जो दाँत निपोडे, उसके सामन नगी खडी कहकहे लगा रही थी— यह हर पल का डर यह हर लमहे की बेयकीनी शायद पुलिस के टाचर मे ज्यादा दुखदायी थी—उसने यह सोचा कि जो वह अपने आपको पुलिस के हवाले कर देगा तो पुलिस उस पर दया खायगी ता एक दिन वह डरा-डरा जेलर के पास गया और यह उगल दिया कि कटरा मीर बुलाकी बम काण्ड का आशा राम वही है। उत्तर प्रदेश की पुलिस उसे तलाश कर रही है और वह किसी मजिस्ट्रेट के सामने अपना बयान देना चाहता है

यह उस दिन की बात है जिस दिन सकीना की मदद से बिल्लो की बेटी जन्मी और उसी रात को इतवारी बाबा न देखा कि कुछ लोग चोरो की तरह आये और एक गठरी-सी फेंककर चले गये। इतवारी बाबा डर के मारे आख बन्द किये पडे रहे। उन लोगो के जाने के बाद उन्होने उस गठरी को देखने का फैसला किया। वह गठरी नही थी। देश था। वह बेहोश था। उसके सारे बदन पर मार के निशान थे। चेहरे पर घाव था। उँगलियो पर पट्टियाँ बँधी

हुई थी। पट्टियाँ साफ थी जैसे अभी बाँधी गयी हो और एक पाँव की एड़ी पर भी पट्टी थी—और वह सो रहा था।

इतवारी बाबा चीखने लगे "ए पहलवान! अरे जल्दी से आव। देस के कोयी इहाँ फेंक गया है सम्मू मियाँ! ए जोयन रामऔतार, नरायन" बाबा को सारी बस्ती के लोगों के नाम याद थे। वह आवाजें देते रहे और दश पड़ा सोता रहा और रात हैरान खड़ी यह तमाशा देखती रही।

धीरे धीरे किवाड़ खुलने लगे। धीरे धीरे लोग निकलने लगे। धीरे-धीरे दश के चारो तरफ भीड़ लग गयी। उस भीड़ में मास्टर बदर भी थे। और शम्सू मियाँ भी। पर बदर शम्सू मियाँ से आँखें चुरा रहा था क्योंकि पानीपत से वापसी के बाद उसने शहनाज से शादी करने से इनकार कर दिया था। कटरेवालों के लिए यह खबर मस्जिद में बमों का कारखाना निकलने से ज्यादा धमाकेदार थी। कोई मान ही नहीं रहा था कि बदर ने इनकार किया होगा। और तो किसी की पूछने की हिम्मत न हुई पर मौलवी खैराती और शहनाज ने जरूर पूछा और बदर ने दोनों को कोई जवाब नहीं दिया। और बरात से वापसी के चौथे दिन जब शहर में "नसबन्दी" के बारे में एक अखिल भारतीय मुशायरा हुआ जिसमें उर्दू हिन्दी के कई प्रसिद्ध कथाकार अपनी कहानियाँ भी सुनानेवाले थे, बद्रुलहसन नायाब मछली शहरी इस मुशायरे के कन्वीनर थे। सारा शहर उस मुशायरे के पोस्टरों से भरा हुआ था। महनाज उसकी सिदारत करनेवाली थी और लैला की लिखी हुई तकरीर उसने जबानी याद भी कर ली थी। खुद बदर ने उस मुशायरे के लिए एक बड़ी जोरदार नज्म लिखी थी। शीर्षक था "इसलाम में नसबन्दी"। उसने नौशाद के एक पुराने फिल्मी गाने की धुन जरा इधर-उधर करके अपने गले में उतार भी ली थी। पानीपत के रास्ते में वहाँ तक वह उसी धुन की रिहर्सल करता गया जहाँ पुलिस ने बरातवाली बस रोकी और दूल्हा समेत तमाम बरातियों की "नसबन्दी" कर दी—बस उसी दिन वह अपनी नज्म "इसलाम में नसबन्दी की धुन भूल गया और इलाहाबाद आते-आते वह अपनी नज्म भी भूल गया और जब नज्म ही भूल गया तो मुशायरे में क्या जाता। मौलवी खैराती ने बहुत कहा कि बेटा यह इमरजेंसी के दिन हैं। मुशायरे में न गये तो सरकार के दुश्मनों में नाम लिख लिया जायेगा। और अन्धे की दाद न फरयाद अन्धा मार बैठेगा। कहीं सुनवायी भी नहीं होगी। पर बद्रुल हसन नायाब मछली शहरी उस नसबन्दीवाले अखिल भारतीय मुशायरे में नहीं गये महनाज बहुत खफा हुई और वह अश्फाकुल्लाह खाँ को फोन करने जा ही रही थी कि बदर को मीसा में गिरफ्तार कर लिया जाय कि शह-

नाज आ गयी थी और उस दिन दोनो बहनो मे जबरदस्त लडायी हुई थी। शहनाज ने कह दिया था कि अगर बदर गिरफ्तार हुआ तो वह आत्महत्या कर लेगी—महनाज यूथ कांग्रेस की लीडर होने के साथ शहनाज की बहन भी थी और उसे शहनाज से मुहब्बत भी थी इसलिए उसने फोन नही किया। पर यह अलटिमटम अवश्य दे दिया कि जो हफ्ते भर के अन्दर-अन्दर बदर ने शहनाज से शादी न की तो वह उसे जेल मे सडवाये बिना नही मानेगी।

तो शहनाज को लाज-हया का ताक पर रखकर और पिछली मुलाकात की बेदर्दी और जिल्लत को भुलाकर फिर बदर के पास जाना पडा और इस मुलाकात के लिए वह पहली बार बदर के घर गयी।

बात यह है कि बदर के घर मे कोई औरत नही थी इसलिए महल्ले की औरतें उसके घर नही जाया करती थी। क्यो जाती और किससे मिलने जाती। लेकिन बदर तो अब घर से निकलता ही नही था। स्कूल जाता और फिर अपने आपको घर म बन्द कर लेता। तो शहनाज क्या करती। वह उसके घर म चली गयी। कई लोगो ने आपस मे हैरत का इजहार भी किया परन्तु शहनाज इन बाता से आगे निकल चुकी थी।

बदर उस वक्त घर मे अकेला था। पहले तो उसे यकीन न आया कि शहनाज उसके आंगन म खडी उसकी तरफ देख रही है।

"मैं शहनाज हू।" शहनाज ने कहा। "जिसे तुम गालिब और मीर और मोमिन की इश्किया शायरी पढाया करते थे "

"लोग तुम्ह यहा देखकर क्या कहेंगे ?'

"यह कहेगे कि शायद मैं तुमसे फंस गयी हूं और तब मजबूरन तुम्हे मुझसे शादी करनी पडेगी।"

"पर तुम मुझसे फंस नही सकती शहनाज।" बदर ने बडी उदासी से कहा।

"वह तो मैं भी जानती हूं।"

"जानती हो ?" बदर डर गया और उसकी आंखा मे आये हुए डर को देखकर शहनाज हैरान रह गयी। बदर ने पूछा "क्या जानती हो ?'

'यही कि मैं तुमसे फंसी हुई नही हूं।" शहनाज ने कहा।

बदर की आंखो का डर खत्म हो गया। सिफ गहरी उदासी का रग कुछ और तेज हो गया।

"तुम्हारे मुशायरे मे न जाने से बाजी बहुत खफा हैं।" शहनाज ने कहा। "उन्हान कहलवाया है कि अगर सात दिन के अन्दर-अन्दर तुमने मुझसे शादी न कर ली तो वह तुम्हे मीसा मे अन्दर करवा देंगी। तुम्ह तो पता है कि आजकल

बाजी की कमान चढी हुई है। मैं तुम्हारे आगे हाथ जोडती हू। अपनी जान बचाने के लिए मुझसे ब्याह कर लो।"

बदर सन्नाटे मे आ गया। शहनाज की तरफ देखता रह गया।

'सोच क्या रहे हो ?" शहनाज ने सवाल किया।

"अपनी जान बचाने के लिए मैं तुम्हारी जान नही ले सकता।" हिम्मत करके उसने कह ही दिया।

"मेरी जान को क्या होनेवाला है।'

बदर के अन्दर एक अजीब सी झल्लाहट ने सर उठाना शुरू किया यह सामने खडी हुई लडकी समझती क्या नही कि मोमिन के शोख शेरो पर शर्मने के आगे भी जिन्दगी है। कि बदर की नज्म "नसबन्दी और इसलाम' तक जिन्दगी फैली हुई है। मुहब्बत से पानीपत तक जिन्दगी का खुला मदान है—

"मैं शादी नही कर सकता।" उसने कहा।

"क्यो नही कर सकत ?"

"सजय का हुक्म नही है। बसीलाल ने मना किया है।"

"क्या ?"

'हा। और जब वह दोनो मुझे हुक्म दे रहे थे कि मैं शादी न करूं तो मिसेज गाधी ने उन्ह मना भी नही किया। उनसे कहा भी नहीं कि इसे शादी से न रोको। यह शहनाज से प्यार करता है "

शहनाज घबरा गयी। बदर की बातें आज पहली बार उसकी समझ मे नही आ रही थी और बदर अपनी वीरान आखा से उसकी तरफ देख रहा था। उसने एकदम से फसला किया कि शहनाज को जानन का पूरा हक है। तो वह बोला "बात यह है शहनाज कि जिस बस पर हम लोग दिल्ली से पानीपत जा रह थे उस हरयाना पुलिस ने रोका। सडक के किनार पेडो के नीचे नसबन्दी का खेमा था। हम लोग भेड-बकरियो की तरह हँकाकर बस से उतारे गये। दूल्हे का बाप रोन लगा। तो थानदार ने कहा कि फिक्र न करो। हम जा हैं दूल्हे की मदद करने को और यह सुनकर तमाम सिपाही हँसने लगे थे। फिर किसी ने कुछ नहीं कहा। हम लोग एक लाइन मे खडे कर दिये गये। हमारे नाम और पते लिखे गय। हम सबको तीस-तीस रपये दिय गये" उसने जेब म हाथ डाल-कर दस-दस के तीन नोट निकाले जो बहुत चिगुडे मिगुडे हुए थे। शहनाज सन्नाटे म खडी की खडी रह गयी। उसे अपने सुने पर यक़ीन नहीं आ रहा था पर दस-दस के तीन चिगुडे मिगुडे नोट बदर के हाथ म थे और वह हाथ उसकी तरफ़ बढा हुआ था जैसे कह रहा हो कि दस-दस के यह तीन नोट ले ला—

"मैं शादी नही कर सकता शहनाज !" बदर की आवाज़ जैसे कही बहुत दूर से आयी।

उसके बढे हुए हाथ म वह नोट अब भी थे।

शहनाज़ न हाथ बढाकर वह नोट ले लिये और फिर बडे गुरूर से बोली "मेरा मेहर आज अदा हो गया। शादी मैं तुम्ही से करूँगी।'

और इसस पहले कि बदर कुछ कह शहनाज़ चली गयी और बदर अकेला रह गया।

मोलवी खराती मस्जिद मे मगरिब की नमाज पढ रहे थे। शम्सू मियाँ दकशाप से वापस आ चुके थे। घर मे उदास बठ बीडी पी रहे थे और शहनाज के बार म सोच रह थे और दिल ही दिल मे बदर को हज़ारो गालिया दे रह थे और अच्छे-अच्छे फ्राक पहने फत्तो और उम्मन आँगन मे खेल रही थी और उस कच्चे आगन और कच्ची, लोना लगी दीवारावाले घर मे अजीब लग रही थीं। उनके साथ उनकी आया भी थी जिसने सकीना से अच्छी साडी बाध रक्खी थी। और बबी लोग को मिटटी से खेलने पर डाट रही थी और सकीना की हिम्मत नही पड रही थी कि उस आया को डाट दे क्योकि वह अँगरेज़ी बोलती थी। बच्चियो को अँग्रेजी ही मे डाँट रही थी और नाना-नानी की समझ म यही नही आ रहा था कि वह बच्चियों से क्या कह रही है और बच्चिया उसे क्या जवाब दे रही हैं

शहनाज ने घर मे झाका। फिर न जाने क्या महनाज की बच्चियो को देख कर उसे पानीपत जानेवाली बरात याद आ गयी और उसन घर म जाकर मुह लपेटकर लेटने का इरादा खत्म कर दिया। वह बिल्लो की तरफ चली गयी जहा आज सुबह को बेटी पदा हुई थी।

हमेशा की तरह देश के घर जाते हुए शहनाज को खयाल आया कि घर मे पाँव धरते ही वह "अम्मा" कहकर लपकेगा और उसे कोसना शुरू करना पडेगा। देश की याद आने से वह उदास हो गयी। और पहलवान की दुकान की तरफ देखन की हिम्मत न कर सकी। पहलवान न उसे देख लिया। पर पहलवान देश के यकायक गायब हो जाने से बुझ से गये थे। यकायक बूढे भी हो गये थे। अब बात म बात निकाल कर वह पुरानी कहानिया भी नही सुनाया करते थे

शहनाज आगे बढ गयी।

बिल्लो के घर का दरवाज़ा खुला हुआ था। वह अ दर चली गयी। इतवारी बाबा चूल्हा फूँक रहे थे। शहनाज़ बावरचीखाने म चली गयी।

"भाउज कैसी हैं ?"

"तोरी भाउज बहुत अकेली हैं।" इतवारी बाबा ने कहा।

सभी अकेले हैं। शहनाज ने सोचा। शायद अकेलापन ही इस युग की एक अकेली सच्चाई है। कोई किसी के साथ नहीं है।

एक का किस्सा सबका किस्सा।
सबका किस्सा दर्दे-जुदायी।
सब तनहा हैं।
फूल अकेले,
खुशबू तनहा।
आस अकेली,
आँसू तनहा।
लफ्ज़ अकेले,
जादू तनहा।
यह दुनिया तनहा लोगा की इक महफिल है।
कृष्ण अकेला,
मधुबन तनहा।
गाय अकेली,
मक्खन तनहा।
हाथ अकेले,
दामन तनहा।
नींद अकेली आँगन तनहा।
सबका किस्सा दर्दे-जुदायी

इतवारी बाबा ने चाय बनायी। एक प्लेट मे रात का कीमा निकाला। उस पर तह करके रात ही की दो रोटियाँ रक्खी और तब शहनाज से पूछा "चाय पीहो ?"

'जी न।" शहनाज ने कहा।

'तनी इ खाने की पलेटिया उठाय ल्यो।' बाबा ने कहा। शहनाज ने प्लेट उठाली। बासी रोटी। बासी कीमा। बासी जिन्दगी

बिल्लो अपनी बच्ची की तरफ देखकर रो रही थी। दरवाजा खुलने की आहट पर उसने जल्दी से आसू पोछ डाले और तब दरवाजे की तरफ देखा। शहनाज खाने की प्लेट लिये अन्दर आ गयी। चाय की प्याली लिये बाबा आ गये। बिल्लो ने खाना चारपायी पर रखकर बच्ची को गोद में ले लिया। उसने

अब तक इतनी छोटी बच्ची को गोद मे नहीं लिया था। उसे डर लगा कि कहीं बच्ची चट से टूट न जाये। बच्ची रोने लगी।

"चुप हरामजादी।' बिल्लो ने बच्ची को प्यार से डाँटा। "जब से पैदा भयी है पिपिहरी व दे ना हो रही एकी।"

'बडी खूबसूरत बच्ची है।" शहनाज ने कहा।

"बिल्लो भी जब एतनी बडो रही तो हू-ब हू ऐसहीं रही।" बाबा ने कहा।

पल भर को बिल्लो की आखों म भरा हुआ उदासी का गुबार साफ हो गया। वह मुस्कुरा दी। बोली 'हमरी नाक तो ऐसनी फुनौ ी जैसी कभईं ना रही होहिह।"

शहनाज न व चपानी म बि-्लो के सरहाने रक्खा हुआ ट्रांजिस्टर चालू कर दिया। समाचार आ रहे थे।—प्रधानम ी न जूनियर चैम्बस आफ कामस के सालाना जलसे को खिताब करते हुए कहा कि इस देश के दुश्मन, जो देश के अन्दर भी हैं और बाहर भी यह बात फला रहे हैं कि देश म जमहूरियत खत्म हो चुकी है। हमारा तरक्की करता हुआ देश उनके झूठ का पर्दा फाश करता है। जमहूरियत का मतलब यह नही कि मौकापरस्तो, स्मगलरो, फिरकापरस्त ताकतो को छूट दे दी जाये। यह आकाशवाणी है। आज कलकत्ता की एक जेल मे एक कैदी न कहा कि वह मुहम्मद यूसुफ नही बल्कि कटरा मीर बुलाकी बम केस का आशाराम है। इस खबर ने सरकारी हल्को में खुशी की एक लहर दौडा दी क्योंकि पुलिस इस आदमी को महीनो से तलाश कर रही थी। जब हमारे नुमाइन्दे ने इलाहाबाद म डी० आइ० जी० खुर्शीद आलम खाँ से मुलाकात की जो बम काण्ड की तफ्तीश कर रहे थे, तो उन्होने कहा कि कलकत्ता पुलिस ने उन्हे खबर दी है कि आशाराम अमूवर बनना चाहता है क्योंकि उसे यह यकीन हो गया है कि प्रधानमन्त्री देश को तरक्की के रास्ते पर ले जा रही हैं। उन्होंने हमारे नुमाइन्दे को यह भी बताया कि आशाराम सरकार का तख्ता उलटने की एक बडी साजिश का एक हिस्सा है और यह कि आशाराम के बयान के मुताबिफ ई० एम० एस० नम्बूद्रीपाद, ज्योति बासू और जाज फर्नांडिस इस साजिश के करता धरता। खुर्शीद आलम खाँ आज यू० पी० सरकार के खास जहाज से कलकत्ता के लिए रवाना होने हुए हवाई अड्डे पर हमारे नुमाइन्दे स बातचीत कर रहे थे। आकाशवाणी से उर्दू मे खबरें खत्म हुइ। अब तबसिरा निगार से सियासी हालात पर एक तबसिरा सुनिये। बोलनेवाले हैं एलाहाबाद युनिवसटी के शोबये सियासियात के सद्र डाक्टर मुर्ली मनोहर

प्रेमा ने रेडियो बन्द कर दिया।

प्रेमा बहुत उदास थी। आशाराम की खबर ने उसकी उदासी और बढा दी थी। वह जानती थी कि आशाराम के राजनीतिक परिवतन का कारण उसकी राजनीतिक चेतना नही उसका डर है। आशाराम ईमानदार आदमी था। वह ईमानदारी से इमरजेंसी के खिलाफ था और अब जब प्रेमा की समझ मे यह बातें धीरे धीरे आने लगी थी तो आकाशवाणी उससे यह कह रही थी कि आशाराम ने अपनी राय बदल दी है। परन्तु चूकि वह खुद आकाशवाणी से इमरजेंसी की खूबसूरतियो की खबरें काफी दिनो से सुना रही थी इसलिए आकाशवाणी की खबरो पर से उसका भरोसा उठ चुका था। इसलिए वह यह जानना चाहती थी कि आशाराम ने टाचर के डर से खुद ही अपना बयान पुलिस को दिया है या यह बयान टाचर का नतीजा है ?

देश के "गायब हो जाने के बाद ही से प्रेमा बहुत परेशान रहने लगी थी। वह जानती थी कि देश गायब नही हुआ है बल्कि खुर्शीद आलम खा के कब्जे मे है। और वह यह भी जानती थी कि खुर्शीद आलम खा उसके साथ क्या सुलूक कर रहे होगे। एक दिन जी कडा करके उसने रामदयी के कान बचाकर बाबूराम से यह कहा भी और बाबूराम सन्नाटे मे आ गय। क्या गाधीजी, जवाहरलाल पटेल, मौलाना आजाद, रफी अहमद किदवायी की काग्रेस के राज मे यह भी हो सकता है ! पर प्रेमा कह रही है तो हुआ होगा। उन्होंने इन्द्रा गाधी को उसी रात एक खत लिखा। बेटी इन्दू, यह मैं क्या सुन रहा हू दिल्ली मे उस खत का कोई जवाब नही आया लेकिन बाबूराम ने सोचा कि शायद प्रियदर्शिनी को वह खत मिला ही नही वरना भला यह कैसे मुमकिन हो सकता है कि उसने जवाब न दिया हो

"पर आप यह मानते क्यो नही कि आशाराम ने यह बयान टाचर से टूटने के बाद दिया होगा ?" प्रेमा ने पूछा।

"जिन्दगी मे उसने यही एक तो अक्लमन्दी का काम किया और इसे भी मैं उसकी डरपोकी मान लू ?" बाबूराम ने कहा, "मैं यह नही कहता कि जो कुछ तुम मुझे बताती रहती हो वह गलत है। तुकमान गेट पर वही कुछ हुआ होगा, मुजफ्फरनगर म वह घटनाएँ जरूर घटी होगी पर प्रियदर्शिनी को किसी ने बताया ही न होगा।"

'बतायेगा कौन दादाजी। पत्र-पत्रिकाओ की जबान काटी जा चुकी है। आकाशवाणी नम्बर एक सफदरजग वाणी हो गया है। सजय गाधी वाणी हो गया है और "

"बाबूजी को इ सब बताये से का फायदा धीया।" रामदयी ने कहा।

बाबूराम सन्नाटे मे आ गये। रामदयी ने जिन्दगी मे पहली बार उनके विरोध मे आवाज उठायी थी। उन्होने मुडकर बहू की तरफ देखा। वह भी अपनी आवाज सुनकर घबरा सी गयी थी। फिर उन्होने प्रेमा की तरफ देखा। वह उन्ही की तरफ देख रही थी। बोली, "दादाजी मेरे और आशाराम के बीच मेरे विचारो की दीवार खडी हो गयी थी। मैं भी यही सोचती थी कि कांग्रेस के सिवा किसी के पास हमारे दुखो का इलाज हो ही नही सकता। आशाराम कहता था कि कांग्रेस ? कांग्रेस अब है कहा ? वह तो सन् सतालीस में अग्रेजो से आखिरी शमनाक समझौता करके मर गयी थी। वह पण्डितजी को हिपॉक्रेट समझता था। तो मैं उससे अलग हो गयी लेकिन अब कभी-कभी मुझे लगता है कि शायद वह ठीक कहता था। और अब यकायक उसने अपनी राय बदल दी। वह कहता है कि इमरजेंसी ठीक है। सजय गाधी अवतार हैं। हम दोनो के बीच म वह दीवार फिर भी खडी है। मैं दीवार के इस पार से उस पार चली गयी हूं और वह दीवार के उस पार से इस पार आ गया है। दीवार अपनी जगह पर है।"

घर मे सन्नाटा हो गया। बाबूराम, रामदयी और प्रेमा नारायण, सबके पास अपनी-अपनी निजी यादें थी। तीनो अपनी यादो की दलदल मे धँस गय

'सम्भव है कि मिसेज गाधी को यह सब बातें न मालूम हा।" प्रेमा ने अपनी आवाज को खोज लिया, "पर मुझे मालूम है कि देश आकाशवाणी के कम्पाउड से क्यो और कैसे गायब हा गया। और एक हद तक देश की गिरफ्तारी के लिए मैं भी जिम्मेदार हूं।"

घर मे फिर सन्नाटा हो गया क्योंकि बाबूराम को अपनी आवाज नही मिली थी और रामदयी अब तक उस झटके से बाहर नही निकल सकी थी कि उसने अपने ससुर के विरोध मे आवाज उठायी थी।

सन्नाटे से घबराकर प्रेमा खडी हो गयी। फिर भी किसी ने कुछ नहीं कहा।

"चलती हूं।" प्रेमा ने अपने आपसे कहा।

बाबूराम ने एक लम्बा सांस लिया। शायद यही प्रेमा की बात का जवाब था।

प्रेमा चली गयी।

बाबूराम के घर के बाहर "पण्डित गौरीशकर पाण्डेय मार्ग" पर बडी रोशनी थी। न्यॉन के बल्ब जल रहे थे और रात दूधिया दिखायी दे रहा थी। सडक के दोनो तरफवाले घरो मे कम ताकत के बल्ब जल रहे थे। एक बठक मे चार

आदमी बठे कैरम बोड खोल रहे थे और जोर-जोर से बातें कर रहे थे और हँस रहे थे। एक घर के अदर से किसी औरत की आवाज आ रही थी। वह अपने बेटे को कोस रही थी किसी बात पर। पहलवान की दुकान पर हमेशा की तरह भीड थी पर प्रेमा को जो कहकहे याद थे, जो गालियाँ उसके काना मे आज तक गूज रही थी उनकी जगह एक अजीब सा तनाव था। लोग बातें कर रहे थे पर लग रहा था, जैसे झूठ बोल रहे हा। एक वॉक्सवैगन "गली द्वारिका प्रसाद" मे मुडने की कोशिश करने लगी। उसम जोखन मियाँ थे। जो अब पट और बुशशट पहनने लगे थे। तीन उँगलियो मे दबी हुई लाल मुहम्मद बीडी की जगह "कैंट" सिग्रेट पीने लगे थे जो उनके लिए बम्बई से मगवाया जाता था।

कार दुकान के सामने जो जरा धीमी हुई मुडने के लिए तो पहलवान की दुकान पर सन्नाटा हो गया। आवाजें जैसे हाठा पर जम गयी। दुकान पर बठे हुए किसी आदमी को पूरी तरह यह नही मालूम था कि यह खामोशी डर की वजह से थी। डर जो खून की जगह रगो मे दौड रहा था।

प्रेमा जरा अँधेरे म हो गयी। वह यह नही चाहती थी कि जोखन मिया उसे देख लें क्याकि वह उनसे बातें करके बोर होना नही चाहती थी। बात यह है कि जोखन मिया को अब खूबसूरत लडकियाँ पसन्द आने लगी थी। और प्रेमा खूबसूरत थी।

एक दिन आकाशवाणी के लिए महनाज की एक तकरीर रिकाड करने प्रेमा उसके घर गयी और उसी दिन जोखन मियाँ को पसन्द आ गयी इमरजसी का एक फायदा तो यही बताया जा सकता है कि जोखन मियाँ, मैला कुरता पाजामा पहनकर अपनी खिचडी दाढी को खुजलाकर अल्लाह रसूल का नेम लेते हुए तराजू की डण्डी मारनेवाले जोखन मियाँ दाढी मुडवाकर पट शट पहनकर प्रेमा नारायण जैसी लडकियो को पसन्द करने लगे थे। उन्ह जब मौका मिलता, महनाज की आखें बचाकर, प्रेमा को फोन दाग देते। प्रेमा फोन की घण्टी से डरने लगी थी

वॉक्सवैगन गली के नुक्कड पर रुक गयी।

दुकान के तमाम लोगो ने सलाम किया। पर जोखन मियाँ ने देखा ही नही। ड्राइवर उतरा और प्रेमा के बदन पर केंचवे रेंगने लगे। ड्राइवर के उतरने का मतलब यह था कि उसे जोखन के साथ कार मे बैठकर उनके घर तक जाना पडेगा। फिर घर पहुचने से पहले जोखन मियाँ के बदन का अपने बदन से टक राना झेलना पडेगा फिर नसबन्दी पर महनाज की नयी तकरीर सुननी पडगी।

फिर इसी वॉक्सवगन पर अपने घर जाना पड़ेगा और यही जोखन मिया अपनी बदबूदार सास के साथ उसके साथ होंगे और उनका बदन उसके बदन से टकराता रहेगा और वह बत्तख सी आवाज में हँसते रहेंगे और अपनी आंखों से उस नंगा करते रहेंगे और फिर दिल ही दिल में वह उसके बदन को निचोड़ना शुरू कर देंगे

लैला बड़े मजे ले-लेकर प्रेमा को जोखन और अपने इश्क की बातें बताया करती थी—और एक दिन जब सिर्फ यह अनुभव करने के लिए कि किसी जोखन जैसे आदमी के साथ सोना कैसा लगता है, वह तैयार हो गयी और उसके तैयार होते ही जोखन के हाथ-पांव फूल गये। "कुछ कर ही न सका कमबख्त और मैं उसे गालियां देती हुई अपने कपड़े पहनने लगी।"

"मिया बुला रहे।" ड्राइवर ने कहा।

वह चुपचाप वैगन की तरफ चल पड़ी। वह कर ही क्या सकती थी।

"आइए-आइए प्रेमा जी।" जोखन ने दरवाजा सरकाते हुए कहा, प्रेमा ने मुसकुराने की कोशिश की। सफल नहीं हुई। वह वैगन में बैठ गयी। दरवाजा सरककर बन्द हो गया। वैगन "गली द्वारिका प्रसाद' के अँधेरे में आगे बढ़ गयी। जोखन का बदन प्रेमा के बदन से टकराने लगा। जोखन अपनी बत्तखों-जैसी आवाजवाली हँसी हँसने लगा और प्रेमा के नथनों में बत्तखों की बिसांध भर गयी। उससे तो बत्तख के अण्डे भी नहीं खाये जाते थे।

'आप तो नजर ही नहीं आतीं।" जोखन ने कहा।

"इतनी छोटी तो नहीं हुई हूँ।' प्रेमा ने जलकर कहा, पर जोखन मिया की नाक में आवाज और शब्दों के जलने की महक नहीं गयी। वह उसे प्रेमा का नखरा समझे और खुश हो गये। जोर से हँसने लगे और बेखयाली में उनका हाथ प्रेमा की जाँघ पर जा गिरा और प्रेमा का सारा बदन गनगना गया जैसे उसकी जांघ पर कोई छिपकली गिर गयी हो। उसे मतली-सी आने लगी। और जोखन अपना हाथ हटाना जैसे भूल ही गये।

"वी० सी० साहब तुम्हारी शिकायत कर रहे थे कि तुम आसाराम की माशूका हो इस वास्ते तुमको आकासबानी पर नहीं होना चाहिए। तो मैं उन्हें डपट दिया और महनाज से कहा कि फौरन से पेसतर सजय जी को खत लिखो कि प्रेमा जी और आसाराम में अब कोई तअल्लुक नहीं है। वह तो हम लोगों की परसनल फ्रेंड हैं। "

जोखन मियाँ जाने क्या-क्या बोल रहे थे। प्रेमा के कान जैसे बन्द थे। उस तक जोखन की आवाज नहीं आ रही थी। उसे तो बस वह गन्दा हाथ

दिखायी दे रहा था जो उसकी जांघ पर रक्खा हुआ था। उस हाथ को हटाने के लिए उसे उस हाथ को हाथ लगाना पडता और वह उसे हाथ नही लगा सकती थी तो जरा एक तरफ सरक गयी और जोखन ने उसकी आंखो मे भरी हुई घिन देख ली और बोला, "तो शुक्लाजी ने फरमाया कि आप तो सीधे आदमी हैं जोखन साहब। हमे पता चला है कि आपकी प्रेमा नरायन के० बी० ए० साजिस म सामिल हैं।"

अब जोखन की आवाज मे वह घिनावना लुजलुजापन भी नही था। वह प्रेमा को धमका रहा था और प्रेमा समझ भी रही थी। पर यह के० बी० ए० क्या है? यह नाम तो उसने पहली बार सुना था। उसने जोखन की तरफ देखा। जोखन ने अब भी अपना हाथ उसकी जांघ से नही हटाया था। प्रेमा ने उसका हाथ अपनी जांघ से हटा दिया।

"मुझे यह बातें पसन्द नही हैं।"

घर के अन्दर जाने के बाद पता चला कि महनाज किसी मीटिंग मे गयी है। और फिर उसे यह मालूम हुआ कि वह जोखन मियां और उनके ड्राइवर सर्जू प्रसाद के साथ महनाज के कमरे मे अकेली है और जोखन मिया कमरे का दरवाजा बन्द कर रहे हैं और ड्राइवर मुसकुरा रहा है इसके बाद की बातें प्रेमा को अच्छी तरह याद नही थी। उसे इतना याद आ रहा था कि जब ड्राइवर उसके बदन का झिझोड रहा था और वह दीवान पर बेबस पडी हुई थी तो जसे कहीं बहुत दूर किसी फोन की घण्टी सी बजी थी और फिर दद की लहरो के बीच उस तक जोखन की आवाज आ रही थी। "नखलऊ चली गयी असफाकुल्लाह खां को लेके? अच्छा अच्छा असफाकुल्लाह खा बाडी गाडी के वास्त गये हैं। मुखमन्तरी ससुर को कौन काम पड गया। उँह! गाँड मरायें मुखमन्तरी' फिर सांसो की आवाजो के सिवा कोई आवाज नही रह गयी। कभी कभार कटरा मीर बुलाकी की कोई भूली भटकी आवाज आ जाती थी और बस। फिर सासो की आवाज खत्म हो गयी और जोखन और ड्राइवर के हँसने की आवाज आयी। वे किसी आपसी मजाक पर एक गन्दी, भिची हुई हँसी हँस रहे थे। फिर कमरे मे वह अकेली रह गयी। उसने आंखें खोली। कमरा वैसा ही था। हर तरफ उसके कपडे बिखरे हुए थे। वह उठी। दद की एक लहर भी उठी। वह उसे झेल गयी। उसे बडी प्यास लग रही थी। और उसे ऐसा लग रहा था कि जैसे उसकी आत्मा को एक बडे ही डरावने सन्नाटे ने जकड लिया है। उस सन्नाटे की दाढ़ी खिचडी की तरह। बदन गँठा हुआ है सर्जू प्रसाद तरह और आशाराम की तरह

वह हैरान भी हुई कि आशाराम इन दोनो के साथ कहाँ आ गया वह उठी और नगी ही बाथरूम की तरफ गयी। वाशबेसिन मे ठण्डा पानी भरकर उसने खूब-खूब मुह पर छपके मारे। फिर उसन सोचा कि नहा लेना चाहिए। तो बॉथ टब मे लेट गयी। वह देर तक नहाती रही। पर बदन मे जोक की तरह चिपकी हुई गन्दगी जैसे साफ ही नहीं हो रही थी। तो आजिज आकर वह बाथरूम से निकल आयी। उसने एक साफ तौलिये से रगड रगडकर अपना बदन सुखाया। फिर आईने के सामने खडी हुई और अपने बदन को नगा देखकर उसे एकदम से याद आ गया कि उस पर क्या गुजर चुकी है। वह महनाज के कमरे म लौट आयी। सामने दीवार पर 'उन माँ बटे" की तस्वीर टँगी हुई थी। दोनो मुसकुरा रहे थे। उसने झुककर अपना अण्डरवियर उठाया। उसका अलास्टिक टूट चुका था। ब्लाउज के सारे हुक नुचे हुए थे। साडी मे दो जगह खोच लग गयी थी। उसने महनाज के कपडो की अलमारी खोली। अपने लिए एक साडी पसन्द करने लगी।

"तैयार हो गयी हो तो चलो छोड आयें जानी।' सर्जू प्रसाद की आवाज आयी।

प्रेमा ने पलट के देखा।

सर्जू प्रसाद दरवाजे म खडा मुसकुरा रहा था। प्रेमा ने अभी ब्लाउज की केवल एक बाह डाली थी। पर उस शम नही आयी। बोली, "मैं खुद चली जाऊँगी।'

"मजा आया कि ना ?"

प्रेमा न जवाब नही दिया। वह ब्लाउज पहनने लगी। सर्जू प्रसाद अन्दर आ गया और महनाज के पलग पर यू बैठ गया जैसे इस पलग से उसकी पुरानी मुलाकात हो। उस पलग से उसकी पुरानी मुलाकात थी भी।

"जोखन मियाँ तो अब खाली जबानी खरच के रह गये हैं। उनकी तरफ से हम्मे महनाजो के साथ इ काम करना पडता है। बाकी महनाज के साथ हम इ काम जाखन मिया के हुकुम से ना करते।' सर्जू हँसा। प्रेमा साडी बाधने लगी।

तैयार होने के बाद सर्जू प्रसाद की तरफ देखे बिना वह महनाज के कमरे से निकल गयी।

कटरा मीर बुलाकी मे अँधेरा था। प्रेमा उस अँधेर मे चल पडी। कुछ आवारा कुत्ते भूक रहे थे। सामने एक भीड सी इकट्ठा थी। प्रेमा को आश्चय भी हुआ कि इतनी रात गये, इमरजेंसी के दिना मे भीड लगाने की हिम्मत कसे

दिखायी दे रहा था जो उसकी जाघ पर रक्खा हुआ था। उस हाथ को हटाने के लिए उसे उस हाथ को हाथ लगाना पडता और वह उसे हाथ नही लगा सकती थी तो ज़रा एक तरफ सरक गयी और जोखन ने उसकी आखा मे भरी हुई घिन देख ली और बोला, "तो शुक्लाजी ने फरमाया कि आप तो सीधे आदमी हैं जोखन साहब। हमे पता चला है कि आपकी प्रेमा नराएन के० बी० ए० साजिस मे सामिल हैं।"

अब जोखन की आवाज़ मे वह घिनावना लुजलुजापन भी नही था। वह प्रेमा को धमका रहा था और प्रेमा समझ भी रही थी। पर यह के० बी० ए० क्या है ? यह नाम तो उसने पहली बार सुना था। उसने जोखन की तरफ देखा। जोखन ने अब भी अपना हाथ उसकी जाँघ मे नही हटाया था। प्रेमा ने उसका हाथ अपनी जाँघ से हटा दिया।

"मुझे यह बातें पसन्द नही हैं।"

घर के अन्दर जाने के बाद पता चला कि महनाज़ किसी मीटिंग मे गयी है। और फिर उसे यह मालूम हुआ कि वह जोखन मियाँ और उनके ड्राइवर सर्जू प्रसाद के साथ महनाज़ के कमरे मे अकेली है और जोखन मिया कमरे का दरवाज़ा बन्द कर रहे हैं और ड्राइवर मुसकुरा रहा है इसके बाद की बातें प्रेमा को अच्छी तरह याद नही थी। उसे इतना याद आ रहा था कि जब ड्राइवर उसके बदन का झिझोड रहा था और वह दीवान पर बेबस पडी हुई थी तो जसे कहीं बहुत दूर किसी फोन की घण्टी-सी बजी थी और फिर दद की लहरो के बीच उस तक जोखन की आवाज़ आ रही थी। "नखलऊ चली गयी असफाकुल्लाह खाँ को लेके ? अच्छा अच्छा असफाकुल्लाह खा बाडी गाडी के वास्त गये हैं। मुखमन्तरी ससुर को कौन काम पड गया। उँह ! गाँड मरायें मुखमन्तरी फिर साँसो की आवाज़ा के सिवा कोई आवाज़ नही रह गयी। कभी-कभार कटरा मीर बुलाकी की कोई भूली भटकी आवाज़ आ जाती थी और बस। फिर साँसो की आवाज़ खत्म हो गयी और जोखन और ड्राइवर के हँसने की आवाज़ आयी। वे किसी आपसी मज़ाक पर एक गन्दी, भिची हुई हँसी हँस रहे थे। फिर कमरे मे वह अकेली रह गयी। उसने आँखें खोली। कमरा वैसा ही था। हर तरफ़ उसके कपडे बिखरे हुए थे। वह उठी। दद की एक लहर भी उठी। वह उसे झेल गयी। उसे बडी प्यास लग रही थी। और उसे ऐसा लग रहा था कि जसे उसकी आत्मा को एक बडे ही डरावन सन्नाटे न जकड लिया है। उस सन्नाटे की दाढ़ी खिचडी है। जोखन की तरह। बदन गँठा हुआ है सर्जू प्रसाद ड्राइवर की तरह और उसकी आँखें हैं आशाराम की तरह

वह हैरान भी हुई कि आशाराम इन दोनो के साथ कहा आ गया वह उठी और नगी ही बाथरूम की तरफ गयी। वाशबेसिन मे ठण्डा पानी भरकर उसने खूब खूब मुह पर छपके मारे। फिर उसने सोचा कि नहा लेना चाहिए। तो बाथ टब मे लेट गयी। वह देर तक नहातो रही। पर बदन मे जोक की तरह चिपकी हुई गन्दगी जैसे साफ ही नही हो रही थी। तो आजिज आकर वह बाथरूम से निकल आयी। उसने एक साफ तौलिये से रगड रगडकर अपना बदन सुखाया। फिर आईने के सामने खडी हुई और अपने बदन को नगा देखकर उसे एकदम से याद आ गया कि उस पर क्या गुजर चुकी है। वह महनाज के कमरे मे लौट आयी। सामने दीवार पर 'उन मा बेटे" की तस्वीर टँगी हुई थी। दोना मुसकुरा रहे थे। उसने झुककर अपना अण्डरवियर उठाया। उसका अलास्टिक टूट चुका था। ब्लाउज के सारे हुक नुचे हुए थे। साडी मे दो जगह खोच लग गयी थी। उसने महनाज के कपडो की अलमारी खोली। अपने लिए एक साडी पसन्द करने लगी।

"तैयार हो गयी हो तो चलो छोड आयें जानी।" सजू प्रसाद की आवाज आयी।

प्रेमा ने पलट के देखा।

सर्जू प्रसाद दरवाजे मे खडा मुसकुरा रहा था। प्रेमा ने अभी ब्लाउज की केवल एक बाह डाली थी। पर उस शम नही आयी। बोली, "मैं खुद चली जाऊँगी।'

"मजा आया कि ना ?"

प्रेमा न जवाब नही दिया। वह ब्लाउज पहनने लगी। सजू प्रसाद अन्दर आ गया और महनाज के पलग पर यू बैठ गया जसे इस पलग से उसकी पुरानी मुलाकात हो। उस पलग से उसकी पुरानी मुलाकात थी भी।

"जोखन मियाँ तो अब खाली जवानी खरच के रह गये हैं। उनकी तरफ से हम्मे महनाजो के साथ इ काम करना पडता है। बाकी महनाज के साथ हम इ काम जोखन मिया के हुकुम से ना करते।' सर्जू हँसा। प्रेमा साडी बाधने लगी।

तैयार होने के बाद सजू प्रसाद की तरफ देखे बिना वह महनाज के कमरे मे निकल गयी।

कटरा मोर बुलाकी मे अँधेरा था। प्रेमा उस अँधेर म चल पडी। कुछ आवारा कुत्ते भूक रहे थे। सामने एक भीड सी इकटठा थी। प्रेमा को आश्चय भी हुआ कि इतनी रात गये, इमरजेंसी के दिना मे भीड लगाने की हिम्मत कैसे

की लोगो ने। तो वह उस भीड की तरफ चल पडी।

सामन देश था।

दश के चारो तरफ कटरा मीर बुलाकी के लोग थे।

सब सन्नाटे मे थे।

प्रेमा मास्टर बदर के पास खडी हो गयी।

मास्टर बदर ने उसकी तरफ देखा। पर मास्टर बदर ने इतनी रात गये उसके यहाँ होने पर कोई आश्चय प्रकट नही किया। वह फिर देश की तरफ दखने लगा।

देश की आँखें बन्द थी। फिर धीरे धीर दश की आँखें खुली। उसने चारो तरफ देखा। चारो तरफ जाने पहचान लोग थे। पर उसन किसी का नही पहचाना। फिर उसकी आखो मे एक डर चमका और वह जोर जोर से चिल्लाने लगा, "स्रीमती गाँधी जिन्दाबाद, स्रीमती गाँधी जिन्दाबाद ' और फिर उसके होठो पर एक अजीब-सी मुसकुराहट आयी। शराब की खाली बोतल-सी मुसकुराहट। किसी अथहीन कविता सी मुसकुराहट। सरकार के किय हुए वादो-सी मुसकुराहट। कागज के फूल सी मुसकुराहट। मुसकुराहट जिसका कोई रग, कोई चरित्र और कोई अथ नही था।

देश के चारो तरफ खडे हुए लोग उस मुसकुराहट को दखकर डर गये।

हम तो ए बाबुल तोरे अंगना की चिरैया

सारा कटरा मीर बुलाकी उफ कटरा श्रीमती गांधी बिल्लो के घर के सामने चुपचाप खड़ा था। सर झुकाये हुए। किसी में इतनी हिम्मत नहीं थी कि उस दरवाजे की कुण्डी बजाये और बिल्लो से कहे कि उसका देश आ गया है।

देश के होठों पर फिर वही अर्थहीन मुस्कुराहट आयी और उसने जोर से नारा लगाया 'श्रीमती गांधी जिन्दाबाद। श्रीमती गांधी जिन्दाबाद—"

रात के सन्नाटे में यह आवाज न जाने कहां-कहां तक गयी। सामनेवाले घर का दरवाजा खुला और लुंगी लपेटते हुए एक आदमी ने झांककर देखा और लगी हुई खामोश भीड़ को देख वहीं आ गया।

"बिल्लो को कोई इनाम-उनाम मिला है का?" उसने बदर से पूछा। परन्तु इससे पहले कि बदर कुछ कहे उसकी निगाह देश पर पड़ गयी जो नारे लगाना बन्द करके अपनी अर्थहीन, खाली बोतल-सी मुस्कुराहट में लग गया था। वह आदमी सन्नाटे में आ गया और लुंगी लपेटता चुपचाप अपने घर में चला गया और उसने दरवाजा अन्दर से बन्द कर लिया यही तो इमरजेंसी का कमाल था कि हर आदमी ने अन्दर से किवाड़ लगा रक्खे थे और सपनों पर दफा चवालीस लगा रक्खी थी कि पांच सपने इकट्ठा न हों। रोजगार, शान्ति, बेखौफी, इतमीनान और आजादी—पांच सपनों के इकट्ठा होने को सरकार जुर्म मान रही थी और कटरा मीर बुलाकी चुप, सर झुकाये बॉन बल्बों की दूधिया रोशनी में बिल्लो के घर के सामने खड़ा था और उस घर का दरवाजा अन्दर से बन्द था।

आखिर पहलवान ने हिम्मत की। आगे बढ़े और उन्होंने कुण्डी बजायी।

'बिल्लो, ए बिल्लो।" पहलवान ने आवाज़ दी।

बिल्ला की आख खुल गयी। पहलवान की आवाज़ फिर आयी। वह उठी। बच्ची मेल्ही। उसने उस थपक दिया। पहलवान की आवाज फिर आयी। उसे हैरानी हो रही थी कि मामा इतनी रात गये क्यो पुकार रहे है और उनकी आवाज़ मे यह भीगी भीगी मिठास क्या है।

बिल्लो ने दरवाज़ा खोला। सामने लगी हुई भीड को देखकर वह डर गयी। सामने, भीड के आग, उसकी आखो के बिल्कुल पास, मामा खडे थे। उदास। फिर मामा सामने से हट गये और उसकी नजर उस चीज़ पर पडी जो सडक पर पडी-पडी मुस्कुरा रही थी। और उस अथहीन मुस्कुराहट के उस पार देश था। उसका देश। देश उसका दोस्त। देश उसका प्रेमी। देश उसका पति। देश उसकी बच्ची का बाप। और उन सभी देशो की एक ही हालत थी। एक अथहीन मुस्कुराहट के सिवा हर चीज़ टूटी हुई, घायल

बिल्लो जैसे जम गयी। उसे अपनी आखो पर यकीन नही आ रहा था। अन्दर बच्ची जाग गयी थी और रो रही थी पर उसके रोने की आवाज़ बिल्लो की ठिठकन की दीवार नही पार कर पा रही थी—मामा ने उसके गले मे बाह डाल दी और वह उनसे लिपटकर रोने लगी और देश मुस्कुराता रहा। वही अथहीन मुस्कुराहट और फिर उसने नारा मारा, "श्रीमती गाँधी की जय" और फिर बच्चो की तरह हँसने लगा

अन्दर बच्ची रो रही थी। चौखट पर बिल्लो रो रही थी और चौखट के बाहर देश मुस्कुरा रहा था और बच्चो की तरह चारो हाथ पावो के बल घर की तरफ चल रहा था। बकैया। बच्चा की तरह। रोती हुई बिल्लो को पार करके वह आँगन मे उतर गया। फिर मामा बिल्लो को अन्दर ले गये और शम्सू मिया ने इतवारी के अन्दर आ जाने के बाद दरवाजा अन्दर से बन्द कर दिया और लगी हुई भीड चुपचाप छँट गयी और यॉन बल्बो की दूधिया राशनी मे नहायी हुई सडक अकेली रह गयी सडक पर न कोई राहगीर था, न रहबर न कोई तूफान। सारा तूफान तो सामनेवाले घर म था जिसम अब तक बिल्लो अपनी आँखो की गवाही मानने पर तयार नही थी और उसकी बच्ची इतवारी बाबा की गोद मे रो रही थी और पहलवान चुपचाप आँगन म बठे बीडी पी रहे थे और उन्हें अपना वह दाम्त याद आ रहा था जो अपन बच्चे का उनकी गोद म दकर अपनी पत्नी के साथ बूढ़े ताजिय पर मानी हुई अपनी मन्नत उतारन चला गया था

पहलवान न पलटकर देश की तरफ देखा। वह दालान मे बकैया चल रहा

था और धीरे-धीरे किसी मन्त्र की तरह "श्रीमती गांधी जिन्दाबाद" का जाप कर रहा था। यह जाप कभी खुशामद बन जाता। कभी गुस्सा और कभी नफरत—दालान मे टँगा हुआ लाल मुहम्मद बीडी का कलेण्डर उसी जगह था और श्रीमती गाधी का फोटो उस कलेण्डर मे उसी तरह मुस्कुरा रहा था जसे उस तक देश की आवाज़ ही न जा रही हो और बिल्लो दालान के खम्बे से टिकी खडी हुई थी और अपनी आखो से देश के बदन पर पडी हुई दद की धूल साफ कर रही थी और जख्मो के निशानो पर गुजरे हुए दिनो की यादो का मरहम लगा रही थी देश थककर वही दालान के खडजेदार फश पर सो गया। बच्ची इतवारी बाबा की गोद मे सो गयी। पहलवान ने बीडी को मा की गाली देकर बुझा दिया।

"तू भी सो जाव बहिनी।" इतवारी बाबा ने कहा।

"आप लोग जाइए।" बिल्लो ने कहा।

"हमरे कहे का मतलब ई रहा कि "

"आप लोग जाइए।" बिल्लो ने फिर कहा।

पहलवान ने बेबसी मे इतवारी बाबा की तरफ देखा। इतवारी बाबा ने उनकी आँखो की बात का जवाब देने की जगह बच्ची को बिल्लो की गोद मे दे दिया और पहलवान की तरफ देखे बिना आँगन मे उतरकर दरवाजे की तरफ चल पडे। पहलवान भी उठ खडे हुए। दरवाज़ा खुला। दरवाजा बन्द हो गया और बिल्लो देश के साथ अकेली रह गयी।

बिल्लो ने बच्ची को बडी एहतियात से चारपाई पर लिटा दिया। बच्ची शायद मुस्कुरा दी। और तब वह सोये हुए देश के पास बैठ गयी और उसे देखने लगी और जब उसकी तरफ देखते रहना सम्भव न रह गया तो उससे लिपटकर बच्चो की तरह रोने लगी लाल मुहम्मद बीडीवाले कलेण्डर मे बैठी श्रीमती गाँधी ने इस पर भी ध्यान नही दिया। वह मुस्कुराती रही

बिल्लो की रात बडी मुश्किल से गुज़री।

सुबह हुई तो सन्नाटा टूट गया और घर मे मनसना हो गया। लोग देश को देखने आने लगे—देश एक आदमी से एक तमाशा बन गया। वह लोगो से बेख बर बकैयाँ चलता रहा एक खूबसूरत, फूल सी बच्ची उसे बकयाँ चलता देखकर खिलखिला पडी और तमाम लोग उसकी तरफ देखने लगे। वह बिचारी घबरा गयी पर देश बकयाँ चलता रहा और अपने मन्त्र का जाप करता रहा—फिर एक एक करके औरतें बच्चा को घसीटती चली गयी। बच्चे जाना नही चाहते क्योकि एक बडे आदमी को बकैयाँ चलता देखने मे उन्हे बडा मज़ा आ रहा था।

परन्तु माँझा को और भी काम थे। घर में जाकर चूल्हा जलाना था। पतिमा के लिए खाना पकाना था। सब्जी बेचनेवाली से लड़ना था। एक-दूसरे की पीठ पीछे सब दूसरे की बुराई करनी थी। बेटियों की जवानी की तरफ से परेशान होना था। औरतों के जाने के बाद पड़ोसवाला चाय लेकर आये। बिल्लो चाय का प्याला लेकर देव के पास बैठ गयी 'श्रीमती गाँधी भेजिन हैं।" उसने देव से कहा।

श्रीमती गाँधी जिन्दाबाद। देव ने जवाब दिया।

हाँ हाँ। जिन्दाबाद,' बिल्लो ने कहा, "चाय पी लो नहीं तो देव लो उप्पर बैठी देख रही। उसने कैलेण्डर की तरफ इशारा किया। मिसेज गाँधी मुस्कुरा रही थी। चा पीलो तो खुश हो जैहैं।"

यह बात देव तक पहुँच गयी। उसने पीछे और दाहिने-बायें देखा। मामा और बिल्लो के सिवा कोई नहीं था। वह चाय पीने लगा। उसके हाथ बेकार थे। बिल्लो उसे चम्मच से पिला रही थी और वह पी रहा था

अब ई बच्चा भी पाले को पड़ेगा तुईं।' मामा ने कहा। बिल्लो ने कोई जवाब नहीं दिया। वह देव को चाय पिलाती रही और बिस्कुट के टुकड़े खिलाती रही। 'हमरी राय तो ई है कि तू अब पुरान घरम उठवला। हम त-कम सम्मू मिसी का घर मिला हुआ है। गरीबा भाउज ऊ नहीं तो सम्हाल पाती थोड़ी देर बपट सकती है तार साथ। रहीं अकेली कइसे सँभालिहा तू बच्चन का।'

'हम एँही रहेंगे। बिल्लो ने जवाब दिया।

थोड़ी देर के लिए सन्नाटा हो गया। लिए चम्मचे से चाय सुड़कने की आवाज आती रही।

'अइसे करने की बात है। पानवाले ने कहना शुरू किया,' अगरबत्तीवाला कहत रहा कि ई मकान चोरी हो गवा है। तो इधिर उधिर के घर लिखाये देंदहैं। तोरा घर भी आगी इलीम में आ गवा।"

अब बिल्लो चमकी।

पचासवी बरसी पर उनकी एक ठो मूर्ती लगेवाली है कोठे के मरदाने आगन मे। सजय गाधी आ रह मूर्ती की नकाब कुसायी करे। बहुत बडा जलूस निकलिहे। ई सडक मे ऊ जलूस ना समा सकता। "

"इ बाबू स्यूसकर के बाप का घर ना है कि गिरा दिया जैयहे। हम नकद दाम देके खरीदा है इ जमीन। हम मुह ना नोच लेंगे घर गिरायेवाले का।"

"स्रीमती गाधी जिन्दाबाद।" देश ने नारा लगाया और उसकी आवाज़ से बच्ची चिहुक के जाग गयी और रोने लगी। चाय का प्याला जमीन पर रखकर बिल्लो ने बच्ची को उठा लिया और उसे चुप करने के लिए उसन उसके मुँह म अपना दूध दे दिया

यह दिन उसके आराम करने के थे। उसने सुना था कि चालीस दिन की सौरी होती है। मेवे की तुर्री पिलायी जाती है। गोद का हलवा खिलाया जाता है। बदन की मालिश की जाती है उसे साडी मे कुछ गीलापन लगा खून फिर बहने लगा था। पहलवान ने उसे लिटा दिया और बाहर निकलकर चिल्लाने लगे, "नरेना। अबे ओ बेटीचोद नरेना। तनी लपक के मोली खैराती को बुला ला। कहिबे की बिल्लो की तबिअत खराब हो गयी है।"

'दुकान अकेली है।" नारायण ने कहा।

"अरे दुकान गयी तोरी मा की चूत मे साले।'

नारायण दुकान छोडकर भागा। मोल्वी खैराती अपना होम्योपथी का बक्सा ले के आ गये। बिल्लो लेटी हुई थी।

मोल्वी खैराती ने अपना दवाओ का बक्स चारपाई पर रक्खा और पहलवान की रक्खी हुई कुरसी पर बठ गये। बिल्लो का चेहरा सफद हो रहा था। देश जमीन पर पडा हुआ था और पानी के गिलास की तरफ देख रहा था। बच्ची सो रही थी। पहलवान जल्दी-जल्दी बीडी के कश ले रहे थे। रामदीन की अम्मा बच्ची की ढोडी मे कोई दवा लगा रही थी। इतवारी बाबा बावरची-खाने म थे और चूल्हे से धुआँ उठ रहा था।

मोल्वी खैराती ने नब्ज देखने की जगह रामदीन की अम्मा से बिल्लो का हाल सुनकर एक पुरानी-सी किताब खोली जो उनकी बगल मे दबी हुई आयी थी। उर्दू म छपी हुई किताब थी। वह तेजी से उसके पन्ने पलटने लगे। कही रुकते पर सारे सिम्टम न मिलने के कारण आगे बढ जाते। आखिर एक पन्ना उन्हे ठीक मालूम हुआ। उन्होंने अपना बक्सा खोला। छोटी-छोटी शीशियाँ, नन्ही-नही गोलियो से भरी हुई, कतार में लगी हुई थी। हर शीशी की काक पर एक नम्बर लिखा हुआ था। मोल्वी खैराती ने तीन शीशियाँ निकालीं।

कागज के चौकोर टुकड़े बक्से के एक खाने से निकाले। चार टुकड़े। उन टुकड़ो को उन्होंने चारपाई पर सलीके से रक्खा, फिर शीशिया से उन पर तीन-तीन गोलिया गिराने लगे। फिर उन्होंने बहुत सलीके से तीन टुकड़ो की पुडियाँ बनायी और चौथे कागज की दवा बिल्लो के मुह मे डाल दी और बिल्लो का मुह नन्ही-नन्ही गोलियो की मिठास से भर गया और उसे अपना बचपन याद आ गया जब वह मोल्वी साहब के घर यह गोलिया खाने जाया करती थी और वह उसके मुह मे यू ही गोलियाँ गिराकर उसका मुह चूम लिया करते थे। तब बदर की अम्मा जिन्दा थी। अपने बचपन को याद करके उसकी आँखें भर आयी। और उसने दीवार की तरफ करवट ले ली।

"उट्ठे मत देना।" मोल्वी साहब ने कहा, "आराम की सख्त जरूरत है। मगर कोई ऐसी परेशानी की बात नही है। रामदीन की अम्मा को कुछ दिन के लिए यही रख लीजिए। मालिश भी करेगी और बच्ची की देखभाल भी कर लेगी।'

मोल्वी साहब चले गये।

"आपो दुकान पर जाइए।" बिल्लो ने मामा से कहा।

'नरैना है दुकान पर।" मामा ने कहा।

"नरैना का देखिये दुकान।"

"अच्छा बाबा हम जाइत हैं। तू सुनेवाली थोडे हो कोई की।" पट्टलवान ने बीडी को आँगन मे फेंकते हुए कहा। फिर उन्होंने रामदीन की अम्मा से कहा, "उट्ठे मत देना ऐको।"

वह चले गये।

रामदीन की अम्मा बच्ची के साथ खटोले पर लेट गयी। इतवारी बाबा बावरचीखाने मे ऊँघने लगे। बिल्लो देश की तरफ देखने लगी। देश की आखें न जाने कहाँ थी।

'मामा कहते रहे कि सरकार हम लोगन को जमुना पार भेजेवाली है।' उसने देश से कहा। देश के होठो पर वही अर्थहीन, खाली बोतल-सी मुस्कुराहट आ गयी। "सजय गाँधी के जलूस के वास्ते ई सडक चौडी होयेवाली है।" उसने कहा। देश फिर मुस्कुरा दिया। "कुछ बोलिहो ना ?"

"श्रीमती गाँधी जिन्दाबाद।" देश बोला।

देश की इस बात का बिल्लो के पास कोई जवाब नही था। वह चुप हो गयी और मकडी के जाले की तरफ देखने लगी जो छत के एक कोने मे था और जिसमे एक मक्खी की लाश फँसी हुई थी और मकडी का पता नही था। फिर

उसकी निगाह जरा नीचे उतरी। दीवार पर देश के साथ उसकी तस्वीर थी। वही फुटपाथ पर, मोटर के कट-आउट के बैक ग्राउण्ड मे खिचवायी हुई तस्वीर। उसने देश की तरफ देखा और सोचा कि यह सामने बेबस पडा हुआ वह देश कसे हो सकता है जिसके साथ उसने उस दिन यह तस्वीर खिचवायी थी एक परछायी सी सामने से गुजरी। बिल्लो ने सामने देखा। प्रेमा नारायण खडी थी। बिल्लो उसे देखकर बडी बहादुरी से मुस्कुरायी। प्रेमा अन्दर आ गयी। जवाब मे उसने भी मुस्कुराना चाहा पर उससे मुस्कुराया न गया।

"कसी हो ?" उसन बडी बेवकूफी का सवाल किया क्योकि वह साफ देख रही थी कि वह अच्छी नही है। पर यह बातें हमारे समाज मे यू ही पूछ ली जाती हैं क्याकि पूछने के लिए कुछ होता ही नही।

"बठिए।" बिल्लो ने कहा।

प्रेमा मोल्बी खराती वाली कुरसी पर बैठ गयी।

कमरे मे सन्नाटा हो गया।

फिर यकायक देश खिलखिलाकर बच्चा की तरह हँसने लगा।

बिल्लो और प्रेमा ने एक साथ उसकी तरफ देखा। वह उन दोनो से बेखबर था।

बिल्लो ने उस पर से आँखें हटा ली पर प्रेमा उसी की तरफ देखती रही। शायद वह उसके टूट फूटे बदन पर जगह जगह अपना नाम पढने की कोशिश कर रही थी। न जाने क्या देश ने उसकी तरफ देखा। उसकी आखा मे न कोई दद था, न कोई शिकायत। उसकी आखो मे न कोई जज्बा था, न कोई पहचान। न वे कुछ कह रही थी, न सुन रही थी दो वीराने थे जिनम किसी खयाल की परछाईं भी नही थी प्रेमा को किसी पत्रिका मे पढी हुई एक नज्म से कुछ लाइनें याद आ गयी

खडी दापहर दरवाजे पर,
मन के अन्दर रात।
गूगा आँगन,
गूगा कमरा
करे न कोई बात।
किस आवाज की टहनी पर हम दिल की बात उतारें !
किस डाली पर झूलें,
किस पोखर को पत्थर मारें !
सारे रस्ते याद हैं हमको

हम कैसे खो जायें ?
जब तक जागें,
अपने आपसे बात करें,
—सो जायें ।

यह वीरान आखें क्या कभी बात ही नहीं करेंगी ? प्रेमा ने सोचा और उसे लगा कि जैसे इस गूंगेपन की जिम्मेदारी उसी के सर आती है । वह आकाशवाणी पर समाचार सुनाने की नौकरी करती है । सरकार के लिए जासूसी करना उसके काम में शामिल नहीं है । और वहां, बिल्लो के घर में, बिल्लो की बोलती हुई और देश की गूंगी आखों और सोया बच्ची और उसकी तरफ देखती हुई रामदीन की अम्मा और बावरचीखाने में ऊंघते हुए इतवारी बाबा के सामने वह अपनी आखों से गिर गयी और उसे बहुत चोट भी लगी । यह चोट कल रात महनाज के कमरे में लगनेवाली चोट से अलग थी ।

"मुझे पहचानते हो ?" प्रेमा ने देश से पूछा ।

देश ने सर हिला दिया जैसे कोई किसी सवाल का जवाब मालूम होने पर खुशी से फूल के सर हिलाये ।

"कौन हूँ मैं ?"

"श्रीमती गांधी ।" देश ने कहा और हँसने लगा । जैसे कोई बच्चा किसी मुश्किल सवाल का जवाब देकर हँस दे ।

"एही हाल है ।" बिल्लो ने कहा "हर बात का जवाब श्रीमती ।"

प्रेमा ने कुछ नहीं कहा ।

"प्रेमा जी ।" बिल्लो बोली, "हम इनके गायब होय के बारे में भी श्रीमती गांधी को सहनाज से एक ठो खत लिखवाया रहा । लग रहा कि ऊ साइद मिलबे ना किया उनसे । मिलता तो ऊ जवाब जरूर देती । इन पर तो उनकी खास निगाह है । बरखसाप खोले को करज दिलवाइन रहा बस को खत लिख के । हमरी तरफ से एक ठो खत आज आप लिख दीजिए उनके । हम और कुछ नहीं चाह रहें । खाली ऊ सी० आइ० डी० को बोल दें कि जो देस का इ हाल बनाया ओका नाम-पता मालूम किया जाये । कम से-कम हम ओको कोस तो लें प्रेमा जी ?"

"अच्छा ।" प्रेमा ने कहा, "लिख दूंगी ।"

"खूब समझा के लिखियेगा ।"

"लिख दूंगी ।"

बातें खत्म हो गयी । बिल्लो देश की तरफ देखने लगी । प्रेमा दंग से आँखें

चुराने लगी।

"सुन रह कि आसा बाबू स्रीमती गांधी के साथ आ गये।" बिल्लो ने कहा।

"हाँ।" प्रेमा ने जवाब दिया।

"का ऊ सचमुच सरकार का तखता उलटे की साजिस करते रहे? हम उनहे ऐयसा त ना समझते रहे। खिलाफ त ऊ जरूर रहे पर सरकार के पास तखना कयसा होता है और कहाँ रक्खा रहता है कि जो चाह उहे उलटे की कोसिस करे लगे? कहाँ देहली, कहाँ कटरा मीर बुलाकी। इहाँ से बैयठे बयठे कोई देहली का तखता कैयसे उलट सकता है? सरकार का तखता का इहा एनाहा आद मे है?"

"हाँ।" प्रेमा ने कहा।

चाय की दो प्यालियाँ लेकर इतवारी बाबा आ गये। एक प्याली उन्होंने प्रेमा को दी। दूसरी की आधी उन्होंने बिल्लो को दी और आधी चाय सासर मे लेकर देश को पिलाने बैठ गये। बोले "ऐ रामदीन की अम्माँ। उहा जाके चाय पी ल्या।"

रामदीन की अम्मा चली गयी।

इतवारी न प्रेमा की तरफ देखा और कहा "सन बयालिस मे हम पुलिस के हाथ की मार खा चुके है। हमे खब पहचान है पुलिस की मार की। देस को पुलिस मारिस है।'

"तू तो सठिया गय हो।" बिल्लो ने कहा, "पुलिस काहे को मारिहे? का किहिन है ई? तखता उलटिन है सरकार का? "

'पुलिस न इनस आशाराम का पता पूछा होगा बिल्लोजी।" प्रेमा ने कहा। और यह कहन के बाद उसके सीने से जैसे एक बोझ सरक गया। वह हलकी हो गयी। उस दिन आप भी रेडियो स्टेशन आयी थी ना "

"ऐ साहब, ऊ बिल्लो की तकरीर बजी ना आज तक।" इतवारी ने कहा।

"वह हुआ यह कि जिस वक्त बजनेवाली थी उसी वक्त श्रीमती गाधी ने बोलने का फसला कर लिया। बस बिल्लो की बात रह गयी। बज जायेगी किसी दिन।" प्रेमा न कहा और उसका दम घुटने लगा। उसने देश की तरफ देखा। वह उसकी तरफ देखकर उसी तरह मुस्कुरा रहा था। घडी देखती हुई वह उठ खडी हुई 'अब चलती हूँ। समाचार सुनाना है। फिर आनी हू किसी वक्त। अपना और देश का खयाल रखना।"

चाय की प्याली को चारपाई पर रखती हुई वह चली गयी। चाय वैसी की वैसी थी

रेडियो स्टशन के लोगो को प्रेमा मे कोई खास परिवतन नही दिखायी दिया। वह उसी तरह मुस्कुराती हुई समाचार लेकर रिकार्डिग थेटर मे चली गयी। कुरसी पर बैठकर उसने माइक्रोफोन को ठीक किया। गला साफ किया और फिर लाल बत्ती के जलने की राह देखने लगी। रिकार्डिस्ट ने शीशे के उस पार से उसकी तरफ हमेशा की तरह एक दोस्ताना मुस्कुराहट भेजी। उसने भी जवाब मे एक दोस्ताना मुस्कुराहट भेज दी।

लाल बत्ती जल गयी।

"यह आकाशवाणी लखनऊ इलाहाबाद है। अब आप प्रेमा नारायण से स्थानीय समाचार सुनिए।" रिकार्डिस्ट ने हेड फोन उतार दिये। आवाज का वाल्युम ठीक था। प्रेमा एक मँजी हुई न्युज रीडर थी। तो उसने एक सिग्रेट सुलगा ली। उसे या किसी को खयाल भी नही था कि प्रेमा मन गढ़त समाचार सुनाना शुरू कर देगी। उसकी गिनती सिक्योरिटी रिस्को मे नही होती थी। रिकार्डिस्ट प्रमा की तरफ देखके मुस्कुराया। समाचार पढती हुई प्रेमा भी मुस्कुरा दी और फिर वह समाचार सुनाने लगी।

"कटरा मीर बुलाकी का मोटर मिकैनिक देशराज, जो पिछले दिनो आकाशवाणी इलाहाबाद के कम्पाउण्ड से लापता हो गया था, रात के डेढ बजे कटरा मीर बुलाकी मे पडा पाया गया। उसके हाथ पाव पुलिस की मार खाते-खाते टूट गये हैं। उसका दिमाग खराब हो गया है। उसका जुम यह था कि उसे आशाराम का पता नही मालूम था"

ट्रासमीटर पल भर के लिए बन्द हो गया। और पल-भर के बाद एक और लडकी की आवाज आयी "हमे खेद है कि ट्रासमीटर मे खराबी पैदा हो जाने के कारण आप स्थानीय समाचार न सुन सके। अब सुनिए फिल्म 'जागृति' मे मुहम्मद रफी को। गीतकार हैं मजरूह सुलतानपुरी"

जागृति। क्या सन् ७६ मे हिंदुस्तान को कोई इससे बडी गाली दी जा सकती थी? आकाशवाणी ने इस तरह की गालिया म बडी मुहरत पायी।

आकाशवाणी स आदमी नही, रिकार्ड बजते थे। आवाजें अलग हुआ करती थी पर बात नम्बर एक मफ़्दरजग करता था। मिसेज गाँधी को आवाजें बदलने में कैसा कमाल हासिल था! और जब कोई आवाज जरा इधर उधर होती, बन्द कर दी जाती प्रेमा नारायण तो किसी गिनती शुमार मे नही थी।

खुर्शीद आलम खाँ ने 'पूछगछ' की। और एक अदालत के कमरे मे बैठे हुए कूब से घसनेवाले एक बबुये या एक बाँकी-टाँकी गुडडे ने अपनी रटी हुई बात कह दी और प्रेमा जो कल तक न्युज रीडर थी, एक न्युज बन गयी। यह

खबर कही छपी नही क्योकि उन दिनो समाचार छपा ही नही करते थे।

पर प्रेमा को कोई पछतावा नही था। टाचर का डर भी जैसे खत्म हो गया था क्याकि उसने आशाराम ही से एक शेर सुन रक्खा था दद का हद से गुज-रना है दवा हो जाना इस शेर का मतलब वह खुर्शीद आलम खा की पूछगछ के दिनो म समझ गयी थी। जो वह भी देश की तरह निहत्थी रही होती तो शायद पागल हो गयी होती क्योकि टाचर का मतलब उसने यह नही समझा था कि बाबू जगदम्बा प्रसाद जैसे लोग उसके बदन की किताब पर अँगूठा निशान मारेंगे। वह बहुत खूबसूरत थी इसलिए अफसरो और सिपाहियो सभी को पसन्द आयी और सभी ने अपनी-अपनी पसन्द उस पर आजमायी। जगदम्बा प्रसाद के मुँह से आती हुई बदबू को झेलना उसके लिए बहुत मुश्किल साबित हुआ और अपनी जिल्लत के उन क्षणो मे भी उसे कॉलगेट डेंटल क्रीम के बारे देखी हुई एक डाक्यु-मेटरी फिल्म याद आ गयी और जब वह बिल्कुल खाली हो गयी ता जेल मे फेंक दी गयी।

जेल की वह कोठरी कोई तीस फिट लम्बी और पन्दरह फिट चौडी रही होगी। उसमे न जाने कितनी औरतें ठुसी हुई थी। सबने उसकी तरफ देखा। उसने किसी की तरफ नही देखा। एक औरत उठी और सबके सामने उस तसली पर बैठ गयी जो एक कोने म रक्खी हुई थी। उसके पेशाव की आवाज प्रेमा तक आ रही थी। बिल्कुल साफ—जसे वह औरत उसके कानो मे पेशाब कर रही हो।

रात का वक्त था।

प्रेमा बहुत थकी हुई थी। वह पडकर सो जाना चाहती थी। पर उस सेल मे तो कही तिल धरने को जगह नही थी। उसने चेहरे बचाकर फिर सेल पर एक निगाह डाली। एक कोने म काफी जगह थी। सिफ एक औरत कम्बल ओढे सो रही थी। उसके हर तरफ काफी जगह खाली थी। तमाम कैदी औरतें उसकी निगाहो का पीछा कर रही थी और लगता था कि जैसे वह किसी बात के इन्तिजार मे हैं दूसरे कोने मे काफी जगह खाली थी। वहाँ एक लम्बी चौडी औरत बैठी प्रेमा को देख रही थी। उसे देखते ही प्रेमा के रोगटे खडे हो गये। और उस औरत की आखो से बचने के लिए वह कम्बल ओढे सोयी हुई औरत के पास जाकर जल्दी से लेट गयी उसके लेटने की आहट पर कम्बलवाली औरत कसमसायी और उसने अपने चेहरे से कम्बल सरकाकर प्रेमा की तरफ देखा और प्रेमा चीखकर भागी। वह औरत कोढी थी। उसकी नाक गल चुकी थी। चेहरे पर जख्मो के चकत्ते थे। उँगलियाँ जसे थी ही नही कैदी औरतें हँसने लगी और कोने मे बैठी हुई औरत उठी। उसे उठता देखकर तमाम औरतें डरके चुप हा गयी। वह औरत

मुह छिपाय खिसकती हुई प्रेमा की तरफ बढी। तमाम औरतें सकते मे उसे देखती रही। उसने प्रेमा को दबोच लिया और जसे उस पर कोई दौरा पड गया। वह प्रेमा के कपडे नोचने लगी—प्रेमा एक बार चीखी। और फिर खौफ से उसकी घिग्घी बंध गयी और वह बेबसी से दूसरी कैदी औरतो की तरफ़ देखती रही पर दूसरी औरतो म स कोई उसकी तरफ नही देख रहा था—उन्हें मालूम था कि हर नयी कैदी को यह क्षण झेलने पडते हैं

उस लम्बी चौडी औरत का नाम भाग्यमती था। प्यार से भानो कही जाती थी। पढी लिखी थी। दिल्ली युनिवर्सिटी मे अंग्रेजी साहित्य पढाया करती थी। लिसबियन थी। अपनी तनहायी के अंधे कुए मे कद थी। उसे जिस लडकी से प्यार था उसकी शादी हो गयी और उसने उस लडकी को कत्ल कर दिया। अदालत मे उसे पागल साबित न किया जा सका। उम्रकद की सजा हुई। उम्रकद की सजा काट रही थी। जब कोई नयी कदी आती तो यह दीवानी हो जाती और इसमे बला की ताकत आ जाती और यह उस नयी कैदी को दूसरी तमाम कैदी औरतो के सामने रेप करती। और फिर बिल्कुल सीधी हो जाती। मुस्कुराने भी लगती। जेल के अफसरो को यह बात मालूम थी। पर उन्हे इस बात पर कोई एतराज नही था। उन्हे पता था कि आज रात उस बरेक म क्या होगा। पहरे का सिपाही झाँककर यह तमाशा भी देख रहा था कि कल अपने साथियो को बता सके कि रात का तमाशा कसा रहा

प्रेमा आशाराम बिल्लो, दशा, जगदम्बा प्रसाद के मुह की बदबू सब कुछ भूल गयी। दुनिया म भाग्यमती और उसकी आखो की वहशत और उसके प्यार की बवरता के सिवा कुछ था ही नही जैसे। भाग्यमती के मरने तक वह उसकी रखैल रही। भाग्यमती जब भी इशारा करती, वह डर से मर जाती और अपने-आपको भाग्यमती के हवाले कर देती बैरेक की तमाम औरतें उसकी जिल्लत का तमाशा देखती। न कुछ कहती, न कुछ करती। उनमे से सबको प्रेमा से हमदर्दी थी पर कोई उससे हमदर्दी कर नही सकता था क्योंकि उससे हमदर्दी करने की सजा सख्त हुआ करती थी। एक औरत ने कभी हमदर्दी की थी। भाग्यमती ने उसकी आँखें निकाल ली थी

बस वह कोढी औरत भाग्यमती से नही डरती थी क्योंकि भाग्यमती ही उससे डरा करती थी। वह चुपचाप यह तमाशा देखा करती थी। एक दिन प्रेमा की बेबसी से उसकी आँखें मिल गयी—बरसो बाद किसी ने उससे कुछ कहा था। वह मुस्कुरायी। उसके गले हुए होंठों पर आयी हुई मुस्कुराहट किसी को नजर ही नही आयी। उसी रात तमाम कैदी औरतें एक चीख की

आवाज़ पर जाग उठी। धीमी रोशनी मे उन्होंने देखा कि कोढी औरत भाग्यमती से लिपटी हुई है। और भाग्यमती चीख रही है फिर भाग्यमती की चीख बन्द हो गयी और किसी कैदी औरत तक अँधेरे मे उसका खून बह आया और वह अपने हाथ मे खून देखकर चीख उठी

उस कोढी औरत को उसी रात उस बैरक स हटा दिया गया। जाते-जाते उसने प्रेमा की तरफ देखा। शायद मुस्कुरायी भी। पर उसकी मुस्कुराहट प्रेमा को दिखायी नही दी। उसकी तबीयत गनगना गयी। उसने उसकी तरफ से मुह फेर लिया और वह कोढी औरत अपनी मुस्कुराहट की लाश उठाय सिपाहियो के साथ चली गयी—उस रात उस बैरेक की तमाम कैदी औरतें जागती रही। पर उस रात प्रेमा न जाने कितन दिना के बाद गहरी नीद सोयी

सपनों का खंडहर

बिल्लो को प्रेमा बराबर याद आती रही। पर वह पूछती किससे और उस जवाब कौन देता ? महल्ले के लोग भी कितनी हमदर्दी करते। थक गये। उनके सामने उनकी अपनी जिंदगियां और उनकी समस्याएँ थी। बस शहनाज़ आती रही। इतवारी बाबा आते रहे और मामा तो खैर आते ही रहे। प्रेमा होती तो वह भी आती। इसका बिल्लो को यकीन था। शायद जल्दी मे उसकी बदली हो गयी हो ? फिर बिल्लो भी प्रेमा को भूल गयी। क्यों याद रखती ? उसके सामने अपनी जिंदगी पड़ी थी। जनता लाण्डरी बन्द हो चुकी थी। शम्सू मिया ने किराया नही मागा था पर जो वह किराया मागने भी तो क्या कर लेते ? बिल्लो देती कहा से ?तो उन्होंने एक दिन शहनाज़ के जरिये कहलवाया कि बिल्लो दुकान बेच क्यो नही देती। उस पैसो की तगी भी होगी। तो बिल्लो राज़ी हो गयी। लाण्डरी बिक गयी। ईदू धोबी ने खरीदी। लैला के घर के कपडे वही धोने लगा था इसलिए लैला ने उसकी लाण्डरी का नाम अंग्रेजी मे रक्खा। 'इक्लिप्स क्लीनज़'। और जिस दिन लाण्डरी का नाम बदला उसी दिन इतवारी बाबा ने उसके तख्ते पर सोना छोड दिया।

बडी धूमधाम से 'इक्लिप्स क्लीनज़' का उदघाटन हुआ। दिन भर रिकार्ड बजा किये। शाम को बाबू गौरीशकर पाण्डेय एम० पी० ने लाण्डरी का उद घाटन किया। दिन भर बिल्लो अपनी लाण्डरी के मरने पर होनवाले समारोह के हगामे की आवाज़ सुनती रही। माइक्रोफोन पर बाबू गौरीशकर पाण्डेय के भाषण की आवाज़ भी आयी

"यह बडे, मतलब है, बडी खुशी की बात है कि आज श्री ईदू धोबी खुद अपनी दुकान के मालिक है, अर्थात् अब अपने लिए काम करेंगे। जो जीवन कोई गन्दा कपडा होता तो चन्द्रमाग्रहण धोनेवाली यह लाण्डरी जीवन को भी धो धुलाकर इसत्री कर देती। इस अवसर पर मुझे यह कहने दीजिए कि यह सब श्रीमती गाधी और उनकी लायी हुई इमरजेंसी का चमत्कार है नही तो कहा एक साधारण भाई ईदू और कहा एक लाण्डरी का मालिक होना '

जब 'इक्लिप्स लाण्डरी के सामन मेहमान कोक पी रहे थे और बाबू साहब का भाषण सुन रह थे तभी कारपोरेशन का चपरासी बिल्लो के घर नोटिस लाया। बिल्लो पढी लिखी नही थी। अँगूठा लगाने के बाद उसने चपरासी से कहा कि वही जरा सुना दे कि नोटिस काहे का है। टैक्स तो उसने बराबर भर दिया था। चपरासी ने नोटिस सुना दी कि हफ्ते भर के अन्दर अन्दर उसे जमुना पार सजयनगर मे उठ जाना चाहिए नही तो कारपोरेशन के आदमी आकर मकान खाली करवा लेंगे। उसके लिए सजयनगर म गली नम्बर पांच, मकान नम्बर ७४-बी अलॉट हुआ है।

मतलब जो खबर मामा को जगदम्बा प्रसाद ने दी थी वह ठीक थी। सजयनगर। गली नम्बर ५, मकान नम्बर ७४ बी।

चपरासी चला गया। वह अपनी दहलीज पर अकेली रह गयी।

बकैया चलता हुआ देश उसके पास आ गया। उसकी हालत पहले से कुछ बेहतर हो गयी थी। अब वह श्रीमती गाँधी जिन्दाबाद नही कहता था। अपने नाम पर पलटकर देखना भी था। खाना भी खा लेना था। एक-आध लफ्ज बोल लेता था। हरी बढई न उसके लिए बडी अच्छी बैसाखी बना दी थी। कभी-कभार वह बसाखी लेकर चल भी लेता था। पर घर मे वह बकयाँ ही चलता था।

देश का ज्यादा वक्त अपनी बटी के पास गुजरा करता था। वह चुपचाप उसके खटोले की पट्टी से लगा उसे तका करता था और कभी-कभार उसके होठो पर वही खाली बोतल-सी मुस्कुराहट आ जाया करती थी।

"बिल्लो।" देश की आवाज आयी।

बिल्लो पलटी। देश उसकी तरफ देखकर मुस्कुरा दिया। और यह मुस्कुराहट खाली-खाली बोतल-सी नही थी। उस मुस्कुराहट म पुराने प्यार की खुशबू थी, पुराने प्यार का रग था। पर पल भर के बाद वह मुस्कुराहट खाली हो गयी।

"चाय पीहो ?" बिल्लो ने पूछा।

देश ने सर हिला दिया।

"चलो रसोइये मे चलते है।" बिल्लो ने कहा, फिर उसने सहारा देकर उसे उठाया। दोनो बावरचीखाने की तरफ चलने लगे। बिल्लो ने उसे दीवार स टिका के बिठला दिया। चूल्हे की आग भडकाकर उसन केतली चढा दी।

"आज हमरी लाण्डरी बिका गयी।" बिल्लो ने कहा।

देश मुस्कुरा दिया।

"दिन भर से ओही की खुसी म गाना बजता रहा।"

देश मुस्कुरा दिया।

'तोरी मोटरियो बिका गयी।'

देश मुस्कुरा दिया।

'बक मे नोटिस आया है। मामा कहत रह कि कोई आसा ना है "

आशा।

देश चौंक पडा। उसकी आखो मे डर झाकने लगा।

"का भया ?" बिल्लो घबराकर उसके पास आ गयी। पर उसका डर कम न हुआ। वह अपने बेकार हाथो की तरफ देखने लगा। फिर उसने अपने चेहरे के सूखे हुए घावा पर हाथ फेरा। डर बढ गया। बिल्लो न उसके गले मे बाँहें डाल दी। फिर पूछा, "का भया ? डर लग रहा ?'

दश ने सर हिला दिया।

"के से डर लग रहा ?"

देश न कोई जवाब नहीं दिया।

"ऐयसा करो।' बिल्लो ने कहा "इन्दराजी को एक ठो चिटठी लिखवा दो कि तूहें इ हाल पर कौन पहुचाइस है। "

बिल्लो समझाती रही और देश की आखा पर चढा हुआ डर का रग और गहरा होता गया।

कि मामा आ गये।

बिल्लो ने नोटिस छिपा लिया।

केतली का पानी उबल रहा था। उसकी टोटी से भाप निकल रही थी।

मामा भी आकर वहाँ बैठ गय।

बिल्लो चाय बनाने लगी।

'हम सोच रहें कि आप दु-चार दिन के वास्त एका स के मडिहाँउ चले जाइए। रामदीन की अम्माँ कहती रही कि उहाँ एक ठो बड अच्छे हकीम हैं।" उसने चाय बनात-बनाते मामा स कहा। फिर उसने चाय की प्याली देश के

सामने रख दी। उसने अपने ठूठ हाथो से प्याली उठायी और चाय पीने लगा।

"मामा के साथ जावे घूम आव दु चार दिन।" बिल्लो ने कहा।

देश मुस्कुरा दिया।

"वकुलत मिटाये के वास्ते चले जात हैं ले के। मुदा कोई फायदा नही अँगुली थोडे दिह हकीम साव!"

बिल्लो ने कोई जवाब नही दिया।

दूसरे दिन मामा देश को लेकर चले गये और दूसरे ही दिन 'पण्डित शिव शकर पाण्डेय मार्ग' पर कारपोरेशन के ट्रक आने लगे और सडक का सामान ढेर करने लगे। दो बुलडोजर आये। उन्हें देखने के लिए आसपास के बच्चे जमा हो गये।

सडक के दोनो तरफ रहनेवालो को नोटिस मिला था। सब फरयाद कर रह थे। बिल्लो चुप थी। सब भाग-दौड कर रहे थे। वह अपनी दहलीज पर बठी ट्रको का आना जाना देख रही थी। जैसे उसने अपनी जिन्दगी मे इससे दिलचस्प कोई तमाशा ही न देखा हो।

फिर एक दिन रिक्शा करके वह जमुना पार सजयनगर देखने गयी। जिन्दगी मे पहली बार उसने रिक्शेवाले से मोल-तोल नही किया। बस उसे रोक-कर रिक्शे पर बठ गयी।

'जमुना पार, सजयनगर।" उसने कहा।

रिक्शा चल पडा। जाने पहचाने बाजार, जानी पहचानी सूरतें उसे अजीब लग रही थी। मामा की दुकान पर नारायण था। लोग बैठे चाय पी रह थे और दुकान पर रक्खे हुए रेडियो से फिल्मी गानो का कोई प्रोग्राम आ रहा था। शम्सू मिया ने एक तरफ झुककर नाक छिनकी और हमेशा की तरह दामन से नाक पाछ ली। जोखन मिया की बॉक्स वगन उसके रिक्शे के पास से धूल उडाती गुजर गयी। एक तागे पर किसी फिरम का इश्तिहार बाँटनेवाले हाथ मे माइक्रो-फोन लिय बोल रहे थे और तागे के हुड पर रक्खा हुआ ऐमप्लिफायर चिल्ला रहा था "शोले। सलीम जावेद का शोले। यश चोपडा का शोले। धर्मेंद्र, सजीवकुमार और अमिताभ बच्चन का शोले। एलाहाबाद के दिल की धडकन। अमिताभ बच्चन। हमा मालिनी और जया भादुरी के साथ। गुलशन राय की पेश-कश। आपके पलेस थेटर मे रोजाना तीन शो। समय से पहले आइए कि निराश होकर लौटना न पडे—शोले। मुल्क के कोने कोने मे आग लगाकर आपके शहर एलाहाबाद मे आ गया है शोले तागे से आनेवाली आवाज काफी दूर तक उसका पीछा करती रही और फिर रिक्शा आग बढ गया और

आवाज पीछे रह गयी और बिल्लो अपनी यादो की गलिया से गुजरती रही

जमुना पार का सजयनगर बहुत बाड लगा था। पर उसे पाँचवी गली का उसका मकान नम्बर ७४-बी नहीं मिला क्योकि न वहाँ कोई गली थी, न कोई मकान। कुछ आधी अधूरी सीपडियाँ जरूर इधर उधर बिखरी हुई थी और अपन घरो को छोडकर उठ आनेवाले लोग उनकी मरम्मत म लगे हुए थे।

एक बच्चा आकर उसके रिक्शे के पास खडा हो गया और जब वह उसकी तरफ देखकर मुस्कुरायी तो बच्चे ने कहा "इहाँ हमरा जी ना लग रहा। हम्में अपने साथ ले चलिहो ?"

बिल्लो न कोई जवाब नही दिया। रिक्शेवाले से अलबत्ता बोली, "चलो भैया। "

रिक्शा मुडा। वापसी यात्रा शुरू हुई। बिल्लो ने पलट के देखा। वह बच्चा वही खडा जाते हुए रिक्शे को देख रहा था। फिर वही सडकें वही दुकानें, वही बाजार, वही लोग, वही आवाजें फिर वही कटरा मीर बुलाकी के दहान से गुजरती हुई पण्डित शिवशकर पाण्डेय मार्ग', वही पहलवान का टी-स्टाल, टी-स्टाल पर बैठे हुए वही लोग और फिर वही दरवाजा जिसमे लगे हुए ताले की कुजी उसके पास थी। सामनेवाले मकान के सामने एक घर का सामान और उसमे रहनेवाली यादो का ढेर था। चटरजी साहब सजयनगर जाने की तैयारी कर रहे थे। उसने उनकी तरफ देखा तक नही। वह चुपचाप ताला खोलकर अदर चली गयी।

घर। हाउसफड की डाकखानेवाली किताब। एक-एक पैसे के खर्च पर देश से होनेवाले बगडें महनाज के दहेज के वास्ते खरीदी जानेवाली घडी और साइकिल का किस्सा उसकी बक की पासबुक। बक की पासबुक म एक रकम बनकर टँकी हुई जनता लाण्डरी

वह दालान मे बैठकर कारपोरेशन का इतिजार करने लगी। वह यह फैसला कर चुकी थी कि वह सजयनगर नही जायेगी। सजयनगर म जो उसे महल मिल रहा होता गली नम्बर पाँच म तब भी वह न जाती क्योकि यह घर उसने बनाया था। यह जमीन उसने खरीदी थी। इस घर का उसने सपना देखा था।

वह कमरे मे गयी। अपनी और देव की वह मोटर के कट-आउटवाली तस्वीर उसने उतारी। पल भर उस तस्वीर को देखती रही, फिर उस तस्वीर को पुराने अखबार मे लपेटकर वह बाहर निकली। आँगन म धूप भर चूकी थी।

उसने सब्जी काटने की छुरी से कच्चे आगन मे एक छोटा सा गढा खोदा और फिर उस गढे मे उस तस्वीर को फ्रेम समेत दफन कर दिया और फिर रगड-रगडकर अपने हाथ साफ करने लगी।

वह न जाने कब तक अपन हाथ साफ करती रहती पर शहनाज के आने से उसने अपना हाथ यू छिपाया जैसे रँगे हाथो चोरी करते पकड ली गयी हो। फिर उसने कनखियो से उस छोटी सी कब्र की तरफ देखा और डरी कि कहीं शहनाज उसे न देख ले।

शहनाज उसके पास आकर बैठ गयी।

"हम पूछित हैं कि बदर पगला गये हैं का ?" बिल्लो ने कहा।

चूकि करने के लिए कोई बात नही थी इसलिए उसने बदर की बात शुरू कर दी, क्योकि किसी-न किसी तरह वह उस कब्र को शहनाज से छिपाना चाहती थी। वह खडी हो गयी, "चलो भीतर चल के बैठें।"

"इहा ऐयसी अच्छी धूप है।" शहनाज ने महनाज के दिये हुए कार्डिगन के बटन बन्द करते हुए कहा।

अब बिल्लो क्या करती ! रुक गयी। बैठ गयी और बेबसी से शहनाज की तरफ देखने लगी।

"कल कानी कै बरस के बाद भाई साहब का खत आया कराची से।" शहनाज ने कहा।

"का लिक्खिन हैं ? मजे मे है ना ?"

"पासपोट बनवाने की फिक्र मे हैं। लिखा है कि मेरी शादी की खबर भेजी जाये तो विज़ा मिलने मे आसानी होगी। अम्मां मार घबरा रही कि एक्के ठो कमरा है। ईद् स का करें। और ईदू से कुछ न कह तो भाई साब को ठहरायें कहा !"

'मजयनगर। गली नम्बर पाँच। मकान नम्बर चौहत्तर-बी खाली पडा है।"

"क्या ?"

"अर बहिनी, कारपोरेसनवाले हम्मे नया घर दिहिन हैं कि ना ई घर के बदले मे ! हम आज देख आये हैं। जेतना बडा ई घर उतना बडा तो ओका हाल कमरा है। पखाना इतना बडा कि दू परानी चाहें तो रह लें ई तारे खूट म का बँधा रहता हे हर वखत ?"

शहनाज ने अपने खूट को प्यार भरे उदास हाथो स छुआ। और उसे लगा जैसे उस खूंट मे वही से उसके आसुओ की नमी आ गयी है। उसने उसमे बँधी

हुई चीज को प्यार से छुआ।

"हमरा देन मेहर है।" उसने कहा, "बदर निकाह होये से पहले ही मेहर अदा कर दिहिन हैं।" यकायक वह खडी बोली भूल गयी।

'ल्या निकाह से पहिले ही मेहर दे दिना के छुट्टी किहिन।" बिल्लो मुस्कुरायी, "का दिहिन ?"

"एक इस रुपिया मेहर फातमी और नौ रुपिया मँगायी भत्ता।"

'मतलब ई कि बिआह करे पर राजी हो गय ?'

'हाते कैसे नहीं ? पिआर कोई मजाक थोडे होता है भाउज !"

"इहो ठीके है।" बिल्लो ने कहा, "कब हो रहा बिआह ?"

"इमरजेंसी उटठे के दुसरे दिन," शहनाज ने कहा, 'फिर आपो लोग लौट आइयेगा अपन महल्ले मे। अभयी आते रहे तो देखा कि चटरजी सवार होत रहे। मार भोयें भोयें रोत रह बिचारू।"

'हम ना रायेंगे।" बिल्लो ने कहा, "आज हम बजार गये रहे। ता तारे वास्ते दू ठो सारी लेत आय।" वह यह कहती हुई उठी और कमरे मे चली गयी। दालान म लाल मुहम्मद बीडीवाली श्रीमती गांधी उसी तरह मुस्कुरा रही थी जैस उन्हाने देखा ही न हो कि बिल्लो ने अभी थोडी देर पहले अपने घर के कच्चे आगन मे अपने सपने की कब्र बनायी है। वह श्रीमती गाधी की तरफ देखे बिना कमरे मे चली गयी। देश घर की सालगिरह मनाने के लिए अपनी घरवाली को नयी साडी पहनाना चाहता था। साडी वैसी की-वैसी बिल्लो के बक्स म रक्खी थी। बिल्लो ने चारपाई के नीचे से बक्स खचा। ऊपर ही दो नयी साडियाँ रक्खी हुई थी। उसन दोना साडियाँ उठायी, बक्स को बन्द करके पलग के नीचे ढकेला और तब चारपाई की तरफ देखे बिना वह कमरे मे निकल गयी।

शहनाज आँगन म वही खटोले पर बैठी हुई थी।

बिल्लो ने दोना साडियाँ उसे थमा दी। शहनाज न उसे सलाम किया। वह मुस्कुरा दी। शहनाज ने साडियाँ रैपर से निकाल के देखीं। खुश हो गयी। फिर साडिया को अपने बदन से लगाकर दखा। बहुत खुश हो गयी और फिर उसे एकदम स खयाल आ गया कि बिल्ला का शायद जाना पडेगा—जमुना पार। सजय कालानी। गली नम्बर ५। मकान नम्बर ७४-बी।

वहाँ जाने के बजाय आप पहलवान चा के घर क्या नहीं उठ आतीं ?'

'काह को उठ आयें ? जब सरकार हमे हमरे घर के बदल म पक्का घर दे रही ता हम काई और के घर म काह को रहें ?' बिल्ला ने पूछा।

'वहाँ जी लग जायेगा ? हम लोग याद नहीं आयेंगे क्या ?'

"अरे जी लगे मे का धरा है बहिनी !" बिल्लो ने कहा, "न लगे को होय तो घरो मे ना लगे। और जो लगे पर आ जाय तो जगलो म लग जाय।"

"कब जाइएगा ?"

"ई ना बता सकित है हम।" बिल्लो ने कहा, "हम ई ना चहते कि जाये के बखत सारा महल्ला खडा हो जाये बिदा करे के वास्ते। हम मामू को सलाम करे आयेंगे।"

बातें खत्म हो गयी।

फिर शहनाज चली गयी। और बिल्लो फिर अपने घर मे अपनी यादो और सपनो के साथ रह गयी।

एक अगारा है कि जमी है,
सामे का एक हलका-सा धब्बा भी नही है,
जिसकी गोद मे बैठ के कोई घास की उँगली म शबनम के कतरे चाटे
और ये सोचे
रेत के इस पीले कागज पर,
क्या अपनी तकदीर म उसने,
खुद ही इतनी प्यास लिखी थी ?

वह उठी। घर के बाहर निकली। शाम हो चली थी। लोग गम कोटो और स्वेटरो मे सिकुडते हुए आ-जा रहे थे। सूरजनाथ खवाचेवाले ने खवाचा लगा लिया था। गम-गम पकौडिया तल रहा था। खूट से पैसा खोलती वह सूरजनाथ के खवाँचे के पास गयी। जिन्दगी मे पहली बार उसने दो रुपये की चाट खायी। आलू के कचालू। लाल मिच का पाउडर बुरका हुआ। बायें हाथ मे दोना। दाहिन हाथ मे नीम का छोटा सा तिनका। आस्तीन से नाक पोछती हुई वह खाय चली जा रही थी। फिर उसने गोलगप्प खाये। फिर पकौडिया की बारी आयी। मिच की तेजी से उसकी जबान जलने लगी तो वह मामा की दुकान पर चली गयी।

मामा की दुकान पर भीड थी पर उसे वह दुकान खाली-खाली दिखायी दी, क्योकि मामा की जगह नारायण बठा हुआ था और उसके पीछे टँगी हुई गामा पहलवान की तस्वीर बिल्लो को बहुत उदास दिखायी दी। हनुमानजी के चेहरे पर रौनक नही थी। लगता था हाथ पर पहाड उठाये-उठाये वह थक गये हैं चूल्हा उदास था। चाय की प्यालियाँ परेशान थी। बस 'लाल मुहम्मद बीडी' के कैलेण्डर मे झाकती हुई श्रीमती गाधी की तस्वीर मुस्कुरा रही थी यह तस्वीर शायद कल बुलडोजरो को चलता देखकर भी मुस्कुराती

रहेगी।

बिल्ला ने कनखियो से दुकान के पास ही खडे ऊँघते हुए बुलडोजर को देखा। वह बिल्लो से बे परवा खडा था और एक बच्ची नाक सुडकती हुई उसे सबकी आँखें बचाकर बार-बार छू रही थी।

पहलवान का टी-स्टाल सडक से जरा हटा हुआ था इसलिए सडक की चौडाई और नगर की खूबसूरती की स्कीम मे नही आया था। बिल्ला सोचने लगी कि आसपास के घरो के गिर जाने के बाद यह अकेली दुकान कैसी लगेगी। उसने आखें बद करके उस अकेली दुकान को देखना चाहा। पर कुछ दिखायी नही दिया तो वह चुपचाप 'गली द्वारिकाप्रसाद' म मुड गयी।

यह गली देश से अपनी महब्बत की तरह उसे जबानी याद थी। इस गली पर वह न जाने कितने हजार बार चली होगी। क्या यह गली उसे याद करेगी? क्या इस गली मे उतरनेवाली सुबह हवा से पूछेगी कि बिल्लो कहा है? क्या कल की रात इस गली मे रुककर जनता लाण्डरी से लौटकर घर जाने के लिए उसकी राह देखेगी? क्या कुछ भी नही बदलेगा? उसकी आँखें उमड आयी। वह एक एक दीवार से मिली। एक एक दरवाजे से रुखसत हुई। उसने एक एक घर मे जाकर बडो को सलाम किया। छोटो को प्यार किया। थक गयी। लौटने लगी तो उसने देखा कि बाबू जगदम्बा प्रसाद एक दीवार से लगे पेशाब कर रहे हैं।

"इ दीवार गिराये बिना तू ना मनिहो का?" उसने कहा।

जगदम्बा प्रसाद घबराकर खडे हो गये। उनके पीछे दीवार पर देवनागरी और फारसी लिपिया मे लिखा हुआ था

"श्री सजय गाधी का कहना है कि अपने नगर को साफ-सुथरा रखना हर नागरिक का कर्तव्य है।"

जगदम्बा प्रसाद ने दीवार की लिखावट पढी नही और बिल्लो को पढना आता ही नही था।

"कोई कहता रहा कि आज तू जा रही हो?" जगदम्बा प्रसाद ने कहा।

"कोई कौन कहवाला होता है?' बिल्लो न कहा, 'हम खुद कह रह कि हम जा रह।

देस की तबिअत कसी है अब?

"पहिले स ता बहुत फरक है।" बिल्लो ने कहा। फिर एकदम से बोली, "उनी इ इमरजसी जल्दी उठवाये की कोसिस करिये कि सहनाज और बदर का बिआह हो जाये।"

"अरे कौनो हम लगाया है इमरजसी कि उठाय दें।" जगदम्बा प्रसाद बोले, "उप्पर से हुकुम आया। लग गयी इमरजसी। उप्पर मे हुकुम आय की देरी है। हट जयय्हे इमरजसी।"

बाबू जगदम्बा प्रसाद बीडी सुलगाते आगे बढ गये। बिल्लो अकेली अपने घर की तरफ चल पडी।

घर।

घर जिसमे यह उसकी आखिरी रात थी

वरना हर-हर कदम पे याँ घर था

बुलडोज़रो की आँख साढे नौ बजे खुली क्योकि वह सरकारी बुलडोज़र थे—कटरा मीर बुलाकी के लोग घरो से बाहर नही निकले। बच्चे तमाशा देखने ज़रूर आ गये। वह अपनी हैरान आखो से उन बुलडोज़रो की तरफ देख रहे थे। बुलडोज़र स्टार्ट हुए। आगे बढे। एक दाहिनी तरफ के मकानो की तरफ मुडा। दूसरा बायी तरफ के मकानो की तरफ। मलबा उठानेवाली ट्रकें तैयार हो गयी। मज़दूर फावडे और टोकरिया सँभाले पहले घर के गिरने की राह देखने लगे थोडी देर के बाद जहा पण्डित शिवशकर पाण्डेय मार्ग था वहा जमीन से आसमान तक धूल अट गयी। उन घरो की धूल जिसके रहनेवाले जमुना पार, सजयनगर की नम्बरी गलियो म बने हुए नम्बरी मकानो म उठ गये थे। दाहिनी तरफवाले बुलडोज़र के डाइवर ने धूल से बचने के लिए मुह पर ढाटा बाध लिया था। बायी तरफवाला ड्राइवर धूप की एनक लगाय बैठा था। यह ऐनक उसका साला बम्बई से लाया था जहा वह कपडा मिल म काम करता था

दाहिनी तरफवाले डाइवर ने बुलडोज़र का मुह एक घर की तरफ मोडा और लात पर दात जमाकर धूल के लिए तैयार हो गया। घर का किवाड बन्द था। जब बुलडोज़र बिल्कुल किवाड तक आ गया तो ड्राइवर ने धूल मे देखा कि दरवाज़ा शायद खुल गया है और चौखट पर काई खडा है या शायद खडी है

"अरे हट बहनचोद " ड्राइवर ने घबराकर कहा। पर वह नही हटी और

फिर बुलडोजर घर के अन्दर दाखिल हो गया—तब तक ड्राइवर ने उसे रोक लिया। वह कूदा। धूल मे कुछ दिखायी नही दे रहा था। धूल का बादल दस-पाँच मिनट बाद जरा फटा तो ड्राइवर ने एक औरत की लाश देखी और उसके बुलडोजर मे फिल्मी सगीत सुनाते हुए ट्राजिस्टर से एक और आवाज आने लगी

"आपका नाम ?"

"बिल्लो।"

"पूरा नाम क्या है ?"

"पता नही। हम तो जब से होस सँभाला है इह नाम सुन रह। और एही पर बोलत चले आ रहें।"

"आप करती क्या हैं बिल्लो देवी ?"

'कटरा स्रीमती गाधी म हमरी जनता लाण्डरी है। हमरे पती को परधान मनतरी वक से करजा दिलवा दिहिन हैं ता उनकी इन्दिरा मोटर वकसाप चल रही जीरो रोड पर।"

"इमरजेंसी के बारे मे आपका क्या खयाल है बिल्लो देवी ?"

'बहुत अच्छा खयाल है। जब से इन्दिराजी देस मे इमरजसी लिआयी हैं, देस मे बहुत तरक्की हुई है। पुलिसवाले कपडे की धुलायी देवे लगे हैं। चीनी और सोने के भाव मे फरक हो गया है। हमरी तो भगवान से एही पराथना है कि भगवान इन्दिराजी को जिन्दा रक्खे कि ऊ इमरजसी बनाये रहें।"

बुलडोजर के ड्राइवर को यह नही मालूम था कि उसी औरत की आवाज है जो उसके बुलडोजर के नीचे आकर सामने पडी है। वह बिल्लो को नही जानता था। पर मैं बिल्लो को जानता हूँ। उसकी आवाज भी पहचानता हूँ

बुलडोजर के ड्राइवर ने ट्राजिस्टर बन्द कर दिया और बजता हुआ फिल्मी गाना बन्द हो गया।

फिर पुलिस आ गयी। पुलिस ने घेरा डाल दिया। लोग हटा दिये गये। हल्का सा लाठी चाज भी करना पडा पुलिस को क्योकि लोग हट नही रहे थे। और लोग हटते कैसे ? उन्हे भनक पड गयी थी कि कोई मर गया है।

बाद मे लोग यही कहते रह कि बिल्लो बुलडोजर के सामने आकर मर गयी। पर आकाशवाणी का कहना था कि यह खबर बिल्कुल गलत है। बुलडोजर के ड्राइवर का बयान भी आकाशवाणी के लखनऊ-इलाहाबाद स्टेशन से सुनवाया गया जिसमे उसने कसम खाकर कहा कि उसके बुलडोजर से कुचलकर कोई नही मरा—इमरजेंसी के दिन थे इसलिए कटरा मीर बुलाकी के लोग मान गये कि कोई नही मरा पर कोई मरा नही तो बिल्लो है कहाँ ? कटरा मीर

बुलाकी के लोगो ने यह सवाल किसी से नही किया क्योकि दिन इमरजेंसी के थे।

दो दिन मे सारे मकान गिर गये। मलवा उठ गया। सडक चौडी होने लगी भारी रोलर गिट्टी कुलचने लगे तारकोल बिछाया जाने लगा पहलवान की दुकान 'गली द्वारिकाप्रसाद' के नुक्कड पर अकेली खडी सडक का रग रूप निखरते देखती रही

यहा तक कि पहलवान जब देश को लेकर लौटे तो उस चौडी सडक को देख कर चकरा गये। समझे कि वह गल्ती से किसी और महल्ले मे आ निकले हैं। पर अपनी दुकान देखकर उनकी जान मे जान मे आयी और यह देखकर वह रो पडे कि जहा देश का घर था वहाँ चमचमाती हुई सडक धूप मे पडी मेल्ह रही है। उन्होने देश की तरफ देखा। देश मुस्कुरा रहा था। वही खाली बोतल सी मुस्कुराहट। पहलवान ने रिक्शा गली म मुडवा लिया।

उन्हें यह बात बहुत अजीब लगी कि महल्ले के लोग उनसे आँखें चुरा रहे हैं।

"ए सम्मू—" उन्होने शम्मू मियाँ को आवाज दी जो उनके रिक्शे को आता देखकर लपक के घर म घुसे जा रहे थे।

बात यह थी कि कटरा मीर बुलाकी का कोई आदमी आगे बढकर पहलवान को यह खबर सुनाने पर तयार नही था कि बिल्लो मर चुकी है। लोग चाहते थे कि उन्हे यह खबर कोई और दे ले तो वह पुरसे मे जायें। पर अब पहलवान की आवाज सुनकर तो शम्मू मिया अदर जा नही सकते थे। लौट पडे।

"कब आये ?' उन्होने पहलवान से पूछा।

'चूतियापन्ती की बात तो करो जिन हमसे।' पहलवान ने कहा।

"सलाम पहलवान।' मास्टर बद्रुल हसन आ गये।

"जीते रहो भैया।"

'अब क्या हाल है इनका ?"

"हकीम साब की दवा से एतना फायदा तो जरूर भया कि एक दिन इ हम्मे पहचान लिहिन। मुदा फिर तुरत गाता मार गये। हकीम साब बोले हैं कि माजून खिलाये जाव। सफा होगी। मुदा बखत लगेगा।" वह शम्मू मियाँ की तरफ मुडे। "एक बात हमरी समझ मे न आ रही। बिल्लो तो हमसे कहिस रहा कि ओके घर के गिराये का नोटिसे ना आया है। फिर ओका घर कैसे गिर गया ?और जब नोटिस आया तो तू खत लिख के हम्मे बुलवा काहे ना लियो ?"

"हम समझे रहे कि तूहे खबर होइहे।" शम्मू मियाँ ने कहा।

देश हँस पडा। सामने से एक बच्चा नग धडग चला आ रहा था।

"बिल्लो बिचारी को जाये मे बडी तक्लीफ भयी होगी। गोदी मे बच्ची, सर सामान तू लोग ओका पहुचाये गये रहे कि ना ?"

इस सवाल का जवाब किसी न नही दिया।

"बच्ची कहा है ?" शम्मू मियाँ ने एकदम से सवाल किया।

"तोरी अक्किल गाँड मराये चली गयी है का ! हम तो अभयी चले आ हैं। बच्ची बिल्लो के पास होइहे। बिल्लो कहाँ है ?"

पहलवान के इस सवाल का किसी ने जवाब नही दिया।

"बिल्लो ने तो कहा था कि देश भाई का दिल बहलाने के लिए बच्ची आपके साथ गयी है।' बदर ने कहा।

पहलवान ने मुडकर बदर की तरफ देखा। उन्हे पहली बार डर लगा।

"बिल्लो कहा है ?"

देश ने नारा मारा "श्रीमती गाँधी जिन्दाबाद।"

"बात इ है कि " शम्सू मिया कहते-कहत रुक गये। उन्हे यह मालूम ही नही था कि बुलडोजर के आगे आकर मर जाने की बात कसे कही जाती है।

"मगर बच्ची " बदर ने घबराकर शम्सू मिया की तरफ देखा।

फत्तो दौडी दौडी आयी और पहलवान से लिपटकर यू बोली जैसे कोई बडी मजेदार खबर सुना रही हो। "बिल्लो खाला मर गयी "

देश ने नारा मारा, "श्रीमती गाँधी जिन्दाबाद "

"अबे चुप रह भोसडीवाले " पहलवान ने देश को मारना शुरू किया। देश जो अपने को बचा भी नही सकता था मार खाता रहा। बडी मुश्किल से बदर और शम्सू मियाँ न पहलवान पर काबू पाया। और देश को सीने से लगा कर पहलवान बच्चा की तरह रोन लगे। शम्सू मिया और बदर ने उन्हे रोने दिया। फत्तो उन्हे रोता देखकर हँसती हुई उम्मेन को यह बताने भाग गयी कि पहल्वान नाना एतने बडे होके रो रहे

धीरे धीरे सारा कटरा वही जमा हो गया। सब खामोश थे। बस पहलवान रो रहे थे। रिक्शेवाला परेशान हो रहा था कि सवारी का 'टैम' है। एक-एक सवारी मे इतनी देर लगेगी तो कसे काम चलेगा ! यह तो वह समझ गया था कि किसी की मौत हो गयी। पर उसे यह नही मालूम था कि मरनेवाली अपने घर के साथ बुलडाजर की चोट खाकर गिरी थी और घर ही के साथ मर गयी थी और तब उसकी गोद मे एक बच्ची भी थी

उस रात पहलवान के घर शम्सू मिया के घर से खाना आया कि यही रस्म है। जिस घर मे मौत हो जाती है उसमे लोग उठन तक चूल्हा नही जलता।

कटरा मीर बुलाकी के लोग एक एक करके आये और पहलवान के पास थोडी देर चुपचाप बैठकर चले गये सबके बाद आशाराम आया।

'ए बेटा !" पहलवान ने देश स कहा, "आसा बाबू आय हैं।"

"ना बतायेंगे।" देश ने बडी सख्ती से कहा, "आसा बाबू हमरे दोस्त हैं। हम उनका पता ना बतायेंगे। " आशाराम किसी और तरफ देखने लगा। देश बोलता रहा, "हम्मे ढेर मत परेसान करो लोग। हम स्रीमती गांधी को खत लिख देंगे कि तू लोग हम्मे सता रहे हो तो ऊ तू लागन की ऐसी-तसी कर देंगी "

देश देर तक न जाने क्या-क्या बोलता रहा। आशाराम के सिवा किसीकी समझ मे यह बात न आयी। और आशाराम चुप बैठा सुनता रहा देश के दद की पूरी कहानी। उसकी दोस्ती की पूरी कथा। उसके आत्मविश्वास का तमाम क़िस्सा फिर आशाराम चला गया क्योकि इमरजेंसी के समथन मे उसे टण्डन पाक मे एक भाषण देना था। उस आम सभा की सिदारत करनेवाली थी महनाज।

देश को जैसे बहुत-सी भूली हुई बातें एक साथ याद आने लगी। एक भेडिया घसान था यादो का। बिल्लो से उसके इश्क की यादें। हाउस फण्ड की यादें। आशाराम से अपनी दोस्ती की यादें। बक से मिलनेवाले कज़ की यादें। अपने घर की यादें। सुहागरात की यादें। फुटपाथ पर खिचनेवाली तस्वीर की यादें। अपनी कार की यादें और उस कार पर होनेवाली एक रात की सैर की यादें और इलाहाबाद के बँगले मे गुज़रनेवाले दिनो, महीनो सदियो की यादें। यह तमाम यादें एक-दूसरे मे गिडमिड थी। एक याद के तार दूसरी याद के तार से उलझे हुए थे। वह सारा-सारा दिन उन तारो को सुलझाने की कोशिश मे लगा रहता। बोलता रहता देखता रहता और जब किसी तरह कोई बात समझ मे न आती तो 'पण्डित शिवशकर पाण्डेय माग पर बैसाखी टेकता चला जाता और वहाँ बैठ जाता जहाँ उसका घर हुआ करता था। जहाँ उसकी बेटी पदा हुई थी। जहाँ उसने सुहागरात मनायी थी। जहाँ बिल्ला ने उसे सोता समझकर उसके सामने साडी बदली थी और कार को दखने बाहर निकल गयी थी परछाइयाँ सी आती और निकल जाती और वह बैठा-बैठा यह साचता रह जाता कि वह यहाँ सडक पर बैठा क्या कर रहा है। खाने का वक्त आता तो मामा आते और उसे बहला-फुसलाकर ले जाते। वह न उठन की जिद करता तो मामा रोहाँसे होकर उस माँ-बहन की गालियाँ दन लगत। इतवार का दिन होता तो इतवारी बाबा दिन दिन भर उसके पास बैठे रहत और उससे इधर-

उधर की बातें किया करते और सडक देश मे आँखें चुराकर चलती रहती। कोई रिक्शेवाला उसे गाली देकर हटने को कहता। बाबू गौरीशकर पाण्डेय एम० पी० की कार भी उससे कतराकर निकल जाती।

कि एक दिन आकाशवाणी ने ऐलान किया कि श्रीमती गाँधी ने देशद्रोहियो का मुँह बन्द करने के लिए आम चुनाव करने का फैसला किया है पहले तो किसी को इस खबर पर यकीन नही आया। पर सब कहन यही लगे कि चुनाव मे श्रीमती गाँधी सबको धो के रख देंगी

कि खबर आयी कि पुरानी काग्रेस, सोशलिस्ट, बी० एल० डी०, जनसघ और यग टक्स मिल के चुनाव लडेंगे। लोगो ने कहा कि मिल के लडें या अलग-अलग, नतीजा मालूम है। जीतेंगी मिसेज गाँधी।

कि खबर आयी कि दिल्ली की जामा मस्जिद का इमाम भी जनसधियो से मिल गया। लोगो ने कहा तो क्या हुआ ! जीतेगी श्रीमती गाधी की काग्रेस।

कि खबर आयी कि जगजीवनराम काग्रेस से अलग हो गये। और पहली बार लोगो को शक-सा हुआ कि शायद मिसेज गाधी हार भी जायें। मिसेज गाँधी हार भी सकती हैं और फिर खबर आयी कि बाबू गौरीशकर पाण्डेय काग्रेस से अलग हो गये और जनता पार्टी मे चले गये। फिर खबर आयी कि इस कास्टिचुऐंसी से बाबू साहब ही जनता के टिकट पर चुनाव लडेंगे।

और सबस बाद मे यह खबर आयी कि आशाराम इस कास्टिचुऐंसी से काग्रस के टिकट पर चुनाव लड रहे हैं।

और उन्नीस महीनो से हाथ बाधे खडे हुए देश ने सर उठाने का फैसला किया। पर डर अब भी ऐसा था कि सब कह रहे थे कि वह काग्रेस को वोट देंगे जमुना पार, सजयनगर वाले भी काग्रेस ही को वोट देनेवाले थे।

शहर म जुलूसो की बहार आ गयी। तकरीरो को तरसे हुए कान एक एक दिन मे दस-दस तकरीरें सुनने लगे। बहुत दिनो के बाद उन्होंने देखा कि लोग दिन-दहाडे, हाथ मे माइक्रोफोन लेकर श्रीमती गाधी और सजय गाँधी के खिलाफ बोल रहे है। जिन लोगो का नाम इज्जत से लेत भी डर लगता था कि कही कोई यह न लगा दे कि उन्ह बुरा भला कहा जा रहा था, उन वी० सी० शुक्लाजा, उन यशपाल कपूरो, उन बसीलाला को लाग सरे राह खडे होकर गालियाँ दे रह थे। धीरे धीर जेलो की कहानिया बाहर आने लगी।

प्रेमा आशाराम के खिलाफ काम कर रही थी। उसन देश की तस्वीर छापी और लिखा कि यह आदमी कौन ह और इस पर क्या गुजरी है। उसन लोगा को बिल्लो की कहानी सुनायी। उसने दुनिया की आँखा मे आखें डालकर

बताया कि उस पर क्या-क्या बीती हवा का रुख बदला लगा।

पर बाबूराम 'आजाद' अपने घर से बाहर न निकले। उन्होंने जनता वालो से कह दिया कि वह पैदाइशी कांग्रेसी हैं और आखिरी वक्त मे क्या खाक मुसलमा होंगे। पर वह आशाराम की कैन्वेसिंग करने नही निकले।

रामदयी, जिसे राजनीति की समझ बिल्कुल नही थी, अपने बेटे के जीतने की दुआएँ मागने लगी।

देश इन बातो और इन परिवर्तनो से बे तअल्लुक सडक का काना थामे अपनी यादो की उलझी हुई डोर सुलझाता रहा और चुनाव के हगामो मे कटरा मीर बुलाकी के लोग भी लगभग उसे भूल गये। बस बदर आता रहा। इतवारी बाबा उसकी परछाई बन रहे और पहलवान उसके लिए रोते रहे।

चुनाव से कोई पाच दिन पहले आशाराम अपने चुनाव के लिए चन्दा माँगने कटरा मीर बुलाकी म आया। महनाज़ के घर के सामने मैदान मे सभा हुई। उसने कटरेवालो को बतलाया कि उन्हे अपोज़िशन के बहकावे मे नही आना चाहिए। और फिर उसने अपने चुनाव के लिए चन्दे की अपील की।

सबसे पहल जोखन मिया ने एक हज़ार रुपया दिया। तमाम लोग चुप बैठे रह। फिर अन्दर स शहनाज़ निकली। बुरका पहने हुए वह आशाराम के पास गयी। फिर उसने भीड मे बैठे हुए बदर की तरफ देखा। फिर उसन अपना खूट खोला। उसमे दस दस के तीन चिगुडे मिगुडे नोट थे। वह नोट उसने आशाराम की तरफ बढाते हुए कहा 'मेरी कुल पूजी यही तीस रुपय है।" बदर के सिवा कोई न समझ सका कि उसने आशाराम के चुनाव के चन्दे मे क्या दिया। बदर उठा और वहा से चला गया

आशाराम ने शुक्रिया अदा करके वह तीस रुपये ले लिय।

सभा खत्म हो गयी।

भीड छँट गयी।

लोग अपने अपन घरो को चले गये। बस बदर भटकता रहा। और उसी रात शहनाज़ से उसका निकाह हो गया। उस निकाह मे देश भी लाया गया। वह चुपचाप बठा मुस्कुराता रहा। वही खाली बोतल-सी मुस्कुराहट।

बदर और शहनाज़ की सुहागरात भी अजीब थी। बाहर मिरासनें तो नहीं गा रही थी कि शम्सू मियाँ के बचपन के दोस्त भोलू पहलवान की भाजी अभी कुछ ही दिन पहले मरी थी हालाँकि आकाशवाणी का कहना था कि यह खबर गलत है। आशाराम ने अपनी कई-कई तकरीरो मे भी यही कहा। पर कटर के लोग जानत थे कि आकाशवाणी स झूठी खबरें भी आती हैं

तो तम्बू किसी के घर में बाकायदा न डाल रखा गया, न गीत गाये गये। फिर भी कुछ लड़कियाँ अपनी तरफ से टें-टें कर रही थीं और अन्दर कमरे में शहनाज दुल्हन बनी बैठी थी। बैठी थी राह तक रही थी। बैठा आया। उसने टोपी और शेरवानी के साथ-साथ घोड़ा को पहनायी हुई मुस्कुराहट भी उतार दी और फिर अपने नंगे हाथ लेकर शहनाज के पास गया।

'अनुमायी में तुम्हें अपना वोट देता हूँ," बैठा ने कहा, 'उस कांग्रेस के खिलाफ़ दे आना।'

बैठा के प्रान्तीय स्कूल में पोलिंग स्टेशन था। उससे थोड़ी दूर पर दो तम्बू गड़े थे। एक कांग्रेस का। दूसरा बाबू गौरीशंकर पाण्डेय का।

भीड़ कांग्रेस के तम्बू तले ज्यादा थी क्योंकि लोग रिस्क लेना नहीं चाहते थे। वोट चाहे किसी को दें। पर लोग पर्ची गाय बछड़ेवाली लेना चाहते थे

देश भीड़ देखकर वहां आ गया।

उसकी समझ में यह नहीं आ रहा था कि बात क्या है? क्या इनको लोग इकट्ठा हैं? पर यह भीड़ और धक्कम-पेल देखकर वह खुश बहुत था। ऐसा लग रहा था जैसे इस शोर ने उसके बदन का दर्द धो दिया हो। कभी-कभार इस शोर को भूलकर वह अपने-आपसे बातें करने लगता

बाबूराम दिन के कोई ढाई बजे रामदयी को लेकर वोट देने आये। उन्होंने कांग्रेस के तम्बू में अपना नम्बर लिखवाया। उसी वक्त पोलिंग स्टेशन का दौरा करता आशाराम भी आ गया। उसने दादा को सलाम किया। बाबूराम जी टाल गये। न जाने क्या आशाराम को जीने की दुआ देते को उनका जी न चाहा। वह जाने के लिए मुड़े। रामदयी बेटे को देखती हुई पीछे रह गयी। पर बाबूरामजी रामदयी के इन्तिजार में रुके नहीं। वह तम्बू से बाहर निकल गये।

वहाँ देश खड़ा था। वह बाबूराम की तरफ देखकर मुस्कुराया। वही लाली घोलती-सी मुस्कुराहट। बाबूरामजी ने नजर भरकर देश की तरफ देखा।

'गड़बड़ करोगे तो श्रीमती गाँधी का लिख दूँगा" देश ने कहा।

बाबूरामजी के हाथ में कांग्रेस कम्पनी की बनायी हुई पर्ची थी।

"श्रीमती गाँधी जिन्दाबाद।' देश ने कहा। फिर वह हँसा और फिर वह अपनी बैसाखी टेकता आगे चला गया। बाबूरामजी वहीं खड़े देखते रह गये।

देश को पता भी नहीं था कि वह बाबूरामजी को किस दलदल में ढकेलकर चला आया है।

बाबूरामजी आगे बढ़कर बूथ में खड़े हो गये। बूथ धीरे-धीरे आगे सरकने

लगा। रामदयी भी आ गयी पर अब बाबूराम और रामदयी के बीच म कई लोग थे। बाबूराम ने पलटकर देखा भी नही कि रामदयी आयी या नही। यह अपने साथ अकेले रहने का क्षण था और अकेले फैसला करने की घडी थी।

न जाने कहा से देश के हँसने की आवाज आयी।

क्यु और आगे सरक गया।

देश के हँसने की आवाज कुछ पीछे रह गयी।

पोलिंग आफिसर बाबूरामजी को जानता था। वह उन्हे देखकर मुस्कुराया। चारो पोलिंग एजेंट भी उन्हे जानते थे। वह भी मुस्कुराये। बाबूरामजी किसी मुस्कुराहट के जवाब मे नही मुस्कुराये। उन्ह ऐसा लग रहा था जैसे हिन्दुस्तान की तकदीर उनके अकेले वोट से बँधी हुई है। अपनी, अपने पिता की सारी जिन्दगी सामने थी। आशाराम की जिन्दगी भी सामने थी और उनके हाथ मे उनका बैलेट पेपर था और वह पोलिंग बूथ मे अकेले थे। दो निशान थे। एक वोट था। बाबूरामजी उन निशानो के साथ अकेले थे और परछाइयो मे घिरे हुए थे। फिर सारी परछाइयाँ गायब हो गयी। केवल देश रह गया। देश और देशराज। शायद दोनो एक ही थे। और फिर केवल देश की मुस्कुराहट रह गयी। वही खाली बोतल सी मुस्कुराहट और उन्होंने बाबू गौरीशकर शाण्डेय के निशान पर ठप्पा लगा दिया

यह वोट देने के बाद उन्हें ऐसी थकन महसूस हुई जो स्वतन्त्रता सघष के बाद भी नही महसूस हुई थी। वह पोलिंग बूथ से बाहर निकल आये। और उन्हे लगा जैसे वह जेल से बाहर आये हो। खुली फिज़ा मे वह लम्बे लम्बे साँस लेने लगे और उन्होने देखा कि आशाराम की माँ, उनकी बहू रामदयी क्यु के साथ आगे बढ रही है।

बहुत दिनो के बाद वह मुस्कुराये और रामदयी की राह देखे बिना घर की तरफ चल पडे।

जीत की घडी

'पण्डित शिवशकर मार्ग' खुशी से पागल हो रहा था। आशाराम हार गया था। बाबू गौरीशकर पाण्डेय जीत गये थे। उस दिन जितना बडा जुलूस निकला उतना बडा तो सजय गाँधी का भी नही निकला था जब वह पण्डित शिवशकर पाण्डेय की मूर्ति की नकाब-कुशायी करने आये थे।

बाबूरामजी पण्डित गौरीशकर पाण्डेय एम० पी० (जनता पार्टी) के साथ फूलो से सजे हुए ट्रक पर थे। पहलवान भी ट्रक ही पर थे और खुशी मे बीडी के लम्बे-लम्बे कश ले रहे थे। इतवारी बाबा ट्रक के आगे नाच रहे थे। भीड गला फाड के नारे लगा रही थी

बाबू गौरीशकर पाण्डेय—जिन्दाबाद।

कांग्रेस फार डिमाक्रेसी—जिन्दाबाद।

जनता पार्टी—जिन्दाबाद।

बाबू जगजीवनराम की—जय।

भारत माता की—जय।

लोकनायक श्री जयप्रकाश नारायण—जिन्दाबाद।

इन लोगो की आवाज अपनी नम-नम उँगलियो से उन्नीस महीनों के लगाये हुए जख्मो पर मरहम लगा रही थी। उन्नीस महीनो के सन्नाटे की दीवार टूट रही थी। उन्नीस महीनो से झुकी हुइ गरदनें सीधी हो रही थी। कि जलूस पहलवान की दुकान पार करके 'गली द्वारिकाप्रसाद' के नुक्कड से आगे बढा और वह जगह आ गयी जहा पहले बिल्ला और देश का घर हुआ

करता था। जुलूस के तमाम लोगों को यह बात नहीं मालूम थी। जो जानते थे वह सड़क के उस हिस्से में आँखें बचा के गुजर जाने की जल्दी करने लगे। और वहां चुपचाप बैठा हुआ देश भीड़, नाचती गाती भीड़ को देखकर खुश हो गया और नाचते हुए इतवारी बाबा के साथ अपनी बैसाखी समेत नाचने लगा—उसे नाचता देखकर गला फाड़ता हुआ मजमा धीरे धीरे चुप होने लगा। पहले आगेवाले लोग चुप हुए फिर उनके पीछे—धीरे धीरे वह लोग भी चुप हो गये जो देश का नाच नहीं देख सकते थे ट्रक रेंग रही थी। बाबू गौरीशंकर पाण्डेय ने अपने गले का हार देश की तरफ उछाला। हार ठीक उसके गले में पड़ा। लोग तालियां बजाने लगे। सैकड़ों हाथ। देश भी ताली बजाने लगा। पर ताली बजाने के लिए दो हाथों की जरूरत पड़ती है। देश ने बैसाखी छोड़ दी। वह लड़खड़ाया और इससे पहले कि ट्रक रुके और लोग समझें कि क्या हो रहा है वह ट्रक के नीचे आ गया

उस रात आकाशवाणी की न्यूज बुलेटीन में और खबरों के साथ यह खबर आयी कि

इलाहाबाद में एक दुर्घटना हो गयी। खबर मिली है कि जब जनता पार्टी के टिकट पर चुने हुए एम० पी० श्री गौरीशंकर पाण्डेय की जीत का जुलूस निकल रहा था तब एक अपाहिज नाचते नाचते ट्रक के नीचे आ गया और मर गया। याद रहे कि श्री गौरीशंकर लाल पाण्डेय एम० पी ने कटरा मीर बुलाकी बम केस के एप्रूवर श्री आशाराम को दो लाख अस्सी हजार नौ सौ पसठ वोटों से पराजित किया है